

चारों धामकी झाँकी



लेखक-

विश्वेश्वरदयाल पाठक



मिलनेका पता-

गीताप्रेस, गोग्रवपुर

मुद्रक तथा प्रकाशक

चादयामदास जालान

गीताप्रेम गागवपुर

श्रीहरि

निवेदन

यह पुस्तक प्रेममें कई वर्षोंसे छपकर पडी हुई थी, जो अब प्रकाशित की जा रही है। प्रकाशनमें इतना देर क्यों हुई ? इसके सम्बन्धमें कुछ निवेदन किया जा रहा है। आजसे लगभग दो वर्ष पहले हम लोगोंको भारतवर्षके बहुत से तीर्थोंमें भ्रमण करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसके पहले ही यह पुस्तक छप गयी थी। तीर्थोंसे लौटनेपर जब यह पुन पढी गयी तो इसमें अनेकों स्थलोंपर विशेष सशोधन एवं परिवर्तनकी आवश्यकता मालूम हुई। साथ ही कई दृष्टियोंमें इसमें श्रुटियों दियायी पडीं। फलतः एक बार यह विचार हो गया कि यह पुस्तक प्रकाशित न की जाय। परन्तु दूसरी कठिनाई सामने यह थी कि इसका प्रकाशन स्वीकृत हो चुका था, जिसकी सूचना लेखकको दे दी गयी थी। इसके अलावे, जैसा कि पहले बता चुके हैं पूरी पुस्तक छप भी गयी थी। लेखक महोदयकी वही अभिलाषा थी कि पुस्तक शीघ्र प्रकाशित हो। इन सब बातोंपर विचार करके यह संस्करण प्रकाशित करनेकी राध्य होना पड़ा। यद्यपि पुस्तक उप चुकी थी, तो भी

इसमें कई स्थानोंपर यथासम्भव सुधार किया गया। धनेकों स्थानोंपर चिप्यां छापकर ग्राह्यो गया। कई छपे पने निकाल दिये गये आर उनका जगह नये पने छापकर जोडे गये तथा हाथमे भी कुछ अंगुलियो घनवायी गर्यो। इस प्रकार कुछ सुधार किया गया ह। फिर भी इसमें अनेक भूलें रह गर्यो। निरदानाने कारण हम उन भूलोंने लिये क्षमा प्रार्थना करते हैं।

इस पुस्तकमें लेखकने अपना यात्राका क्रम दिया है, किन्तु यह सबने लिय उपयोगी नहीं जान पडता। यात्रियोंको मूध समझ-धुझकर अपनी यात्राका क्रम घनाना चालिये।

दीपावली
म० १९०८

}

प्रकाशक



विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
भूमिका	१	१८-तारकेश्वर	१२७
यात्राके नियम	८	१९-गङ्गासागर	१२९
मंगलाचरण	९	२०-भुवनेश्वर	१३३
(१) जगन्नाथखण्ड		२१-वैतरणी	१३९
१-घटेश्वर	१०	२२-जगन्नाथपुरी	१४२
२-ब्रह्मावर्त	१८	२३-साक्षीगोपाल	१६२
३-नैमिषारण्य	२१	(२) रामेश्वरखण्ड	
४-मिश्रित	२६	२४-गोदावरी	१६४
५-गोकर्णनाथ	२९	२५-कृष्णगङ्गा-पत्रा-वृत्ति	१६७
६-अयोध्या	३२	२६-चिदम्बरम्	१६९
७-जौनपुर	४५	२७-मदूरा	१७४
८-प्रयाग	५१	२८-श्रीरामेश्वरम्	१७७
९-चिनकूट	७०	(३) द्वारकाखण्ड	
१०-अमरकण्ठक	७७	२९-श्रीरङ्गजी	१९०
११-विन्ध्याचल	८०	३०-पक्षीतीर्थ	१९३
१२-काशी	८५	३१-काञ्ची	१९६
१३-गाया	१०३	३२-श्रीवालाजी	१९८
१४-बुद्धगया	१११	३३-किष्किंधा	२०१
१५-राजगृह	११५	३४-पञ्चवटी	२०३
१६-वैद्यनाथ	११८	३५-त्र्यम्बकेश्वर	२०६
१७-कालीघाट	१२२	३६-ठाकोर	२०८

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
३७-सावरमती (विदाश्रम)	२१३	६०-गरुडचट्टीसे महादेवमैण	
३८-गिरनार पर्वत	२१६	चट्टी	३३५
३९-प्रयागपेत्र	२२०	६१-महादेवमैणसे चन्द्र	
४०-मुदामापुरी	२२५	चट्टी	३३६
४१-द्वारकापुरी	२२८	६२-चन्द्रचट्टीसे व्यासघाट	३३६
(४) बदरी-कैदारखण्ड		व्यासघाटसे देवप्रयाग	३३८
४२-सिद्धपुर	२४०	६४-देवप्रयागसे श्रीनगर	३४०
४३-उज्जैन	२४६	६५-श्रीनगरसे रुद्रप्रयाग	३४३
४४-औंकारनाथ	२५०	६६-रुद्रप्रयागसे गुप्तकाशी	३४४
४५-नाथद्वारा	२६१	६७-गुप्तकाशीसे रामपुर	३४६
४६-पुष्कर	२०५	६८-रामपुरसे त्रिभुगीनारायण	
४७-मथुरा	२६९	[और त्रिभुगीनारायण	
४८-वृन्दावन	२८०	से मोनप्रयाग]	३४७
४९-गायुल महारन	२९५	६९-मोनप्रयागसे रामनाड़ा	३४८
५०-चलदबगाँव	२९४	७०-कैदारनाथपुरी	३१
५१-गौरधन	२९७	कैदारनाथसे चदरीनाथ	
५२-बरसाना	२९९	७१-नागचट्टीसे तुगनाथ	३५५
५३-नन्दगाँव	३०१	७२-तुगनाथसे गाणेश्वर	३५०
५४-दिल्ली	३०४	७३-[गोपेश्वरसे लालनागा	
५५-कुरुपेत्र	३०७	और] लालनागासे	
५६-हरिद्वार	३१०	गरुडगङ्गा	३६०
५७-सत्यनारायण	३२५	७४-गरुडगङ्गासे जोपीमठ	३६२
५८-शुद्धिनेत्र	३२६	७५-जोपीमठसे हनुमान	
शुद्धिनेत्रसे कैदारनाथ		चट्टी	३६४
५९-रुद्रमण्डल	३३३	७६-श्रीबदरीनाथपुरी	३७

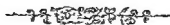
विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
यदरोनाथस्य रामनगर मण्डी		९१-तञ्जौर	३८७
७७-लालसागासे नदप्रयाग	३७४	९२-कालहस्तीश्वर	३८८
७८-नन्दप्रयागसे वर्णप्रयाग	३७५	९३-महिनार्जुन	३८९
७९-वर्णप्रयागसे मलचौरी	३७६	९४-घुस्मेश्वर	३९१
८०-मेलचौरीसे चौखुँटिया	३७७	९५-इलोराकी गुफाएँ	३९३
८१-चौखुँटियासे भिरियासैण	३७७	९६-एलिफण्टाकी गुफाएँ	३९४
८२-भिरियासैणस		९७-भीमीमदाकर	३९५
गूजरघाटी	३७८	९८-पूना	३९६
८३-गूजरघाटीसे रामनगर		९९-महानलेश्वर	३९७
मण्डी	३७८	१००-पण्डरपुर	३९८
८४-उपसहार	३८०	१०१-नागेश्वर	४०१
(५) परिशिष्टखण्ड		१०२-जाधू	४०२
८५-पशुपतिनाथ	३८४	१०३-अम्बिकाजी	४०५
८६-गुप्तेश्वरी	३८४	१०४-श्रीएनलिङ्गजी	४०८
८७-हरिहरक्षेत्र	३८५	१०५-काँगडा	४११
८८-नवद्वीप	३८५	१०६-अमरनाथ	४१५
८९-गोहाटी	३८६	१०७-यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी	४१७
९०-तिरुवण्णमहले	३८७	१०८-उत्तरकाशी	४२३
		१०९-मानसरोवर कैलास	४२७



हृदयोद्धारः

भ्रातस्त्व गुणान् स्मृत्वा लोचने माश्रुणी मम ।
अस्माद्धेतोर्गुणौघन्ते शक्यते नानुवर्णितुम् ॥ १ ॥
मणि विना यथा सर्पौ विना पक्ष विहङ्गम ।
मीनो जल विना चन्द्रो त्वा विना च तथास्म्यहम् ॥ २ ॥
नीर्यायात्रा कारयेय मातर च समन्तत ।
तथासीद्दार्दिकी वाञ्छा प्रथम यन्धुसत्तम ॥ ३ ॥
दुःखिता जननी भ्रातस्त्व वाञ्छानुसारत ।
पावनी नीर्यायात्रा हि भारतीयामचीकरम् ॥ ४ ॥
भयता सदृशो यन्धुर्दुर्लभो जगतीतले ।
वनो विदेन्दवर प्रायौ भवामि करणालयम् ॥ ५ ॥
अन्या सत्तीर्यायात्राया किञ्चित् पुण्य भवेद् यदि ।
सुभ्रातुरात्मन शान्ति कुर्यात्तस्मै समर्पितम् ॥ ६ ॥

—लेखकस्य



१००

साल्वद ।

अज्ञानिर ।

भूमिका

उन परम पिता परमात्माको कोटिश धन्यवाद हे जिनकी असौम कृपासे मेरे हृदयमें भारतवर्षके पवित्र तीर्थस्थानोंका निरण लिखनेकी प्रेरणा हुई है ।

स्वर्गीय बंधुवर जमुनाप्रसादजीकी यह कामना थी कि पूजनीया माजीको भारतवर्षके समस्त तीर्थोंकी यात्रा कराएँ, और उन्होंने उसका श्रीगणेश भी कर दिया था, किन्तु दुःख है कि सन् १९८२ में अकस्मात् उनकी मृत्यु हो जानेके कारण वह शुभ विचार भी उनके साथ ही चला गया । उनके प्रारम्भ किये हुए इस कार्यको पूर्ण करनेके लिये सन् १९८३ में मैंने तीर्थाटन करना प्रारम्भ कर दिया, और सन् १९९१ में केवल श्रीमद्रीनारायणकी यात्रा शेष रह गयी थी । अब वह भी पूजनीया माँजी आदिके साथ आनन्दपूर्वक समाप्त हो गयी है । उन पवित्र तीर्थोंमें जाकर हमें अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं । यदि हम उन शिक्षाओंको ग्रहण न करें तो तीर्थयात्रा करनेसे अधिक लाभ नहीं हो सकता ।

भारतवर्षमें ऐसे नर-नारी मिले ही होंगे जिन्होंने चार धर्मोंका नाम न सुना हो ओर जो उनकी यात्रा करनेके लिये उत्सुक न हों । इन चार धर्मोंकी यात्रा कर लेनेपर भारतवर्षके प्राय सभी मुख्य तीर्थस्थानोंकी यात्रा हो जाता है ।

‘नीय शब्दका अर्थ है तारनसग। जिा म्थानोसे प्रभा, विष्णु, महात्मा अथवा अयाय देवताओंका मन्त्र है’ अथवा जहाँ उद्भूत स ऋषि मुनि एव प्रबन्धिष्ठ महाभाओंन रहकर तपस्या की है वे ही स्थान तीर्थरूपमे प्रसिद्ध हो गये हैं। भारतवर्षमें तीर्थयात्राका बड़ा माहात्म्य है। उन महापुरुषोंत तपस्या करके उन स्थानोंके इतना परित्र कर दिया है कि आज भारतवर्षके कान-बोनेसे आर्य-जनता नाना प्रकारके कष्ट सहन करती हुई वहाँ पहुँचनी है और भगवान्का दर्शन पाकर आनन्दित होती है।

अयोध्यामें भगवान् रामचन्द्रका गज्याभिषेक करनेके लिये वसिष्ठजीने भारतवर्षके समस्त तावाका जन्म मँगवाया था। भगवान्को बनास होकर भी वह जल सुरभित रगा रहा। जन भरतजी चित्रकूट गये तब उसे मात्र लेन गये। किन्तु जब मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् राम अयोध्या छौटनको उद्यत न हुए तो भरतजीने उहाँ बैठे हुए ऋषि मुनियोंसे पूछा कि उस परम पुनात जलको कहा रगा जाय ? और फिर अत्रिमुनिक आदेशानुसार उसे एक प्राचीन कुण्डमें डाल दिया। उही कुण्ड आजकल ‘भरतकूप’ के नामसे सख्यात है। चित्रकूट जानाल यात्री भरतकूपमें स्नान, आचमन एव मार्जनादि करते हैं। भरतकूपके परित्र जलम ध्यान करनेका फल भरती है स्नानस सदृश माना जाता है। यदि तीर्थोंका जल माधारण माना गया होता तो भरतजी उसे रम्बनेके लिये क्यों ऋषि मुनियोंसे आना लेने और महामुनि वसिष्ठजी भी उसे गज्याभिषेकरु लिये क्यों मँगाते। अयोध्याकोक कूपों और सरयूमें क्या जलका अभाव था ?

ऐसा कौन भाग्यगामी होगा निम्ने श्रृणुकारका नाम न मुना हो । उन्होंने काठकी कारर उनकार उसमे अपने अन्वे माता-पिताको प्रकृष्ट नगे पाय भारतवर्षकी तीर्थयात्रा करायी थी ।

महाभारतमें लिखा है कि जय कौरव ओर पाण्डवोंका युद्ध होना निश्चित हो गया ओर भगवान् कृष्णने भी अर्जुनका सारथी होना स्वीकार कर लिया तब बलदेवजीने किसीका पक्ष ग्रहण करना स्वीकार नहीं किया । और उस बन्धुवधको देखना भी उचित न समझकर वे द्वारकासे चल दिये तथा युद्धकी समाप्तिकर भारतवर्षके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तीर्थस्थानोंकी ही यात्रा करते रहे ।

महाभारतके पश्चात् द्वारकावासी यादवोंने भी अपना अन्तकाल उपस्थित होनेपर भगवान् कृष्णके आदेशानुसार प्रभामक्षेत्रकी यात्रा की थी । अभी थोडा समय हुआ समर्थ गुरु रामदासने भी नगे पाँच चत्वर भारतवर्षके समस्त तीर्थोंकी यात्रा की थी । इन उदाहरणोंमे यह निश्चय होता है कि तीर्थ क्षेत्र सागरण स्थान नहा है, ओर न तीर्थजल ही सागरण जल है । तीर्थयात्रा यदि विभिन्नत् की जाय तो वह एक उच्च-कोटिका तप है ।

तीर्थयात्रा करनेवाले यात्रियोंका भगवत्-प्रेम बढ़ता है, उन्हें ब्रह्मचर्यसे रहनेका मुअसर प्राप्त होना है, एक बार भोजन किया जाता है, सच्यभाषणकी अभिलाषा होती है ओर झूठ बोलनेपर चित्तमें खय ही घृणा उत्पन्न होता है तथा स्थान-स्थानपर भगवच्चर्चा और भगवत्कथा श्रृणु करनेको मिलते हैं । उसे जगह-नगह भगवद्विग्रहोंके दर्शनोंका सौभाग्य होता है, गगादि पुनीत

नदियोंका स्नान मिलता है, बड़े-बड़े पुनात स्थानोंपर पूर्वोक्ते लिये श्राद्ध और तर्पण करनेका सौभाग्य प्राप्त होता है तथा बड़े-बड़े विशाल और प्राचीन देवमन्दिरों एव पावन सरासरीके दर्शन और उनमें स्नान करनेसे उसे जो आनन्द प्राप्त होता है उसे वह आजीवन विस्मृत नहा होता । जय जय उस भाग्य उदय होता है तभी-तभी उन स्थानोंका चित्र हृदयके सामने अंकित हो जाता है, जिमसे चित्त अत्यंत परित्र और प्रफुल्लित हो उठता है । तीर्थयात्रा करनेपर उसके धनका कुछ भाग दू ग्वी एव दीन व्यक्तियोंकी सेवामें लग जाता है तथा देश देशांतरके नर-नारियोंके दर्शनोके साथ साथ देशभ्रमण भी हो जाता है ।

भगवान् आकाशके समान सर्वत्र समान भावसे व्याप्त है । किन्तु जिस प्रकार सूर्यका प्रतिबिम्ब स्वच्छ जलके पात्रोंमें ही दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार तीर्थस्थानोंमें ही भगवान्की विशेष अभिव्यक्ति हाती है । यह ससार समुद्ररूप है, इमे तरनेके लिये हमारे पूर्वजो ऋषि-मुनियान इन तीर्थस्थानोंमें ही सहस्रों वर्ष तपस्या की थी और यहाँ तपस्या करके हा वे त्रिकालत्र हुए थे । महा रहकर उन्होंने अपना उद्धार ता लिया ही, साथ हा हमलोगोंके लिये भा अनेकों धर्मग्रन्थोंकी रचना की, जो आज हमारे लिये समुद्र सागरमें तर्पणके लिये नारावरूप हा रहे ह ।

तीर्थयात्रा करनेवाले यात्रियोंका पहला कर्त्तव्य यह है कि वे जिस जिस भा उाट या उाड तीर्थस्थानपर जायें वहा उपवास कर किसी विद्वान् ब्राह्मण या तीर्थगुरुद्वारा तार्थनिधि कर आर यदि

उनके माता पिता स्वर्गवासी हो गये हों तो उनके लिये श्राद्ध, तर्पण
 पत्र पिण्डदानादि करें । इसके पश्चात् अपनी शक्तिके अनुसार
 ब्राह्मणोंको भोजन कराकर फिर खय बचा हुआ प्रसाद पावें ।

जगन्नाथ, रामेश्वर और द्वारका इन तीन धामोंकी यात्रा
 रेलका मार्ग होनेके कारण कठिन नहीं है । स्टेशनोंके पास ही
 देवमन्दिर हैं । इन तीनों धामोंके अतिरिक्त इनके मार्गमें जो अन्य
 तीर्थस्थान मिलते हैं उन सगरी यात्रा डेढ महीनेमें आनन्दपूर्णक
 हो जाती है ।

श्रीमन्नीनारायणजी यात्रा भी अब पहलेके समान कठिन नहीं
 है । इसका सारा श्रेय श्री १०८ बाबा काली कमजीवाल्लोंको है ।
 बाबाजीने सन् १९४१ में यात्रा की थी । उन्होंने यात्रासे लोटकर
 उहाँके मार्गके दु खोंको बड़े-बड़े धनी व्यक्तियोंपर प्रकट किया ।
 उनके प्रभाससे उत्तराखण्डके मार्ग बनने लगे । वहाँ जगह-जगह
 धर्मशालाएँ बनायी गयीं और पोसाले बैठायें गये । उत्तराखण्डके
 दु ख दूर करनेवाले इन पून्य बाबाजीका सन् १९५३ में
 स्वर्गवास हो गया । उनके पश्चात् राय रामनाथजी काली कमजीवाल्लोंके
 हाथसे उत्तराखण्डका भली प्रकार प्रबन्ध होता रहा । सन् १९८२ में
 वे भी परलोक सिंगार गये । तबसे उत्तराखण्डका प्रबन्ध
 श्रीमन्नीरामजीके हाथमें है । अब सन् १८६० के सोसाइटीज
 ऐक्टके अनुसार सन् १९२८ ई० को पचायती क्षेत्र
 इमीनेशन्स रजिस्ट्री कराकर बाबाजीने एक ट्रस्ट कायम कर
 दिया है ।

क्या क्या रस्तु मिठ मरती है, तीर्थस्थानोंपर कैसे-कैसे सरोवर हैं और प्रत्येक तीर्थकी यात्राका क्या माहात्म्य है ? इस पुस्तकमें चारों धाम, सातों पुरी और नारहों ज्योतिर्लिंगोंकी यात्राका वर्णन है अतः यह यात्रियोंके लिये कुछ उपयोगी हो सकती है । मेरी अल्पज्ञताके कारण त्रुटियोंका रहना तो बहुत स्वाभाविक है, तथापि यदि इसके अश्लोकनद्वारा किर्हा किर्हा पाठकोंको भी उन पवित्र स्थानोंके दर्शनोंकी अभिगाथा उत्पन्न हुई तो मैं अपनी इस सेवाको सफल समझूँगा ।

निनीत,
लेखक



यात्राके नियम

१-यात्रीको जिस दिन यात्रा आरम्भ करनी हो उससे दो दिन पहले ही उसे यात्रामें उपयोगी आवश्यक वस्तुओंका समूह कर लेना चाहिये और श्रीगणपति एव गौरीका विप्रित् पूजन कर तथा वृद्धजनोंको प्रणाम कर शुभ मुहूर्तमें अपने गृहसे तीर्थयात्राको प्रस्थान करना चाहिये ।

२-तीर्थारणके समय यात्रीको ब्रह्मचर्यसे रहना चाहिये, मिथ्या भाषणका सर्वथा त्याग कर देना चाहिये । यदि कोई अपरिचित यात्री भी विप्रित्तिमें पड़ा दिखायी दे तो उसकी सहायता करनी चाहिये और सभी निषिद्ध कर्मोंका विप्रित् परित्याग कर देना चाहिये ।

३-यात्रामें अपरिचित व्यक्तिके हाथका भोजन कभी नहीं पाना चाहिये । देवदर्शनके लिये जाते समय अपना सामान किसी निम्नसनीय गृहस्वामीको अपना उत्तरदायित्वपूर्ण गेवरको सौंपना चाहिये ।

४-तीर्थस्थानोंमें गीता, गमयण आदि मद्रूप्योंका पाठ करना चाहिये और प्रत्येक तीर्थस्थानसे कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये ।

५-अपने विश्रामस्थानपर भोजन बनता हुआ ओढ़कर कहा नहीं जाना चाहिये और ऐसे पदार्थ भोजन करने चाहिये जो शीघ्र पच जानेवाले हों । चागें धामोंमें कम-से-कम तीन-तीन रात्रि निवास करना चाहिये, अन्य तीर्थस्थानोंमें अपनी रुचिके अनुसार कम भी ठहर सकते हैं ।

१-१० अक्षर ।
द्विकान्त ।



पञ्चमुख महादेव

ॐ तत्सत्

चारों धामकी भक्तोंकी

मगलाचरण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।

समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥

जय गणेश मगलकरन, प्रणवों बारम्बार ।

हरहु अमगल लखि शरण, जय जय उमाकुमार ॥

तीर्थयात्रा ग्रन्थ यह आनन्दको दातार ।

पढि पढि रुचि सों नारि नर पावें मोद अपार ॥



जगन्नाथरूपद

१४५५ -

बटेश्वर

बटेश्वर ब्रह्मरूपदकी चारामा कोसकी परिक्रमाके अन्तर्गत है। शास्त्रमि एके महाराज शूरसेनकी पुरी बनगया है। निम्न समय यह नगर सस्कृतविद्याका केन्द्र था, इमन्दि गंग इसे उड़ी घाशा प्रकृत भी पुकारते थे।

बटेश्वर आनेके त्रिय यात्रिगान्त शिखोहागामें, जो ईस्ट इण्डियन रेलवेका जङ्गलम स्टेशन है, उतरना चाहिये। स्टेशनके पास ही एक धर्मशाळा और एक सराय है। यहाँसे दो मीलपर शिखोहागामे घस्तो है। यह जिन मैनपुरीके अन्तर्गत है। यहाँ तहमाल, एक अस्पताळ, एक हाई स्कूल तथा एक गोशाला और अजसत्र भी है। जिन साधु महात्माओंकी बटेश्वर आनेमें आर्थिक कठिनाई होती है वह यहाँ आनेपर दूर हो जाती है। इसने सिंगा कोड यात्री जी० आर्० पी० रेलवेके बाह स्टेशनपर और कोर्ब हौलीपुरा स्टेशनपर भी उतरते हैं। बटेश्वर आनेके त्रिये यात्रिगान्तो इहाँ तान स्टेशनोमेसे किसीपर उतरना चाहिये। शिखोहागामेकी तरह बाह आर हौलीपुरामें भी यात्रियोंके ठहर के त्रिये धर्मशाळा-दिवी सुविधा है। बटेश्वरम कार्तिक मामम एक प्रकृत घडा मंग लगता है। उस समय यहाँ लाखों यात्री एकत्रित हो जात हैं।

शिकोहाबादसे बटेइर १३ मील है और बाह से ५ मील । बाह उतरनेवाले यात्रियोंको बीचमें कोई नदी नहा मिलती और शिकोहाबाद होकर आनेवाले यात्रियोंको बीचमें यमुनाका पुल पार करना होता है । शिकोहाबाद और बाह दोनों स्टेशनोंपर यात्रियोंको इक्का, ताँगा और बल्गाड़ी आदि सगारियाँ मिल सकती हैं, जिनका किराया समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है । इस प्रकार यात्री आनन्दपूर्ण बटेइर पहुँच जाते हैं ।

बटेइरमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये एक पक्की धर्मशाला है तथा ओर भी कई स्थान हैं । अत्रिकाश यात्री देवमन्दिरोंमें निगम करते हैं । यहाँ आकर वे पतितपापनी श्रीयमुनाजीमें स्नान करके श्रीबटेइरनाथ शिवका दर्शन करते हैं ।

बटेइरमें देवमन्दिरोंके दर्शन इस प्रकार करने चाहिये । पहले श्रीगोकुलनाथघाटके ऊपर श्रीगोकुलनाथजीके मन्दिरमें जाना चाहिये । उममें श्रीगोकुलनाथजीकी व्याम वर्ण मनोहर मूर्तिके दर्शन होते हैं । यहापर राग-भोगके लिये ३००) रुपया सालकी जमींदारीकी आमदनी है और पञ्चायती बोर्डद्वारा मन्दिरका प्रबन्ध होता है । इस मन्दिरसे आगे दो कुञ्ज हैं । ये कुञ्ज बटेइरमें एक मीलकी दूरापर हैं । पहले इनमें यहाँ आनेवाले साधु-सन्यासी ठहरा करते थे ।

कुञ्जसे आगे श्मशानघाट है, इसके ऊपर पश्चिमुखी महादेवका मन्दिर है । इस मन्दिरके भातर सगमरकरके पश्चिमुखी शिवलिंगके ... । इससे आगे एक त्रिद्वारी मिलती

यह यात्रियोंकी सुविधाके लिये बनायी गयी थी। अब भी मेटाके दिनोंमें यह उहाँके काममें आनी है।

निद्वारीके आगे दो शिवमन्दिर हैं। इन मन्दिरोंकी ऊँचाई ५० फुट अनुमान है। नीचे पत्थी मीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इन दोनों घाटोंको रानीघाट कहते हैं। महाराज मदारकी महारानी इन्हीं घाटोंपर स्नान किया करती थीं। दूसरे घाटपर एक टोटे-मे मन्दिरमें हनुमानजीकी प्रतिमा है। बटेसरकी बस्तीके लोग बटेसरनाथका दर्शन करके यहाँ निशाम करते हैं। पहले यहा पुराणोंकी कथा भी हुआ करती थी। किन्तु अब कथा तो बन्द हो गयी है, विश्रामकी परिपाटी चली जा रही है।

हनुमानजासे आगे शिव-पार्वतीका मन्दिर है। ऐसी मनोहर मूर्तियाँके दर्शन सम्भवत दूसरी जगह नहा मिलेंगे। यह मनुष्याकार शिव-पार्वतीकी छवि देखते ही बनती है। श्रीशिव पार्वतीका दर्शन करने आगे चलनेपर श्रीगंगाजीका मन्दिर मिलता है। इस समय वर्तमान मन्दिर यमुनाकी बाढ़ आ जानेके कारण गिर गया है।

इससे आगे श्रीबटेसरनाथके मन्दिरका फाटक मिलता है। यह मन्दिर बाह्य चारों ओर द्विगामे घिरा हुआ है। इसके तीनों बड़े-बड़े द्वार हैं। द्वारोंके सम्मुख एक बरगम्बा वृक्ष है। जिसके चारों ओर एक पक्का चतुस्र बना हुआ है। यहा एक घूना रहता है। प्राचीन कालमें जो बटेसरनाथका मुख्य पुजारी होता था वह यहाँ बैठा रहकर यात्रियोंको प्रसादके रूपमें घूनीकी भस्म दिया करता था। श्रीबटेसरनाथके मन्दिरमें दो दरवाजे हैं। एक

द्वारमे होकर यात्री प्रवेश करते हैं और दूसरेमें होकर बाहर निकलते हैं ।

कार्तिक शुक्ल १५ के दिन यहा इतनी भीड़ होती है कि आगरा जिलाके स्वयसेवक, वटेश्वरकी सेवासमिति एव डि० बो० आगराका प्रबन्ध, सरकारा सिपाहियोंकी निगरानी और अन्यान्य स्वयसेवकोंकी सेवा होते हुए भी श्रीवटेश्वरनाथपर यमुनाजल एव विल्वपत्रादि चढाना कठिन हो जाता है । भगवान्पर इतने पुष्प चढाये जाते हैं कि वे उनमें मर्नया छिप जाते हैं ।

वटेश्वरनाथके मन्दिरके चारों ओर वटमे और मन्दिरके भीतर-बाहर बहुतसे घण्टे लटकाये हुए हैं । कहते हैं, वटेश्वरनाथकी यात्रा करनेपर जिन यात्रियोंकी कोई कामना पूरी हो जाती है वे ही दूसरे साल आकर भगवान्को घण्टा समर्पण करते हैं ।

वटेश्वरनाथमन्दिरकी वार्षिक आय प्राय सात हजार रुपया है । यहा श्रावणके सोमवारोंको मेला लगते हैं जिनमें हजारों मनुष्याकी भीड़ हो जाती है । उन दिनोंमे भगवान्को विल्वपत्र समर्पण करनेके लिये यहा बहुत-से शिव-भक्त बाहरमे आकर एक बत्त भोजन करते हुए पूरे श्रावण मास भी निराम्न करते हैं । इसके अनिरिक्त गिररात्रि, गंगा-दशहरा आदि मुरय-मुरय पत्रोंपर भी आस-पासकी जनता बडे भक्ति भावसे वटेश्वर आती है । इस कारण उन तिथियोंपर वटेश्वरमें कई मेले लगते हैं । मुख्यत मार्ग-शीर्ष कृष्ण २ को जो श्रीवटेश्वरनाथकी झाँकी होनी है वह तो

देगनेकी ही चीज है, घुंनेकी गद्दी । इर्मन्थ मरुतो पं
कार्निनी पूर्णिमाके स्नानके पदचान् भी रके रहते हैं ।

इमके पश्चात् क्रमशः त्रेणीगाट, त्रिश्रमगाट, सूर्यगाट, यन्त्रिगाट,
शीगाट और जगद्रगाट हाते हुए त्रिवारागाटपर आते हैं । यहाँ एक
शिखरमन्दिर है । उसमें भगवत् विष्णुके आराधनाके भी दर्शन
होते हैं । इमसे आगे उड़े विहारीजीका मन्दिर है । इम मन्दिरके
सामने एक पक्का कुआ है और उसके पास ही एक नीमका वृक्ष
है । विहारीजीके पादकर्म प्रवेश करनेपर एक लम्बा चौड़ा पक्का
औषध मिठना है । उसमें अनेकों सुगन्धित पुष्पों और फलोंके वृक्ष
लगे हुए हैं । इसके दक्षिणकी ओर एक निहारी है । यहाँ त्रिश्रम
धम्मेपर चित्तको बड़ा शांति मिठनी है ।

आगनेसे एक गन्धी ऊँचाईपर सभामण्डपमें प्रवेश होता
है । पहले इम मण्डपमें नियमनि भगवद्गुणगान हुआ करता था,
पुराणोंकी कथाएँ हाती थी, परन्तु अब यह देखनेकी नहीं मिठता ।
दाक सामने श्रीराजा कृष्णका बड़ी मनोहर मूर्तियों हैं । यहकि राग
भोगका प्रसन्न कमरोलीके छालाजीके हाथमें है । पहले यहाँ एक
पुजारी और एक भण्टारी रहा करते थे किन्तु अब ऊन पुजारीजी
ही सब काम कर लेते हैं ।

इस मन्दिरके नीचे भण्टार-गट्ट है । सचमुच यह स्थान बड़ा
ही रमणीक है और एक वेदान्धाल्य स्थापित हानके योग्य है ।

विहारीजीके मन्दिरके आगे नाऊगाकर दक्षिणका बननाया
हुआ नाऊगाकर गिरजीका उड़ा सुन्दर मन्दिर है । यह स्थान जिस

समय बना होगा एक देखनेकी चीज रही होगी। मन्दिरके नीचे नाऊशकरघाट है, यहाँपर मृतक व्यक्तियोंके पिण्ड-कर्मादि हुआ करते हैं। इसी मन्दिरमें सहस्र-दीपकका एक स्तूप बना हुआ है। उसपर पहले यहाँ सहस्र दीपक जल करते थे।

इससे आगे तुलसीघाट, गोपालेश्वरघाट, गौघाट, सेनीघाट और महाराष्ट्रघाटके पश्चात् यज्ञ-स्थान आता है। यहाँ किमी समय एक वाजपेय यज्ञ हुआ था। उसकी भस्म अभीतक मिलती है।

यज्ञस्थानके आगे एक मिट्टीके टीलेपर गारह भुजावाली भगवतीके दर्शन होते हैं। यहाँसे आगे अनुमान एक मील चलनेपर जैनियोंका तीर्थस्थान मिलता है। यहाँपर छोटे-बड़े कई मन्दिर हैं। सन् १९१६ मे जैनियोंने मिलकर एक बड़ा सुन्दर मन्दिर बनवाया है और उसके राग भोगका भी ममुचित प्रयत्न कर दिया है।

इससे कुछ आगे चलनेपर बस्तीके गारह भगवती शीतलदेवीका मन्दिर है। यहाँ और भी कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं। यह मन्दिर भी मिट्टीके टीलेपर ही है। चैत्र ओर आश्विनके नवरात्रोंके अन्तरपर यहाँ नौ दिनतक गणेश्वर बस्तीके नर-नारी सैकड़ोंकी संख्यामें आते रहने हैं। पहले यहाँ गण्डिवान भी होता था, किन्तु अब यह घृणित प्रथा बन्द-सी हो रही है।

शीतलदेवीके आगे वनमें दूसरे गणेश्वर महादेवका दर्शन होता है और फिर श्रीहनुमान्जीके दर्शन होते हैं। ये कस करारके हनुमान्जी कहकर पुकारे जाते हैं और एक मिट्टीके टीलेपर निराजमान हैं।

यह नो पटेश्वर उस्तीके आम पासके देरस्थान हँ । इनके अतिरिक्त पटेश्वरकी पश्चिमामें, जो कार्तिक शुद्ध ० को आरम्भ होता है, और भी बहुत से तीर्थस्थान मिलने हैं । पटेश्वरमें जो प्राचीन गुम्बहें और गोसाईं छोगोंकी हंगुणियाँ आदि हैं वे इस बानकी सूचना देती हैं कि यह एक प्राचीन तपोभूमि है और त्रिती समय संस्पृष्ट त्रिधाका केन्द्रस्थान रहा है, यहाँकी प्रधान संस्थाएँ चतुर्वेदी जमुनाप्रसाद डिम्पेरागी, हिन्दी पाठशास्त्र और चतुर्वेदी जमुनाप्रसाद धाचनालय हैं । कुछ दिनसे डाकघरना और मोगीगृह भी खुल गये हँ । गर्तमेष्टने पटेश्वरके जंगममें बरूर, शीशम और वर आदिके वृक्ष लगाकर उसकी रक्षाके लिये बस्तीके बाहर एक मकान बनाया है । उसमें जंगलके कर्मचारी रखा करते हँ । बस्तीके बीचमें महाराज भदारका किला (हनेटी) हँ, जो इस समय जीर्ण हो चला हँ । पहले भदारराज्यकी राजधानी पटेश्वर ही थी, किन्तु अब नौगोंरमें हँ । महाभारतके समय जब कौरव-पाण्डवों में युद्ध आरम्भ हुआ तब बलभद्रजीने किसीका पक्ष नहीं लिया । वे तार्ययात्रा करते हुए पटेश्वर आये थे और कुछ समय यहाँ विश्राम किया थे । यह कथा पटेश्वरमाहात्म्यमें आपी है ।

आजकल जहाँ पटेश्वरकी बस्ती हँ वहाँ पहले यमुनाजी बहती थी । महाराज बदनगिहने यमुनाना प्रवाह काटकर पूर्वमें पश्चिमकी ओर कर दिया है । ऐसा करनेसे पटेश्वर यमुनाके बीचमें

आ गया है। अब यमुनाजी मानो रतेश्वरनाथकी परिक्रमा करती हुई बहती हैं।

अहो ! एक समय यह था जब कि वटेश्वरमे सस्कृत पढ़नेके लिये दूर-दूरसे विद्यार्थी आया करते थे। प्रातः और सायंकालमें जब समस्त देशार्थोंमें शखरनि और नगाढोंका घोष होता था तो धास-यासके गात्राले भी नेत्र मूँदकर पाच मिनटके लिये ध्यानावस्थित हो जाते थे। उस समय रतेश्वरमे निराम करना प्रत्येक व्यक्ति अपना सौभाग्य समझता था। किन्तु अब देवमन्दिरोंको मृना देवदार और महाराज भद्राकरके किल्लेके खँडहरोंपर दृष्टि टाँकर वटेश्वरकी पतितावस्थाका ध्यान आते हा शक्र और आमगलनिकी सामा नहा रहता।

माहात्म्य—एक बार श्रीअत्रिमुनिके प्रार्थना करनेपर भगवान् शक्र बोले—ह मुने ! रतेश्वरकर क्षेत्रफल १६ मीटर या ८ कोम है। वहा आग्निदेव भगवान् वटेश्वरनाथ निराजमान हैं। उस तीर्थके निम्न अतिदिना मृत्युकरुणा यमुनाजा बह रही हैं, जिनके दशनमात्रमे सम्पूर्ण पापसमूह नश्वरल नष्ट हो जाते हैं। जो लोग वहा निराम करते हैं वे गैरम सर्वत्र सम्मानित होते हैं। हे मित्र ! जो प्राणी नोन पिन जन करके वहा निरास करते हैं वे कर्मुगम वृत्तार्थ हा जाते हैं। तथा जो लोग भक्तिभावमे श्रद्धापूर्वक मेरी पूजा करते हैं उनके पूजनमात्रमे मैं नि मदेह सत्पुत्र हो जाता ह।



ब्रह्मावर्त

थारटेधरनाथका दर्शन जीर यमुनाश्रान करके यात्रा मगसाका स्मरण करत हुए ब्रह्मार्ज अर्गाव बिदूरकी यात्रा करते हैं। उन्हें शिकहागद I I R से या G I P रत्नेरु याह स्टेशनसे आगा होकर याापुर आना होना है।

कानपुर आकर यात्री विदूर स्टेशनका टिकट लेते हैं। जो B B & C I रेलवेकी आगा-कानपुर लाइनपर है। शिकोहाबादसे कानपुर १०३ मीड है और कानपुरसे विदूर २० माड। विदूर पहुँचकर यात्रीलोग प्रायः स्टेशनके निकटवाला धर्मशाखमें ठहर जाते हैं। इसके सिवा तीर्थपुजारियोंके निजी गृह भी हैं, जा यात्रियोंके लिये ही गाली रहते हैं। देहात होनेके कारण यहाँ ठहरनेका काम थप नहा है।

विदूर श्रीमागीरधीके तटपर बसा हुआ है। यहाँ ब्रह्मघाटपर स्नान करनेका विशेष महत्त्व है। ब्रह्मघाटपर एक कुएँ उँचा गहरेकी एक कौठ गड्डी हुआ है। उमका अभिप्राय यह बनगया जाता है कि मनुजान मरखती और दृपडती नदाले राच नम भागका ही ब्रह्मार्ज माना है। यहा ब्रह्माजीकी उत्पत्तिका आदिस्थान है। यहीं मगसान् किशुकी नाभिसे कमल उत्पन्न हुआ था और उस कमलसे ब्रह्माजीकी उत्पत्ति हुआ थी। इस प्रकार यह जगत्की उत्पत्तिका आदिस्थान बनगया जाता है और इन सब घटनाओंकी स्मृतिके

लिये ही यहाँ कील गाढ़ दी गयी है। यात्री इस कीलका पूजन करते हैं। इसी स्थानपर पुराणप्रसिद्ध मधु और केटभका भगवान् विष्णुके साथ युद्ध हुआ था और यहाँ उनके भेटसे जन्के ऊपर सर्वाप्रथम भेदिनांको उत्पत्ति हुई थी। इस स्थानपर ब्रह्माजीने सहस्रों वर्ष तप किया था। यहाँ एक बहुत बड़ा यज्ञ भी हुआ था, जिसका भस्म आज भी पण्डितोंग यात्रियोंको दिखाते हैं।

ब्रह्मार्त्त एतिहासिक स्थान भी हैं, पेशवाओंका गढ़के अन्तिम उत्तराधिकारी तथा सन् १८५७ के सिपाही विद्रोहके सुप्रसिद्ध नेता श्रानानासाहब यहाँ रहा करते थे। उनके जनापाडा महलके खँडहर आज भी उनकी स्मृति लिलाने हैं।

ब्रह्मघाटके अनिरिक्त अहल्याबाई और बाजारान पेशवाके बननाये हुए घाट और मन्दिर आदि भी श्रीभागीरथीकी शोभा बढ़ा रहे हैं। कुछ दिन हुए स्वामी श्रिशुद्धानन्द सरस्वतीने इन मन्दिरोंका जीर्णोद्धार कराया था।

कहने हैं जिस समय प्रजापतिके अपवादको सुनकर भगवान् रामने जगज्जननी माता जानकीजीको कनमें निर्वासित कर दिया था उस समय ब्रह्मरक्षणी उन्हें यहाँ छोड़ गये थे। यहाँ जानकी-नन्दन कुश और उनके साथ भगवान् रामकी सेनाका युद्ध हुआ था और यहाँ पतिप्राणा श्रीजनकदुलारीने अपने पतित्रयको अक्षुण्ण प्रमाणित करनेके लिये पृथ्वामे प्रवेश किया था। इस स्थानके दर्शन करनेपर अतीत कालकी ये सभा स्मृतियाँ जाग्रत हो जाती हैं।

मिठूरसे कुछ दूरीपर परिहर नामका एक स्थान है। यहाँ महर्षि धामाश्रिता तपोभूमि बतलायी जाती है। इसी जगह उन्होंने

मन्त्रियोंके उपदेशमे तन्व्य कर एक ध्यार होने हुए भी 'मन्त्र'
 पद प्राप्त किया था तथा अथवापणका गान्ध कर आधिकारिक
 उपाधि प्राप्त की थी। पाम ही धी-रगद तामरु एक शान है।
 यहाँ एक प्राचीन कृष है। कहते हैं कि अती प्राचीनयाम तामरु
 जा इस कृषमें छिड़कर हा यात्रियोंको दृग करने थे।

मिथुनके पाम चर-रमी गोत्रके मन्त्र्य कमी-कभी अर भी
 सुद-भूमिमें उद हुए बाणोंकी गाम निरा करती है। यहाँ की
 मीनाकुण्ड आर सीतामार्ग है व अर भी भगवत जानकीका स्मृती
 लिखते हैं। इस प्रकार यहाँ आनपर मयागपुरकेलम श्रावणचन्द्र-
 जाका चौक गग जा पुगना कि तु निय नया अन्ति आंगिक
 मामन नाचने गता है।

अभी अत्रिय समय नहा हुआ स्त्री स्थानपर भारतमाताका
 प्रतिरुति मना गया आनतायियोंन वाले हा जग दिया था।
 भगवत मंताके उनगाम आर पृथक्प्रवेश तथा मना स्त्रीका करण
 कथाको स्मरण करने पर मन्त्रिय या मीरिज आश्रमको एमा थी।
 दसकर एसा कान सङ्घ्य होगा निमके नगाम व न नर जावग।

महाभारतमें लिखा है कि तदाग्रतरा राज करमे मन्त्रके
 बा चन्द्रगम निवास हाता है और यहाँ निरन्तर गगमान
 करनेसे दि-यनानका प्राप्ति हाता है। मन्त्र्य आर गगन मिया
 यहाँ समय समयपर लम्बा करनग मन्त्रमाओकी उनाया दृ गुफाएँ
 आर यल-वेदिया भा दम्भनम आता है वग लिखा और मन्त्र्यको
 बुड पाठशागआके अतिरिक्त दम्भन भा है। इन जगह कगदिको
 छोडकर भावनका और मय प्रसङ्गका ममान मित्र जाता है।

नैमिषारण्य

त्रितापहारिणा श्रीभागवतीका छान ओर त्रिफालदर्शी महर्षि
वान्मैकिका जमभूमि त्रिद्वारत (त्रिद्वार) का दर्शन करके यारी
नैमिषारण्यकी यात्रा करते ह । नैमिषारण्य जानके त्रिये यारियोंको
त्रिद्वारसे कानपुर ओर त्रिनऊ होकर बालामऊ जकरशनपर आना होता
है । यहामे जो गाड़ी मानापुर्गों जाता ह उसपर नाममार स्टेशन
ह । यह नाममार नैमिषारण्यका ही अपभ्रश है । कानपुरमे नैमिषा-
रण्य १०३ मीर है । यह ट्रेस्ट इण्डियन रेलवेकी एक त्राञ्चलात्नपर
स्थित है । उन्नासे नैमिषारण्यका एक गाड़ा सीमा भी जाती ह ।
यात्री अपना रचि ओर सुत्रिके अनुसार यात्रा कर सकते है ।

नामसार स्टेशनमे तार्र प्राय एक मीलकी दूरीपर है । यहाँ
ठहरनेके त्रिये धर्मशालाएँ ओर तीर्थपुजारियोंके स्थान हैं । नैमिषारण्य-

में गायत्री गंगा है। चारों पहरे गोमतीने खल करते चक्रवर्ति
 होते हैं। यही यहाँका मुख्य तीर्थ है। यह एक पत्नी पुत्र है।
 इसका धर्म प्रायः सारा ही मान है।

चक्रवर्ति के चारों ओर पत्थरकी मूर्तियाँ बनी हुई हैं। पर
 चार चक्रवर्तियों जन्मे दुःखान आया था। कहते हैं, उस
 समय तिन तिन चारियों भय त्पत्तक उरम गान किया उन
 सभीके सारा शारीरिक रोग निवृत्त हो गये। अब भी सारे एक
 चार वह समय आता है जब कि चक्रवर्तियों खल करनेमें मनुष्य
 रोगमुक्त हो जाता है।

चक्रवर्तियों गरमिन्त्र जालदार दीवार बनवाकर रिकर
 दिया है। उसके छिद्रोंमें जल गहर निरन्तर रहता है। चारों
 लोग वही जन्म ज्ञान एव तीर्थ रिकर करने हैं। चक्रवर्तियों तटपर
 कई देवमंदिर हैं, जो उसका स्मरणार्थ और भी बढ़ा रहे हैं।

नैमिषारण्यके नियमों केगी गाथा जाता है कि एक बार कश्चित्
 प्रादुर्भाव दग्धर बहुर मे महापियान विगुभयानूने प्रार्थना की कि
 भगवन्! अब भूर्गेरम कटिरा गय जानता है। अब ज
 पसा स्थान बनाने जहापर निराम दग्धनेमें कश्चित् गाना का
 प्रभाव न हो। तब भगवान्ने उनका प्रार्थना स्वाका न बनना
 सुदर्शनचक्र बनाया और कहा कि तिन स्थानमें गय चक्र गिरंगा
 वह कश्चित् दोषोंमें शक्ति रहेगा और जन्मके निरामियापर भी कश्चित्
 प्रभाव न होगा। वह चक्र नैमिषारण्यमें गिरा। चक्रवर्तियों उमा
 स्मृति है। इसमें अगाय जल है। इससे जो जन्म निकलता है उसे

नर्मदा और गोदावरी कहकर पुकारते हैं। एक बार चक्रतीर्थमें कूदकर स्नान करनेवाले कितने ही यात्रियोंका पता नहीं लगा था। इसलिये अब उसमें लोहेके तवे डाठ दिये गये हैं।

चक्रतीर्थमें स्नान करके यात्री भगवती ललितादेवीका दर्शन करते हैं। देवीजीका मन्दिर चक्रतीर्थसे थोड़ी ही दूर है। इन्हीं भगवतीकी स्तुतिमें पुराणोक्त ललितामहस्रनाम है। भगवतीका दर्शन मन्दिरके बाहरमें ही होता है। इसके पश्चात् एक मन्दिरमें श्रीसूतजी महाराजकी गद्दीके दर्शन होते हैं। यहाँपर सूतजी बैठकर अठ्ठासी हजार महर्षियोंको पुराणाकी कथा सुनाया करते थे।

नैमिषारण्यसे ७ मीलकी दूरीपर हत्याहरण नामका सरोवर है। मनुष्योंसे जो कायिक, वाचिक, मानसिक पाप होते हैं उनकी निवृत्तिके लिये उन्हें यहाँ आकर स्नान और तार्थत्रयि करनी चाहिये। नैमिषारण्यके अधिकांश यात्री इस पावन सरोवरमें स्नान करनेके लिये जाते हैं।

नैमिषारण्यमें पंचप्रयाग नामका सरोवर है। उसके निरुद्ध अक्षयवट है। पण्डेलोग इसका यात्रियोंको कल्पवृक्षके नामसे भी परिचय कराते हैं। यहाँपर टीलेगळे सुप्रसिद्ध हनुमानजी भी दर्शनाय हैं। यह बड़ा सुन्दर और विशाल प्रतिमा है। यहाँ पुजारीलोग अपना कार्य सिद्धिके लिये नियन्त्रि पाठ-पूजन किया करते हैं।

इनके सिवा नैमिषारण्यका यात्रा करनेवालोंको जिनके दर्शन करने चाहिये उन स्थानोंमें क्रमशः इस प्रकार वर्णन किया जा सकता है—

१. देवीलिंग, ललिता देवी

१-मनु और अतरूपाका तपस्याम्बान-यहाँ ता चरु मन हुए हैं, जहाँ उन्होंने तरस्या करके बरताम किया था ।

२-जानसीकुण्ड-बहते हैं, आजानसीजाने जब नमिपारण्य की यात्रा की थी तब इस कुण्डका निर्माण कराया था ।

३-श्रीशुरुदेवजीकी गद्दी-इस स्थानपर गृह्य श्रीशुरुदेवजीने विधाताम की थी ।

४-काशी-इस स्थानपर एक सगेरके तटपर 'श्रीविधनाथ' धोर 'अन्नपूजाजी' के दर्शन होते हैं ।

५-दशाश्वमेध-यह एक डील्पर मंजिर बना हुआ है जिसमें पशुदेवोंके दर्शन होते हैं ।

इनके सिवा मार्कण्डेय तथा माण्डव्य ऋषिके आश्रम तथा और भी बहुत से पवित्र स्थानोंके दर्शन होते हैं । एक समय था जब यहा अठारसी महत्व मुनिजन निराम करते थे । इस समय भी यद्यपि उन मुनिजनोके दर्शन तो नहीं होते, तो भी नैमिपारण्य एक तपोभूमि है । इसके दर्शनासे ही हृदय पवित्र होता है और भगवद्रजनमें प्रवृत्ति होती है । यहा एमे भी बहुत से मठ हैं जिनका अब केरा नाम ही शेष रह गया है, यहा -याममठार, गंगोत्रीमठार एव पुष्करसरारदि, यहा प्रत्येक वर्ष जो राजा-महाराजा एव सेठ साहकार यात्राय जात हैं उनका स्तय है कि उनका अर्णाकार करार पुण्य एव यात्र नागा मन ।

नैमिपारण्यका परिक्रमाम और भी बहुत से तार मिलते हैं । ब्रजके समान नैमिपारण्यकी भी चौरासी कामका परिक्रमा है ।

एक दूसरी परिक्रमा ३॥ मीलकी भी है। उपर्युक्त तीर्थ प्रायः
 क्रमा परिक्रमामें हैं। नमिशरण्यकी बड़ी परिक्रमा फाल्गुनकी
 अमास्याको प्रारम्भ हाकर फाल्गुन शुरू २५ को नमिशरण्यमें
 हा समाप्त होती है। इस यात्रामें भी यात्रियोंको भोजनादिकी सब
 प्रकार सुविधा रहती है।

कहते है, भगवान् रामचन्द्रजीने त्रिसिष्ठजीका आज्ञासे यहाँ
 आकर एक अश्वमेध यज्ञ किया था। ब्रह्मावर्तकी भौति यहकि
 तार्पणारा भी यज्ञ-स्थानपर भस्म निकलनके चिह्न दिखलाते हैं।
 द्वापरयुगमें पाण्डवोंने वनवासके समय अपना बहुत-सा काल यहीं
 ध्यतात किया था। एक टालेपर भगवान् श्रावण्य और पाण्डवोंकी
 मूर्तियोंके दर्शन होते है। यह टीला पाण्डवोंके नामसे हा
 गियात है।

इस प्रकार सिद्ध होता है कि किसी समय यह स्थान बहुत
 एकत्र तपोवन था। किन्तु इस समय जो नीममार बस्ता है वह
 तो सुन्दर सुन्दर भवनोंसे मुशोभित हो रही है। व्यापारियोंने अपना
 कारगर फलाकर इसे गल्लकी एक अच्छी मण्डी बना लिया है।
 यहापर मम्बूत आर हिन्दाकी पाठशालाएँ, टाकखाना और अन्नक्षेत्र
 भी है। फलादिको छोडकर भाजनकी शेष सब वस्तुएँ यहा मिल
 जाती है। निवेकी यात्रीगण नेमिशरण्यमें आकर प्राचीन ऋषियोंकी
 आदर्ग दिनचर्या आर उनके सात्त्विक जीवनका स्मरण कर उनका
 यान करते हुए अपना श्रद्धाञ्जलि समर्पण करते हैं।



मिथिला

नैमिषारण्यमें गोपी और चक्रतीर्थका घाट पर तीर्थकी पवित्रता करने यात्रातोग महात्मा दधीचि ऋषिने तपोभूमि मिथिला की यात्रा करते हैं। 'मिथिला'का वर्णना नाम 'मिसरिण' है। यह भीमसारमे ६ मील आगे दूमरा स्टेशन है। स्टेशनमे आ। भीमसा दूरारर तीर्थ है। यहाँ यात्रियोंके छहरोर त्रिये धर्मशास्त्र है तथा और भी स्थान गाना रहते है जिनमें तीर्थपुत्रागी यात्रियोंको छह्राने हैं। इस परितर स्थानपर दधीचि ऋषिने तप किया था और नियन्त्रमे त्रिये बाणगगा नामका सरोवर निर्माण किया था। वही पीछे दधीचिगुण्डके नाममे विख्यात हुआ। इस सरोवरका जाणाद्वार महाराज विक्रमान्तिल्यने कराया था। यह घाटा आरसे पड़ी दीवारमे त्रिरा हुआ है और इसमें आनाति तीर्थविधि करनेके त्रिये चड़ा मुठर पका घाट बना हुआ है। मगसके बीचमे बाणगगा नामका एक पका वृष है। यात्रा तरकर गहा जान है और उस वृषके जलका आचमन लत है। दधीचिगुण्डके तटपर का पुराने बरगके वृक्ष हैं। घाटपूर्वके दगनमे वे वृक्ष रहत पुराने माइम हात है। यहाके तीर्थपुत्रारियोंका कथन है कि जत्र रात्रसूयथा करके महागज युगिष्ठिर पहा आष धे तत्र उहाने रन वृत्ताका लगाया था।

मन्वि ऋषिचिन्ता जन्तु उरगत पुराणाम प्रसिद्ध है। इनका कथा इस प्रकार है कि तिम समप इष्ट आर वृत्रामुरका संग्राम हुआ ता इन्द्रका वृत्रामुरपर विजय प्राप्त करनेका कोई उपाय न सुझा। उनका पाम ऐसा कोई शस्त्र नहीं था जिससे वे वृत्रका वध करके दमनाओपर आया हुई आपत्तिको निवृत्त कर सक। अत अपनी

विजयका कोई उपाय न देखकर वे समस्त देवताओंके साथ भगवान् विष्णुके पास गये । विष्णुभगवान्ने कहा कि इसका उपाय आपलोग ब्रह्माजीसे पूछें । वे जैसा ज्ञावेंगे ऐसा करनेसे आपलोगोंकी अस्य विजय होगी ।

तब सब देवगण क्षीरसागरसे ब्रह्मलोकोत्तरे गये और ब्रह्माजीको अपनी विपद् सुनायी । ब्रह्माजीने कहा कि इस समय नैमिषारण्य और मिथिलखने बीच वनमें दधीचि ऋषि तपस्या कर रहे हैं । यदि उनके शरीरकी अस्थियोंसे कोई अस्त्र बनाया जाय तो उसमें वृत्रासुरका वध हो सकता है ।

तब समस्त देवगण ब्रह्मलोकोमें दधीचि मुनिसे आश्रममें आये और उन्हें अपना मारा वृत्तान्त सुनाकर अपने शरणागतोंकी रक्षाका उपाय करनेकी प्रार्थना की । मुनि इस पाञ्चभोनिक नखर देहके मोहसे ऊपर उठ चुके थे । उन्होंने किन्ना प्रकृति की आनाकानी न करके प्रसन्नतासे देवताओंके हितके लिये अपना शरीर अर्पण करना स्वीकार कर लिया । वे बोले—‘द्वयगण’ यह शरीर तो नाशवान् है । यदि हममें आपत्तोगोका हिनमायन हो जाय तो बड़े आनन्दका बात है । परन्तु मेरा एक सकल्प है । मैं भारतवर्षके समस्त तीर्थोंमें स्नान करनेका निश्चय कर चुका हूँ । मैंना कोई उपाय हो सके तो मैं अपना शरीर आपत्तोगोको प्रसन्नतामें समर्पण कर सकता हूँ । तब देवताओंने समस्त तीर्थोंका जल लाकर मिथिलखने सरोवरमें टाड़ दिया । इसीमें इस तीर्थका नाम मिथिल्य हुआ जो ‘मिथिल’ शब्दका अपभ्रंश जान पड़ना है । उस सरोवरमें स्नानकर दधीचि मुनिने योगप्रारणासे अपने प्राणोंको त्याग दिया । तब

देवताओंने उनका अस्थियाँ कर विश्वप्रयामे उनका एक रत्न बनवाया और उससे रुद्रन वृत्रासुरका रथ करके अमुरोपर विजय प्राप्त की। उसी समय दधाचि ऋषिक त्यागसे मन्तुष्ट हाकर देवताओंने यह वर दिया कि जो पुष्प इस क्षत्रम आकर उस सरोवरमे स्नान करेगा उसे समस्त ताथोके ज्ञानका फल प्राप्त होगा।

यहा वृण्डके तटपर दधीचि ऋषिकी स्मृतिमें एक पुराना मंदिर बना हुआ है। निम्ने उनका प्रतिमाके दर्शन होत हैं। उसके मित्रा एक पञ्चप्रयागतार्थ है। कहते हैं किम समय दशमण समस्त तीर्थोंको मिश्रितमे जानक लिये गये उस समय उहान प्रयागोसे भा चलनके त्रिये प्रार्थना का। परन्तु उहान उनका प्रायना स्थापन नहीं का। स्मृतिये देवताओंन यहा नयान पञ्चप्रयागोकी रचना की। उनके मित्रा मिश्रित तीर्थकी परिक्रमाम त्रिष्णुपद तार्थ, यनरागह तार्थ ब्रधक्षत्र नाज आर त्रियस्णर तार्थ जाद स्थानोंका दर्शन भा भजय करना चाहिय।

कहते हैं दधीचि मुनिका अस्थियोंसे उन वृण्डसे वृत्रासुरका रथ करनेके अनन्तर देवताओंने इस स्थानपर एक यज्ञ किया था, जिसका भस्म कहीं-कहीं अब भी मिलता है। उस स्थानका जन्धायु बहुत अच्छा है। यह भी गन्तका एक अच्छा मण्ड है। यहा सस्वृतपाठशास्त्र, जीपशास्त्र, उरुधर और अन्नक्षत्रके मित्रा एक जगरेजाता मूल भी है। भोजनादिना प्राय सभी समग्री सुग्म है। निम्न स्थानपर दधीचि ऋषिन दहयाग क्रिया या उसका एमा माहात्म्य है कि उहापर निम्न पितृगोका पिण्डदान क्रिया जाता है उहें अनन्त कालके लिये तृप्ति प्राप्त होती है।

गोकर्णनाथ

मिश्रिवक्के पश्चात् यात्रियाका गोकर्णनाथका यात्रा करना चाहिये। मिश्रिवसे गोकर्णनाथ स्टेशन ६७ मील है। जहा जानेके लिये सीतापुरसे गाडी बनलनी पड़ता है। मानापुरतक इस्ट इण्डियन रेलवे है और जहासे स्टेलगण्ड क्रमायें रेलवे जो झाजहापुरको जाता है वसीपर गोकर्णनाथ स्टेशन पडता है।

श्रीगोकर्णनाथ महादेवका मंदिर स्टेशनसे आध मायका दूरीपर है। जहापर धर्मशालाएँ हैं। उनम यात्रा सुविधापरक ठहर सकते हैं। कहते हैं एक बार त्रेतायुगमे गणने त्रेगस पर्यतपर निराहार रहकर श्रीमहादेवका तपस्या का। तत्र उसकी तपस्याम प्रमन्न होकर कगमपति भगवान् अकरन उसे त्र मागनेका कहा।

राणने हात्र जोड़कर स्नान करते हुए भगवान् अकरमे प्रार्थना की कि मुझे लकासे जहा आनेमें जडा कष्ट होता है। अत आप केअससी त्यागकर लकामे निवास करे। तत्र जियजाने उसे दो शिष्यिंग ठेकर कहा कि तुम इन्हे ले जाकर लकामे स्थापित

कर लो, किंतु दम्बा, मागभ पृथ्वीपर मत रगना । यदि ऐसा होगा तो ये यहाँ स्थापित हो जायेंगे फिर लका नहा ना सकेंगे ।

राज्य उन दानों शिवगिर्गोंका एक कोरमें रगना लकाका ले चला । मार्गम उमे लघुशकास निवृत्त होनाका आवश्यकता हुई । ऐसी स्थितिमें यह बड़ा दुःखीमे पड़ा । मयागश इसी समय उसे सामनेसे उजू भक्त आन दिखायी गिय । उह मारा हाथ सुनाकर उस कारका उनके कंधपर रग लघुशकासे निवृत्त होनेके लिये बैठ गया । किंतु उजू भक्त उमके भारको अधिक दारतक वहन न कर सक और राजाके निवृत्त होनेसे पहले ही उहे उंम पृथ्वीपर रगटना पड़ा । मस, वे शिवगिर्ग वहा स्थापित हा गये और पीछे गोरुर्णनाम एर रघुनाथके नामम प्रसिद्ध हुए । श्रीगोवर्ग नाथको 'चंद्रभाल महादेव' भी कहते हे ।

यह यात्रीगेम शिवगगा नामक पवित्र सरोवरमें खान करक शिवमन्त्रिमे जाते ह । पूजनका मय मामान यहीं मित्र जाना हे । शिवरात्रिक अमरपर आर चेरक महीनेमें यहाँ लाखों यात्रियोंकी भाड़ हो जाता ह । उम समय शिवपत्र आर पुष्यादिने द्वारा मर्यादा आच्छादित हो जानक कारण भगवान् चंद्रभागेके दर्शन हान कठिन हो जाते हैं ।

२म स्थियमे एक बड़ा सुंदर गाया प्रसिद्ध ह । कुउ ही दिन हुए दवीमहाय नामक एक मजन श्राशकरके दर्शनोके गिये आये । देवासहायजा नेउहाँन ये परंतु उनके हृदयमें जो शिवाभक्तिकी च्योति जगमगा रहा थी उमने शिव करके उह शिवदर्शनके

लिये भेज दिया । भीड़ बहुत अधिक थी, इसलिये आधी राततक उन्हें भगवान्‌के समीप पहुँचनेका अवसर न मिला । अन्तमें जब मन्दिरका द्वार उद किया जाने लगा तो उन्होंने पुजारीसे दर्शन करानेकी प्रार्थना की । पुजारीने उनकी बात सुनी-अनसुनी करके फाटक बंद कर दिया । तब वे लाचार होकर मन्दिरकी परिक्रमा करने लगे । परिक्रमा करते समय भी उनका चित्त शिर-दर्शनके लिये अत्यन्त लालायित था । वे प्रत्येक परिक्रमाकी समाप्तिपर एक पद रचकर भगवान्‌की प्रार्थना करते थे । इस प्रकार एक सौ एक परिक्रमाएँ पूर्ण हुईं । उनके पश्चात् जिस समय वे अत्यन्त आर्तभाजमे भगवान्‌की स्तुति कर रहे थे उसी समय सहसा मन्दिरका द्वार खुल गया और उसके साथ ही उनके नेत्र भी खुल गये । तब उन्होंने बड़े प्रेमसे भगवान्‌का पूजन किया और अपने निर्मल भक्ति भावसे पुजारीको भी सुग्ध कर दिया । पुजारीने अपने अपराधकी क्षमा माँगी और एक सच्चे भक्तके दर्शनसे अपनेको कृतार्थ समझा । भक्तवर देवीसहायजीने शैम्नोरञ्जनी नामक एक बड़ा ही भक्तिरसपूर्ण ग्रन्थ लिखा है जो शिरभक्तोंके लिये बहुत ही उपादेय है ।

यहाँ जो गस्ती है उसका नाम गोलगोर्णनाथ है । इसे गोकर्णक्षेत्र भी कहते हैं । यह पवित्र स्थान पहाड़ियों और शालके वृक्षोंसे घिरा हुआ है । यहाँ बहुत-से साधु-महात्मा निरंतर निवास किया करते हैं । यहाँकी यात्रा करनेसे मनुष्यकी समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं तथा शिवगङ्गामें स्नान करनेसे उसे दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है—ऐसा यहाँका माहात्म्य है ।

अयोध्या

गोरगर्णक्षेत्रकी परिक्रमा करके यात्रियोंको भगवान्की जन्मभूमि श्रीअयोध्यापुरीकी याग करनी चाहिये । गोरगर्णनाथसे अयोध्या ११५ मील है । जानेका मार्ग सीतापुरतक आर० के० आर० से ओर यहाँसे छोटी लाइन बी० एन्० डबल्यू रेलवेद्वारा चौकाघाट, मनकापुर होने हुए टरुइमडीघाट पार करके है ।

बड़ी लाइनके अयोध्यास्टेशनके निकट छोड़ी दूरपर शहजादपुरके श्रीमहादेवप्रसादकी धर्मशाला है । यह धर्मशाला अयोध्याकी सब धर्मशालाओंसे बड़ी, स्वच्छ और ह्रमादार है । धर्मशालाके पीछे बगीचा है और आँगनमें भी बृक्षोंकी हगियाली रहती है । किन्तु जयसे अयोध्याका छोटा स्टेशन बंद हुआ है और लाइनके इस ओर

दूसरा स्टेशन बना है तबसे यह धर्मशाला और उस ओरकी बस्ती प्राय ऊजड़ हो गयी है । इसलिये अब इसका उपयोग उसी समय होता है जब विशेष अबसरोंपर अयोध्यामें अत्रिक भीड़ होती है । फिर भी यदि कोई यात्री खच्छ आर हवादार स्थानमें रहना चाहें तो उनके लिये अयोध्यामें यही स्थान सबसे अच्छा है ।

अयोध्यान्टेशनपर डूफे, तौंगे, बैलगाड़ी आदि सगारियाँ हर समय मिल जाती हैं । स्टेशनसे बस्ती अनुमानत एक मीलकी दूरीपर है । अयोध्यामें स्वर्गद्वारघाटपर ह्यपरसकी किसी माहेश्वरीदेरीकी बनगयी हुई एक छोटी सी धर्मशाला है । कन्तु यह साफ आर सुन्दर तथा इसका प्रबन्ध भी अच्छा है ।

दूसरी धर्मशाला नयेघाटकी मडकपर है । यह सरयूके निकट है और है भी बड़ी । किन्तु पुरानी होनेके कारण साफ नहीं रहती । इसमें ऊपर भी स्थान है, परन्तु वह सर्वसाधारणको नहा मिलता । इनके सिवा यहाँ ओर भी कई छोटी-छोटी धर्मशालाएँ हैं, परन्तु सरयूतटपर कोई ऐसी बड़ी धर्मशाला नहीं है कि जिनमें यात्रियोंको सब प्रकारकी सुविधा हो ।

यात्रियोंको सबसे पहले स्वर्गद्वारघाटपर स्नान करके सरयूका पूजन और तीर्थ-त्रि करनी चाहिये । इस घाटपर रामनयमीके दिन तो इतनी भीड़ होती है कि स्नान करना भी कठिन हो जाता है । इसके ऊपरकी ओर पास ही नागेश्वरनाथ शिवका सुप्रसिद्ध मन्दिर है । अयोध्या आकर यात्री सबसे पहले श्रीनागेश्वरनाथका ही दर्शन-

पूजा करते हैं। और फिर गंगा श्रीरामचन्द्रजीकी परमपरि-
स्मृतिको जामत् करीया अर्थात् स्नानोको जाते हैं। उभमें
गङ्गमे एत- यज्ञोंके तीर्थपुत्रागं राम-जन्मस्थानका दर्शन
करते हैं। कहते हैं कि राम-जन्मस्थानका स्नान करनेका
जीसके चारामा लग्न योनियामें जन्म लेनापर भा उभम होनासके
कर नहीं होते। राम जन्मस्थानके पाम उभमें भिगी हुई निर्गी
मुगल-सम्राटकी राजापी हुई ममजिद ह। यह ममजिद जन्मस्थानके
प्राचीन भवनको तोड़कर उभमें स्थापित बनायी गयी है। जन्म
स्थानके गेटे मे मन्दिरमें भगवान्की आस्थावस्थाकी छोटा-गटी
मूर्तियोंके दर्शन होने हैं।

अह! भगवान्ने इसी स्थानपर जन्म लेकर नाना प्रकारकी
मनोरम आन्गीलाएँ की थीं। इनके पाम ही मामनेत्री ओर भगवान्-
की उदीरु स्थान है। यह उद्यम जन्मके ठुठे दिन मनाया जाता
है। इस स्थानमें पथरके बने हुए कुउ पात्र और बटन आदि हैं।
कहते हैं, यहाँ माना कीर्त्याजी रसो बनाया करती थीं। प्राचीन
कालमें बड़े-बड़े महाराजाओंके यहाँ भी पाकशाखने अनुमार
भोजन बनानेका कार्य गृहदेवियों हा लिया करता था।

राम जन्मस्थानका दर्शन करके यात्रागो गहनुमानगढ़ीको जाते हैं।
हनुमानगढ़ीका दर्शन दूरसे हा होने उभता ह। यह स्थान भिगीके प्राय

सो गज ऊँचे पर्वतको चौरस खोदकर बनाया गया है। महाराज रामचन्द्र-जीके ममथमें यहाँपर श्राहनुमानजाका निवासस्थान था। उसलिये उनकी पवित्र स्मृतिमें उर्मा स्थानपर हनुमानगढी बनायी गया है। अयोध्या-में यहा सबसे प्रधान स्थान है। गढाके अङ्कारमें बहुत-सा जमान और जायदाद है। यदि किमीका उर्मशाश कुआँ, प्रगाचा अरु कोर आर सार्वजनिक स्थान बनाना हा तो उसक लिये गढाके महन्तसे प्रसन्नतापूरक भूमि मित्र मरुती है।

गढाके द्वारके आगे प्रसाद बचनेवालोंका एक बाजार है, यहा मिथानके मित्रा पुष्पाङ्क पूजनका मामान भी मिल जाता है। इस जगह उदगेका बहुत जाग है। यदि प्रसादको छिपाकर न रक्वा जाय तो वे हाथमेमे भा उान ल जात है। मङ्कसे पचासों सादियाँ चढ़नेक ग्रा गढाका मुख्य द्वार आता है। भीतर आगनमें श्राहनुमानजाके दर्शन हाते है। पाठकोंने सर्वत्र गडे हुए हा हनुमान्-जाका प्रतिमाएँ देखी होंगी। किंतु यहाँ हनुमानगढीमें विश्राम करता हुई मूर्तिके दर्शन हाते हैं। यहा प्रत्येक मङ्कवार आर मुख्यत रामनवमा आदि विशेष उमरोपर दर्शनार्थियोंका स्तना भाड होता है कि दर्शन मिटना कठिन हा जाना है। मूर्ति भी पुष्पोद्वारा सर्वा छिप जाता है। मूर्तिकी परिक्रामे बहुत काचड हो जाता है। यहा सर्वदा पूजन एव पाठदि हाता रहता है। अयोध्यामें यह बात सर्वत्र सुननेम आता है कि न्य पुरीमें रहकर श्रागोमार्त्तजाकृत हनुमानचालासाके निर्यप्रति नियमानुसार सौ पाठ करते रहनेमे इकास दिनमे अभीष्ट सिद्धि हो जाती है। इसीमे यहा धनी व्यक्तियोंकी औरम भी पण्डितोंद्वारा पुरश्चरण होने रहते हैं।

मन्दिरके आगे जगमोहन और औगनरु इतर-उधर साधुयोगी-
क रहनेके स्थान हैं। यहाँपर साधुओंको नियम भानन किया जाता
है। अयोध्याकी महारानी दम्पनेपर हनुमानगढ़ी एक क्रिके समान
लियाया जाता है।

हनुमानगढ़ी पाठे एक इमरत मर है। मरमें अधिक बृक्ष
मरतक हा हैं। यह मर बहुत लम्बा चौड़ा है। यहाँ प्रातः
आर सायंकाल नियम मरपर हनुमानगढ़ीके महतरा ओरमें
गनराको मवेच्छापस पानाम भाग हण चन विद्यये जाने हैं।
उन समयका गनरा सेनाका इत्य लगे ही योग्य होता है।

स्वगद्धारघाटका स्नान और राम जन्मस्थान तथा हनुमानगढ़ीका
दशन करनेके पश्चात् यात्राअग अग्रना इच्छानुसार अथ स्थानांका स्नान
कर सकते हैं। भगवान्की जन्मभूमि अयोध्यापुरीमें ऐसे मरुत से
स्मृतिचिह्न है जो हृदयम प्रभुका प्रति धर-वाय और भक्ति
उत्पन्न कर देता है। अब हम उनमेंसे कुछका सक्षपम परिचय
दता है।

कनकभवन-महाराज टाकमगढ़ने गर्यो मर्या मर्च करके
यह अति सुन्दर और राजमरुत समान विगाल मन्दिर बनवाया
है। महाराजमें इसने मरिचि चर्चक मरि भा रायसे सनापनकर
मरुत कर दिया है। इस मन्दिरमें नियमप्रति कुल्लन जुल्ल उत्तर
हाना रहता है। इसमें साधु स यासिपोक लिय अनक्षेत्र भा हैं।
जगमोहनका मीतर भगवान् राम और भगवता मीतार्वाकर बड़ी
मनोहर झाँकी है। सामने ही एक बहुत लम्बा-चौड़ा समापणहण

(दालान) है, जिसमें सऊड़ों मनुष्य सुविधापूर्वक बैठ सकते हैं। दालानमें सगमरमरका गिल्फे ऊपर एक गैंग है, जिसमें मन्दिरकी स्थापनाका मन्त्रित गतिहास दिया हुआ है। मन्दिरके बाहर एक कोठ है, जिसमें पुष्पाटिका लगाया हुआ है और एक विश्राम-स्थान भी है। इस मन्दिरको जनसत्ता टोसमगहनरंशने अपने धनका मार्थक किया है और स्मन उनका सुयज्ञको भी स्थायी कर दिया है।

कांपभवन—यह वह स्थान है जहा कुटिला तसी मन्थराके बहकानेसे महारानी वैश्याने महाराज दशरथसे भगवान् रामके लिये बनवास और भरतके लिये राज्याभिषेक—ये दो जर मागे थे। यहां मूर्तियोंद्वारा हम घटनाको प्रदर्शित किया गया है। हमी मन्दिरके दूसरे भागमें भगवानक चाबीसों अन्तारोंके दर्शन होते हैं।

सीतारमोई—इस स्थानपर भगवता साधुजी रमाई बनाया करती ग। यहां एक आर श्रीमतीनारामका शौंका है और दूसरे स्थानपर महारानियोंमहित महाराज दशरथके दर्शन होते हैं। इस स्थानपर एक तहम्बानेमें कुछ मूर्तियों उतरकर सातारसोंके दर्शन होते हैं। यहां चून्हा, चक्रग और बलन रखे हुए हैं तथा पाम ही श्रीमतीना, लक्ष्मीजी और वशिष्ठजीके दर्शन होते हैं।

राजमहल—इस स्थानपर एक मन्दिरमें श्रीरामचन्द्रजी, सीताजा, लक्ष्मणजी, भरतजी, शत्रुघ्नजी और महामुनि वशिष्ठजीकी चरणपादुकाओंके दर्शन हैं।

रत्नसिद्धासन—यहाँ भोगम नाना और लक्ष्मणजी के दर्शन होने हैं । कहा जाता है कि गजगदाह मलय भगवान् यहीं विराजमान हुए थे ।

आनन्दभवन—यहाँ महारानी श्रीन्यायक गौड़में रामचन्द्रजी, धिक्कीकी गोष्ठी भगवता और मुष्मिप्राजीकी गोष्ठी लक्ष्मणजी एवं शत्रुघ्नाजी के दर्शन होने हैं । इन स्थानपर उनकी वास्तुलोगोंका अङ्गोका करने के लिये काकमुद्रुण्डिनी आप करते थे । यहाँ उनकी भी मूर्तिके दर्शन होने हैं ।

गमरुचहरी—इस स्थानपर भवान् रामचन्द्रजीका न्यायालय था । यहाँ उठकर उन्होंने श्रीमन्नार्जा के लिये म गोरुपत्तद सुनाया । इस मन्त्रिम बहुत सा आन्ध्रमार्गिकों हैं तथा भीमन्नाराम आदि अयाय देवताओंके भी स्थान होने हैं ।

नन्दिग्राम—यह अयायाम चौह मन्त्रिका दरार है । रामचन्द्रजीके समय पर भगवता भगवान्का राधाभिवर करनेका दृष्टान्तसे चित्रकृत गये थे उस समय पर भगवान् उनका प्रन्तार स्वाकार नहीं किया तो पर उनका अरण्यपाटुका ल आय थे और उह राधासनपर स्थापितकर स्वयं मन्त्रों तपस्या करने हुए उनकी आला लेकर राधाका भा प्रन्तार करते थे । भगवान् रामचन्द्र आनेकर उन्होंने भी अयायाम प्रवेश नहा किया और वे बाह्य स्थानक नन्दिग्राममें हा रहकर तपस्या करत रहे । इस प्रकार महाराज भक्तने निम आनुप्रमना अनुपम आदर्श रम्यकर भारतका मुख्य उन्तार किया है उसका क्या अरु नहीं भा दर्शन होता है ?

नदिप्राममें भरतजीका सस्मरणस्वरूप भरतमन्दिर और भरतकुण्ड आदि कई स्थान हैं ।

लक्ष्मणकिला—स्वर्गद्वारसे थोडा दूर लक्ष्मणघाटपर मिट्टीका एक ऊँचा टीला है । उसके ऊपर लक्ष्मणजीका मन्दिर है । अयोध्या आकर लक्ष्मणजीके दशन अर्घ्य करने चाहिये । इस स्थानपर लक्ष्मणजी प्रयश्च फल देने हैं । यहाँ सरयू-किनारे लक्ष्मणघाटपर कोई असय नहीं बोलता । यदि कोई बोलना हे तो उसे अर्घ्य नष्ट मिलता है । यहाँकी अदालते भी बड़े-बड़े मामले लक्ष्मणजीके उपर रखकर छुड़ा पा जाता है । जिस प्रकार पुरीमें लोकनाथकी शपथ खानेसे ग्राहके निरासी भयभीत होते हैं उन्ही प्रकार अयोध्यामें लक्ष्मणजीकी शपथसे लोग घबराते हैं ।

मणिपर्णत—इस स्थानपर श्रीसालाजी झूलनोत्सव मनाया करता थी । इस समय भा श्रावणमासमें अयोध्याके झूलनोत्सवका आरम्भ इसी स्थानसे होता है ।

गुप्तारघाट—यह स्थान अयोध्यासे सात माल और फैजाबादसे तान मीलकी दूरापर है । यहासे भगवान् रामचन्द्र साकृत् राम सिंगारे थे । तथा इसी स्थानपर लक्ष्मणजीका योगशरणाद्वारा शरीर-त्याग किया था । सच तो यह है कि जितना प्रेम भरतजीका श्रीरामचन्द्रजीसे था उतना ही श्रीरामचन्द्रजीका लक्ष्मणजीके प्रति था । वसीसे लक्ष्मणजीके स्वधामगमन करते ही उन्होंने भी समस्त अयोध्यावासियोंको अपन महाप्रस्थानकी सूचना दे दी और उन सबके सहित दिव्य विमानोंपर आरूढ़ हो सने

प्रवेश किया। गुप्तारघाट उसी घटनाकी स्मृति दिलाता है। उस समयका दृश्य चित्तके सामने आते हैं। उसका कान सत्य हागा जो विचित्र न है। भगवान्‌का स्मृतिके साथ उस समयकी भी स्मृति जाग्रत हो उठना है। अहा ! 'रामराज्य' यह शब्द कल्पे आतिमय समयकी याद दिलाता है। एक बार देवर्षि नारदने उस दिव्य वाक्का वणन करते हुए वाणामें गाया था कि आपका 'रामराज्य' प्रजापति, दैविक और भौतिक इन तीनों तापोंसे पांडित नहा है। ऋतुओंने अपनी मर्यादा छोड़ दी है, मंत्र ऋतुआम सब प्रकृतिके फल फलत उगे हैं। प्रजाजनका क्रिया प्रकृतिका कष्ट नहा है। पिताके सामन पुत्रकी मृत्यु नहीं होता। लगधन या यमे सम्पन्न हैं। स्थान स्थानपर वृष, बाटिकाएँ, पामाले आर अन्नश्चर गुप्त रहनका कारण बटाहियों-को क्रिया प्रकृतिका कष्ट नहा होता। जगह-जगह चिक्रिसालय सुल हुए हैं तथा सेवाकार्यके दिव्य स्वयमेतद्वलाग घूमने रहते हैं। 'राज्यमें जो शक्तिशाली व्यक्ति क्रियाको कष्ट तो नहीं दे रहा है'—'स बातको जाननेका त्रिब बहूत से गुप्तचर घूमने रहते हैं। तथा राज्यका ओरसे ऋषि मुनियोंने त्रिब यत्नमात्रा पट्टानेका भी समुचित प्रबंध है।

गुप्तारघाटपर भरयूम गंगाका समान वग है। यहाँ 'रामराज्य' काद वाराएँ हा गयी हैं निह लग महकगरा महकुर पुकारत हैं। इस घाटपर श्रीगुप्तहरि भगवान्‌का मन्दिर है तथा घाट आर मन्दिर बहुत लगत लगाकर बनाय गय हैं। यह स्थान बड़ा ही दर्शनीय है।

सूर्यकुण्ड—यह कुण्ड सूर्यवशी राजाओंकी स्मृतिमें बनाया गया है। यह बहुत बड़ा सरोवर है। उसके तान ओर पक्के घाट बने हुए हैं। यह गमघाटसे चार मालकी दूरीपर है। मड़क पकी है। सरोवरके तटपर सूर्यभगवान्का मन्दिर है।

माता रघुनाथदासकी छात्रनी—स स्थानपर बहुतसे त्रैप्यत्र सतजन निवास करते हैं। उ-हें स्थानकी ओरसे भोजनादि भा दिया जाता है। माता रघुनाथदासजी एक प्रसिद्ध महात्मा हो गये हैं। अपने पूजाश्रममें वे चौकानारीकी नाकरा करते थे। उन्हें श्रीरामायणजीकी कथा सुननेका बहुत चाव था। एक दिन उत्तरकाण्डका वह प्रसङ्ग ही रहा था जब कि भगवान् पुष्पक विमानपर उठकर अयोध्या पधारे थे और उनके आगमनकी सूचना पाकर समस्त पुरजासी नर नारियोंके सहित राजमाताएँ और गुरु गण्डिजी भी अच्यन्त व्यग्र होकर नगरके बाहर एकत्रित हो गये थे। इस प्रसङ्गका सुनते सुनते रघुनाथदासजी ऐसे तड्धान हो गये कि उन्हें देहानुसन्धानतक न रहा और वे मानो प्रत्यक्ष हा वह सब लींगएँ दग्ने लगे। यह समय भी उनकी नाकराकी ही था, परन्तु वे ता कित्सा दुमरे ही लकमें विचर रहे थे। अतः नक्तभयहारी श्रीभगवान्को अपना आन रखना पड़ी और उन्होंने रघुनाथदासका रूप धारणकर उनकी जगह डबूटा प्रजायी। जब रघुनाथदासको चेत हुआ और अपनी नोकराका समय प्रीत जानेका पता लगा तो वे बड़ी पहनकर नियत स्थानपर पहुँचे। वहाँ लोगोंमें सारा हाल जानकर उनका हृदय प्रभुके प्रति कृतज्ञतासे

प्रक्षीभूत हो गया और वे नीजरी गेहूँकर रात-भजनमें लग गये ।
 यज्ञान्तरमें वे अथाप्यारु एक बहुत प्रतिष्ठित मत्त रूप और उनका
 म्यान सैकड़ों साधुओंका निवासस्थान हो गया । करते हैं जिस
 समय उन्होंने यह त्याग किया था उस समय अयोध्याके बहुत-से
 नर-नारी और महात्माओंने उनको निताकी मम्म मन्मपर धारण
 की थी और उनकी स्मृतिमें उपराम भी किया था ।

धारा मनीरामकी छावनी-यह स्थान बाबा रघुनाथदासजी-
 के स्थानकी अपेक्षा भा बड़ा है । प्रायः दो बीघा भोजपुरका टीलसे
 छाया हुआ पहा स्थान है । उसमें बहुत-से महात्माओंने ज्ञान
 होते हैं । बाबा मनीरामकी भी बहुत प्रतिष्ठित महत्ता थी ।

धारा माधोदासका अखाड़ा—यह अगाधपर नानकपंथी
 साधुओंका अभिज्ञार है । यहाँ नियमनि अधिकतर नानकपंथी
 साधुओंकी ही भाजन कराया जाता है । इनके सिवा त्रिगम्भरा
 अखाड़ा, नवमंजाराकी ज्ञाना, मौनीनीकी ज्ञाना आदि आर
 भी बहुत से स्थान हैं । सो-सौ, पचास-पचास साधुओंका भाजन
 करानेकी ता ब्यामियों सख्याएँ हैं । इन स्थानोंपर सर्वदा भण्डारे
 और श्रीमोनारामकी मधुर रनि हुआ करती है ।

तुलसीचौरा—यह एक स्थान है जहाँ रहकर श्रागोसाई
 तुलसीदासजाने रामचरितमानसकी रचना की थी । यह एक उम्वा
 चौड़ा चबूतरा है । इसके एक ओर एक कुटा है । इस स्थानपर
 शारामायणजीकी कथा प्रायः होता रहता है ।

महाराज रामचन्द्र नर रात्रणको विनयकर पुष्पक विमानसे अयोध्या पधारे थे तब उनके साथ हनुमान्, अगद आदि सुर्य सेनापति भी आये थे । भगवान्ने उनके निवासके लिये बडे बडे सुन्दर महल बनाये थे । आनकल उन महलको तो कहा पता नहा लगना, किन्तु उनके रहनेके टीले अत्र भा प्रसिद्ध हैं आर उनकी स्मृतिमें विभीषणकुण्ड, सुग्रीवकुण्ड, सीताकुण्ड, अग्निपुण्ड आदि कई सरोवर बने हुए हैं । ससारमें यशस्वा पुरुषोंका नाम कभी नहा मिटना, किमी-न फिसा रूपम उनकी स्मृति बनी ही रहती ह ।

काशाकी भौति अयोध्याम भी भारतगर्भके राजा महागनाओंके मन्दिर और पक्के निवासगृह बने हुए हैं । यहाँके स्वर्गाय महाराज ददुआजाका महल भी देखन योग्य ह । हममें 'अयोध्यागज्य-लाइनेरी' नामक एक पुस्तकालय हे, जिममें प्राय सब प्रकारकी नयी आर पुरानी पुस्तकोंका संग्रह ह । अयोध्याम संस्कृत विद्याका भी अच्छा प्रचार है । यहाँका समय बडा विद्यालय 'उडे स्थान' के नामसे प्रसिद्ध ह । आर भा बहुत-सी ठोटी-बडा पाठशाळाएँ हैं, जिनमें प्राय एक सहस्र विद्यार्थी अध्ययन करते हैं ।

अयोध्याकी परिक्रमा—इस परिक्रमाम आर भी गहन-से देवस्थान मिलते हे । यह कार्तिकक महानमें होता ह, जिनमें बाहरके यात्रियोंके अनिरिक्त बहुत-से अयोध्यागामी भा सम्मिलित होते हैं । उम समय अयोध्याके मारे मार्ग यात्रियोंसे भर जाने हैं । लोग लागोंकी मर्याम सीतारामका धनि करके आकाशको गुञ्जायमान कर देने हैं । गान्धीकिरामायणक अनुसार अयोध्या

सीमा बारह यात्रन लम्बा और तान योजन चौड़ी माना गया है। अब भा किसी किसी स्थानपर बुआँ आदि गोदनेके मन्म जो मन्म आर पुरानी जम्बा चौड़ी गेटे मिश्रती हैं वे पुरानी अयाध्याया पश्चिम दत्ता हैं। अयोध्याकी यात्रा भी हाता है। परन्तु जसमें समथ अगिक गगता है, इसलिये अगिगद यात्र जसमें सम्मिलित नहीं हात। जनयात्राम पावनजन, हिमवन जोगवन, पुष्करजन आदि मिश्रत हैं अयाध्यामे सात मीठका दूरीपर सरयूक विनागे यह स्थान भा है जहा भग्नजीन महाजन दशरथका अन्वेषण कम किया जा।

अयाध्याम प्राय प दश सहस्र ता जण्यत हा रहने है। महापर जसा कस विरग हा घर हागा जसमें टागुग्दता न हो। अयोध्या गतपुरियाम है। इसलिय यह भा माधपुरी मानी गया है। काशाकी भाति यहा भा कितन हा श्रद्धाठु पुष्प अरना अतिम जातल अतल करनेके लिये निगाम करत हैं। यहापर श्राम जस्यता, मिश्रल गुरु, अन्नक्षेत्र आर सस्कृतका कितना हा पाठशागएँ हैं। यहाका जगजु गहुत अन्त है। अब ता काशापुरीका भाति अयाध्याकी भा उतति हो गता है यार श्युनिमि-पेटिटान यहा मिश्रल जगनका प्रथम किया है।

माहात्म्य—महाभारतमे जसमें स्पिका है कि अयाध्याका यात्रा आर गुमारवाटपर स्थान करनका यात्रा सब प्रकारका पापोन मुक्त हाकर अन्तमें स्वर्गका जाने हैं तथा जिन भाथयानोका यहा देहात होता है उन्हें मोक्ष प्राप्त हाता है।



जौनपुर

इस प्रकार भगवान् रामचन्द्र की जन्मभूमि अयोध्याक दर्शन करके यात्रियोंको जानपुर आना चाहिये । जानपुरका प्राचीन नाम यमदग्निपुर है । यह अपभ्रंश होते-हाने यमदग्निपुरसे यमनपुर और अब जानपुर हो गया है । काशी आर अयोध्याक मध्यमे होनेक कारण यहाँ साधु-सन्ध्यामा उराग आते-जाते रहते हैं । गंगासागरकी यात्राक समय ता यह देश दशान्तरक महामाओका अन्ध्र ग्रासा पडात हो जाता है । यहाँका परिपाटाक अनुमार उनके सकारके डिये बाजारमे चडा हो जाता है ।

अयोध्यासे जानपुर पचास मा १ । यह ई० आई० आर० एर ३० एन० टबन्ध० आर० का नङ्कशन स्टेशन है । शहर स्टेशनसे मित्र हुआ है फिर भा यहा नागे टका आरि मगारियाका रिता भा समय कमा नहा रहना ।

यात्रियोंके टहरनक त्रिये गामतीनटपर वृष्णानुटार नामका एक सुन्दर आर पक्का धर्मशाळा है । उम ममशाळाम तो सा यात्रा बडा सुविधापूर्णक ठहर सकत हैं । मका प्रन्ध एक कमेटी-दारा होना है ।

जानपुरक मुख्य मुख्य स्थानोंका विवरण इस प्रकार है—

हनुमानघाट—यह धर्मशाळाके सामने हा है । यहाँ अम्हागोरनाका मन्दिर है । इस मन्दिरके पास पीपलके वृक्षकी

छाया रहता है। यह स्थान बड़ा गम्यार है। मन्मथारके नि गली बड़ा भीड़ हो जाती है। कल्प पुण्यमात्रा और पूजनके सामग्री एक मागमे मिल जाता है। हनुमार्जीके पाग एक शिखरकी भा मन्थ है। यहा आगयनागगर्जा नी एक बड़ा सुन्दर मन्थ है। मन्थ मायन एक आग धर्मशाला भी है निमम इस यात्रियोंके टहरनका जगह है। सयनारायणके मन्थ आग विश्रानीकी मन्थ है। इसमें भगवान् शृणार गड़ी मनोहर आर्क्षी है।

गुल्हरघाट—यहा श्रीरागशृणार एक सुन्दर और सुनिगा मन्थ है। उमम साधु मन्थ और गृहम्य-यात्रियोंके टहरनेके लिये भा पयाग स्थान है। इस मन्थके भूतपूर्व मन्थ धार गगादासजी अपना साधुमेगने लिय प्रमिद थे। इस समय भी मन्थके गग भागादिका मन्थचित प्रथ है।

अचलाघाट—यह स्थान धारा नारायणाम नानकपथिक है, परंतु यहा मभा मन्थारके साधुओंका सन्धार हाता है आर उहे भावन नी कराया जाता है। अभी हाटमें इस घाटका जीर्णोद्धार कराया गया है। घाट मन्थ बड़ा है कि तो सा मनुष्य बड आनन्धे जान कर सकत है। घाटके ऊपर किसी स्थानीय देवीका मन्थगी हू एक ठाटी-सा धर्मशाला है।

यमद्वि-आश्रम—अपभ्रश हाते-हाते आनर इसका नाम जमेया पद गया है। यहामे तीन माल्नी द्वीपर गामनानटपर एक आश्रम है। यहा अभी अरिक् समय नही हुआ, एक परमहस धारा रहने थे उन्होंने उभा मिमासे कोर् याचना नही की। वे

बहुधा जगलके निर्जन आर निराश्रय स्थानोंमें जुटी बनावकर रहा करते थे । इन्होंने यमदग्नि-आश्रममें योगाग्निद्वारा शरीर-त्याग किया था । जिस प्रकार सती खिया अपने शरीरसे ही अग्नि प्रकट करके भस्म हो जाती है उसी प्रकार उन्होंने भी अपने शरीरको योगाग्निसे भस्म किया था । जिस समय उनका शरीर जल रहा था पुलिसने जमेयाके लोगोंका यह अभियोग लगाकर पकड़ लिया कि महामाजीके पास धन था । उसे लेकर उन्होंने इन्हें जला दिया है । जमेया-निवासियोंने अपनेको निर्दोष सिद्ध करना चाहा परन्तु जब पुलिसने उनकी बात न सुनी तो उन्होंने कहा कि यदि बाबाजीके शरीरकी अग्नि गंगाजल टाँसेसे शान्त हो जाय तो हमें अपराधी समझा जाय । पुलिसने जलते हुए शरीरपर गंगाजल छुड़वाया, परन्तु इससे वह अग्नि शान्त न हुई । इससे उन्होंने ग्रामवासियोंको निर्दोष जानकर छोड़ दिया । परमहंसजीके निर्वाण-दिवस कार्तिक कृ० २ को यहाँ एक मेला होता है । उस समय सहस्रों स्त्री-पुरुष उनकी समाधिपर श्रद्धाञ्जलि समर्पण करते हैं ।

उल्लेनाथ-आश्रम—यह स्थान बाबा उल्लेनाथका है । इन्होंने यहाँ बीस वर्ष तपस्या की थी । हमारी यात्राक समय ये योगिराज जाग्रित थे, परन्तु अब इन्होंने भी स्वेच्छापूर्वक अपना शरीर त्याग दिया है । इन्होंने एक गुफा बनवायी है । उनका अग्रिम समय इसी गुफाके भीतर व्यतीत होता था । उन महात्माने भी किसीसे याचना नहीं की । यह स्थान पकान्त होनेके कारण बड़ा शान्तिप्रद है ।

श्रीकियादेवी—यह एक सुप्रसिद्ध सिद्ध पाठ है। यहाँ प्रतिदिन आस पामक सैकड़ों नर नारा आने हैं, सोमवारक दिन तथा प्रत्येक पूर्णिमा और अन्यान्य पत्रापर तो यहाँ पूरा मेग-सा लग जाता है।

यह भगवन्नाथ मन्दिर है। इसका पाम हा प्रसाद और पुष्पमालादिकी दुकान है। मन्दिरसे मिला हुआ एक सरोवर है। उसके तटपर एक श्रीरागृष्णका भा मन्दिर है तथा पास हा एक पक्का धमगाला है।

सूर्यघाट—यह गामतीजीके रूपर एक पक्का घाट है। स्नान बहुतसे देनालय हैं। पर्यन्तिथियोंपर आस-पासकी जनता अधिकतर इसी घाटपर स्नान करती है।

रामघाट—यह श्मशानभूमि है।

जिस समय जानपुरका नाम यमल्लिपुरमे यमनपुर हुआ था उस समय यहाँ यमनाथ राय था। उन्होंने यहाँ कई बड़े बड़े देवालियोंका रिपम करके हा बड़ा मसजिद बनवायी है जो आजरासे बाने करती है। उनमे लगे हुए मूर्तियोंके रण्ड कम भा दृष्टिगाबर हात है।

गोमतीके तटपर पछनसनाद् फीरोजशाहका मिन है। इसके भीतर जो पुराना इमारत बना हुआ है व अभीतक बहुत-कुछ सुरक्षित है। इस किल्लेपर बाहर भीतर एक प्रकारके वृक्षोंका वन-सा रण्ड हा गया है। इसका रनाक त्रिय गमनमेष्टका वारमे एक आदमा किअम नियुक्त है।

यहापर गोमतीजीपर एक फयरका पुन दग्धने योग्य है। इस पुठको सिफन्दरवाहन बनवाया था। पुठके ऊपर दुकानें

वनी हुई है। इनसे इस पुलकी शोभा और भी बढ़ गयी है। पुलके उस पार एक पुस्तकालय है, जो प्रातः रात्रि जैसे सापकालके छः घण्टे तक खुला रहता है।

साँपनाथ—यह मन्दिर जानपुरसे पाँच मील दूर है। इस स्थानपर साँपनाथ महादेवके दर्शन होते हैं। पासही एक सरोवर है। शिवरात्रि और श्रावणके महीनेमें यहाँ हजारों स्त्री पुरुष आते हैं। यह एक मनरुण्डमे है। पहले यहाँ कोई मन्दिर नहीं था। अभी थोड़ा समय हुआ एक पामल साधुने शिवलिंगको उखाड़कर फेंकना चाहा था। किन्तु जब पन्द्रह फुट जमीन खोदनेपर भा उसका पत्ता न मिला तो लोगोंमें उड़ा आन्दोलन हुआ और यहाँ एक पक्का मन्दिर बनना दिया गया।

सन् १९८७ में मञ्जलीशहरके पास एक टालेको खोदनेपर एक पक्का शिनालय निकला है। उस टीलेपर वृक्षादि थे। अभातक उसकी खोदाई हो रही है। उस मन्दिरको देवनेके लिये सहस्रों मनुष्य आते हैं। इसी प्रकार इस भूमिम समय-समयपर बहुत से प्राचीन देवगण्य और महल्लोकि गण्डहर मिलते रहते हैं।

यह वही स्थान है जहाँ किसी समय तपोमूर्ति महर्षि यमदग्नि रहते थे। एक बार उन्होंने अपनी कर्मपत्नी रेणुकाके किमी आचरणसे रष्ट होकर अपने पुत्रोंको उसका वध करनेकी आज्ञा दी। किन्तु उनका साहस मातृ-वध-जसा पाप करनेको न हुआ। तब उन्होंने अपने सत्रमे ज्येष्ठ पुत्र परशुरामजीको भद्र्यासहित माना रेणुकाका मस्तक काटनेकी आज्ञा दी। परशुरामना पिताके तपोरत्नसे परिचित थे, अतः उन्होंने उनकी आज्ञाका पालन करनेमें किसी

प्रसादकी आशासनी न करे। उनकी जमा अहुत विनोभक्ति प्रसाद यमदक्षिणी बहुत प्रसन्न हुए और उनसे वर माँगेवा यका। तब उन्होंने यही वर माँगा कि उनकी माता और माता "वेष्ट" वधु जावित हो जायें। मुनिवर्ष प्रसादसे एसा ही हुआ और उन्हें परशुरामका इम कठोर श्रयका भी कुछ शाप न हुआ।

एक बार भागनमपाद् सन्मार्जुन अपनी सेनाके मन्त्रि यमदक्षिणे आश्रममें आ पहुँचा। श्रुतिने कामधेनुके प्रसादसे समस्त सेनाके सहित मघादका यथाचित आनिध्यमकर दिया। कामधेनुका एसा प्रभाव दगकर महस्यानुन नगवाससे उठे एर ले गया। परन्तु वह पीछे स्वयं मुनिवर्षक आश्रमपर आ गयी। इस घटनाके कुछ काल पश्चात् परशुरामका अनुपस्थितिमें धान रगनेपर सन्मार्जुनके पुत्र यमदक्षि मुनिवर्ष गिर काटकर कामधेनुके ले आये। पविदेमने इस प्रकार मारे जाते दगकर माना रेणुका सेने लगी और उसने अथत आर्त होकर इकीस बार परशुरामका पुकार। परशुरामका आनेपर जब साग समाचार विदित हुआ ता उन्होंने प्रतिया करके इकीस बारमे वृष्णके प्राय सभी क्षत्रियोंको मार जाल और उनका राज्य माहणोंको दान कर दिया।

जानपुर जिल्दा केन्द्रस्थान है। यहाँ अनायाय्य, गोशाला, मरकारा चिकित्सालय, महिलाचिकित्सालय, मन्त्रुतविद्याय्य, कयापाठशाला और हाईस्कूड आदि बहुत-सा संस्थाएँ हैं। यहाका जलवायु अच्छा है। तथा कुँओके जग्का अपेक्षा गोमतीनाका जल अधिक स्वास्थ्यप्रद है।

प्रयाग

यमदग्नपुर अर्थात् जानपुरके पश्चात् यात्रियोंको तीर्थराज प्रयागके दर्शन करने चाहिये । यह जानपुरसे ७१ मील है । और ईस्ट इण्डियन रेलवेका बहुत बड़ा जंक्शन है । इस पवित्र तीर्थका दर्शन करनेके लिये यहाँ प्रतिवर्ष देश-देशान्तरक लाखों यात्री आते हैं । कुम्भपर्वके अगसरपर तो यहाँकी भीड़का अनुमान करना भी कठिन हो जाता है । उस समय पुलिसके अतिरिक्त स्थानीय तथा ग्राहकसे आये हुए सहस्रों स्वयं-सेवक भी मेलेके प्रबन्धमें सहयोग देकर जनताकी सेवा करते हैं ।

प्रयाग बहुत बड़ा नगर है । सन् १९३१ तक यह संयुक्त-प्रांतका राजधाना था । अब प्रांतीय गवर्नरका दफ्तर लखनऊ चला गया है । इसकी जन-संख्या दो लाखसे कुछ कम है । यहाँसे भिन्न भिन्न सभी दिशाओंको रेलवे लाइनों और पक्की सड़कों गयी हैं । प्रयागके स्टेशन और रेलवे-लाइनोंका विवरण संक्षेपमें इस प्रकार दिया जा सकता है ।

१ इलाहाबाद जंक्शन—यह ईस्ट इण्डियन रेलवेका बहुत बड़ा स्टेशन है । यहाँ जी० आई० पी० रेलवेकी भी एक शाखा

आती है। यहाँसे विभिन्न दिशाओंमें दिल्ली, झाँसी, जयपुर कलकत्ता, बनारस और लखनऊ आदि कई स्थानोंको गाड़ियाँ जाती हैं।

२ नैनी—यह स्टेशन इलाहाबाद जंक्शनसे चार मील १ यमुनाके उस पार है। कलकत्ता, जयपुर और झाँसी जानेवाले गाड़ियाँ इसी स्टेशनपर होकर जाती हैं।

३ प्रयाग—इलाहाबाद जंक्शनसे फैजाबाद या [ई० आई० आर०] द्वारा बनारस जाते समय दो मीलपर पहला स्टेशन प्रयाग है। इससे आगे गंगाजीके उस पार फाफामऊ स्टेशन है।

४ प्रयागघाट—गंगास्नानको जानेके लिये प्रयाग स्टेशनसे एक ब्राह्म दारागजतक आयी है। यह गाड़ी केवल मेलके समय चलायी जाती है। इसके स्टेशनका नाम प्रयागघाट है।

५ त्रिवेणी-संगम-स्टेशन—सन् १९३०से मगमके समीप बाँधके पास ई० आई० आर० ने यह ठोठा सा स्टेशन खोला है। यह लाइन इलाहाबाद जंक्शनसे आता है। यह स्टेशन भी मेलके ही समय काममें लिया जाता है।

६ इलाहाबाद सिटी—यह शहरके मध्यमें बा० एन० डब्ल्यू० आर० का स्टेशन है। यहाँसे काशी, गोरखपुर या काटिहार आदि स्थानोंको जानेवाले यात्री जा सकते हैं।

७ ऐजट्रिज—यह इलाहाबाद सिटीमें ३ मीलकी दूरीपर दूसरा स्टेशन है। इसमें दागावकी बस्ती मिठी हुई है।

८ झूसी—यह गगाजीके उस पार ऐजटमिजसे अगला स्टेशन है

यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ बहुत-सी धर्मशालाएँ हैं तथा पण्टेलोगोंके भी बहुत से मकान हैं। एक धर्मशाला प्रयागस्टेशनके निकट है, दूसरी इलाहाबाद जंक्शनके पास है। यह बिहारीलाल कुञ्जलाल मिर्जापुरवालोंनेकी बनायी हुई है। बहुत सुन्दर ओर साफ है। इस धर्मशालामें नीचे ओर ऊपर पानीके नल लगे हुए हैं तथा यात्रियोंकी सुविधाका सब प्रकार ध्यान रखा जाता है। प्रयागराजकी यात्रामें आये हुए अधिक यात्री इसी धर्मशाळामें ठहरते हैं।

तीसरी धर्मशाला मुद्दागजमें है। यह गोमती धीवीकी बनायी हुई है। यह भी बड़ी साफ ओर पाँच सौ यात्रियोंके ठहरने योग्य है। चौथी दारागजमें है तथा पाँचवीं सुदागजमें निकट है। इसा प्रकार ओर भी कई धर्मशाळाएँ हैं। मुगीगजमें श्री गोकुलदास तेजपालकी धर्मशाला है उसमें साधुओंको भोजन दिया जाता है।

यात्रीलोग इन्हींमें अपनी-अपनी सुविधाकेअनुसार ठहरते हैं। प्राचीन कालमें इस पवित्र तीर्थका नाम गामुदगज था। कभी ब्रह्माजीने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया था। तबसे इसका नाम गामुदगज हुआ। अकारने इसका नाम इलाहाबाद गामुदगज रख दिया। यह नगर अधिकतर इसी नामसे परिचित है। इसका वर्णन दर्शनीय स्थानोंका वर्णन करते हैं।

त्रिवेणी-जिसमें पुष्पगान्धि जाह्नवा और वृष्णाप्रिया कात्रिंदी प्रयत्न तथा मरुन्वतीनीदा अप्रयत्न सम्मिऊन हैं, उन त्रिरिस्तापहाग्निष्ठा याग्निधाराका नाम त्रिवेणी है । मग्ने पहले यात्रियोंको त्रिवेणीमें स्नान करना चाहिये । त्रिवेण्यक तटपर तीर्थ गुरुओंके झण्डे फहराते हैं । उन झण्डाके ऊपर निशान बने हुए हैं । जिसके द्वारा यात्रियोंका अपन अपने पण्डोंकी पहचान करनेमें कोई असुविधा नहीं होगी ।

सगमया स्थान नदियोंके प्रवाहके अनुसार बन्धता रहता है । जिस समय जहाँ भी श्याम और श्वेत सन्धि उक्त सगम होता है वहाँ तटपर तार्पणपुजारियोंके तप्त पड़े रहते हैं । यहाँ यात्रियोंकी चल्न, रोगी, भस्म, यज्ञोपवीत आदि सामग्री सुविधासे मिल जाती है । अन्य तीर्थोंकी अपेक्षा प्रयागमें मुण्डन करनेका विशेष माहात्म्य है, जैसा कि कहा है—

राजा वा राजपुत्रो वा लक्ष्मीपतिरेव वा ।

प्रयागे घपन भुर्याद्वयक्षेणे कदाचन ॥

अर्थात् राजा हो, राजकुमार हो अथवा स्वयं पिण्ड ही हों, प्रयागमें अवश्य मुण्डन कराने, भले ही दूसरे क्षेत्रमें न कराये । इसलिये त्रिवेणी तटपर नाइयोंका भी एक दल रहता है । यात्रियोंको मुण्डन कराकर ठीक सगममें स्नान करना चाहिये । सगमस्थानमें किनारेपर प्रायः दलदल हो जाता है । इसलिये यात्रियोंको नौमामें बैठकर स्नान करना होता है । स्नानक पश्चात् तीर्थत्रिधि करनी चाहिये । यहाँ अथ तीर्थोंके समान पिण्डदान तो किया ही जाता

हैं, उसके अनिरिक्त वेणीदानका भी विशेष माहात्म्य है। प्रयाग तीर्थ-राज है। उसका महिमा अकथनीय है। पुराणोंमें तीर्थराजकी महिमाका मुक्तकण्ठसे वर्णन किया गया है। प्रयागके तीन भाग हैं। (१) प्रयाग—गंगा-यमुनाके मध्यका भाग, (२) अल्कपुर या अरेल—यमुनाके पश्चिमतटका भाग और (३) प्रतिग्रानपुर या झसी—गंगाके दक्षिणतटका भाग। यह प्रजापतिक्षेत्र कहलाता है। इसमें मात्र मासमें स्नान और कन्ययास करनेका अनन्त फल होता है।

अक्षयवट—त्रिवेणीजीका स्नान और पितरोंका नर्पण करके यात्रियोंको अक्षयवटका दर्शन करना चाहिये। अक्षयवटके दर्शन किल्लेके भीतर होते हैं। यह किंग अकबरका बनवाया हुआ है। आजकल इसमें स्थानीय ठाकुरोंकी गार्डें बनी हुई हैं। यहीं किसी समय मुगलसम्राटोंके अन्नपुर थे। उनसे आनकठ राजागारका काम लिया जाता है। इस किल्लेके भीतर यात्री केवल अक्षयवटका ही दर्शन कर सकते हैं। अन्य स्थानोंमें सर्व-सागरणको जानेकी आज्ञा नहीं है। अक्षयवटकी स्थिति एक गुफाके भीतर है। इसे पातालपुरीका मन्दिर कहते हैं। यह प्रयागका बहुत प्राचीन स्थान है। शास्त्रोंमें अक्षयवटको बहुत महिमा कही है और यह बतलाया है कि प्रलयकालमें भी उसका उच्छेद नहीं होता। यह वट वृक्षका एक ठूँठ-सा है। बहुत लोगोंका अनुमान है कि किल्लेके किसी गुप्त स्थानमें असंग अक्षय-वट है। वर्तमान अक्षयवट जिस अँधेरी गुफाके भीतर है उसमें और भी बहुत सी मूर्तियाँ हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं—धर्मराज,

अन्नपूर्णा, सप्तमोचन, महाउक्ष्मी, आदिगणेश, वालमुमुन्द, शूल
 टङ्केश्वर महादेव, गौरीशंकर, दण्डपाणि भैरव, लज्जितादेवी, गगानी,
 स्वामिनातित्रेय, नृसिंहभगवान्, दत्तात्रेय, सूर्यनारायण, अनसूया
 देवी, पद्मदेव, वरुण, मार्कण्डेयऋषि, अग्निदेव, दूधनाभ, दुवासा
 और गोरमनाथ आदि ।

यह स्थान पृथ्वीके गर्भमें क्यों और कब बनाया गया इसका
 कोई सतोपजनक प्रमाण नहीं मिलता । यहाँपर सम्राट् अशोकका
 बनवाया हुआ एक सादे उन्नतीम फुट ऊँचा स्तम्भ है । उसपर
 लेख खुदा हुआ है जो पढ़नेमें नहीं आता । किन्तु भीतर ही
 दूरके समाचार जाननेके लिये लगाये हुए बेतारके तारके छ बहुत
 ऊँचे तम्भे हैं, जो बहुत दूरसे दिखायी देते हैं ।

भरद्वाज आश्रम—यहाँ महर्षि भरद्वाजने रहकर तपस्या की
 थी । श्रारामचन्द्रजीके बनका चले जानेपर जब उनसे मिलनेके
 लिये भरतजी सारी सेनाके सहित जा रहे थे तो इसी आश्रममें
 महर्षि भरद्वाजने अपने तपके प्रभावमें उनका बड़ा अपूर्व स्वागत
 किया था । उस समय यह आश्रम एक बनखण्डमें था । यहाँपर
 श्रीभरद्वाजक स्थापित किये हुए भारद्वाज गिस्क दर्शन होने हैं ।

भरद्वाज-आश्रमके निकट एक पक्की गुफा बनी हुई है, उसमें
 अगस्त्य मुनिके और सर्षपियोंके दर्शन होते हैं । इस गुफासे बाहर
 आकर एक मंदिरमें बामीरिजी, शेषजी और महात्मा आदिक दर्शन
 होते हैं । पहले इस आश्रमके समाप्त होकर ही श्रावणाती
 पहती थी । परन्तु अब जबसे राध बना है तबसे वे बहुत दूर हो

गयी हैं। यह आश्रम अब भी बहुत रमणीक है, उस समय तो इसकी शोभा और भी अपूर्व होगी। यह स्थान गोसाइयोंके हाथमें है।

वासुकि—यह नागराज वासुकिना मन्दिर है। यह बरसी मुहल्लेमें एक ऊँचे टीठके ऊपर बना हुआ है। इसे नागपुरके भोसला महाराजने बनवाया था। वासुकिदेवकी मूर्ति बहुत विशाल और काले पत्थरकी है। यह दूरसे सजीव-सी जान पड़ती है। कहते हैं, एक बार किसी राजाको वासुकि नागने स्वप्नमें दर्शन देकर कहा था कि मेरी मूर्ति गंगाजीके गर्भमें है, उसे निकालकर स्थापित करो। तब राजाने मूर्तिको निकालकर मन्दिरकी प्रतिष्ठा करायी। यह स्थान गंगातटपर एका तमें होनेके कारण बहुत रमणीक जान पड़ता है। मन्दिरके सामने पक्का घाट है। इसे प्रयाग-निवासी श्रीमनोहरदासजी खत्रीने बनवाया था। यह घाट गंगाकी बाढ़ आनेके कारण एक ओरसे गिर गया है। यदि इसका जीर्णोद्धार न हुआ तो सम्भन है शीघ्र ही लुप्त हो जाय। प्रयागमें गंगाजीके तटपर केवल यहा एक पक्का घाट है।

वेणीमाधव—आदिवेणीमाधवजीकी जलमयी प्रतिमा त्रिवेणी-सगममें है। उसके अतिरिक्त एक वेणीमाधव दारागजर्म हैं और दूसरे यमुनाजीके उम पार हैं। दारागजके वेणीमाधव यहाके प्रधान देव हैं। यहा मन्दिरके भीतर प्रवेश करनेपर आँगनमेंसे ही भगवान्-के दर्शन होने लगते हैं। श्रीलक्ष्मीजीके सहित भगवान्की भव्य उमि बहुत ही दर्शनीय है। दूसरे वेणीमाधव जो यमुनापार हैं उनके दर्शनार्थ नौकामें जाना पड़ता है। नौका करके उस पार

पहलेचपर भादा चतुस इग मॉरके टगन हाते हैं । यह स्पष्ट एक टीके ऊपर है । यह मीटियां चढ़नेप पशत् भगवान् दर्शा होता है । परिणामके लिये चारों ओर गुण हुआ मंगल है । मॉरके निरुद्ध टहगनेके त्रिये आधम नी है । यह स्पष्ट इतरा र्गर्गीरु है रि पात्रियोंका बिच आते चउनरो नहीं हाता । भगवान्के दर्शन इमीनारायणरी प्रतिमाके समान टी है । चारों भक्तिपूर्वक पूजा करके भगवान् और बेगाता (लक्ष्मीजी) को यत्नानुपणादि ममर्षण करने हैं ।

सोमेश्वरनाथ शंभोगीमाधुके परात्मम गगाजीके द्वाग्निने तटपर सोमेश्वरनाथ महादेवजा मॉर है । यह मॉर एक टीके ऊपर है । इममें शिवगिद्धके अनिरिक्त पञ्चदेवोंका भी प्रतिमाएँ हैं । शिवरात्रिने अक्सरपर यह नहुन भीड़ होती है ।

सरस्वतीजी—यमुनाके इम पार किउरे नीचे एक बुगटमें जउके रूपमें सरस्वतीजीका दर्शन हाता है । शास्त्रका कथन है कि गगा-यमुनाके संगमरगनपर सरस्वतीजी भी उनमें निळ गयी हैं । इसीसे गगा-यमुनाका संगम तो प्रयत्न प्रतान हाता है ओर सरस्वतीजी अत सलिंग हैं अर्थात् इनका संगम भीतर-हा भीतर हुआ है । इसीसे तीन पुनीत नदियोंका संगम होनेके कारण इसका नाम 'त्रिवेणी' हुआ है ।

हनुमान्जी—सरस्वतीजीके पश्चात् दारागजरी ओर आने समय मार्गम हनुमान्जीके दर्शन होने हैं । हनुमान्जीका इतनी बड़ी प्रतिमा सम्भक्त अयत्र देखनेमें नहा आवेगा । मूर्ति धरानउसे

नीचे पृथ्वीपर शयन क्रिये हुए है। उसके चारों ओर लोहेकी ठंडोंका कटघरा बना हुआ है। बाहरसे ही लोग पुण्यादि चढ़ाते हैं। यह स्थान पृथ्वी खोदकर बनाया हुआ प्रचीन होता है, अथवा गगाजाके रेतीसे टप गया है। इनके मिया यमुनाके दाहिने तटपर शूल-टङ्केश्वर और वाम तटपर मनकामेश्वर महादेव हैं। यात्रियोंको इनका भी दर्शन करना चाहिये।

झूसी—गगाजीके उस पार झूसी है। यह झूसीका किला अथवा पुरानी झूसीके नामसे प्रसिद्ध है। इसे ही ऐलतीर्थ भी कहते हैं। इसे चन्द्रवशीय महाराज पुम्बराने बनाया था। पुम्बरवाके पिता गजा इउ महादेवजीके शापसे खी हो गये थे। उस समय उनका नाम इला हुआ। उनके गर्भसे बुधद्वारा पुम्बरानका जन्म हुआ, इसलिये ये 'मिल' कहलाये। इन्होंने झूसीको अपनी राजधानी बनाया था। उस समय इसका नाम प्रतिष्ठानपुर था। इस स्थानको जितना ही ग्वांजके माथ देखा जाय उतनी ही नवीन बानें ज्ञात होंगी। यहाँ अनन्त कालसे बड़े-बड़े महात्मा तप करते आये हैं। आज भी यहाँ सेकड़ों वर्षकी आयुवाले साधु महामा तप करते बतलाये जाते हैं। सयोगदश किसी भाग्यशालाको कभी-कभी उनके दर्शन हो जाया करते हैं। नीलाद्वारा गगाजाके उस पार जानेपर थोड़ी दूर चलकर इस स्थानके दर्शन होते हैं। यहाँ बत्तीस सीढ़ियाँ चढ़नेपर एक कुटी और सामने एक कूप मित्ता है। उसके ऊपर फिर इकतीस साढ़िया पार करनेपर एक कुटी और पक्की गुफा है। इसके ऊपर सोलह सीढ़िया और हैं। यहाँसे गगाजीका मनोहर दृश्य देखने-सी योग्य होता है। इसके नीचे उतरनेपर एक

पक्का दागन है। यहापर रहनेके लिये एक सुंदर गृह भी बन हुआ है। सामने एक छोटी-सी वाटिका है। जिसमें केरा, अनार, नींबू, नीम आर सुगन्धित पुष्पोंके वृक्ष हैं। बीचमें एक पक्का कूप है, जिसपर 'परमहमकूप' लिखा हुआ है।

इस स्थानके पास एक गुफाका द्वार है, उसमें उम्मीस सीढ़ियाँ उतरनेपर महाभारतकी दार्शनिकता दर्शन होता है। यहां अंधेरा होनेके कारण आपरुके दिना दर्शन होनेमें कठिनाई पड़ती है। महावीरजीके सामने गंगाजीकी ओर एक सुरग है। इसके दोनों ओर गुफाएँ हैं। ये गुफाएँ कितनी उम्मी है इसका पता नहीं। कोई यात्री इन गुफाओंमें प्रवेश करते नहीं देखा गया। इन गुफाओंके आगे गंगाजीका ओर एक द्वार है, जहाँसे भागीरथीका दर्शन होता है। ऐसी गुफाओंमें ससारसे अत्यन्त निरक्त महात्मा लोग ही रह सकते हैं। उन एकतात्म्यसी योगियोंकी दृष्टिमें तो ससारका चक्रवर्ती राय भी अत्यन्त तुच्छ है। ये गुफाएँ प्राचीन कालके ऐसे ही आदर्श योगियोंका स्मरण दिखाती हैं। इस किलमें ऐसे ही बहुत-से स्थान देखने योग्य हैं। यहाँसे बाहर निकलनेके लिये फिर ऊपर ही जाना होता है।

समुद्रकूप—जिसे बाहर ऊँचे टीलेपर एक फाटक है। उसमें यात्री लोग समुद्रकूपका दर्शन करनेके लिये प्रवेश करते हैं। इस स्थानके भीतर भी बगीचा लगा हुआ है। सामने एक पक्का और बड़ा कूप है। जिसके ऊपर छोटे-छोटे मोटे-मोटे सीकचोंका जाल लगा हुआ है। उसका नाम समुद्रकूप है। यहाँ एक काठके तालेपर समुद्रकूपकी महिमामें कई श्लोक लिखे हुए हैं।

समुद्रकूपके विषयमें कहा जाता है कि ब्रह्माजीने जब यज्ञ क्रिया या तो यज्ञसे बचे हुए सातों समुद्रके जलको वृषी कूपमें उड़ दिया था। इसके विषयमें दूसरी किम्बदन्ती यह भी है कि यहाँ सम्राट् समुद्रगुप्तने दो अश्वमेध यज्ञ क्रिये थे और उन दोनोंकी स्मृति स्थिर रहनेके लिये पत्थरके दो घोड़े स्थापित क्रिये थे। किन्तु अत्र वे दोनों घोड़े लखनऊके अजायबघरमें भेज दिये गये बतलाये जाते हैं। समुद्रकूपका सम्बन्ध सम्भवतः इन दोनों ही घटनाओंसे है। इस स्थानपर काम और क्रोधको जीतकर तीन दिन रहनेसे चित्त शुद्ध हो जाता है और अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होना है। ऐसा इसका माहात्म्य है। इस स्थानपर एक वृद्ध महत रहते हैं और उनके सेनकोंके अतिरिक्त आगन्तुक साधु-महार्मा ठहरे रहते हैं। यहाँ कई स्थान अलग-अलग बने हुए हैं। उनके बीचमें किसी रानीका बननाया हुआ एक सुन्दर और पक्का मन्दिर है। यहाँ समुद्रकूपके अनिरिक्त एक कूप और है, जिसका जल नित्यके व्यवहारमें लाया जाता है। इसके नीचे गगातटपर आनेके लिये पक्की साढ़ियों बनी हुई हैं। बीचमें एक गुफा है जिसमें साक्षीगोपाठ और हनुमान्जीके दर्शन होते हैं। यह गुफा बहुत प्राचीन बनलायी जाती है।

हसतीर्थ—समुद्रकूपसे प्रायः आधे मील पश्चिममें श्रीगंगाजीके तीरपर यह प्रसिद्ध स्थान है। यह स्थान त्रिकुट सहस्रदल कमलके आधारपर बनाया गया है। इसमें त्रिकुटी, अन्त करण, भ्रमरगुफा, मेरुदण्ड आदि सभी स्थानोंको बड़े-क्रमसे बनाया योगका ही चित्र है।

सम्भरत अथवा नहीं होगा। इनके काल पास ही पूरु पूरु है जिसे हमरूप कहते हैं। इस स्थानका भागलपुरके एक प्रतिष्ठित जमादाराने बताया था। वे एक मयामी हा मय थे उनका नाम रानी आमहमनी था, सम्भरत इसी कारण यह स्थान भी हमनी कहलाया।

मन्ध्यासूत-हमनीके पीछे ही और एक बहुत बड़ा प्रायतः षट्पञ्च है। इस नाम मन्ध्यासूत करनेसे मन्ध्यासूत दो छूट जाता है। यह हमनीके मन्तनाके ही अग्रभाग है।

दशाहरमेधेश्वर महादेव-श्रीमते चन्द्र रेखा पुत्र पा करनेपर दागजमें सन्ने पहल दशाहरमेधेश्वर शिवराम मन्दिर मित्ता है। यहाँ ब्रह्मानीने दश अक्षरें यज्ञ किये थे। स्थान दर्शनीय है।

शिवकुटी-गगात्रक दूमेरे पुलके पास केद्वितीय नामका प्रसिद्ध स्थान है। इसे अब 'शिवकुटी' कहते हैं। यहाँ धारण नाममें गगात्रक करके महादेवजीका पूजन करनेका बड़ा माहात्म्य है। इस समय यहाँ मेला भी लगता है। यहाँ एक मन्दिरमें बहुतसे महादेव हैं। इसे महादेवजीका कचला कहते हैं। यह स्थान बहुत ही रमणीय है।

इसका मिया प्रयागके आमपाम आर भा रहनुसे तार्थस्थान है। उनमेंसे बहुतसे तीर्थ तो अब उच्छिन्न हो गये हैं। उनका पुनरुद्धारकी आवश्यकता है। प्रयागका पञ्चकोशी परिक्रमा करनेपर उन सन्ने दर्शन हो जाते हैं। प्रयागकी परिक्रमाका प्रणाली बहुत

दिनोंसे लुप्त हो गया थी। अब पूर्य त्र्यचारी प्रभुदत्ताने बहुत ऊन-चीन करके उसका पुनरुद्धार किया है। तीर्थयात्रियोंको यग-मम्भर तीर्थगजकी परिक्रमा अवश्य करना चाहिये। पूर्य परिक्रमा बारह दिनोंमें उड़ आनन्दमें हो मरना है, यदि कोई जन्दी करना चाहे तो जन्दी भी कर सकता है। सामूहिक परिक्रमाके लिये सबसे उत्तम समय चंद्र कृष्ण तृतायामे अमावास्यातक है। वैयक्तिकरूपसे अपना सुविधाके अनुसार क्रिमा भी समय कर सकते हैं।

अब थाड़ा-मा जर्जन प्रयागके ऐतिहासिक एव अथ दर्शनीय स्थानोंका किया जाता है—

किला-ऐतिहासिक स्थानोंमें किला सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इसका सक्षिप्त परिचय ऊपर अक्षयपठक प्रसंगमें दिया जा चुका है। बहुत लोगोंका मत है कि यह महाराज अशोकका बनवाया हुआ है। कोई इसे गुप्त सम्राटोंका बनवाया हुआ बनलाते हैं। अकबरका बनवाया हुआ तो इस समय प्रसिद्ध ही है। मम्भर है, इसे महाराज अशोकने ही बनवाया हो और पीछेके सम्राटोंने केवल इसका जीर्णोद्धार हा कराया हो।

अकबरका बाँध-किटेकी रक्षाके लिये अकबरने एक बाँध बनवाया था। इसके कारण गंगाजाके प्रवाहमें बहुत परिवर्तन हो गया है। इसका कारण भरद्वाज-आश्रम जो पहले गंगाजाके तीरपर था अब उससे बहुत दूर हो गया है। इस बाँधके कारण प्रयाग भी बहुत सुरक्षित हो गया है। अब उसे बड़ी से-बड़ी बाढ़से भी भय

सुशरूपाग—यह बाप अकरके पुत्र बादशाह जहाँगारने अपने पुत्र सुशरूमी स्मृतिमें बनाया था। यह चारों ओरसे बहुत उँची प्राचीरसे घिरा हुआ है। रायक भीतर सुंदर सड़कें, फुन्कारियाँ और भौति भौतिके वृक्ष हैं। इसमें तीन मक़ारे हैं। पहला मक़ारा सुदतान सुशरूमी है तथा उसका पश्चिमकी ओर दो मक़ारे उसकी माँ और बहनके हैं। कहते हैं, इलाहाबादके क्रिश्चिये जो सामान बचा था उमीसे यह बाप बनाया गया था।

हाईकोर्ट—प्रयागके राजकीय स्थानोंमें हाईकोर्ट सबसे प्रधान है, यह धामपुररोडपर है और सफ़ेद पथरका बहुत ही सुंदर बना हुआ है। इस प्रातके सारे मुकदमोंकी अपील यहीं होती है। जजलोग ऊपरके कमरोंमें बैठते हैं तथा नीचेके कमरोंमें दफ़तर है। यह नया ही बनाया गया है। पुराने हाईकोर्टके पास शिक्षाविभागके सबसे बड़े अधिकारी डाइरेक्टर आफ़ पब्लिक इस्ट्रक्शनका दफ़तर है।

पार्क—प्रयागमें कई सुंदर सुन्दर पार्क हैं। उनमें अल्फ़ड पार्क, मिण्टोपार्क, पुरूपोत्तमपार्क, मानीपार्क और मुहम्मदअलापार्क इत्यादि प्रसिद्ध हैं। इन पार्कोंसे नगरका जलवायु बहुत शुद्ध रहता है और जनताको प्राण और स्वास्थ्यमें शुद्धवायुसेवन एवं चित्त बहलानेकी सुविधा रहती है। यहाँकी सांस्कृतिक मभारें प्रायः पुरूपोत्तमपार्कमें ही होती हैं।

आनन्दभवन—यह बहुत बड़ा और सुन्दर भवन स्वर्गीय प० मोतीगठ नेहरूने अपने रहनेके लिये बनाया था। इसके पास

ही उनका एक पुराना भवन है। उसे अपनी आयुके उत्तरकालमें उन्होंने राष्ट्रीय महासभाको दान कर दिया था। तबसे उसे 'स्वराज्य-भवन' कहते हैं। ये दोनों ही भवन दर्शनीय हैं। भरद्वाज-आश्रम-का दर्शन करते समय इन्हें भी देखा जा सकता है।

प्रयागरिश्वरिद्यालय—प्रयागका विश्वरिद्यालय भारतवर्षकी एक प्रसिद्ध सस्था है। मन् १९२० से पूर्व इसका विस्तार ममन्त युक्तप्रान्त और राजपूतानामें भी था। परन्तु तबसे इसका मकोच करके केवल इलाहाबाद नगरतक ही कर दिया है। इसमें कई विषयोंकी ऊँची-से-ऊँची शिक्षा दी जाती है। इसकी शिक्षापद्धति प्रातःभरमें प्रसिद्ध है। इसमें प्राय २००० छात्र विरिच प्रकारकी उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसका सिनेट हाठ बहुत सुन्दर है तथा इससे सम्बन्धित एक बहुत बडा पुस्तकालय भी है।

म्योरकालिज—पहले प्रयागका सबसे बडा कालिज यही था। किन्तु अब इसमें विश्वरिद्यालयका विज्ञानविभाग है। इसकी इमारत भी देखनेयोग्य है।

हिन्दूचोर्डिङ्गहाउस—यह म्योरकालिजके पास सिटीरोडपर बायें हाथको स्थित है। यह हिन्दू विद्यार्थियोंका बहुत बडा छात्रावास है। इसके बनानेमें महामना प० मदनमोहन मान्द्रीय और प० सुन्दरलालजीने विशेष प्रयत्न किया था। इसके मध्यमें 'बलराम-पुर हाठ' है। यह बहुत बडा है, चोर्डिङ्गहाउसकी समझें इसीमें हुआ करता है। इमारत दर्शनीय है।

कृषिविद्यालय—यह यमुनाजीके तटपर पुष्टमे थाड़ा दूर है। इसकी स्थापना एक अमेरिजन निदानन की है। कृषिजके अधिकांशमें प्राय ६०० एकड़ भूमि है, जिसका कुछ भाग किसान जानते हैं और कुछ विद्यालयक काम आती है। इसमें शिक्षा प्राप्त करनेके लिये भारतकी सभी भागमें विद्यार्थी आते हैं। इस विद्यालयमें दो विभाग हैं—कृषि (farming) और गायन (dairy-farming)। अब इस विद्यालयमें प्रयागविश्वविद्यालयका सबसे ऊँची परीक्षाके लिये शिक्षा दी जाती है।

हिन्दीविद्यापीठ—कृषिविद्यालयके पश्चिमकी ओर यमुनाके दहिने तटपर महेरा नामक एक गाँव है। यहाँपर हिन्दी-साहित्य सम्मेलनका हिन्दीविद्यापीठ है। इसमें सम्मेलनपरीक्षाओंके सब विषय पढ़ाये जाते हैं। उनका माध्यम हिन्दी ही है। यहाँ विद्यार्थियोंके लिये एक छात्रावास भी है। शिक्षाके लिये विद्यार्थियोंमें कोई फीस नहीं ली जाती।

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन—इसका कार्यालय चौकमें थोड़ी दूर कास्थवेठ रोडपर है। यह भारतमें हिन्दीको राष्ट्रभाषाके आसनपर ठिकानेका प्रयत्न करनेवाली एकमात्र संस्था है। इसका प्रतिवर्ष बहुत बड़ा सम्मेलन होता है। जिसमें हिन्दीके उच्च कोटिके विद्वान् समापनिका आसन ग्रहण करते हैं। इसकी ओरसे प्रतिवर्ष उत्तमा, मध्यमा और प्रथमा तीन परीक्षाएँ होती हैं। द्रविडभाषा-भाषा देशोंमें हिन्दीका प्रचारकार्य किया जाता है तथा प्रतिवर्ष हिन्दी

साहित्यके किसी विशिष्ट विषयके सर्वात्तमग्रन्थलेखकको उसके प्रकाशित ग्रन्थपर (१२००) का मंगलाप्रसाद पारितोषिक दिया जाता है।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी—इस संस्थाका प्रधान कार्यालय प्रयाग स्टेशनके पास है। इसमें हिन्दी या उर्दूकी साहित्यसम्बन्धी पुस्तक प्रकाशित की जाती है। उच्च कोटिका साहित्य प्रकाशित करना ही इसका उद्देश्य है। इसे सरकारसे भी सहायता मिलती है।

नैनी—यमुनाके उम पार प्रयागसे साढ़े तीन मीलपर नैनी स्टेशन है। वहा पहले एक छोटी सी बस्ती थी परन्तु अब कल-कारखानोंके कारण यहाभी जनसंख्या बढ़ती जा रही है। यहाँ एक चीनीका कारखाना है और एक शीशेकी बस्तुओंका। प्रयागका 'सदल जेल' भी यहीं है। इसके सिवा पादरियोंकी ओरसे दो आश्रम हैं—एक कोढ़ियोंके लिये और दूसरा अन्धोंके लिये। यहाँ उनकी यथाशक्ति चिकित्सा की जाती है। उनमें कोढ़ियोंकी सत्तानोंके पालन-पोषण और शिक्षाका भी सराहनीय प्रबन्ध है। नैनीमें एक छोटा-सा बाजार है। उसमें एक पत्नी धर्मशाला और डाकघर भी है।

कुम्भपर्वा—भारतर्यमें श्रद्धालु और धार्मिक मनुष्योंकी अब भी कमी नहीं है। निन तर्कप्रधान पुरुषोंको तीर्थयात्रामें विन्धाम नहीं है वे भी यदि कुम्भपर्वाके अवसरपर प्रयाग पधारे तो उन्हें एक तो यह लाभ होगा कि देश देशांतरके नर-नारा और साधु सन्यासियों-

के दर्शन होंगे और दूसरे यह भी जान होगा कि अर्धा गगा-
यमुनादि तीर्थोंकी पवित्रतामें श्रद्धा रखनेवाले कितने महानुभाव इस
पवित्र भूमिमें हैं। त्रिवेणीस्नानके लिये लाखोंकी संख्यामें आयी हुई
आर्यजनताको देखकर उन्हें भगवान्में विश्वास होना बहुत सम्भव
है। अतएव कुम्भपर्वाकी यात्रा श्रद्धालु और अश्रद्धालु दोनों ही
प्रकारके पुरुषोंके लिये लाभदायक है। ऐसकरने गगानटपर कुटी
बनवान्तर वहाँ सपरिवार एक मास रहकर कल्पवास किया था,
इसलिये उस महापर्वकी पवित्र स्मृति अब भी उसके हृदयमें सात्त्विक
भावोंका मञ्जार कर देती है।

कुम्भपर्वकी कथा—भारतवर्षमें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और
उज्जैन चार स्थानोंपर भिन्न भिन्न समय गारह-बारह वर्षके पश्चात्
कुम्भके मेले होते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है—एक बार देवासुर-
सम्राटमें देवताओंके पक्षको निर्मूल देखकर देवगुरु बृहस्पतिजी
सम्राटस्थलसे अमृतका कलश लेकर भागे। असुरोंने उन्हें देख
लिया और अमृत छीननेके लिये उनका पीछा किया। भागीरथी,
त्रिवेणी, क्षिप्रा और गोदावरीके तटपर उनसे छीना-क्षपटी हुई।
इससे इन स्थानोंपर कश्चसे उलककर कुछ अमृतकी बूँदें गिर
गयीं। अत इन स्थानोंपर रहने आर स्नान करनेसे अमृतत्वकी
प्राप्ति होती है। इहाँ स्थानोंपर कुम्भके मेलोंकी योजना हुई। जब
कुम्भराशिने बृहस्पति होते हैं तब हरिद्वारमें कुम्भ होता है।
जब शुक्रे होते हैं तब प्रयागमें हाता है और जब मिहके

हस्पति होते हैं तब नासिक और उर्जनका कुम्भ होता है ।
 हस्पतिजी एक राशिको छोड़कर फिर उसी राशिपर बारह वर्षमें
 आते हैं । इनके मध्यमें हरिद्वार और प्रयागमें ठ-छ वर्ष पश्चात्
 अर्धकुम्भीके भी बड़े-बड़े मेले होते हैं ।

माहात्म्य—प्रधान-प्रधान पर्वके समय प्रयागमें विष्णु, शिव,
 लक्ष्मी आदि देवता, समस्त मुनिगण तथा गोदावरी, कावेरी आदि नदियाँ
 सरसरोवरादि आकर निवास करते हैं । स्कन्दपुराणमें लिखा है कि
 गंगा, यमुना और सरस्वतीके सगममे स्नान करनेसे प्राणा पापमुक्त
 होकर ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है । प्रयागमें जो द्रव्यदान किया
 जाता है वह अनेक शुभफल देनेवाला होता है । जो पुरुष अपने
 पितरों अथवा देवताओंके लिये सोना, मोती अथवा अन्य किसी
 प्रकारका दान करता है, वह कई जन्म तक दरिद्रताका दुःख नहीं
 भोगता । प्रयागमें आकर यात्रियोंको किसीका दान नही लेना
 चाहिये । प्रयागमें गोदानका बहुत पुण्य होता है । जो सोनेसे
 मढ़ी हुई सींगोंवाली गायें दान करता है वह हजारों वर्षतक स्वर्गमें
 रहता है तथा स्वर्गसे गिरनेपर भी उसे राज्य प्राप्त होता है ।
 सत्पात्रको दी हुई गाय भयानक पापोंके समुद्रसे तार देती है ।
 इससे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं । तीर्थदानकी महिमाका अत्रिक
 वर्णन कहातक किया जाय, जिनका महान् पुण्य उदय होता है
 उन्हींकी प्रवृत्ति यहाँ रहकर कल्पयासादि व्रत करनेकी होती है ।



चित्रकूट

तीर्थराज प्रयागके पश्चात् यात्रियोंको चित्रकूटका दर्शन करना चाहिये । प्रयागसे चित्रकूट ९४ मील है । यह G I P रेलवेका स्टेशन है । मार्गमें मानिकपुर स्टेशनपर गाडी बदलनी पडती है । यात्रीजोग चित्रकूट आर कटना दोनों ही स्टेशनोंपर उतरते हैं । अधिकश यात्री कटना ही उतर पडते हैं । यहां एक सराय है आर दूसरा गणेशबाप है । इन दोनों स्थानोंमें यात्री विश्राम कर सकते हैं । यहाँसे चित्रकूट जानेके लिये बल्गाड़ी और घोड मिलते हैं । कुछ दिनोंसे लौरी भी जाने-आने लगी है, परन्तु बहुत से यात्री तो पैदल ही चले जाते हैं ।

चित्रकूटमें दो बड़ी धर्मशालाएँ हैं । उनमें सत्र प्रकारकी सुविधा है । बहुत से यात्री तीर्थगुरुओंके मठान ओर मदिरोमें भी ठहरते हैं । ठहरनेके लिये यहाँ स्थानकी कमी नहीं है ।

चित्रकूट और कटना दोनों ही स्टेशनोंसे चित्रकूट तार्थ, जिमको नीतापुर भा कहते हैं, पाँच माउकी दूरीपर है । वृंदावनकी भौति यहां भा बदरोंका अधिक जोर है । चित्रकूट मन्दाकिनीके किनारे बसा हुआ है । नगरे दम पार ब्रिटिश गवर्नमेण्टका प्रबन्ध है और उस पार उड़ागावने जागरदारकी रियासत है । मन्दाकिनी के दोनों ही तटपर दरमदिर हैं । यहाँ पहुँचकर यात्रियोंको मन्दाकिनाम स्नान करके तीर्थत्रि करनी चाहिये । इसके लिये

रामराट ही प्रथम स्थान है, क्योंकि महाराज दशरथके स्वर्गप्राप्ति होनेपर भगवान्ने इसी स्थानपर उनको इगुद्राक फलका पिण्डदान किया था तथा यहींपर गोमाई तुष्टसागसजीको भगवान् राम और लक्ष्मणजीके दर्शन हुए थे। यहाँपर एक मन्दिरमें श्रीराम, सीता और लक्ष्मणजीका शौंकी है। चित्रकूटक्षेत्रके अन्तर्गत बहुत-से तीर्थस्थान हैं। उनमेंसे मुख्य-मुख्यका वर्णन किया जाता है।

हनूमानधारा—यहाँ एक पहाड़के उपर महाशैरजीकी बड़ी विगाट मूर्ति है। उसकी मुजाके ऊपर न मात्रम कितने समयसे एक चरनेकी धारा गिरना है। यात्रात्रोग पैदल अथवा डाली करके इस पहाड़ीपर आते हैं। चढ़नेके लिये सीढ़िया बनो हुई हैं। यहा आर देवस्थान भी है। यह स्थान पहाड़पर होनेके कारण उदा रमणीक है। महाशैरजाके भोगके लिये यात्रा चित्रकूटसे मिष्टान ले जाते हैं।

कामतानाथ—याम्तरमें प्राचान चित्रकूट यही है। उसे आनन्द कामतानाथ या कामदगिरि कहते हैं। यहाका मुख्य तीर्थ यही है। इस पर्यतकी प्रदक्षिणाका बड़ा माहान्म्य है। यह सारा-का-सारा वृक्षोंसे ढका हुआ है, इसके चारों ओर प्राय तीन माटकी परिक्रमा है, जिसको सन् १७२५ ई० में राजा उरसाळकी रानी चन्द्रकुंअरिने पक्का बनाया गया था। इस परिक्रमामें प्रहृत पे देवमन्दिर है। अपो-याकी भाति यहा भा उतर अत्रिक है। यात्रीलाग उनके लिये चने ले आते हैं और उन्हें बडे भक्ति-भावमें खिलाते हैं।

कामतानाथके त्रियमें एक घटना प्रसिद्ध है। कहते हैं, अभी अत्रिक समय नहीं हुआ एक ग्रायेका नाक नित्यप्रति अपनी गाय चरानेके लिये कामदगिरिपर गया करता था। उसकी

माता उससे कहा करती थी कि वहाँ सीताजी रहती हैं। उनका पत्ताका दोना बनाकर दूध पिला दिया घर। लड़का माताके वचनोंमें विश्वास करके सीताजीको खोजना और निराश होकर घर आनपर अपनी मातासे कहता कि सीताजीने दूध नहीं पिया। माता उस बालककी भोला बुद्धिपर हँसने लगी और उसको समझाया कि सब दरमदिरोंमें नित्य नाना प्रकारके भोग लगते हैं। क्या ठाणुरजी कमी आकर भी खाते हैं, अरे वे तो भायक भूखे हैं। तू भी इसी प्रकार दूधका भोग लगाकर लाट आया कर। माताक ये वचन सुनकर बालकने फिर कहा—मया, माताजा तो उम पहाड़ीपर है ही नहीं, भोग किमका छगाऊ। किन्तु माताने उसे फिर विश्वास दिलाया कि अवश्य रहती है। तब ता बालकने भोजन त्याग दिया और यह प्रतिज्ञा का कि 'साता माता भूखा हैं, वे जन्तु मेरा अर्पण कित्या हुआ दूध नहीं पियेंगी तबतक मैं भाजन नहीं करूँगा।' ऐसा प्रतिज्ञा करके बालक सीता माताकी खोजमें फिर भूखा-भ्यासा गौर लेनर कामदगिरिपर गया। उसने पचाका एक दोना बनाया और उसमें अपनी गाका दूध दुहकर एक सघन वृक्षकी टायामें रखकर सीताजीको पुकार-पुकारकर डूँढ़न लगा। उसने वृक्षकी लताआ ओर पन्तका गुफाओमें धुम धुसकर सीताजीको डूँढ़ा। उसको यह भा ध्यान नहीं रहा कि इन रोहोम हिसक जीव रहत हैं। अन्तम वह दो दिनका भूखा-भ्यासा थाकर यत्रकर एक वृक्षके नाचे सो गया। उस बालककी दृढ़ प्रतिज्ञा और भक्ति दरकर जगज्जननी श्रीजानकीजीका आसन हिया और उनको प्रभातुर होकर प्रकट होना पड़ा। भगवतीन

उस बालकके समर्पण क्रिये हुए दूधको उठा लिया और सोते बालकको जगाकर कहा, 'वस! म सीतादेवी हूँ, तेरे लिये यह नाना प्रकारके मिष्ठानसे भरा हुआ थाल है, तू दो दिनका भूखा हूँ कुछ भोजन कर ले।' बालकने फिर वही हठ किया और कहा कि तुम भी तो कलसे भूखी हो, पहले मेरा यह दूध पी लो पीछे मैं तुम्हारा प्रसाद पाऊँगा। भगवतीने बालकको अपनी गोदमें ले लिया तथा उस दूधको पीकर बालकको भोजन कराया और कहा कि आजसे इस पहाड़ीपर गो चरानेके लिये मत आना। ऐसा कहकर कुछ देर बालकको प्यारकर वे वहा अन्तर्धान हो गयीं। बालक हँसता हुआ अपने घर आया और अपनी मातासे सारा वृत्तान्त कह दिया। माताने आश्चर्यमय वृत्तान्त और लोगोंको सुनाया। उस दिनसे कामदनाथपर कोई भी पुत्र्य गौएँ नहीं चराता और गौरान पर्वतकी भाति उसपर कोई जूते पहनकर भी नहीं जाता। उस बालकने भी फिर गृहस्थाश्रममें रहना स्वीकार नहीं किया। वह तपस्या करनेके लिये किसी अज्ञात स्थानको चला गया।

जानकीकुण्ड—सीतापुर बस्तीसे प्राय दो मील मन्दाकिनीके किनारे-किनारे जानेपर यह स्थान आता है। यहाँका प्राकृतिक दृश्य बहुत सुन्दर है। नदाके दोनों तटोंपर वन है, बीचमें सफेद पत्थरपर युगल सरकारके चरणचिह्न बने हुए हैं, वे आग्नेय हैं। रामभक्त ऐसा मानते हैं कि जब इनपर युगल सरकार चढते थे तब ये मोमके समान कोमल हो जाते थे। यात्री उनका पूजन करते हैं। यह वही स्थान है जहाँ त्रेतायुगमें भगवान्ने कई वर्षतक निवास करके नाना प्रकारकी अलौकिक लीलाएँ की थी।

अनमूया-आश्रम-महर्षि अत्रिजी धर्मपत्नी श्रीअनमूयाजीने इसी स्थानपर भगवती सीताजीको पान्तित्रय धर्मका परित्र उपदेश दिया था। यहाँ मदाकिलीके किनारे पहाड़के नीचे एक मन्दिरमें देवीनामी और दूसरेमें महर्षि अत्रिजी मूर्ति हैं। यात्रियोंके विग्राम करनेके लिये एक ठोटा सी धर्मशास्त्र है। यहाँ भी बन्दर अत्रिक है, यात्रोयोग चने छपर इन्हें मिलाया करते हैं।

लक्ष्मणपहाड़-चित्रकूटमें तत्र रात्रिके समय भगवान् रामचन्द्र और सीतानी शकल करते थे तत्र उनकी रक्षाके लिये लक्ष्मणजी इसी पहाड़ीपर खड़े होकर जागृत थे। पाठकोंको मालूम होगा लक्ष्मणजीने बारह वर्षतक निद्रा नहीं की थी और न अन्न ही ग्रहण किया था। कामदनाय परतके निकट एक पहाड़ीपर अनुमान सवा दो सौ सीढ़ी चढ़नेपर एक मन्दिरमें श्रीलक्ष्मणजीकी मूर्तिके दर्शन मिलते हैं।

कोटितीर्थ-यहाँ समय समयपर ऋषियोंने अनेकों यज्ञ किये हैं। जब उन ऋषियोंकी सरया एक करोड़ हो गया तब इस स्थानका नाम कोटितीर्थ हो गया। यहाँ एक कुण्ड है जिसमें यात्री लोग भक्तिपूर्वक स्नान एवं तीर्थप्रतिष्ठा करते हैं।

सिद्धनामाकी कुटी-स्फाटिकशिखरे निकट पहाड़ीपर प्रायः दंड सौ सीढ़ियाँ चढ़नेपर सिद्धनामाकी कुटी है। चित्रकूटमें ये बड़े विग्रहान् योगी हुए हैं। अब भी उनकी स्मृतिमें उनके शिष्य भण्डारा किया करते हैं। इन्होंने केवल उस पहाड़की मीठी पत्थिपा म्याकर ही तपस्या की थी।

गुप्तगोदावरी—यहाँ एक पहाड़की गुफाके भीतरसे जल आता है। इस गुफामें अंधेरा होनेके कारण यात्री भानर कम जाते हैं। भीतर जानेके समय साथमें डालटेन या टार्चकी आवश्यकता पड़ती है। गुफासे निकला हुआ जल बाहर बने हुए दो कुण्डोंमें आता है। यात्रीलोग यहीं स्नान करते हैं। इन कुण्डोंसे निकला हुआ जल कुछ दूर गहकर पृथ्वीमें गुप्त हो जाता है। इसी कारण इस पुनीत नदीका नाम गुप्तगोदावरी हुआ है। पण्डालोग बतलाते हैं कि यह धारा गोदावरीजीसे आयी है।

भरतकूप—यह भरतकूप स्टेशनसे एक माल दक्षिण और कामतानाथसे छ मील पश्चिमोत्तर एक बहुत बड़ा कूप है। जिस समय सम्पूर्ण राजपूत आर सेनादिके महिा भरतजी वनहीमें भगवान् रामका राज्याभिषेक करनेकी इच्छामें आये थे उस समय वे अपने साथ समस्त तीर्थोंका जल भी लाय थे। किन्तु रघुनाथजीने अभिषिक्त होना स्वीकार नहीं किया। इसलिये वह जल इस कुएँमें डाल दिया गया। इससे थोड़ी ही दूरीपर भरतजीका मन्दिर भी है।

रामशय्या—यह स्थान कामतानाथसे प्राय दो मील है। यहा एक चूहट् गिलापर दो ऐसे चिह्न पने हैं जसे किमी कोमल गद्देपर दो व्यक्तियोंके सोनेसे बन जाते हैं। इनका नाममें धनुषका चिह्न है। कहते हैं, इनमें एक चिह्न श्रीरामचन्द्रजीका और दूसरा श्रीजानकीजीका है।

इनके सिवा चित्रकूटकी परिक्रमामें और भी बहुत-से तीर्थ-स्थान आते हैं, जिनमें राजप्रयाग, सीतारसोई, मत्तगजेन्द्र और कैलाशपर्वत प्रसिद्ध हैं। कामतानाथकी परिक्रमामें मुम्बारिन्द और चरणचिह्न ये दो तीर्थ अत्रिक प्रसिद्ध हैं।

चित्रकूटमें रामनगमके दिन और कार्तिक मासमें मेला लगता है। उस समय यहाँ हजारों यात्रियोंकी भीड़ हो जाती है। मन्दाकिनीके किनारे ओर पहाड़ियोंपर जहाँ-तहाँ यात्रियोंक झुण्ड दिग्यायी देते हैं। यहाँ आधिन मासकी पूर्णिमाको एक महाना श्वासके रागियोंको एक जड़ी गीरके साथ खिञ्जते हैं, जिससे यह रोग सदाक लिय छूट जाता है। इस आसरपर यहाँ हजारों मनुष्याकी भीड़ हो जाती है।

इस स्थानपर जलप्राय उत्तम है। यहाँके अत्रिकाश नियासी मन्दाकिनीका हा जल पीते हैं। इस जगह एक मन्वृन पाठशाला, एक सरकारी आपनारण्य आर कुठ अत्रक्षेत्र भी है। फलादिको छोड़कर भोजनका शेष सत्र आमान मिल जाता है। यहाँ डाकखाना भी है। चित्रकूट परतकी कदराओमें अत्र भा कितने हा तपस्वा महामा ठिपे हुए हैं। जिनका भाग्योदय होता है उन्हें कभी कभी उनमेंसे निस्सीक दर्शन हो जाते हैं।

माहात्म्य—महाभारतमें लिखा है कि कोटितीर्थ और मन्दाकिनी गङ्गाका ज्ञान तथा चित्रकूटका यात्रा करनेवाले यात्रियोंको अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है। जो यात्री निराहार रहकर मन्दाकिनी और गुप्तगोदावरीमें ज्ञानादि तीर्थत्रिपि करते हैं, उनके ज्ञान और श्रीकी वृद्धि होती है। त्रेतायुगमें जनसूयानाक तपोव्रते ही मन्दाकिनी गङ्गाका आभिर्भाव हुआ था। शिखपुराणमें लिखा है कि चित्रकूटके दशममात्रसे पापमा भी निष्पाप हो जाने हैं।

अमरकण्टक

चित्रकूटकी यात्रा, कामदगिरिकी परिक्रमा तथा गुप्त-
गोदावरा ओर मन्दाकिनी गङ्गाका स्नानकर यानी अमरकण्टक पर्यटनपर
नर्मदाजीके उद्गमस्थानका दर्शन करते हैं। यहाँ जानेके लिये
चित्रकूट अथवा कटनी स्टेशनसे मानिकपुर जङ्गल आना होता
है और मानिकपुरसे कटनी उतरकर निळसपुर जानेवाली गाड़ीसे
पिण्डरारोड स्टेशनपर उतरना होता है। कटनीतक जी० आर्इ०
पा० रेलवे है और कटनासे पिण्डरारोडतक बी० एन० आर० है।
कुल मिलाकर चित्रकूटसे पिण्डरारोड २७५ मील है।

पिण्डरारोडमें यात्रियोंकी सुविधाके लिये स्थान है तथा तीर्थ-
पुनारा भी स्थानका प्रबंध करा देते हैं। यहाँ कोई धर्मशाला नहीं
है। यहाँसे अमरकण्टकतक अधिकांश यात्री पैदल ही जाते हैं।
जो यात्री पैदल नहीं चल सकते उनको किरायेपर हाथी अथवा घोड़े
मिल जाते हैं। पिण्डरारोडसे आमनालातक रास्ता ठीक है। यहाँमें
आगे नदीनारायणके पहाड़के समान चढ़ाई है। आमनालासे नर्मदा-
जी अनुमान पाँच मील रह जाती हैं। इस बीचमें जङ्गल पड़ता है।
नर्मदाजीका उद्गमस्थान रीवाँराज्यके अन्तर्गत है। रीवाँनरेश
महाराज बैरुटरमणने स० १९७२में नर्मदाजीके कुण्ड और तीर्थ-
स्थानका जीर्णोद्धार करा दिया है। यह स्थान बड़ा ही रमणीक
और जल-शायकी दृष्टिसे बड़ा स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ क्षयरोगके रोगी
बिना ही जा सकते हैं।

अमरकण्ठक पर्वतके ऊपर नर्मदाजाका पका कुण्ड बन हुआ है। उसके घाटपर यात्रीगण स्नान करन हैं। इसी कुण्डका जल ग्राह्य रहता हुआ ११ मील आगे पर्वतसे नीचे गिरता है। इसका नाम कपिलगंगा है। यात्रीगण कपिलधारामें स्नान करते हैं। इनमें स्नान करनेका शास्त्रमें उदा माहात्म्य है।

यहाँपर गीर्वाण्यकी ओरसे यात्रियोंके लिये कुछ नर्मदागर्भ कनी हुई हैं तथा कुछ गृह तीर्थपुजारियोंके भा हैं। यात्री अपनी सुविधाके अनुसार उनमें ठहर सकते हैं। इस स्थानके प्राचीन मन्दिर महाभारतकालनक पुराने हैं—पसा यहाँक तीर्थपुजारी विश्वास दिलाते हैं, किन्तु उनका कोई प्रमाण नहीं है।

अमरकण्ठका दूसरा नाम रत्नपुर भा है। महाकवि वाल्मीकिअपने मेखदूत नामक महाकाव्यका रचना इसी स्थानपर की थी। अमरकण्ठक नर्मदा, तुहिला ओर सान इन तीन पुनीत नदियोंका आदिस्थान है। यात्रीगण जिस प्रकार भगीरथशिलापर पहुँचकर गगातरीका माहात्म्य अनुभव करत हैं उसी प्रकार अमरकण्ठकमें इन तीनोंका मूर्तियोंके दर्शन करनेमें उन्हें इस स्थानकी महत्ताका पता लगता है। यहाँ भागवत आदि पुराणोंकी कथा हुआ करती है। इस स्थानपर एक गायत्राकुण्ड है। गायत्रीमन्त्रका पुरश्चरण करनेवाले बहुधा इसी स्थानपर पुरश्चरणकी समाप्तिपर इनादि करते हैं।

इस स्थानपर लकापति राजने भा उदृत वर्षातक निवास किया है। कहने हैं कि उसने कारण ही इस पर्वतका नाम अमरकण्ठक पड़ा है। जिस प्रकार हृदिद्वारमें गगातटपर ब्रह्मा मिलती है

उसी प्रकार यहाँ नर्मदाके किनारे भी मिलती है। यहाँ एक गुलबन्तानगका वृक्ष होता है। यहाँके पण्डे बतलाते हैं कि यह वृक्ष भारतवर्षमें और कहीं नहीं होता।

अमरनाथ महादेवका मन्दिर महाराज युगिष्ठिरका बनवाया हुआ बतलाते हैं। इस मन्दिरका समय-समयपर जीर्णोद्धार होता रहा है। यह भी किन्दन्ती है कि अमरनाथ महादेवके नामसे ही इस पर्वतका नाम अमरकण्ठक हुआ है। यहाँके राग-भोगका प्रबन्ध रीमा दरवारकी ओरसे रहता है। यह पर्वत अनेक प्रकारके वृक्ष-लताओं और अनेकों जलके झरनोंसे परिपूर्ण है। यात्रीलोग यहाँसे बहुत-सी ब्राह्मी अपने-अपने घरोंको ले जाते हैं। यह अनेकों रोगोंका नाश करनेवाली और बुद्धिको बढ़ानेवाली होती है।

यहाँपर भोजनकी सब सामग्री नहीं मिलती और न यहाँ कोई पाठशाला या डाकखाना आदि हा है। यात्रीलोग अपनी सुत्रिकाके लिये भोजनका सारा सामान पिण्डरारोडसे ले जाते हैं। यहाँ तो केवल मोटे चारलोंके सिवा और कोई चीज नहा मिलती।

माहात्म्य—नर्मदाकी उत्पत्ति भगवान् शंकरसे है। अतएव वह उन्हें गंगाजीसे भी अधिक प्रिय है। अग्निपुराणमें लिखा है कि भागीरथीमें स्नान करनेसे जिस फलकी प्राप्ति होती है वह नर्मदाजीके दर्शनसे ही हो जाती है। सरस्वतीका जल पाच दिनमें, यमुनाका सात दिनमें और भागीरथीका तत्काल ही पवित्र करना है, किन्तु नर्मदाजीके तो दर्शनमात्रसे ही जीव पवित्र हो जाता है। नर्मदाजीके जलसे जो पितरोंका तर्पण किया जाना है वह उन्हें अनन्त कालके लिये तृप्त रख देता है।

विन्ध्याचल

अमरकण्ठके पश्चात् यात्रियोंको विन्ध्याचलम श्रीविष्णुमूर्तिनी देवीके दर्शन करने चाहिये । विन्ध्याचल जानेके लिये यात्रियोंको पिण्डरारोडमें घटनी होकर इलाहाबाद आना होता है और इलाहाबादसे ई० आई० आर० की मुख्य लाइनद्वारा विन्ध्याचल स्टेशनपर उतरना होता है । विन्ध्याचल पिण्डरारोडसे ३४५ मील है ।

यह मुपलसराय और इलाहाबादके बीचमें है । यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये स्टेशनके निकट तीन धर्मशालाएँ हैं । पहली शिवनारायण बल्देन्द्रासमी, दूसरी सारस्वत खत्री धर्मशाला और

तीसरी बरहलगजके किमी सज्जनकी बनगयी हुई है। यात्री अपनी सुपिया देखकर इनमेंमे किसी धर्मशालामे अथवा विध्याचल बस्तीमें ठहर सकते हैं।

विन्ध्याचल भगवतीका पीठ माना जाना है। आदिमन और चैत्रमासके नवरात्रके समय यहा देश-देशांतरके नर-नारी दर्शनार्थ आते हैं। उस अवसरपर यहाँके तीर्थगुरु अपने-अपने घरोंमें स्थान देकर यात्रियोंको ठहरा लेते है।

यहाँ पहुँचकर यात्रियोंको श्रीगंगाजीमें स्नान करके भगवतीका दर्शन करना चाहिये। भगवतीका मन्दिर बस्तीमें है। मिहपर खड़ी हुई बड़ी मनोहर श्यामवर्ण मूर्ति है। इस स्थानपर माताकी छटा देवते ही बनती है। भगवतीका दर्शन करके यात्रियोंको फाँगी खोह त्रिकोणकी यात्रा करनी चाहिये। यहाँ अष्टभुजा भगवतीके दर्शन होते हैं। काली रोहमें शुभ निशुम्भमर्दिनीका स्थान है। यहापर पुराण-प्रसिद्ध शुभ और निशुम्भका युद्ध हुआ था। यह भी एक सिद्ध पीठ है। इस जगह आज भी महान् सिद्ध शाक्त रहते हैं। उन महापुरुषोंके सबको दर्शन नहीं होते। यहा तीर्थपुजागियोंके अनिरिक्त कुठ प्रतिष्ठित महानुभावोंके द्वारा भी यह बात सुनी गयी है कि षोड़ा समय हुआ, एक बार जब भगवतीके मन्दिरका द्वार बन्द हो चुका था कुठ शाक्त आये आर भगवतीकी चौखटपर पुष्पमात्र रखकर अर्चन हो गये। प्रात काल जब मन्दिरका दरवाजा खोला गया तो वे पुष्प भगवतीके चरणों और पुष्पमात्र गलेमें पड़ी हुई मिली। यहाँपर मार्कण्डेयपुराण ओर सप्तशतीका पाठ प्राय सदा ही होता

विन्ध्याचल

अमरकण्ठके पश्चात् यात्रियोंको विन्ध्याचलमें श्रीविष्णुवासिनी देवीके दर्शन करने चाहिये । विन्ध्याचल जानेके लिये यात्रियोंको पिण्डरारोडसे फटनी होकर इलाहाबाद आना होता है और इलाहाबादसे ई० आई० धार० की मुख्य त्राम्नद्वारा विन्ध्याचल स्टेशनपर उतरना होता है । विन्ध्याचल पिण्डरारोडसे ३४५ मील है ।

यह मुषम्भराज और इलाहाबादके बीचमें है । यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये स्टेशनके निकट तीन धर्मशालाएँ हैं । पहली शिवनारायण बउद्वदामनी, दूसरी सारस्वत रानी धर्मशाला और

तीसरी बरहलगाजके किसी सज्जनकी बनवायी हुई है। यात्री अपनी सुविधा देखकर इनमेंसे किसी मर्मशालामें अपना विध्याचल बस्तीमें ठहर सकते हैं।

विध्याचल भगवतीका पीठ माना जाना है। आश्विन और चैत्रमासके नवरात्रके समय यहाँ देश देशान्तरके नर-नारी दर्शनार्थ आते हैं। उस अवसरपर वहलके तीर्थगुरु अपने-अपने घरोंमें स्थान देकर यात्रियोंको ठहराते हैं।

यहाँ पहुँचकर यात्रियोंको श्रीगगाजीमें स्नान करके भगवतीका दर्शन करना चाहिये। भगवतीका मन्दिर बस्तीमें है। मिहपर खड़ी हुई बड़ी मनोहर श्यामवर्ण मूर्ति है। इस स्थानपर माताकी उटा देवते का बनती है। भगवतीका दर्शन करके यात्रियोंको काली रोह त्रिकोणकी यात्रा करनी चाहिये। यहाँ अष्टभुजा भगवतीके दर्शन होते हैं। काली रोहमें शुम्भ निशुम्भमर्दिनीका स्थान है। यहाँपर पुराण-प्रसिद्ध शुम्भ और निशुम्भका युद्ध हुआ था। यह भी एक सिद्ध पीठ है। इस जगह आज भी महान् सिद्ध शाक्त रहते हैं। उन महापुरुषोंके समको दर्शन नहीं होते। यहाँ तीर्थपुजारियोंके अतिरिक्त कुछ प्रतिष्ठित महानुभावोंके द्वारा भी यह बात सुनी गयी है कि थोड़ा समय हुआ, एक बार जब भगवतीके मन्दिरका द्वार बन्द हो चुका था कुछ शाक्त आये और भगवतीकी चौखटपर पुष्पमाला रखकर अन्तर्गमन हो गये। प्रातःकाल जब मन्दिरका दरवाजा खोला गया तो वे पुष्प भगवतीके चरणों और पुष्पमाला गलेमें पड़ी हुई मिली। यहाँपर मार्कण्डेयपुराण और सप्तशतीका पाठ प्रायः सदा ही होता

रहता है। त्रिपर्वतपर कुछ समय त्रिपर्वतपर रहनेसे सहस्राभिन्न पुरुषके दर्शन हो जाते हैं। उनके दर्शन प्रायः नग्रास्थानमें ही हुआ करते हैं।

अनीश्वरजी तनिक विष्वक्पर्वतपर जाकर वरुण शिलाओंका निरीक्षण करें। वे उल्टी और गूड़ी लगी हुई हैं, मानो शयन करा दी गयी हैं। जिन्होंने पुराणोंकी कथा सुनी है वे जानते हैं कि एक बार विष्वक्पर्वतने लड़े होकर सूर्यका मार्ग रोक दिया था। उसको देखकर सत्र देवता व्याकुल हो गये और अगस्त्यजीकी शरणमें गये। अगस्त्यजी विष्वक्पर्वतके गुरु हैं। देवताओंकी प्रार्थना सुनकर अगस्त्यजी विष्वक्के पास गये। गुरुजीने आये देखकर विष्वक्ने उन्हें साष्टाङ्ग प्रणाम किया तब अगस्त्यजीने देवताओंका कष्ट दूर करनेके लिये त्रिपर्वतके आशीर्वाद देकर आज्ञा दी कि तुम इसी प्रकार आनन्दसे पढ़े रहो। ऐसा कहकर अगस्त्यजी तपस्या करनेके लिये दक्षिण दिशाको चले गये। तबसे विष्वक्चट पर्वत उसी प्रकार पेटके तब पड़ा हुआ है जैसा कि उसकी शिलाओंकी स्थितिको देखकर भी जान पड़ता है।

यहाँ एक त्रिपर्वत शिव है। उनके मन्दिरमें काशिराजके पूर्वजोंका खुदवाया हुआ एक शिलालेख है, निम्नका सत्र भाग पढ़नेमें नहीं आता केवल समत १७३३ पढ़ सकते हैं।

इसके सिवा यहाँ एक तारकनाथ कुण्ड है। इसमें स्नान करनेसे यात्री पापमुक्त हो जाते हैं—ऐसा उसका माहात्म्य है। इसके निकट जो शिलालेख है उनका नामावली इस प्रकार है—

तारकेश्वर, भृगीश्वर, अष्टदशागुलेश्वर, शैलेश्वर, सारस्वतेश्वर, सर्पतीर्थेश्वर, महेश्वर, रत्नेश्वर, धर्मेश्वर इत्यादि । इन शिवलिंगोंके दर्शनसे भी सर्प पापोंकी निवृत्ति हो जाती है ।

तारकेश्वर शिवके परिचयमें नारायण नामका सरोवर है । यहाँ समर्षिकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड और लक्ष्मीकुण्ड हैं । इनके मिया बहुत-से ऐसे भी कुण्ड हैं जो अब लुप्त हो गये हैं, इनके जीर्णोद्धारकी आवश्यकता है । इन कुण्डोंकी नामावलीसे यह प्रकट होता है कि इस पवित्र स्थानपर ब्रह्मा और सप्तर्षि आदि मुनियोंने भी तपस्या की है ।

भगवती, अष्टभुजी और काली इन तीनों देवियोंके दर्शन करनेको ही त्रिकोण यात्रा कहते हैं । जिस समय अपने बधकी आशकासे राजा रुसने अपनी बहिन देवकीके सान पुत्रोंको उत्पन्न होते ही नष्ट कर दिया और देवकीके आठवें गर्भसे भगवान् कृष्णने जन्म ग्रहण किया, उसी समय भगवान्की योगमाया उन्हींकी प्रेरणासे नन्दजीके घरमें उत्पन्न हुई । भगवान्के जन्म लेनेपर यमुदेवजी उन्हें गोकुल्मे यशोदाके पास सुला आये और उस सथोजाना बाटिकाको लेकर देवकीको सौंप दिया । इससे समको यही भ्रम हुआ कि देवकीके आठवें गर्भसे पुत्र न होकर कन्याका जन्म हुआ है । पापी कर्मने उस कथापर भी दया न की उसने देवकीके बहुत अनुनय-प्रिनय करनेपर भी उसके हाथमे उसे ठान लिया और उसे पृथ्वीपर पटकनेके लिये ऊपरको उठाया, किन्तु योगमाया उमके हाथसे छूट गया और अष्टभुजी देवकीके रूपमें

प्रकृत होकर उसमें विद्याचरण विराम दिया । यह दाम्नाया की भिन्न भिन्न स्थाण्ड पर जगन्मा, दुगा कर्ण पर शक्तिशक्ति आदि अवाय तात्परे प्रसिद्ध है । यथा त्के मनव मज्जात गुणित्तिने इम पुनीत आश्रयपर विराम दिया था । यह तथा महाभागतः विराटपरमे आयी ।

यहाँ यात्रियों की भीड़ ता वन हा गता है किन्तु चित्तन ही व्यक्ति यहाँका जलवायु उत्तम ममज्जापर गंगमुत्त लोके त्रिपे वायुसेवापर भी आता है । गताञ्जुम म्म पराती म्मणीयता देरते ही बनती है । यहाँके वातावरण भगवान् का प्रमाद छोटे इलायचाग्ने और विनीरी मिउता है । देरपर चरा हुआ द्रव्य छेनेके त्रिपे वाते नीर्यगुरांते दिन की हृण है ।

विद्याचरणके दर्शनीय स्थानोंमें काशादरेणव्य वर्गाचा मुख्य है । इसके सिवा यहाँ और भी कई उद्यान हैं तथा समृद्ध पाठशाळा दानखाना, अस्पताल और अन्नशेख भी हैं । यहाँपर भोजनका सब सामान मित्र जाता है ।

माहान्म्य—कहते हैं, विद्याचरण पर्यन्तपर सिद्ध, चारण, गार्धर और दवनादि भी निवास करते हैं । भगवतीने ती दिनकर शुद्ध करके नगमीने शुम्भ निगुम्भका वय किया था । ये नौ दिन ही नवरत्न कहे जाते हैं । इन दिनोंमें भाग्यार्थमें सभी चगह माना का पूजन अर्चन होता है । जो लोग मानाका उरण छेने हैं उनके समस्त सकट दूर हो जाते हैं ।



काशी

निध्याचलसे चलकर यात्रियोंको काशीपुरीके दर्शन करने चाहिये । मार्गमें मुगलसराय जङ्कशनपर गाड़ी बदलनी पड़ती है । मुगलसरायसे दूसरा स्टेशन काशी है । यहाँ चार स्टेशन हैं । दो छोटी लाइन (B N W R) के और दो बड़ी लाइन (C I R) के । इन चारों स्टेशनोंपर भारतवर्षभरके लाखों यात्री आते हैं । बड़ी लाइनके स्टेशनोंका नाम काशी और बनारस आगनी है । इन्हें क्रमशः राजघाट और सिगरोल भी कहते हैं । तथा छोटी लाइनके स्टेशनोंका नाम बनारसमिठी या अल्डपुर तथा मरुआडीह है । निध्याचलसे काशी ४९ मील है । राजघाटपुलके ऊपर गाड़ी आनेपर काशीपुरीका दर्शन होने लगता है । यहींसे काशीकी रमणीयता देखकर दर्शकोंका मन प्रफुल्लित हो जाता है । सभी स्टेशनोंपर तीर्थगुरु अपने-अपने यजमानोंकी खोजमें रहते हैं, तथा इक्का, ताँगा आदि सवारियाँ हर समय मिल जाती हैं । काशी स्टेशनसे थोड़ी ही दूर एक बड़ी धर्मशाला है । बनारस आगनीके पास भी श्रीकृष्णार्मशाला है । यह भी बहुत बड़ी है और इसमें सत्र प्रकारकी सुविधा है । काशी और बनारस स्टेशनसे ही शहर प्रारम्भ हो जाता है । विश्वनाथजीका फाटक स्टेशनसे दो मीलकी दूरीपर है । फाटकके निकट ही राधा-कृष्ण शिवदत्तरायजी धर्मशाला है । जिसको लोग ज्ञानवापीकी धर्मशाला भी कहते हैं । विश्वनाथजीका मन्दिर इसके पास ही है इसलिये इसमें यात्री अधिक सख्यामें ठहरते हैं । इसके सिवा और भी बहुत-सी छोटी-

बड़ी धर्मशागण हैं। धर्मशागणोंके जतिरिक्त गृहन से मन्दिर-आश्रम और महत्तोंके स्थानों भी यात्रीलोग टहरने हैं। प्रधान प्रधान पर्यटनियोंपर जब यह भाइयों अधिक्ता होती है तो यहाँके पण्डे-जोग यात्रियोंको अपने घरोंपर भी टहराने हैं।

ऐसे तो रागी सारी-की सारी ही दर्शनीय हैं तथापि यहाँके कुछ घाट जैसे मणिकर्णिका, दशाश्वमेय, अहिल्यावाईघाट और केदारघाटादि-पर तो बाहरसे आनेवाले यात्री ही क्या, रात दिन यहीं रहनेवाले काशीनिवासी भी मुग्ध हैं।

धर्मशालामें टहरकर यात्री-गण पहले गंगाजीमें स्नान करते हैं। अरिक्ताश यात्री मणिकर्णिका और दशाश्वमेयघाटपर ही स्नानादि करते हैं। मणिकर्णिकाघाटके स्थलमें यह कहा जाता है कि जब सताने अपने पिता दक्षके यज्ञमें भगवान् शिवकी निंदा श्रवणकर उस अपमानको सहन न कर सकनेके कारण गन्धुण्डमें गिरकर अपने प्राण त्याग दिये तो भगवान् शकर सतीजके मृतक शरीरको अपने कंधेपर ग्गकर त्रिक्षिप्त पुरुषकी भाँति जहा-तहाँ घूमते लगे। तब श्रीविष्णुभगवान्ने अपने सुदर्शन चक्रमें सतीके अङ्ग प्रत्यङ्गोंको काटकर जहाँ-तहाँ गिरा दिया। जहाँ जहाँ सताके अङ्ग गिरे उहाँपर सिद्धपीठ बन गये। मणिकर्णिकाघाटपर सतीका कुण्डल गिरा था। उसी स्थानपर आजकल मणिकर्णिकुण्ड है। यात्रीलोग गङ्गास्नानकर इस कुण्डपर तीर्थविधि करते हैं।

दशाश्वमेयघाट—इस स्थानपर ब्रह्माजीने दस अश्वमेय यज्ञ किये थे इसीमें इमका नाम दशाश्वमेयघाट हुआ। यहाँ जितने घाट हैं उनके नाम पड़नेके इसी प्रकार अलग-अलग कारण हैं।

हरिश्चन्द्रघाट—इस घाटपर आर्य महाराज हरिश्चन्द्रकी लापों वर्ष पुरानी स्मृति जाग्रत हो जाती है। उनकी अद्भुत सत्यनिष्ठा, अपूर्ण त्याग और विलक्षण कष्टसहिष्णुता मृत प्राणोंमें भी जीवनका सञ्चार कर देती है। ससारमें ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना प्राय असम्भव है।

तुलसीघाट—इस स्थानपर गोसाईं तुलसीदासजी रहा करते थे। उन्हींकी स्मृतिमें यह घाट बनाया गया था। यहाँ उनका स्थापित किया हुआ एक हनुमान्जीका मन्दिर है। उसीमें उनकी चरणपादुकाएँ भी रक्खी हुई हैं। इसी स्थानपर श्रीगोसाईंजी महाराजने स० १६८० में देह त्याग किया था।

इनके सिवा राजघाट, प्रह्लादघाट, त्रिलोचनघाट, प्रह्लाघाट, पञ्चगंगाघाट, भौंसलाघाट, चिताघाट, ललिताघाट, अहिल्याबाईघाट, केदारघाट, जानकीघाट और असीसगमघाट आदि ओर भी बहुत-से घाट हैं।

श्रीविश्वनाथजी—किसी भी घाटपर जान करें और किसी भी रास्तेसे विश्वनाथजीके मन्दिरको जायें मार्गमें ओटे-बड़े अनेकों शिवाग्य मिलेंगे। शिवजीका दर्शन यहाँ पग पगपर होता है। विश्वनाथमन्दिरके निकट पहुँचनेपर पुष्प, पुष्पहार एवं विन्ध्यपत्रादि पूजनसामग्रीकी अनेकों दूकानें हैं। यहकि दूकानदार यात्रियोंकी कपड़ा आदि वस्तुएँ रख लेते हैं और जब वे श्रीविश्वनाथजीका दर्शन करके लौट आते हैं तो उसको फिर सँमाल देते हैं। मन्दिरके पहले फाटकसे प्रवेश करते ही विश्वनाथके स्वर्णमन्दिरके दर्शन होने लगते हैं। मन्दिरके प्राङ्गणमें सगमरके फरमें चाँदीके रुपये

लड़े हुए हैं। ये रुपये सिमा बगली भक्तन उदारी, ये तथा मन्दिरके उपर जो सुरगीय शिगर है उसे पञ्चावैशरी महागत्र रणजीतामिलो मर् १८३० इ० में बराया था। विघनायजीके मन्दिरमें चार दरवाज हैं, गिनकी चोख और गिगदें पीरगके पत्रसे मढ़ा हुई हैं। शिगरजीको उदारी भी चोखरी धनी हुई है। इस मन्दिरके भीतर एक अगाड भुगार अर्वाँश जलना राना है। प्रात फाउ चार बजेसे ग्यारह बजेनरु और साध्यासमय तीन बजेसे उ बजेनरु यहाँ इतरी भीड़ रहती है कि विघनायजापर जल चढ़ाना भी कठिन हो जाता है। दस बजे गिन और ग्यारह बजे रात्रिमें नागकोटकी तरफसे श्रीविघनायजीका आरती होती है। कहते हैं कि नागकोटकी ओरसे विघनायजीके दैतिक ध्ययके लिये दो सौ रुपये बँचे हुए हैं। भगवान्के गिरिग्व पूजनके लिये यहाँ कई ब्राह्मण नियुक्त हैं, वे भगवान्को खान करानेके लिये चादीके कउशोंमें गीका दुग्ध और गगाजल भाकर लाते हैं। यदि कोई यात्री दिनके दस बजेकी आरती न देख सके तो उसे रात्रिकी आरती ता अग्र्य देरनी चाहिये। यह देगनेकी चाड है।

विघनायजीकी परिक्रामें अथ कई देरी-देरनाओंके दर्शन मिलते हैं। एक कुण्डम भगवान् विघनायके खानकर जल रहता है। उसका यात्रीलोग आचमन किया करते हैं और परिक्रमा दकर चुठ मिनट विश्रामकर शिखनायका स्मरण करते हैं। तपश्चात् मन्दिरकी स्वर्णपताफाका दर्शन और भगवान्को प्रणामकर अन्नपूर्णाजीके दर्शनार्थ जाते हैं।

अन्नपूर्णा-अन्नपूर्णाका मन्दिर त्रिश्चनाथजीके समीप ही है। रास्तेमें गलीके दोनों ओर सैकड़ों अपाहिज भिक्षु बंठे रहते हैं। उन्हें कोई-कोई यात्री पेसा, पाई या केवल कुछ चावल दे देते हैं। भगवतीके मन्दिरके सामने पुष्प, मालादि पूजनकी सामग्रीकी दूकानें हैं, यात्रीयोग पूजनकी सामग्री अथवा केवल पुष्पमाला लेकर मन्दिरमें प्रवेश करते हैं।

फाटकमें प्रवेश करते ही भगवतीके मन्दिरकी ध्वजा दिग्गयी देने लगती है। सारा मन्दिर लाल रंगसे पुता है। सभामण्डप इतना बड़ा है कि उसमें दो सौ मनुष्य आनन्दसे बैठ सकते हैं। यहाँपर भगवती अन्नपूर्णाकी स्तुतिमें सम्मिलित होकर बहुतसे भक्तगण गाना-बजाना किया करते हैं। यह आनन्द प्रातःकालसे बाराह बने मध्याह्नकर होता है। भगवतीके भवनके द्वारपर एक पुजारी बैठा रहता है। यदि कोई यात्री प्रातःकाल ही अपने हाथों भगवतीका पूजन किया चाहे तो कर सकता है। फिर दिनभर केवल दर्शनमात्र ही हो सकते हैं। यात्री फूल, माला आदि जो कुछ मामग्री ले जाते हैं उसे मन्दिरका पुजारी भगवतीको समर्पण कर देता है और कुछ प्रसादस्वरूप लौटाकर यात्रियोंको पश्चामृतका चरणामृत देता है। इस प्रकार भगवतीका दर्शनकर यात्री मन्दिरकी परिक्रमा करते हैं।

मन्दिरके चारों ओर भी देवमूर्तियोंके दर्शन होते हैं। परिक्रामें एक छोटे-से मन्दिरमें मूर्यभगवान्की मूर्ति दर्शनीय है। यहाँपर बड़ी-बड़ी गोएँ रखा करती हैं तथा मन्दिरके समीप दो दालानोंमें पण्डित, साधु, गृहस्थ अथवा किसी दूसरे पुरषसे सरूप पाये हुए ब्राह्मणलोग दुर्गासप्तशती, चण्डी अथवा किसी मन्त्रका

पाठ या जप करते दिखायी पड़ते हैं। इन गंनों टागनोंके ऊपर उज्जोपर काठके रगीन माड़गोई लगे हुए हैं, जिनमें उन महातु भागोंके नाम पतेसहित लिगे हैं जो अन्नपूर्णात्रयचर्याधम फार्शां त्रिये एरुकार्गिक, वार्षिक अथवा मासिक दान देते हैं।

घाशीके रईस श्रीपुरुषोत्तमदासजी गत्रीने लगभग एक लाख रुप व्यय करके अन्नपूर्णामंदिरसे मिठा हुआ एक नया मंदिर बना है, इसमें नवान दगपर बना हुई गगावतरण, रामपञ्चायतन, शिव-पञ्चायतन, कानी, राधाकृष्ण और मुसिह आदिकी बड़ी मनोहर प्रतिमाएँ हैं। गगावतरणका दृश्य ता इतना चित्तकर्षक है कि वहाँसे हटनेका जी नहीं चाहता। इन प्रतिमाआने कारण अन्नपूर्णामन्दिरकी शोभा और भी अधिक बढ़ गयी है। इस प्रकार अन्नपूर्णाजीके दर्शनकर यात्रीजोग दुण्डिराज गणेशकी ओरके दूसरे दरवाजेसे जानपापीरो जाते हैं।

ज्ञानपापी—यह त्रिभुवननाथजीके मंदिरके पीछे एक खुली हुई जगहमें है, इसके पास ही पुष्पादिकी दूकानें हैं। यह एक बहुत बड़ा झुआँ है। इसके ऊपर लोहके सींगचोंका जाल पडा हुआ है। ज्ञानपापीने ऊपर गेठा हुआ एक पुजागी यात्रियोंको उमके जगना आचमन कराता है। यात्रीजोग पुष्पादिसे ज्ञानपापीका पूजन करते हैं। इस छूपका जल पानेसे ज्ञानका उत्पन्न होता है ऐसा इसका महात्म्य बनगया जाता है।

ज्ञानपापीके पास ही एक बहुत बड़ा मसजिद है। इसे मुगल सम्राट् औरगजेने त्रिभुवननाथजीके प्राचीन मंदिरको तुड़नाकर

बननाया था । इसने पीठेकी दीवार वही है जो कि प्राचीन मन्दिरकी थी, कहते हैं कि जब औरङ्गजेबने इस मन्दिरको ध्वस्त किया तो श्रीनिधनाथजी इस समीपवर्ती (ज्ञानगामी) कृपमे कूद पड़े, इसीसे इसका जल बहुत पवित्र माना जाता है । यहा जो प्राचीन नदीश्वर थे उनके बदलेमें नैपालराज्यके भेंट किये हुए एक सात फुट ऊँचे नदीश्वर हैं ।

हुण्डिराज गणेश आर दण्डपाणि—अन्नपूर्णाजीके मन्दिरके पास ही काशीके प्रसिद्ध देवता हुण्डिराज गणेशकी प्रतिमा है । इनके प्रत्येक अगपर चाँदी लगी हुई है । हुण्डिराजके समीप उत्तरकी ओर एक कोठरामें दण्डपाणिकी मूर्ति है । उनके दोनों ओर दो गण खड़े हैं जिनके नाम शुभ्र आर विभ्र प्रतलाये जाते हैं ।

आदिविश्वेश्वर—ज्ञानगामीके समीप जो औरङ्गजेबगाली मसजिद है उसके पश्चिम ओर कारमाइकेल लाइब्रेरी है । लाइब्रेरीसे पश्चिमोत्तर दिशामें सड़कके पास आदिविश्वेश्वरका मन्दिर है । मन्दिरमें सगमर्मरका फर्श है तथा पीतलसे बड़े हुए एक कुण्डमें एक ठोठा सा शिवलिङ्ग है ।

गोपालमन्दिर—यह चौखम्भामुहल्लामें बल्लभसम्प्रदायवालोंका एक बहुत बड़ा ओर सुन्दर मन्दिर है । इस मन्दिरकी शैली बड़ी मनोहर है । यहाँ श्रावणमें झूलनोत्सव बड़ी धूमधामसे होता है । काशीमें बल्लभ-सम्प्रदायवालोंके ओर भी कई मन्दिर हैं । जिनमें रणछोरजी, बड़े महाराजजी, दाऊजी ओर उल्लदेवजीके मन्दिर प्रसिद्ध हैं ।

फालभैरव—इसे भैरवनाथ भी कहते हैं। ये काशीपुराके रभ्रक माने जाते हैं। ये भैरवनाथमुहल्लेमें एक गिऱरदार मंदिरमें मिहासनके ऊपर बिराजमान हैं। मंदिरके तान ओर द्वार है तथा सफंद और फांटे पथरका फर्श लगा हुआ है। दरवाजेकी बायी ओर पत्थरका एक बड़ा मुत्ता है तथा दोनों ओर हाथोंमें सोटे गिये भैरवजीके गण गड़े हुए हैं। इस मंदिरका मन् १८२५ ई० में धानीराय पेशमाने बनवाया था। यहांक पुनारी मोरपक्षसे कात्रियोंकी पीठ टोको है। अगहन वृष्ण अष्टमीको यहीं दर्शकोंकी बहुत भीड़ होती है।

नैपाली मन्दिर—यह शिवमंदिर छटिताघाटके उपरा भागमें है। इसकी आरुति चीनके मंदिरोंके ढगरी है। इस ढगरी मंदिर काशीमें दूसरा नहीं है। इसके सामने एक बड़ा नदी है और पास ही नैपालियोंके ठहरनेके गिये एक धर्मशाला है।

मानमन्दिर—यह मन्दिर आमेरके महाराज मानसिंहका बनवाया हुआ है। यह गगानटपर बने हुए विशाल भयनोंमें सबसे पुराना है। इसकी ऊतके ऊपर महाराज सनाड जयमिहकी बनवायी हुई बेगशाला है, जिससे कुछ यन्त्रोंकी सहायतासे समस्त नक्षत्र ओर ग्रहमण्डला ज्ञान हो जाता है।

राममन्दिर—इस मंदिरको ग्वाठियरके दीवान दिनकर रायने बनवाया था। इसमें एक सुवर्णजडित मिहासनपर बहुमूल्य ब्रह्मभूषणोंसे सुमजित श्रीराम, सीता और लक्ष्मणजीकी बड़ी मनोहर

मूर्तियाँ हैं तथा इसके दालानमें बहुत-से शाड फानूम लटके हुए हैं—यह मन्दिर बहुत दर्शनीय है ।

गोरखनाथमन्दिर—मन्दाकिनीमुहल्लेमें गोरखटीला नामसे प्रसिद्ध एक ऊँची भूमि है । उसके ऊपर यह मन्दिर बना हुआ है । इसमें वामा गोरखनाथके चरण-चिह्न है । यहाँ गोरखसम्प्रदायके साधु रहते हैं ।

दुर्गाजीका मन्दिर—यह अस्साघाटसे प्रायः आधे मीलकी दूरीपर है । काशीके प्रसिद्ध तीर्थोंमेंसे एक यह भी है । भगवती दुर्गाजीके आगे एक मण्डप है जिसमें एक विशाल घण्टा टँगा हुआ है । मन्दिरके आस-पास ओर भी बहुत-से देवताओंकी मूर्तियाँ हैं ।

संक्रमोचन—काशीकरजटसे कुछ दूर अस्सीघाटपर गोस्वामी तुलसीदासके स्थापित किये हुए हनुमान्जी है, जो संक्रमोचन नामसे प्रसिद्ध हैं । इस मूर्तिको गोसाईंजीने ऐसे समयमें स्थापित किया था जब कि काशीके राजपुरोहितपर ही संक्रम उपस्थित हो गया था । इस स्थानपर उन्होंने हनुमान्जीके संक्रमोचन नामक स्तोत्रकी रचना की थी । संक्रमोचन हनुमान्के सम्मुख बैठकर उस स्तोत्रका नियमपूर्वक पाठ करनेवाले भक्तोंका संक्रम आज भी कट जाता है ।

पिशाचमोचन सरोवर—संक्रमोचनसे थोड़ी दूर पिशाचमोचन सरोवर है । इस सरोवरके घाट पक्के बने हुए हैं । यहाँपर नियमानुसार तीर्थत्रिधि करनेसे प्रेतादिकी व्याधि दूर हो जाती है । यहाँ प्रतिवर्ष अगहनशुक्ल चतुर्दशीको मेला लगता है ।

काशीके पञ्चतीर्थ—असामगम, वरणासगम, पञ्चगंगा, मणि-
कर्णिका और दशाश्रमेय वाशाके पञ्चनार्य कहलते हैं। इनपर
विधिवत् तीर्थस्निग्ध करनेसे मनुष्य समस्त पापोंसे मुक्त हो जाता है।

काशीके कुण्ड

लोलार्ककुण्ड—यह भदनामुहल्लेमें तुटसीघाटके समीप एक
कुआँ है, इसका घेरा १५ फीट है और इसके एक ओर इससे कुछ
बड़ा चतुष्कोण जलरहित कुण्ड है। इस कुण्डके तटपर शैलार्क
नित्य और लोत्रार्केश्वर महादेवके मन्दिर हैं। यहाँ भादोंकी छठको
बड़ा मेला लगता है।

पुष्करकुण्ड—यह विशाल और गम्भीर सरोवर असी नदार्क
तटपर है। इसने एक ओर पञ्च घाट भी बना हुआ है।

दुर्गाकुण्ड—यह दुर्गानाके मन्दिरके पास है। इसमें चारों ओर
पक्के घाट बने हुए हैं।

कुरुक्षेत्र—यह दुर्गाकुण्डके पास ही है, परन्तु प्रायः सूखा
रहता है।

नागकुआँ—शहरके पश्चिमोत्तर भागमें नागादररी देवीके
मन्दिरसे थोड़ा दूरपर कर्कोटव तीर्थ है, जो इस समय नाग-
कुआँके नामसे प्रसिद्ध है। इसमें नीचे जानके टिये प्रायः टड सो
साढ़िया लगी हुई हैं। यह नाचेसे गोग्रार कुआँ है और ऊपरसे
चाकोर ताग। इसके ऊपर पत्थरके दो सर्प बने हुए हैं। कहते
हैं, इसमें स्नान करनेसे विषयी गर्मी शान्त हो जाती है।

नियमानुसार जैसी उनकी इच्छा होती है वैसे ही उनके धनका उपयोग किया जाता है। इस प्रकार विश्वविद्यालयको भारतका बहुत से दानी सज्जनोंसे प्रतिभर्ष लाखों रुपया छात्रवृत्ति, उद्योगशाला, छात्रावास, आयुर्वेदकाउन्सिल, आयुर्वेदरसशाला, व्यायामशाला एवं पदक आदि कार्योंके लिये मिला करता है। इस विद्यालयमें अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं तथा विज्ञान, इतिहास, गणित, इन्जिनियरिंग, टाइटरी, बैंक और एडि आदि सभी विषयोंकी सर्वोच्च शिक्षा दी जाती है। यहाँ सभी विषयोंके बड़े चुने-चुने विद्वान् रक्ते गये हैं। इसका प्रयोगशाला, रसायनशाला और पुस्तकालय आदि संस्थाएँ भारतवर्षमें सर्वोच्चकोटिकी हैं। विद्यालयका विस्तार प्रायः तीन मीलके घेरेमें है। इसमें प्रायः ३-४ सहस्र विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं।

कॉलेज—यह भारतवर्षके प्राचीनतम कॉलेजोंमेंसे एक है। इसका सम्पूर्ण अधिकार गवर्नमेण्टके हाथमें है। काशाका गवर्नमेण्ट संस्कृत कॉलेज भी इसीके अधीन है। इस कॉलेजकी लाइब्रेरीमें संस्कृत और अंग्रेजी आदि भाषाओंकी उत्तमोत्तम पुस्तकें हैं। इसका विद्यालय भवन बहुत दर्शनीय है। यह सन् १८५२ में बना था।

कार्याविद्यापीठ—इस राष्ट्रीय मन्ध्याकी सन् १९२१ ई० में स्थापना हुई थी। इस संस्थाका सम्मान अफिसरमें अबू गिरप्रसाद गुप्तके दिये हुए दस लाख रुपयेके दानसे ही होता है। इसमें शिक्षाके तीन विभाग हैं—विद्यालयविभाग, पाठशाला और शिपशाला।

विद्यालयविभागमें मुख्यतया दर्शन, अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति, सस्कृत, अंग्रेजी और हिन्दी आदि विषयोंकी शिक्षा दी जाती है। इसमें अंग्रेजी अनिवार्य है। पढ़ाई समाप्त होनेपर शास्त्री उपाधि मिलती है। पाठशालाविभागमें उठी श्रेणीसे दशमी श्रेणीतककी पढ़ाई है। इसका पाठ्यक्रम समाप्त करनेपर मिशरदकी उपाधि मिलती है। इसमें विज्ञान अनिवार्य है। शिल्पविभागमें तरह-तरहकी दस्तकारी सिखायी जाती है। इस विद्यापीठमें विद्यार्थियोंसे कोई फीस नहीं ली जाती।

इनके सिवा काशीमें और भी बहुत से सस्कृतविद्यालय हैं। काशी सस्कृत विद्याका केन्द्र है। यहाँकी समस्त पाठशालाओंमें प्रायः बीस सहस्र विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। यहाँके कई विद्यालयोंमें तो विद्यार्थियोंको भोजन, वस्त्र और पुस्तकें भी दी जाती हैं। प्रधान-प्रधान विद्यालयोंके नाम इस प्रकार हैं—
जोगीराम मटरुमल गोयनका महाविद्यालय, मारवाडी महा-विद्यालय, राजस्थान महाविद्यालय, मिडला महाविद्यालय तथा रूइया महाविद्यालय इत्यादि।

विद्यालयोंके अतिरिक्त यहाँ बहुत-से अन्नक्षेत्र, साधु-आश्रम और महत्त्वके स्थान भी हैं। असीके तटपर मुमुक्षुमवन नामकी एक प्रसिद्ध मस्था है। इसमें अन्नक्षेत्र, पाठशाला और दण्डीबाड़ा होनेके अतिरिक्त कुछ ऐसे स्थान भी हैं जहाँ ठहरकर गृहस्थ सज्जन भी कुछ समयतक काशीवास कर सकते हैं।

अनायालय—यहा आथ बाउमके लिये काशीके भूतपूर्व कनेक्टर श्रीमहताजी धर्मपताके उद्योगसे एक अनायालय स्थापित हुआ है । उमका उद्घाटन सन् १९८४ में समुक्तप्रान्तके गवर्नरसाहबने किया था । इसमें अनाय बघा और अनाय गिर्घोका पाठन पोषण बड़े सुचारुरूपसे होना है । मेहतासाहब बड़े ही उदार प्रकृतिके सज्जन थे । वे जहा-जहाँ भी रहे उहाँने ऐसे ही परोपकारके कार्य किये हैं । प्रतापगढ़में महतामस्यृतपाठशाला उनका स्मरण दिनाका है, जो अत्यन्त गवर्नमेंष्टकी सहायतासे सुचारुरूपसे चल रही है ।

कनीरचौरा—यहाँ कसीगपथियोंका प्रसिद्ध मन्दिर है । मन्दिरमें कनीरसाहबके चरणचिह्न बने हुए हैं तथा एक दोमजिले मकानमें कनीरजीकी गद्दी है । गद्दीके पास उनकी टोपी रखी हुई है । इस गद्दीपर अत्यन्त घीस महत हो चुके हैं ।

माधनरामका धरहरा—माधनरामघाटके पास ऊँची भूमिपर बादशाह औरगजेनकी बनगयी हुई एक मसजिद है । उसके आगे इधर-उधर उसकी नीजसे १४२ फुट ऊँचे तीन खण्डनाले दो बुर्ज हैं । इनका व्यास नीचे सवा आठ फीट ओर ऊपर साढ़ सात फीट है । ऊपर जानेके लिये इनके भीतर चक्करदार सीढियाँ बना हुई हैं । इनके ऊपरसे काशान्त दृश्य बड़ा सुहावना दीख पडता है । इन्हें 'माधनराम' नामके एक कारीगरने बनाया था । इसीसे ये इस नामसे पुकारे जाने लगे ।

रामनगर—यह असीसगमसे एक मील दक्षिणकी ओर गंगाजीके दूसरे तटपर बसा हुआ है। यहां जानेके लिये नग्रा घाटसे नावें मिलती हैं। यह वर्तमान काशीनरेशकी राजधानी है। इस नगरको राजा बलरन्तसिहने सन् १७५० में बसाना आरम्भ किया था। उनके पीछे उनके पुत्र राजा चेतसिहने इस कार्यको पूरा किया। राजमहलसे एक मीलकी दूरीपर राजा चेतसिंहका बनाया हुआ एक बड़ा तालाब और सुन्दर मन्दिर है। यह मन्दिर हिन्दू-कठ-कोशलका बहुत अच्छा नमूना है। यहाँ आश्विन मासमें रामलीला होती है, जो भारतवर्षमें सम्भवत सर्वोत्कृष्ट कही जा सकती है। रामनगरका दूसरा प्रसिद्ध स्थान व्यासाश्रम है। इसमें व्यासजीका एक तेलचित्र रक्खा हुआ है। यहाँ फाल्गुन मासमें मेला लगता है। इस समय काशीनरेश यात्रियोंके देवनेके लिये अपना महल खोल देते हैं। रामनगर स्वयं भी बड़ी सुन्दर बस्ती है।

पञ्चक्रोशी परिक्रमा—काशीमें ऐसे ही अनेको स्थान दर्शनीय हैं। उन सत्रका वृत्तान्त लिया जाय तो एक पूरा ग्रन्थ बन सकता है। काशीकी पञ्चक्रोशी परिक्रमामें भी बहुत-से तीर्थस्थान मिलते हैं। यह परिक्रमा कार्तिक मासमें होती है। यों तो सदा ही यात्रीयोग परिक्रमा करते ही रहते हैं। शास्त्रका कथन है कि प्रलयकाटके अन्तमें शिवजीने इस पञ्चक्रोशी परिक्रमाके भीतरकी भूमिको अपने निवासके लिये उत्पन्न किया और वे शक्तिसहित इस स्थानमें रहने लगे। इसीका नाम काशी हुआ। यहां मृत्यु दानसे निधय हा मोक्ष प्राप्त होता है।

सारनाथ—यह भगवान् गौतमबुद्धका निवासस्थान था । यहाँ एक बहुत बड़ा विहार था, जिसमें भगवान् बुद्ध अपने सहस्रों शिष्योंके साथ रहा करते थे । यह स्थान काशीसे प्राय आठ मीलकी दूरीपर है । इस जगह अब भी भूमि खोदनेपर बुद्धका कंकड़ बहुत से पदार्थ मिलते हैं । इस समय यह बौद्धोंका एक तीर्थस्थान है । यहाँ पुस्तकालय, धर्मशाला, बुद्धमन्दिर, जैनमन्दिर, अजायबघर, स्तूप, मूलगंध कुटी और प्राचीन विहारके लण्डहर देखनेयोग्य हैं । मातृका सदातक सारनाथकी दशा बड़ा उन्नत और दर्शनीय थी, किंतु जब बारहवीं शताब्दीके अन्तमें मुहम्मदगोरीने इसे छूटा तबसे यहाँ केवल खण्डहरमात्र रह गये हैं । चीन और जापानके लोग इस स्थानपर बड़ी भक्तिपूर्वक दर्शन करने आया करते हैं । बौद्धधर्मानुयायियोंके लिये यह बड़े आदरकी जगह है ।

माहात्म्य—काशी सप्तपुरियोंमेंसे एक है तथा तीर्थराजके सबसे अधिक समीप होनेके कारण उन्हें सबसे अधिक प्रिय है । 'काशामरणा मुक्ति' यह समस्त शास्त्रोंका निर्विवाद मत है । इसीसे यहाँ सर्वा ही बहुत-से सन्त-महात्मा और श्रद्धालु गृहस्थ महानुभाव निवास करते रहे हैं । काशीमें अध्यापनविद्या और आर्यसंस्कृतिकी राजधानी कहा जाय तो को अयुक्ति नहीं । जिस प्रकार यहां सर्वा ही बड़े-से-बड़े विद्वान्, कर्मगण्डी और आचार्य नियाम करते हैं उसी प्रकार इसे अत्यन्त प्रिय और निरीह महात्माओंकी तपोभूमि होनेका भी सोभाग्य प्राप्त है ।

भिन्न-भिन्न सम्प्रदायोंके जो भी आचार्य हुए हैं, उनमें अग्रिमशने यहीं आकर अपने मतकी स्थापना की थी। भगवान् बुद्ध, भगवान् शंकर, श्रीरामानुजाचार्य, श्रीरुन्धभाचार्य, श्रीचेतन्यमहाप्रभु, श्रीरामानन्दाचार्य, कबीरसाहब, रेदास, गोसाईं तुलसीदास आदि महानुभावोंसे लेकर अर्वाचीन भारतके रत्न श्रीत्रिशुद्धानन्द सरस्वती, नारायण भट्ट, शंकर भट्ट, नीलकण्ठ, भट्टोनि दीक्षित, नागोजी भट्ट एवं प० बापूजा शास्त्री, राममिश्र शास्त्री, सुधाकर द्विवेदी, बच्चा झा, श्रीनैठल्लस्वामी, श्रीभास्कराचार्य-जैसे त्यागी महात्मा तथा बाल शास्त्री और शिवकुमार शास्त्री जैसे उद्भट विद्वानोंकी निवासभूमि होनेका सौभाग्य इसी पवित्र पुरीमें प्राप्त है। जहां इस प्रकार सर्वदा ही भगवत्प्राण महात्माओंका सान्निध्य रहता है उस पुरीके मोक्षदायिनी होनेमें सन्देह ही क्या है।

मस्कृत और आव्यात्मिक विद्याका ही नहीं, इसे हिन्दी-साहित्यका भी केन्द्र कह सकते हैं। यहाँकी नागरी-प्रचारिणी सभा हिन्दी साहित्यकी सबसे प्राचीन और प्रधान संस्था है। जितने साहित्यिक विद्वान् यहां रहते हैं उतने सम्भवत कहीं नहीं रहते। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, छोटूराम तिवारी, राधाकृष्णदास, अम्बिकादत्त व्यास, राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द और जगन्नाथदास रत्नाकर-जैसे धुरधर विद्वानोंने इसी पवित्र पुरीमें अपनी जीवनयात्रा समाप्त की थी।

व्यापार और कलाकी दृष्टिसे भी काशी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। यहाँके रेशमी वस्त्र, पीतलके वर्तन और लकड़ीके खिलौने समस्त भारतवर्षमें प्रसिद्ध हैं। यहाँ कारचोगी और चाँदीका

काम बढ़ा मुन्न होता है। रेतम और मगमलक ऊपर जो जराफा काम जाना है वह तो अपने रंगका गिराफा ही है। बनारसका साड़ा, दूपटे और गणियों मंत्र प्रसिद्ध हैं। यहांकी बनी हुई पातकी मूर्तियोंपर अद्भुत चित्रकारी और कलाका प्रदर्शन होता है। ये सब सामान यहाँसे बहुत दूर-दूर तक जाते हैं।

अरिक्त कटौतक वरें काशी ता काशी ही है। जिस दृष्टिमें भी शत्रो इसका दग गिरला ही है। धर्मप्राण, प्रवृत्ति, कलाकार, विद्वान् और सद्दय सभी प्रकारके यात्रियोंके मनोरन्जनके लिये यहाँ पुष्कल सामग्री है। इस पुष्पपुरीका दर्शन करके यात्रियोंका अपने जानन और नेत्रोंको असह्य सपना करना चाहिये। पुराणोंमें इसे अरिमुक्तक्षेत्र कहा है। यहां विशेष पर्योपर उत्तर-वाहिनी गंगाजीमें स्नान करनेके लिये नैमिषारण्य, प्रयाग, पुष्कर, धुरुनेत्र आदि तीर्थ तथा गादावरी, नर्मदा एव कावेरी आदि पवित्र नदिया भी आती हैं। यहाँ प्राणत्याग करनेपर चारों वणोंके मनुष्योंको ही नहीं बरिष्ठ पतगात्रियों भी मोक्षकी प्राप्ति होती है। काशीमें श्रिया हुआ दान अनन्त और अमोघ होता है। सूर्यग्रहणके समय जिस प्रकार कुरुक्षेत्र-स्नानका महान् फल है उसी प्रकार चन्द्र-ग्रहणके समय काशीमें स्नान करनेका बतलाया जाता है। जो व्यक्ति भक्ति भावमें देवादिदेव श्राविश्वनाथका पूजन करता है वह सब प्रकारके पापोंसे मुक्त हो जाता है।



गया

मोक्षदायिनी काशीकी यात्रा करके यात्रीलोग गयाजीका दर्शन करते हैं। शास्त्रका कथन है कि पितृऋणसे मुक्त होनेके लिये प्रत्येक सत्तानको गयाश्राद्ध करना चाहिये। गयाकी यात्राके लिये आदिनमासका पितृपक्ष ही सर्वोत्तम माना गया है।

काशीसे गया १४३ मील है। स्टेशनके निकट राय सूर्यमठकी धर्मशाला है। इसके सिवा गयाजीमें और भी धर्मशालाएँ हैं। यात्री अपनी सुविधा देखकर किसी धर्मशाला अथवा तीर्थगुरुओंके स्थानमें ठहर जाते हैं।

गया चारों ओरसे पर्वतमातसे घिरी हुई है। इन पर्वतोंके ऊपर बहुत-से पवित्र स्थान हैं। यात्रियोंके वहाँतक सुविधापूर्वक पहुँचनेके लिये भारतवर्षके राजा-महाराजाओंने सीढ़ियाँ बनवा दी हैं।

गयाका प्रधान कार्य अपने मृत् विनरोक त्रिये पिण्डदान करता है। यों तो यहाँ सर्वदा ही यात्रा आते रहने हैं, किन्तु आग्निनकासके पितृपक्षमें तो यहाँ देव-दशांतरके पर नारियोंकी बाढ़ सी आ जाती है। यद्यपि फन्गु नदामें जल अधिक नहीं रहता है तथापि शास्त्रके अनुसार इस नदीमें स्नान और पिण्डदान करनेका बड़ा भारी माहात्म्य है। गयामें श्राद्धकर्मके त्रिये प्राचीन समयमें ही बहुत सी वेदियों बनी हुई हैं। उनपर लोग विद्वान् श्राद्धणोंके द्वारा अपने पूर्वजोंको पिण्डदान कराते हैं। पहले यहाँ तीन सौसे भी अधिक वेदियाँ थीं, किन्तु अब समयके प्रभावमें उतनी वेदियाँ नहीं रहीं। फन्गु नदीका तटपर कुछ घाट हैं। जैसे गायत्रीघाट, गदापरघाट, ब्रह्मणीघाट, बजुआराट और जिह्वालोलघाट आदि। वर्षाकालमें फन्गु नदीका जल घाटोंके निकट आ जाता है। अब श्रतुओंमें किसी किसी स्थानपर ही जल दिलायी देता है। किन्तु उस समय भी बाढ़ हटानेपर स्वच्छ जल निकल आता है। उसीसे श्राद्धकर्म किया जाता है।

यहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा भारी माहात्म्य है। यों तो यहाँ सर्वदा ही श्राद्ध किया जा सकता है तथापि आग्निनके पितृपक्षमें इसका विशेष माहात्म्य है। पुरा गयाका श्राद्धकाल १६ दिनमें समाप्त होता है। इसका विवरण इस प्रकार है—

त्रिये

श्राद्धस्थान

भाद्रशुक्ल पूर्णिमा—फन्गुजीके तटपर एक वेदीपर क्षीरका पिण्डदान और तीर्थगुस्की चरणपूजा करनी चाहिये।

राग्निनकृष्णा प्रतिपदा—रामशिला, रामकुण्ड, प्रेतशिला, ब्रह्मकुण्ड
और काकबलि इन पाच वेदियोंपर श्राद्ध करे ।

” ” द्वितीया—उत्तरमानस, उदीची, कनखल, दक्षिणमानस
और जिह्वालोलमें श्राद्ध करे ।

” ” तृतीया—मतगयापी, धर्मारण्य और बौद्धगयामें ।

” ” चतुर्थी—ब्रह्मसरोवर और काकनलिपर ।

” ” पञ्चमी—रुद्रपद, ब्रह्मपद और निष्णुपदपर क्षीर-
पिण्डोंसे श्राद्ध करे ।

इन तीन तिथियोंपर नीचे लिखी १६ वेदियों-
के मण्डपमें १४ वेदियोंपर श्राद्ध होते हैं ।

” ” षष्ठी कार्तिकपद, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि,
” ” सप्तमी आह्वनीयाग्नि, सत्याग्नि, आवसथ्याग्नि, सूर्य-
” ” अष्टमी पद, चन्द्रपद, गणेशपद, दधीचिपद, कण्व-
पद, मतङ्गपद, कौश्वपद, इन्द्रपद, अगस्त्यपद
और कश्यपपद ।

” ” नवमी—रामगया और सीतानुण्ड ।

” ” दशमी—गयाशिर और गयाकूप ।

” ” एकादशी—मुण्डनपृष्ठा, आदिगया और धोतपद ।

” ” द्वादशी—भीमगया, गोप्रचार और गद्दालोल ।

” ” त्रयोदशी—श्रीफल्गुजीमें स्नान करके दूधका तर्पण
करना चाहिये ।

गयासुर तुरन्त छेद गया और देवताओंने उसकी पीठपर अपना यज्ञ आरम्भ कर दिया ।

यज्ञके समय समस्त देवताओंके सहित भगवान् विष्णुको आया देखकर गयासुरने पुन उठनेकी इच्छा प्रकट नहीं की । तत्र विष्णु भगवान्के सहित सत्र देवताओंने उसे यह वर दिया कि आजसे जबतक इस ससारमें सूर्य और श्रीभागीरथीकी स्थिति रहेगी तबतक यहाँ आनेवाले जो यात्री अपने पितरोंको पिण्डदान करेंगे उनको अक्षय पुण्यकी प्राप्ति होगी, तथा अनन्त समयतक उनका स्वर्गमें निवास रहेगा । गयासुरके प्राणिसर्जन करते समय विष्णुभगवान्ने यह भी वर दिया कि हम तुम्हारी पीठपर अपने चरण स्थापित करते हैं । गया आनेवाले यात्री इनके दर्शन करके ही पापमुक्त हो जायेंगे । यही गयाका प्राचीन इतिहास है, इसीसे यह भूमि पवित्र मानी गयी है । उस यज्ञकी समाप्तिपर वे समस्त देवतागण भी अपने अपने अशोंसे यहाँ रहने लगे । इस प्रकार वहाँ परम पवित्र गयाक्षेत्र स्थापित हो गया ।

गयाके मन्दिर

विष्णुपदमन्दिर—यह मन्दिर फल्गु और मधुभगा नदीके तटपर बना है । यहाँ विष्णुभगवान्के चरणोंका दर्शन होता है । इस मन्दिरको इन्दौरकी महारानी अहिल्याबाईने स० १७६६ में बनवाया था । इस धर्मनिष्ठा महारानीने अपने जीवनकालमें अनेकों धार्मिक कार्य किये, जिनके कारण आज भी समय-समयपर भारत-वासियोंको उसका स्मरण हो आता है ।

ब्रह्मयोनि पर्वत—विष्णुपदमंदिरमें अनुमान एक मी
ब्रह्मयोनि पर्वत है। इस पर्वतपर चढ़नेके लिये महाराज इन्दोर
सीढ़ियों बनवा दी हैं। इस पर्वतपर दो गुफाएँ हैं। कहते हैं, इन
पार कर लेनेपर प्राणा जमरधनसे मुक्त हो जाता है। यह
किन्नरी है कि इन गुफाओंका वर्णसर मनुष्य पार नहीं कर सकता।

रामशिला—यहाँसे दो मीलकी दूरीपर रामशिला पर्वत है।
इसपर चढ़नेके लिये टिकारी-नरेशने साढ़िया बनवायी हैं। वहाँ
एक बड़े मंदिरमें राम-लक्ष्मण और पालाछेखर गिरके दर्शन होते
हैं। इस पहाड़ीके नीचे रामजुण्ड नामका एक बड़ा सरोवर है
यात्री लोग यहाँ स्नान करके पिण्डदान करते हैं।

प्रेतशिला—रामशिलासे तीन मीलपर प्रेतशिला पर्वत है।
प्रेतशिलाके समीप एक सरोवर है जिसको ब्रह्मजुण्ड कहते हैं।
यहाँपर स्नान और पिण्डदानादि करके यात्री प्रेतशिला पर्वतपर
चढ़ते हैं। पर्वतके शिखरपर पहुँचकर पिण्डदान करना पड़ता है।
कहते हैं, यहाँ पिण्डदान करनेपर प्रेतयोनिमें भ्रमण करते हुए
पितृगण उससे मुक्त हो जाते हैं। यहाँ एक मण्डप है जिसमें
सुवर्णकी सी रंगारें हैं। पण्डे लोग इन्हें ब्रह्मरेखा बतारते हैं।

सीताकुण्ड या रामगया—फल्गु नदीके उस पार पहाड़ीके
नीचे एक मंदिरमें सीताजी दशरथजीको पिण्डदान कर रही हैं और
दशरथजी हाथ निकारकर उनका दिया हुआ पिण्ड स्वीकार कर
रहे हैं। उस पुनीत क्षेत्रमें श्राद्ध, तर्पण एवं पिण्डदानका विशेष
माहात्म्य है। इसके समीप ओर, भी कई देवमंदिर हैं, जिनमें

भगवान्की मूर्तिके दर्शन होते हैं। लकासे लौटनेपर श्रीरामचन्द्रजीने भगवती सीताजीके साथ गयामे आकर श्राद्ध किया था। यह तीर्थ उसीका स्मरण है।

गयाशिर—विष्णुपादमन्दिरसे थोड़ी दूरीपर गयासुरका मस्तरु है। यहाँ भी पिण्डदान करनेका विधान है। इसके आगे गयाकूप है, उसके निकट ही एक बटका वृक्ष है। तीर्थपुजारियोंका कथन है कि अकालमृत्युसे मरे हुए पितरोंके डिये इस कूपमें एक नारियल छोड़ देनेसे उनकी मुक्ति हो जाती है। यहा तीर्थपुजारी अपनी दक्षिणा लेता है।

सूर्यकुण्ड—गयामें यह पक्का और विशाल सरोवर सूर्यवंशी राजाओंका बननाया हुआ बतलाया जाता है। इस कुण्डके निर्मल जलसे स्नान करनेपर बुष्ट रोग शान्त हो जाता है, किन्तु इसका सेवन कुछ अधिक समयतक निमित्त करना चाहिये। इनके सिवा यहाँ और भी बहुत-से मन्दिर और सरोवरदि है। यात्रियोंको उन सभीका दर्शन करना चाहिये। गयासे पच्चीस मालकी दूरीपर कालेश्वरी पर्वत है। बहुत-से यात्री इतनी दूर नहीं पहुँच पाते। अज्ञानवासके समय कुछ काल पाण्डवोंने यहाँ भी निवास किया था। यहाँ अर्जुनके बाणोंसे निरुत्पन्न हुआ गगनात्मका निर्मल कुण्ड अबतरु अगाध जलसे भरा हुआ है।

तीर्थपुजारियोंका कहना है कि यहाँपर संकड़ों प्राचीन स्मृति-चिह्न थे जो अत्र समयके प्रभावसे पृथ्वीमें नीचे दब गये हैं, तथा कुछ नष्ट भी हो गये हैं। यहाँ भोजनकी मत्र उत्पन्न मिलती है।

ब्रह्मयानि पर्यंत—विष्णुपदमन्दिरमें अनुमान एक मी
ब्रह्मकोलि पर्यंत है। इस पानपर चढ़नेके लिये महाराज ई
सीढ़ियों बनवा गे हैं। इस पर्यन्त दो गुफाएँ हैं। कहते हैं, इन
पार कर लेनेपर प्राणी चमत्कृतसे मुक्त हो जाता है। यह
क्रियादानी है कि इन गुफाआफ़े तर्जमर मनुष्य पार नहीं कर सक्त।

गामशिला—यहाँमें दो मीठकी दूरीपर रामशिला पर्वत है।
इसपर चढ़नेके लिये टिकारी-नरेशाने सीढ़ियों बनायी हैं। यहाँ
एक बड़े मन्दिरमें राम-छस्मण और पानाश्वर गिरके दर्शन होते
हैं। इस पहाड़ीके नीचे गमजुण्ड नामका एक बड़ा सरोवर है।
यारीयोग यहाँ स्नान करके पिण्डदान करते हैं।

प्रेतशिला—गामशिलामें तीन मीठपर प्रेतशिला पर्वत है।
प्रेतशिलामें ममीप एक सरोवर है जिसको ब्रह्मजुण्ड कहते हैं।
यहाँपर स्नान और पिण्डदानादि करके यारी प्रेतशिला पर्वतपर
चढ़ते हैं। पर्वतके शिखरपर पहुँचकर पिण्डदान करना पड़ता है।
कहते हैं, यहाँ पिण्डदान करनेपर प्रेतयोनिमें भ्रमण करने हुए
वितृग्ण उससे मुक्त हो जाते हैं। यहाँ एक मण्डप है जिसमें
सुवर्णकी सी रेखाएँ हैं। पण्डेयोग इहाँ ब्रह्मरेखा बतलाने हैं।

सीताकण्ठ या रामगथा—फल्गु नदीके उस पार पहाड़ीके
नीचे एक मन्दिरमें सीताजी दशरथजीको पिण्डदान कर रही हैं और
दशरथजी क्षय निःकात्रकर उनका दिया हुआ पिण्ड स्वीकार कर
रहे हैं। इस पुनीत क्षेत्रमें श्राद्ध, तर्पण एवं पिण्डदानका विशेष
माहात्म्य है। इसके समाप धोर भी कई देवमन्दिर हैं, जिनमें

गगानुकी मूर्तिके दर्शन होते हैं। लकासे लोटनेपर श्रीगामचन्द्रजीने गगती सीनाजाके साथ गयामे आकर श्राद्ध किया था। यह तीर्थ उसीका स्मारक है।

गयाशिर-त्रिणुपादमन्दिरसे थोड़ी दूरीपर गयासुरका मस्तक है। यहाँ भी पिण्डदान करनेका विधान है। इसके आगे गयाकूप है, उसके निकट ही एक बटका वृक्ष है। तीर्थपुजारियोंका कथन है कि अनाउमृत्युसे मरे हुए पितरोंके लिये इस कूपमें एक नारियल उड़ देनेसे उनकी मुक्ति हो जाती है। यहां तीर्थपुजारी अपना दक्षिणा लेता है।

सूर्यकुण्ड-गयामें यह पका ओर विशाल मरोर सूर्यवशी राजाओंका बनगया हुआ बतलाया जाता है। इस कुण्डके निर्मल जलसे स्नान करनेपर कुछ राग शान्त हो जाता है, किन्तु इसका सेवन कुछ अधिक समयतक विहित करना चाहिये। इनके सिवा यहाँ और भी बहुत-से मंदिर और सरोंराट्टि हैं। यात्रियोंको उन सभीका दर्शन करना चाहिये। गयामे पश्चीस मीलकी दूरीपर कालेश्वरी पर्वत है। बहुत से यात्री इतनी दूर नहीं पहुँच पाते। अज्ञानवासके समय कुछ काठ पाण्डुओंने यहाँ भी विरास किया था। यहाँ अर्जुनके बाणोंसे निकला हुआ गगागामका निर्मल कुण्ड अत्यन्त अगाध जलसे भरा हुआ है।

तीर्थपुजारियोंका कहना है कि यहांपर सैकड़ों प्राचीन स्मृति-चिह्न थे जो अब समयके प्रमाणों पृथ्वीमें नीचे दब गये हैं, तथा कुछ गये हैं। यहां भोजनकी सब वस्तुएँ मिलती हैं।

इस जगह सस्त्रन पाठशाग, आर्यालय, अन्नक्षेत्र, समकरी अस्पताल, बाल्याटरी, पोष्ट आफिम और नारघर आदि सभी आर्य्यरीय मस्यारें हैं । यहाँका जटायु भी सागरणतया अष्टा है ।

माहात्म्य-याज्ञर-व्यस्त्रनिमें लिग्य है कि जो प्राणी गया कर आते हैं उनकी दस आगेका और दम पाछेकी पादियोंका उद्धार हो जाता है तथा अक्षयमटके नीचे रिण्डदान करनेपर मनुष्यकी अभय सुख और शान्तिकी प्राप्ति होती है । पितृगण ऐसी इन्द्रा किया करते हैं कि हमारे पुत्रम नन पेसा काइ सुपुत्र होगा जो गयामें आकर धादर कर हमारा उद्धार करेगा । गयाभ्रादरका माहात्म्य स्त्रितियोंने मुक्तमण्डसे गाया है ।



बुद्धगया

गयासे मात मीठकी दूरीपर बुद्धगया हे । गयासे यहाँतरु पकी सडक बनी हुई है और आने-जानेके लिये सजारियाँ भी मिलती हैं । पहले यह तीर्थस्थान बौद्धोंके हाथमें था, जब स्वामी शकराचार्य-जाने दिग्विजय की तरसे अब्रतक यहाँकी गदी उनके ही मतानुधायी महर्षीके हाथमें है । यह स्थान बान्ध और वैदिकधर्मागल्थी दोनों-होके लिये मान्य हे । दोनों ही भक्तिपूर्वक यहाँकी यात्रा करते हैं । यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ एक धर्मशाला है ।

इस स्थानसे भगवान् बुद्धके परम पतित्र जीवनका सम्बन्ध है । उनकी जीवनी यूनाधिकरूपमें प्राय सभी पठित भारतवासियोंको विदित है, हम भा यहाँ उसका सक्षेपमें उल्लेख किये देते हैं । भगवान् बुद्ध तिनका पूर्वनाम सिद्धार्थ था, महाराज शुद्धोदनके एकमात्र पुत्र थे । महाराजने इन्हें वृद्धापथामे पाया था । इमलिये उनका इनपर अत्यन्त स्नेह था । ज्योतिषियोंसे उन्हें यह विदित हो गया था कि एक दिन सिद्धार्थ अत्यन्त निरक्त महात्मा हो जायेंगे । किन्तु महाराज शुद्धोदनकी सारी आशाओंके एकमात्र आधार तो राजकुमार सिद्धार्थ ही थे, इमलिये उन्होंने उन्हें ऐसी

परिस्थितिमें रहना कि किंगमें उनका गाने मगरना न मगर कि
 आने हा न पाव । वे अतिर-ने-अधिक किंगमिना और सुगममर्त
 में पत्रक बह हुए । अतः अतुल्य सुगम रात्रकयामे पारिष्ठा
 हुआ जीव एक पुत्रसमता भी ज म हुआ । किंतु विविध दिन
 किंगकि टाक नहीं टाका, सिद्धार्थि वैसायक भी पुत्र किंगुडामिना
 हो हा गये आर । इवताम नरिनी आयुमें एक किंग अनी पतिप्राय
 प्रेक्षनी और प्राणप्रिय पुत्रको मोन लाइकर बनना बन गये । उनके
 इस राज्ययागने उह एक दिन किंगि सिद्धके साम्राज्यपर अभिप्रा
 कर दिया आर वे एक धुन राम्यके अतिवाचियोके तमर नदिके
 आरिःवमे उटकर सम्पूर्ण सृष्टिने आयामिन अधीधर हा गये ।

राज्यागक पथात् सिद्धार्थ, जा अत्र गौतम वरुणते धे
 कई जगद विषाध्यन करन रह, परंतु इसमें उन्हें शान्ति न
 मित्री । अतमें उहोन यहाँ निरुद्धना नदाक तीरपर घोर तपस्या कर
 और एक रात्रिके अन्धबृक्षके नीचे सिद्धिगभकर बुद्धन प्राप्त
 किया । इस प्रकार, यह रह स्थान है जहा जगद्गुरु भगवान् बुद्धको
 बुद्धन प्राप्त हुआ था । स्त्रीमें स्त्रके महत्त्वका अनुमान किया जा
 सकता है । भगवान् बुद्धने अपने समयमें जो शान्तिना सात
 बहाया था उसकी मद तरमें आज भी हमारा हृदयका सांच बती
 है । बुद्धने स्त्री, पुत्र और राज्याधिक मोहको त्यागकर जो उपदेश
 दिया था वह आज भी हमारे कर्णबुद्धोंमें गुंजायमान है । जिस
 स्थानपर भगवान् बुद्धने तप किया था वह अत्र भी यहीं चला नहीं
 गया है, किंतु अज्ञानविमिरावृत चक्षुओंमें ज्ञानाब्ज उगाकर राग-द्वेषमें

प्रसिद्ध हुए लोगोंको शुद्ध आत्माका दिव्य उपदेश देनेवाले महात्मा बुद्ध वहाँ नहीं हैं। किन्तु उनका पार्थिव शरीर भले ही वहाँ न हो, वे तो प्रलयपर्यन्त चिरजीवी ही हैं।

यहाँ एक विशाल मन्दिर है। पचाम वर्ष पहले इस मन्दिरके केवल सुवर्णकलशका ही दर्शन हो पाता था, क्योंकि यह प्रायः भूमिके गर्भमें दब चुका था। सन् १८७७ ई० में इसे बोद्धोंने गवर्नमेण्टकी सहायता लेकर पृथ्वीसे निकाराग आर इसका जीर्णोद्धार कराया है। यह मन्दिर महाराज अशोकने बनवाया था। दो हजार वर्ष पुराना होनेपर भी यह अभी कहींसे भी टूटा फूटा नहीं है। मन्दिरकी परिभ्रमा नीचे और दो मञ्जिल ऊपर भी है। इसमें जो भगवान् बुद्धकी मूर्ति है उसपर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है। भगवान् बुद्धकी सभी मूर्तियोंमें शान्तभावका प्राधान्य रहता है।

मन्दिरके पीछे एक पीपलका वृक्ष है। उमके निकट भगवान् बुद्धके तपस्या करनेका स्थान है। कहते हैं, यह यही वृक्ष है जिसके नीचे भगवान् बुद्धको ज्ञान प्राप्त हुआ था।

जगन्नाथमन्दिर—बुद्धगयामें अहिल्यागार्इका बनवाया हुआ एक जगन्नाथजीका मन्दिर है। इसमें राम-सीता और लक्ष्मणजीके भी दर्शन होते हैं। यहीं बुद्धगयाके महत्तका विशाल भवन है। उसके बगीचे और भण्डारगृह आदि देखनेपर किन्हीं बड़े यज्ञकी इकट्ठी भी हुई सामग्रीका स्मरण हो आता है। यहाँ ब्रह्मा, चीन और जापान आदि देशोंमें गहन-से बौद्ध-वर्मानुयायी सज्जन भक्तिपूर्वक आकर अपना श्रद्धाञ्जलि समर्पण करते हैं। यहाँकी सर्पिक आय

एक टांग रुपयेके लगभग है। यहाँ बुद्धबुण्ड और निर्जना नौ तथा पिंडशन किया जाता है।

गुफाएँ गयामे अनुमत्त चारह मीलकी दूरीपर अति प्राचीन बौद्ध गुफाएँ हैं। जित महागज अशाकन अपरा राज्यकालमें बनवा था। उस समय बहुतसे बौद्धभिषु इसी प्रकारकी गुफाओंमें तप किया करते थे। ये गुफाएँ पचीस हाथपर लगी और ग्यारह हाथपर चौड़ी हैं।

भगवान् बुद्धने भारतवर्षमें चाहीस वर्षतक सत्र ओर भ्रमण करके अहिंसा मतकी शिक्षा दी थी। उनका निराण अस्मी वर्षकी आयुमें हुआ था। आज ब्रह्म, सीलोन, चीन, जापान आदि देशोंके अतिरिक्त अहिंसाकी बौद्धधर्मावलम्बी हैं।

बुद्धगयाका बाजार जोग है। यहाँ फलदिक छोड़कर मोचरी अथ सब सामग्री मित्र जाती है। गयाकी अपेक्षा यहाँका जठरायु उत्तम माना जाता है। इस जगह महत्तरी आरामे एक सम्पूर्णपाठशाळा और अल्लश्रेव मुल हुए हैं। तथा टाक्याना भी है। यह स्थान रास्तेमें वैगम्य उत्पन्न करनेवाला है।



राजगृह

यात्रीलोग गयासे B B L रेलवेद्वारा कछयारपुर होकर राजगृह जाते हैं। आजकल इसे राजगिर कहते हैं। यह बौद्ध, जैन और मनातनी तानों मतप्राणेश पुराना तीर्थस्थान है। यह गयासे १०३ मील है। वहापर एक धर्मशास्त्र है और तीर्थगुरुओंके भी स्थान हैं। राजगिर जराम्भक राजपाना थी, जिसको भाममेनने मल्लयुद्धमें भगवान् कृष्णके सकेतसे मारा था। वहा उम समयके प्राचीन खण्डहर अब भी दृष्टिगोचर होते हैं।

यहा आकर यात्रागण सरस्वतीनदामें स्नान करते हैं। यह पुनीत नदी नैभारपर्वतसे निकलती है। सरस्वतीका जल गंगाजीके समान बड़ा उज्ज्वल है। ब्रह्मकुण्डक निकलत सरस्वतीके दोनो तटोंपर पके षाट बने हुए हैं। यात्रीलोग पहले यहा स्नान करते हैं। इनके पश्चात् वे मात कुण्डाका दर्शन करते हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

मार्कण्डेयकुण्ड, व्यासकुण्ड, गंगा-यमुनाकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड, व्यासकुण्ड तथा गंगा-यमुनाकुण्डमें सप्तर्षिधारा और काशागारा हैं। इनमें एक गारा गरम जलका है और दूसरा शीतल जलकी, बाका सप्त कुण्डोंमें उष्ण जलकी धाराएँ हैं। सप्तर्षिधारामें दक्षिण-पश्चिमकी ओरसे सात ऋषियोंके नामपर सात स्रोत निकलते हैं। यहाँपर यात्रा बड़ी श्रद्धामें स्नान करते हैं और ऊपर मन्दिरमें सप्तर्षियोंका पूजन करते हैं।

राजगृह और भ. कट पीर पुत्र है । उनका नाम इन प्रकार बताया गये है—गङ्गाधर, यमुनाधर, नर्मदाधर, स्याताधर, मृगशुण्ड, घटकुण्ड, मन्वन्त, मन्वन्त, विष्णुधरा, विष्णुधरा सन्वन्तीधरा इत्यादि । इन सब नामों में धर शब्द का अर्थ आग मालम्ब्य है । साथ बदनर तपसे यो प्रायः नाम पवित्र किया गया है ।

यत्र निरन्तर मन्वन्तीधरा कट नाम पुराणते है । एका मीठका दूरापर सन्वन्तीधरा नाम शहरणा है । यत्र शरीर गानन आदि करने अनेक पुत्रदा सिद्धता है । मन्वन्ती धारण पुत्रादि पूजनका मन्वन्ती और नाम एतत्त नामपुत्री मातृ रहत है । गानन करनेका यात्रिकों का उचित है कि पूजा मूल कर शाश्वती विधिसे गानन कर ।

यत्रोम जुष्ट आगे इन्द्र नाम शत्रुघ्नना नदी है । मन्वन्ती पर भा उग का भाग रहती है । यहाँ स्नान करने से विष्णु शक्ति और मन्वन्तीधरी यात्राओं का पुण्य करने है । इन्द्र स्थान पर जैनधर्मके प्रचार आचार्य काश्यापने युधिष्ठिर स० १२४५ म संध्याका ११ बजे 'जिह्वा परमो धर्म' का मन्त्र उपदेश दिया था और यहाँ उनको निर्वाण भी प्राप्त हुआ था ।

गौतमगुह्यगुह्य—यद् गुह्य वीरमन्त्रागके निय बड़ा श्रद्धालु था है । राजगिरमें म् गुह्यके दर्शनार्थ चीन और जापानके यात्री आते हैं, यहाँ एक शिखर है किन्तु वह साफ पढ़नेमें नहीं आता । इस स्थान पर बुद्ध-भगवान्ने बड़ा उग्र तप किया

था। इसे देखनेके लिये वौद्धोंके अनिरिक्त अन्य भारतवासी भी नडी श्रद्धामें आते हैं।

सरस्वतीनदीमें गोदावरी नामका एक धारा आकर मिली है, पण्डेलोग इसका नाम गादावरी-सरस्वती-सगम बतलाते हैं। यात्री लोग इस सगमपर भी भक्तिपूर्वक स्नान करते हैं।

वेमारपरतपर मोमनाथ और सिद्धनाथ ये दो शिवलिंग हैं। ये मंदिर प्राचीनकालके बने हुए विदित होने हैं। बनाया जाता है कि इनका निर्माण महाराज जनमेजयके समयमें हुआ था। इस स्थानतक आनेमें चढ़ाई अप्रिक पडती है। यहाँ श्रावण और अप्रिक मासके दिनोंमें हजारों यात्रियोंकी भीड होती है ओर सैकड़ों भक्तजन यहाँ एक महीनातक रहकर शिवजीका पूजन करते हैं।

राजगृहमें पाँच पहाडियाँ हैं। इन सगरी ऊँचाई एक हजार फुटके अनुमान है। इन पहाडियोंपर जन और बौद्धमतवालोंके मंदिर हैं। महाभारतमें लिखा है कि महाराज जरासंधकी राजधानी इन पाँचों पहाडियोंके बीचमें थी। उस समयके किल्लेके घनसायशेष (खण्डहर) इस समय भी जगगगाके उस पार देखे जाते हैं। लोग उसे जरासंधका वाग कहकर पुकारते हैं।

रुक्मी परतपर महर्षि गौतमका भी निवास था। उनका स्थान यहाँके तीर्थपुनारी अतक यात्रियोंको दिखलाते हैं। यहाँका प्राकृतिक दृश्य देखनेके योग्य है और जलवायु भी उत्तम है। यहाँ सस्त्रुन पाठशाला, गर्मशाला और डाकखाना भी है तथा भोजनका प्राय सब सामान मित्र जाना है। महाभारतके वनपर्यमें यहाँकी यात्राका बडा माहाभ्य लिखा है।

वैद्यनाथ

राजगृहमे वैद्यनाथ जानक त्रिये यात्रियोंको पटना होर ईर डण्डियन रेलवेद्वारा जमीडाह जफशनपर उतरना चाहिये। जमी डीहसे दूमरा स्टेशन वैद्यनाथग्रामका है। वैद्यनाथको राजगृहजुम्ह स्टेशनसे भी एक रास्ता गया है। यात्रा अपनी सुविधा देगकर किसी भा मार्गसे यात्रा कर सकते हैं। राजगृहजुम्हमे वैद्यनाथग्राम १८७ मा है।

जमीडाह जफशन आर वैद्यनाथग्रामके स्टेशनपर यात्रियों को तीर्थपुजारी मिठ जाते हैं। स्टेशनके निकट ही रायकटादुर सेठ हजारीम दुर्बेगलेका धर्मशास्त्र है। दूमरी धर्मशास्त्र मर हराराम गोयनकाकी है। यहां ठहरनेम यात्रियोंको सुविधा रहती है। उनके मित्रा बहुत से पण्डित स्थान भा है। पत्रलिथियोंपर अत्रिक भीड होनेपर उहा स्थानमें टहरना होना है।

यह नाथस्थान वैद्यनाथ आर देवपुर गंगा ही नामसे प्रसिद्ध है। देवपुर रेलवे स्टेशनसे अनुमान टेढ मीलकी दूरीपर वैद्यनाथ शिवका प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिरके निकट आर भा बहुत से मन्दिर हैं। इसके चारों आर कोट बना हुआ है आर सामने बड़ा धागन है, जिसम पत्थरका स्तूप है। इसके पास ही पार्वतीनाका मन्दिर है। बने ता यहाँ हर महीने भारतवर्षके कोने कोनेसे यात्रा आया ही कम्ते है, किन्तु शिवरात्रिके अवसरपर तो बतनी भीड हाती है कि भगवान् शिवके दर्शन भी मुर्झम हो जाते है। यह

शिखरिग ग्यारह अगुल ऊँचा है और इसके मस्तकपर रात्रणके अँगूठेका चिह्न बना हुआ है। उस अत्रसरपर यहाँ हज़ारों काँचरों-वाले भगवान् वैद्यनाथको गगाजल समर्पण करनेके लिये पहुँचने हैं तथा लाखों यात्री भी अपनी सुविधाके अनुसार गंगोत्तरी, हृषीकेश, हरिद्वार, प्रयाग आदि म्थानोंसे गगाजल लेकर यहाँ आते हैं। इस अत्रसरपर यहा गगाजल चढानेका ही शास्त्रम अधिक माहात्म्य बनलाया है। यदि किसी यात्रीके पास गगाजल नहीं होना तो उसकी दक्षिणा देनेपर यहाँ भी मिल सकता है। यहा शिखरगगा नामका एक सरोवर है। यात्रीलोग उसमे स्नान करके शिखरजीकी त्रिप्रित् पूजा-अर्चा करते हैं किन्तु शिखररात्रिके अत्रसरपर तो केवल फट्ट और त्रिन्वपत्रोंसे ही शिखरिग समर्था छिप जाता है। यदि तीर्थपुजारी सारगानीसे पुष्पात्तिकोंको अलग न करते रहें तो हज़ारों कोसोंसे आये हुए यात्रियोंको शिखरजीका दर्शन ही न हो। शिखरजीका दर्शन कर यात्रीलोग शिखरस्तोत्रों-द्वारा उस स्थानको गुजायमान कर देते है।

श्रीवैद्यनाथका दर्शन कर लेनेपर अत्र मदिरोंकी शौकी करते हुए यात्रालोग भगवती जगन्म्याका दर्शन करते ह। काशीश्वरी अन्नपूर्णाजीकी भौति यहाँ भा दर्शनार्थियोंका बड़ी भीड़ रहती है।

यहाँके महादेवजी रात्रणेश्वर और वैद्यनाथ इन दो नामोंसे पुकारे जाते हैं। ये द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंगोंकी नामावली इस प्रकार है—माराष्ट्र देशमें मोमनाथ, शीशलपर मडिकार्तुन, उज्जैनम महाराजेश्वर, ओम्कारपुरामें अमलेश्वर,

उत्तराखण्डमें केदारनाथ, टाकिनामें भामनाथ, काशीमें विश्वेश्वर या विश्वनाथ, पंचगढा नामिकमें गौतमरीके तटपर अम्बिकेश्वर, देहलीमें वैद्यनाथ, दारुकावनमें नागेश और सेतुवनमें रामेश्वर । । ।

इन द्वादश ज्योतिर्लिंगोंके दर्शन करनेवाले यात्रियोंको मृत्युके पश्चात् कदाशमें स्थान मिलता है, जो प्राणित्याग अनि दूर्लभ है ।

दगरर वस्तीके निकट वैजू भक्तान्न मठ है । वैजू भक्तकी श्राव्यायिका गोडा गोकर्णनाथके प्रसंगमें लिखा जा चुकी है । कहते हैं, वैजू भक्तके श्रावण वा रक्षा नाम रचनाथ हुआ है । इस विषयमें पुराणोंमें एक दूसरी गाथा भी है । एक बार एक भयंकर रोगके कारण प्रजा नष्ट होन लगी, यह दगरर नक्षत्राज्ञाके बहुत चिन्ता हुई । उन्होने शिरजाऊ पास जाकर उनकी बहुत स्तुति की, तब उनकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर भगवान् गङ्गाने उस रोगको निवृत्त कर लिया, उसे मर्त्य अण्ड मनाया जाने लगा । तदनन्तर समस्त देवगण मिलकर श्रीमहादेवजीको दीर्घजीवनका उपाय पूछनेके लिये गये । मन्त्रों अपने समाप आये दगरर श्रा-शिरजीने उनके आनेका कारण पूछा । उन्होने कहा, 'भगवान् ! आप हमें अमर हानका उपाय कल्पाय, जिससे हम अत्रिक दिन जात्रिन रहकर आपका भक्ति कर सकें ।' श्रीमहादेवजीने कहा, 'रोग पापोंका परिणाम है और पाप नाश करनेमें गंगाजलसे बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है, अतः अन्तर गंगाजल सेवन करनेसे मनुष्य रोगमुक्त रह सकता है और उसे अक्षय अमरत्व भी प्राप्त हो सकता है । इसके भिक्ष जो पुण्य मेरे भ्रम स्थानपर निराम करेगा उसके भी कुष्ठदि समस्त रोग निवृत्त हो जायेंगे ।' इस प्रकार

नीरोगताका सर्वश्रेष्ठ मायन बतानेके कारण देवताओंने उनका नाम वैद्यनाथ रक्खा ।

इसीसे पुरीका भाति वैद्यनाथजीमें भी कोढीलोग बहुत रहते ह । यहाँके जलवायुमें एसा गुण बतलाते हैं कि कुछ कालके निरन्तर सेवन करनेसे बुध्तरोग शान्त हो जाता है । यहाँ जलवायुपरिवर्तनके लिये कल्कत्ता, रम्बर् आदि उड़े उड़े नगरोंसे भी बहुत-से धनी माहृकार एव राजे महाराजेनक आते हैं । इसीसे यहाँ कितने ही पना पुरुषोंने अपने निग्रामके लिये सुन्दर भवन बना लिये हैं ।

इस समय प्राचीन कालकी भाति वैद्यनाथ कौरा नखण्ड ही नहा रहा ह । अब ता यहाँ एक सुन्दर नगर बस गया ह । यहाँका वही चिउरा बहुत प्रसिद्ध है । वैद्यनाथधाम गिद्धोर महाराजकी जमादारीमें है । यहां सब प्रकारका भोजनका सामान मिल जाता ह । फलदिका भी अभाव नहा है । यहाँ गुरुकुल, मस्कृतपाठशाला, पुस्तकालय, अन्नक्षेत्र आदि कई सस्गएँ हैं । जलवायुके लिये तो यह प्रसिद्ध ही है । यहांकी ठोटी-छोटी पहाड़ियोंका दृश्य, जो हरे-भरे वृक्ष, लता-गुल्मादिके कारण अत्यंत शोभायमान है, मनको बहुत प्रफुलित करता है ।

शिवपुराणमें लिखा है कि ज्योतिर्लिङ्गका दर्शन और पूजन करनेवाला पुरुष दूसरे जन्ममें विद्वान् ब्राह्मणके यहाँ जन्म लेता है और उसके पश्चात् मुक्ति प्राप्त करता है । ज्योतिर्लिङ्गके दर्शनमात्रसे भागीरथी और गोदावरीके स्नानका फल मिलता है तथा उसका प्रसाद पानेसे आमज्ञानकी प्राप्ति होती है ।



कालीघाट

श्राद्धनाश्रमसे कागजीना दर्शन कराने लिये मार्गयात्रा फलदाता जाते हैं। श्राद्धनाश्रमे हारदा २०० मीटरसे कुछ अधिक दूर है। यह ई० आ० आर० रज प्रयाग स्टेशन है। फलदाता आगे यात्री उसी स्टेशनपर उतरते हैं। फलदाता भारतवर्षके सबसे बड़े नगरोंमें है। यहां हर समय सत्र औरक यात्रा आने-जाते रहते हैं। यहां आकर वे धर्मशास्त्रोंको होंगे अथवा अपने सम्बन्धियोंके यहां आते हैं। फलदाता प्रयाग प्रयाग धर्मशास्त्रोंके इस प्रकार है।

- १-हारदा स्टेशनके समीप ५० गिरिनाथके मिश्रका धर्मशास्त्र,
- २-न० ६ मालिकाट्टीमें राम सूर्यमल्लकी धर्मशास्त्र, ३-न० १६९ हरिसनराटमें गेठ शास्त्रालयका धर्मशास्त्र।

इनके अतिरिक्त और भी कई ठाण-बड़ा धर्मशास्त्र हैं। इनमें प्रयाग यात्री जिनके से अधिक तीन दिन ठहर सकता है। अधिक रहना हो तो धर्मशास्त्रके मालिकसे आज्ञा लेनी होती है।

कालीघाट—यह भगवती कालीदेवाका जगन्नाथसिद्ध मन्दिर स्टेशनसे पाँच मीलकी दूरीपर है। मन्दिरके निकट पहले गगाजी बहती थीं, किन्तु अब उनकी केवल एक धारा बहती है। उस धाराका जल भगवतीके कुण्डमें आता है। यह सरोवर पक्का बना हुआ है। यात्रालोग गगाजीमें अथवा उस कुण्डमें स्नानादि करके भगवतीके दर्शनके लिये जाते हैं।

यहाँपर पुष्पमालाएँ लिये हुए बहुत-से माली रहते हैं तथा प्रसादके लिये भा कई दूकान बनी हुई हैं। यहाँका प्रसाद मुख्यतया हरा नागिया ही होता है। बगानी मिठाई भा भगवतीको भेंट की जाती है। यह पवित्र स्थान भगवतीके इम्प्यारन सिद्ध पाठोंमें माना जाता है। प्रतिवर्ष आश्विन और चैत्रमासके नवरात्रोंमें यहाँ यात्रियोंकी इतनी भीड़ होती है कि दर्शन मिलना कठिन हो जाता है।

भगवतीके मन्दिरके सामने एक महामण्डप बना हुआ है। सन् १८०७ ई० में मन्दिरके पत्रालोगोंने इसका नाणाद्वार करवाया था। यहाँ भगवतीकी कृष्णवर्ण चतुर्भुजी और त्रिनयनी मूर्ति है। उनकी जिह्वा बाहर निकली हुई है। एक हाथमें तख्खार है और दूसरेमें मधुमैटम दैत्यका मन्त्र तथा शेष दो हाथोंसे वे अपने भक्तोंको अभयदान देती हैं। उनके गलेमें नगमुण्डोंकी माला है और वे देवाधिदेव श्रीमहादेवजीके स्व स्तूपपर अपना चरण रखते हुए पदा हैं।

इस सिद्धपाठमें पाठ-पुरस्कारणादि हुआ है करते हैं। यहाँ बहुत-से साधु-मयामौ भी निवास करते हैं। जगन्नाथजीकी भक्ति

यहाँपर भी मोंगनेवालोंका सग्या इतना अग्रिक है कि यात्री दुखी-मे हो जाते हैं। इस स्थानका उत्पत्तिके विषयमें यह प्रसिद्ध है कि जब दक्ष प्रजापतिके अग्रमानसे लुप होकर म्द्राणी भगवती सती सङ्कुण्डमें कूट पड़ी तथा यह समाचार भगवान् शपरत्क पहुँचा तो वे तड़ शोकानुठ हुए आर प्राणप्रिया सतीने शरुके काधेर डालकर उमत्तके समान घूमने लगे, उम समय भगवान् शिवके क्षोभसे ब्रह्माण्डको प्रत्यमाठमे बचानके लिये विष्णु भगवान्ने मुर्धन चक्रद्वारा मनाके अगोंको उल्लिभित क लिया। मनीक अग निस निस स्थानपर गिरे वही सिद्धपाठ मान गया। कालायाटमें सताकी अगुलिया गिरी भी उमी स्थानपर वर्तमान भगवतीका मन्दिर बना हुआ है।

पाठकोंने श्रीरामकृष्ण परमहंसका नाम सुना होगा। आप स्वामी त्रिवेकानन्दके गुरु थे। परमहंसदेवके उपदेशका स्वामी त्रिवेकानन्दपर कितना प्रभाव पडा यह किमीसे ठिपा नहीं है। स्वामी त्रिवेकानन्दने अमेरिकामें दस हजार नाम्तिकोंको पडा आस्तिक बनाया और भारतवर्षके वेदात्मिद्वान्तका झण्टा फहरा दिया। यह सब शक्ति उन्हें रामकृष्णदेवके उपदेशोंमें ही प्राप्त हुई थी। ये परमहंसदेव कालके हा उपासक थे। इन्हें भगवताने प्रत्यक्ष दर्शन दिये थे। इनके भक्तिमय चरित्र वर्तमान जन समाजके मन्त्रेपथ-प्रदर्शक हैं। बंगालमें नगवर्षके अक्सरपर भक्तजन घर घरमें भगवतीकी प्रतिमा बनाकर उत्सव मनाते हैं और दशमीके दिन बडे समारोहके साथ उस प्रतिमाका गंगाजीमें निसर्जन कर देते हैं।

कागीमन्दिरके अतिरिक्त कङ्कतेमें आर भा बहुत-से दर्शनाय स्थान हैं, उनका सक्षेपमें परिचय दिया जाता है ।

दक्षिणेश्वर मन्दिर—यह सुप्रसिद्ध मन्दिर कङ्कतेसे प्राय १० मील उत्तरकी ओर गंगाजीके नटपर स्थित है । परमहंस श्रीरामकृष्णदेव यहा रहा करते थे । इसकी रचना बहुत सुन्दर है ।

चिडियाखाना—इस स्थानमें तरह-तरहके जाति पशु पक्षियोंके रहनेकी व्यवस्था की गयी है । रंग बिरंगे पक्षियोंके झुण्ड और माति भाँतिके पशु उनकी प्रकृतिके अनुसार स्थान बनाकर पाले गये हैं । जलमें रहनेवाले मीन मकर आदि को सागरणतया कमी देगनेमें नहीं आते यहाँ देगनेको मिलते हैं । उनमें रहनेवाले हिसका जीव जैसे व्याघ्र मेडिये, चाते, तट्टु नीरगाय, गटे, भालू, खरगोश और शुतुर्मुर्ग आदि अपनी-अपनी प्रकृतिके अनुकूल स्थान और सुविधाओंमें रखकर पाले गये हैं । यह चिडियाखाना अत्यय देगनेके योग्य है ।

जजायगधर—इस स्थानमें जङ्गल और स्थलके अद्भुत धातु और धनस्पति आदि बनायगी और असली रूपमें लकर सगृहीत किये गये हैं । यहाँ देश-देशांतरके फल-फूल, मृतरु मनुष्य और नाना प्रकारके कीट पतंगाली भी रखे गये हैं । इनके सिवा यहाँ मनुष्य प्रकारके प्राचीन कालकालके नमूनोंका भी अच्छा संग्रह है । इस स्थानमें ऐसी बहुत-सी चीज देखनेमें आती हैं जिन्हें कभी देखा या सुना नहीं गया । कालीघाटकी यात्रा करनेवाले यात्रियोंको यह सप्रहालय अत्यय देगना चाहिये ।

टकमालगृह—यहाँ गर्भमेण्टका ओगसे सिक्के ढाले जाते हैं ।

हामड़ागिज—यह गंगाजीका पुत्र जो नये दुग्ध बना हुआ है। इसे अवश्यकता होनेपर खेता भी जा सकता है। महाहमें जिस समय पुत्र मुन्ना है उस समय हामड़ा और ब्रह्मसके बीचमें अग्निचोटीद्वारा आना जाना होता है। यात्रागम बिना कोई किगया जिये अग्निचोटीमें आ-जा करते हैं। कहते हैं कि पहले इस अग्निचोटीका निर्माण यात्रियोंमें ११ पैसा किया जाता था, उसमें अब इतना भव जमा हो गया है कि निःसन्ध है। यह कार्य चल सकता है।

जना पुरोधेके जिय ता कर्त्तव्य स्वर्ग है। पहा कर भी वस्तु अप्राप्य नहा है। किन्तु इनद्वाराके जिये यह रौरव नरकमें धम नहा है। उनके जिय न कोई रहनेका स्थान है आर न कोई पैद भरनेवाय मस्ता और पुष्टिकारक वस्तु ही है। यहाका जगत्पु मध्यम कोटिका है। यहा प्रथम बाजार आर मुस्लिमोंमें तारघर, डारुखाना, औषधालय आदि मित्र मरते हैं। अन्य स्थानोंकी गाशागाओंका यहाँका पिजरापात्र (गौशाग) का अनुकरण करना चाहिये। इनके सिवा यहाँ यूनिवर्सिटी, गवर्नमेण्ट हाउस, कई प्रकारके कालिज आर अनाशाग्य, चिकित्साग्य जसु महाशापकी विधानशाळा आदि जारभा बहुत से स्थानीय स्थान हैं। गंगानाके किनारे यहाँ कई पक्के गेट बन हुए हैं जिनपर प्रायः डाल हजारों नर-नारियोंका शीड देगनमें आता है। घाटोंके ऊपर उड़िया पुजारियोंने भजन पूजनके जिये अपने-अपने स्थान बना रखे हैं, जहाँ स्नान करनेगल पुस्तक मुनिगर्भक नित्यकर्मसे निवृत्त हो सकते हैं।

तारकेश्वर

बंगालमें तारकेश्वर स्थानको लोग बड़ा श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते हैं। आस-पासके भक्तजन, जो प्रदोषत्रत रखते हैं, प्रायः तारकेश्वर जाकर ही शिवपूजन करते हैं। कलकत्तेसे सैरुडों मनुष्य नियमप्रति तारकेश्वर जाते हैं। यह पवित्र स्थान हुगला जिलेमें है। तथा इस मंदिरके सञ्चालनका भार यहाँके मठाशिकके हाथमें है।

हाउडासे तारकेश्वर स्टेशन ३६ मील है। यहाँ दो र्मशाखाएँ हैं। एक शतीशचन्द्र गिरिनी और दूसरी त्रिपिनबिहारी सेनकी। तारकेश्वरके मोदी भा जो पूजनका मारा सामान बेचते हैं, अपने घरमें यात्रियोंके ठहरनेकी व्यवस्था कर देते हैं। तारकेश्वरके त्रिपयमें प्राचान कथा तो बहुत बड़ा है, केवल इतना जान लेना चाहिये कि ताइके वृक्षमें प्रकट होनेके कारण यहाँके महादेवनी तारकेश्वर कहे जाते हैं। पहले इस स्थानका लोग सिंहलद्वीप कहकर पुकारते थे।

दूधमागणपोखरा—यात्रीलाग इस मरोरमें स्नान करके शिवजाके दर्शनार्थ जाते हैं। यहाँका मोदी ही यात्रियोंको पूजनकी भामप्री देता है। त्रिपमन्दिरके जगमोहनमें कितने ही व्यक्ति अपने रोगकी शक्तिकी कामनामें पड़े रहते हैं। यहाँ ऐसी प्रसिद्धि है कि तारकेश्वरमें कुछ समय निरास करनेसे रोगी बिना ही आपत्के केवल भगवान् शिवका कृपासे ही रोगमुक्त हो जाते हैं। इस स्थानके शिखरमें ऐमा प्रसिद्ध है कि यहाँ तारकेश्वरका रामरन नामका एक म्वाला रहता था। उमर उक्त यह स्थान सिंहल-द्वीप कहा जाता था और एक निर्जन वनगण्ड था। रामरनकी

गौएँ नित्य हा इस जन्में चरनेके डिये आया करता थीं । एक बार अपना समय पूरा होनेमे पूर्व ही कामधेनु नामकी एक गौने दूध देना बन्द कर दिया इममे रामजनको बड़ा आश्चर्य हुआ और उमने विचारा कि इसका दूध कोई व्यक्ति चोरीसे निकाल लेता है । एक दिन वह कामधेनुके पाठ पीठे गिपकर वनमें गया, सायंकालमें जब सब गौएँ गौंयका ओर लोटने लगीं तो रामजनने देखा कि कामधेनु एक झाड़में चला गयी है । तब उसके पीठे पाछे रामजन भी झाड़ीमें घुसा । वहा उसने देखा कि कामधेनु गद्दी होकर अपने-आप दूधकी धारा टोड रहा है । रामजनका जीवन बड़ा भक्तिमय था । यह दृश्य देखकर उमके नेत्रोंसे आँसुओंका बाग बहने लगी । उसने तत्राठ हा दूधसागरस जल गरुड ओर वनके पुण्य बटोरकर गिरजीनों ज्ञान कराकर बड़े भक्तिभावमे पूजन किया धार उस दिनस उस गाका सेवा कर उमके दूधमे गिरजीनों नित्य ज्ञान कराते हुए अन्तमें त्रिय ज्ञानका प्राप्तिकर अपने मानव शरारको त्यागनेपर शिरगेरुको प्राप्त हुआ ।

धारे धारे यहाँ शिवजाके दर्शनार्थ नित्यप्रति हजारों नर नारी आने लगे आर फिर शिवमन्दिर भा बन गया । त्म मन्दिरस संगमरका फर्श लगा हुआ है आर इसका शिवर बड़ा सु दर है । यहाँका प्राञ्जलि दृश्य बड़ा ही दर्शनीय है । वेराग्यगार पुस्त्य यहाँ तपस्या करके अपने जीवनको मार्थकर करते हैं

माहात्म्य—तारकेसर माहात्म्यमें लिखा है कि नारकेसर शकरका निजिवत् पूजन करनेवाग पुस्त्यमत्र पापमे मुक्त होकर अ तमें सदृशों वधातक शिवजेरुमें भगवान् भोजनावका गण होकर रहता है ।

गंगासागर

आन्तारकेन्द्ररनाथसे कठकत्ता (हाउडा) लोटकर यात्री गंगासागरके लिये प्रस्थान करते हैं। कठकत्तेसे डायमण्ड हारबरसे यात्रा की जाती है। डायमण्ड हारबरतक रेडगाडी गयी है। यहाँसे स्टीमरद्वारा यात्रा करके गंगामागरसगमके परम पुनीत तटपर पहुँचते हैं।

गंगासागरस्नानका मेला माघमासमें मकरकी सक्रातिको होता है। उस समय सन्यासी, उदासीन एव वैष्णव आदि सभी सम्प्रदायोंके महात्मा कठकत्तेमें आकर एकत्रित होने हैं। उन दिनों यहाँके साहूकारलोग गंगासागरतक टिकिट आर भोजनोंका प्रबंध कर देते हैं। स्टीमरपर बैठते समय यात्रालोग भोजनादिनी सब सामग्री अपने साथ रख लेते हैं। पीनेके लिये जल आर कुछ आवश्यक औषधियाँ भी साथ ले जाते हैं, क्योंकि गंगासागरमें इनमेंसे कोई भी वस्तु समयपर नहीं मिलती। जिस समय स्टीमर छूटता है यात्रीलोग गंगाजी आर कपिलदेवजीका जयध्वनिसे आजाशक्तो गुंजायमान कर देते हैं। मार्गमें दो-तीन स्थानोंमें ठहरता हुआ स्टीमर गंगामागरसगमपर पहुँच जाता है।

गंगासागरके तटको जङ्गल काटकर सुंदर मैदान बनाया गया है। जङ्गलकी मफार्देका कार्य प्रतिर्य होता है। फिर भा यहाँ हिसक जीव पाये ही जाते हैं। इस जगह मोठे पानीका एक सरोवर भी है। भीड़ अतिक होनेके कारण कभी-कभी पर्वकाठमें जलका कष्ट भी हो जाया करता है। यहाँ स्थायीरूपसे कोई तीर्थपुजारी नहीं रहते। पर्वके समयपर अयोध्याके महन्तकी

ओरमे पुजारी आ जाते हैं । वे ही श्राद्धपितृदेवको समर्पण क्रिये हुए सब दान और वस्त्रादिको ले जाते हैं । प्राचान काठसे यहाँ का सब अधिकार अयोध्याके महन्तका ही प्राप्त है । यात्रीगण गंगासागरसंगममें स्नानकर अपने पितरोंके उद्धारके लिये विधिवत् पिण्डदान आर तर्पण करते हैं । एत मण्डपमें भगवान् कपिलदेवकी श्यामवर्ण तपोवन मूर्ति विराजमान है । उसका विधिवत् पूजन और परिक्रमादि करके यात्री अपने जन्मके मार्त्यक समझते हैं ।

सप्तयुगकी बात है एक बार सूर्यकुलभूषण महाराज सगरने अश्वमेध-यज्ञ किया, उस समय विध्विजयके लिये उन्होंने अश्व छोड़ा । उस अश्वके पीछे सगरके पुत्र द्विग्विजय करते चले गये । इसी समय उनके पिता जाने चले गये उस घोड़ेको गुप्तरूपसे ले जाकर कपिल मुनिके आश्रममें राख दिया । तब सगरके पुत्र उसे ढूँढने ढूँढते कपिल मुनिके आश्रममें पहुँचे । यहाँ अपना घोड़ा बँगा देकर वे राजपुत्र मुनिना प्रभाव न जानकर उनका उपहास करने लगे तब उन्हें अपने अश्वका अपहरण करनेवाला समझकर उनके लिये बहुत-से अपशब्द भी कहे । उससे कपिल मुनिका समाधि खुल गयी । उन्होंने ज्यों ही नेत्र खोले कि उनकी सरोवर दृष्टि पड़ने ही समस्त सगरपुत्र जलकर भस्म हो गये । पीछे उन्हें खबरता हुआ वहाँ सगरका पुत्र अश्रुमान् पहुँचा । इसने बड़े विनीतभावसे अपने पितृव्योंके उद्धारका उपाय पूछा । तब परम कृपावु श्रीकपिल मुनिने यह आदेश दिया कि तुम तपस्या करके श्रीगंगानाको इस लोकमें लाओ । उनके परम पुनीत जलसे बना भस्मका स्पर्श होने ही ये सब मुक्त हो जायेंगे । तब सगरके पुत्र-

पौत्रोंने प्राणपणसे गगाजीको लानेका प्रयत्न किया तथा तप करते-करते उनमें ही उन्होंने देह त्याग भी किया, परन्तु वे अपने प्रयत्नमें सफल न हुए। अन्तमें इसी जुठम भगीरथका जन्म हुआ। उन्होंने रायामन स्वीकार न करके आरम्भसे ही हिमालय पर्वतपर श्रीगगाजीका आराधना करने हुए उड़ी घोर तपस्या की। वह शिखा अत्र भी भगीरथी शिखाके नामसे प्रसिद्ध है। गगोत्तरीकी यात्रा करनेपर उसके दर्शन होते हैं। भगीरथकी कठिन तपस्यासे प्रसन्न हो श्रीगगाजीने दर्शन दिये, और भगीरथको उद्दान माँगनेकी आज्ञा दी। भगीरथने उनसे मर्त्यलोकमें आनेके लिये प्रार्थना की।

तत्र गगाजीने कहा कि तुम्हारी प्रार्थनासे मर्त्यलोकमें अत्रतीर्ण तो होऊँगी, परन्तु पृथ्वी मेरे वेगका धारण न कर सकेगी इसलिये तुम भगवान् शिवकी आराधना करके मुझे धारण करनेके लिये उन्हें प्रसन्न कर लो। गगाजीके ऐसा कहनेपर राजा भगीरथने भगवान् शिवकी आराधना आरम्भ की। आशुतोष श्रीभोलानाथने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिया और वर माँगनेको कहा। राजा भगीरथने उन्हें अपना प्रयोजन निवेदन कर दिया। कर्णाटस्थानालय श्रीगगाजीने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और श्रीगगाजीके मर्त्यलोकमें अत्रतीर्ण होनेपर उन्हें अपनी जटाओंमें धारण किया। शिवजीकी जटामें आकर गगाजीकी एक धारा मर्त्यलोकमें बहने लगी। महाराज भगीरथ आगे-आगे चले और गगाजी उनके पीछे-पीछे। इस प्रकार भारतवर्षका भूमिनी पवित्र करते हुए अन्तम समुद्रतटपर पहुँचकर उन्होंने सगरपुराकी भस्मको आघ्राणितकर उनका उद्धार किया। तत्र देवताओंने जय-जयकार किया।

राजा भगवान् स्व स्थावर अथ चित्रगणेशे विष्टदान कर उनका श्राद्ध एवं तर्पणादि किया ।

यह स्थान पण्डितों का भी गया था, यहाँके तार्थपुजादि का कारण है कि म्यादी रामानन्दजीने यहाँ आकर जो पुत्र प्राप्ति किया था । महाभारतमें कहा है कि यहाँ पाण्डुरोग आये थे और इस स्थानमें स्नान करने पर ही चित्रगोत्रा तर्पण किया था ।

शाम्भुनाथमें कहा है कि कर्किलदेवजी अपना माताजी आता करके गंगासागरमगमपर आय थे । समुद्रने उड़ी प्रसन्नतापूर्वक आपका स्थान किया था । तबसे वे मनुष्याके उद्धारके लिये यहाँपर निवास करके तपस्या कर रहे हैं ।

यह स्थान जङ्गलमें समुद्रके मानस एक टापूके ऊपर है । यहाँका जलवायु सागरतटवा अर्थात् ७ । यहाँ भोजनादिका कोई बस्तु नहीं मिलती और न काँइ तारार, टाकमाना आदि ही है । यात्री एक या दो दिन ठहरकर कच्छते लाट आते हैं । कहते हैं, यात्रियोंके चले जानेपर यह स्थान फिर जल्मग्न हो जाता है ।

माहात्म्य—जिनके पूर्वजन्मके पुण्य उदय होते हैं वे ही गंगासागरका यात्रा करते हैं । कहावत है कि 'आरंभ बार-बार गंगासागर एक बार ।' बाराहपुराणमें कहा है कि गंगासागरमगममें स्नान करनेसे महापातका मनुष्य भी पवित्र हो जाता है और यदि उसने अनजानमें ब्रह्महत्या भी की हो तो भी यह उससे मुक्त हो जाता है । जो यात्री विधिपूर्वक गंगासागरकी यात्रा करते हैं, शाल्वका बचन है कि उनको एक हजार गोदानका फल प्राप्त होता है ।

भुवनेश्वर

गंगासागरसंगमका स्नान कर यात्री कलकत्ता लौट आते हैं और यहाँसे भुवनेश्वरका यात्रा करते हैं। पुरी जानेवाले यात्रा भुवनेश्वर महादेवके दर्शनार्थ अवश्य उतरते हैं। यह तीर्थ उड़ीसा प्रदेशमें काशीका भाँति प्रसिद्ध है। हावड़ासे भुवनेश्वर स्टेशन २७२ मील है। यह N R का स्टेशन है। स्टेशनसे भुवनेश्वर साढ़े चार मील पड़ता है। अथ तीर्थोंकी भाँति यहाँपर भी तीर्थपुनारी यात्रियोंको लेनेके लिये स्टेशनपर ही आ जाते हैं,

जिनके कारण बड़ी सुरिया मिलता है। भुवनेश्वर जानेके द्वि-
स्टेशनमें जगन्नी बनी हनी है। इस देशमें इला, तीगा आदिका
स्थान रहा है। यात्री गाड़ी करके अपना पैडल ही भुवनेश्वरमें
चढ़ दते हैं। रास्ता साधा और सुगम है कांड जङ्गल आदि
नहीं है।

भुवनेश्वर पहुँचकर यात्रा रायबहादुर त्रिभुवनराय
हलामियाजी बड़ा सुन्दर आर विशाल धर्मशालामें ठहरते हैं।
इन दानी महादयने अपने अन्त समयमें माठ लाख रुपयेका दान
दिया था, जिसका धर्मशालाके एक ट्रस्टद्वारा हो रहा है।
इस ट्रस्टसे अनेकों उपयोगी कार्य किये जा रहे हैं।

यात्रीगण धर्मशालामें ठहरकर पहले त्रिभुवनरायमें स्नान
करते हैं। यह मरोर पक्का बना हुआ है आर इसके कंड पक्के
घाट हैं। इनमें मणिमणिशालाके अन्त में बड़ा माहात्म्य
है। महाराज इन्द्रधनुष जगन्नाथजी जात समय भुवनेश्वरमें
आकर निवास किया था। यहां एक त्रिभुवनमें नियमपूर्वक स्नान
करनेसे ही उनकी द्वितीय बानकी प्राप्ति हुई थी। आर तभी उन्होंने
पुरीमें जाकर देवाधिदेव जगन्नाथजीका मंदिर बनवाया था।
यात्रा इस पुरीमें मरोरमें स्नान, पिण्डदान आर तर्पण करके
श्रावणरात्र महात्मके दर्शन करते हैं।

त्रिभुवनरायके विषयमें यह कथा है कि यहाँके तपोवनमें
सहस्रों ऋषि-मुनि तपस्या किया करते थे। उनकी यह इच्छा
हुई कि यहाँ भारतवर्षके समस्त तीर्थ आ जायें। इस कामनाको

लेकर उन ऋषियोंने तीर्थयात्रा करना आरम्भ किया और अपने-अपने कमण्डलुओंमें भिन्न भिन्न तीर्थोंका जल लाकर इस सरोवरमें डोड़ते गये, अतः इसमें स्नान करनेवाले यात्रियोंको भारतवर्षके सब तीर्थोंमें स्नान करनेका फल प्राप्त होता है ।

भुवनेश्वर—ये जगत्प्रसिद्ध महादेव हरिहरात्मक नामसे भी पुकारे जाते हैं, तथा इन्हें एकाभुवन भी कहते हैं । इस मन्दिरकी ऊँचाई एक सौ अस्सी फीट है । यह बहुत प्राचीन है । इसका जीर्णोद्धार अभी हालमें किया गया है । उसके लिये एक लाख रुपया गवर्नमेण्टने दिया था और एक लाखका चन्दा हुआ था । इसकी मरम्मतमें लगभग तीन लाख रुपया लगा था । यह मन्दिर पुरीके जगन्नाथजीके मन्दिरसे भी बड़ा और प्राचीन है । इसकी बनारस देखकर आश्चर्य होता है । जो यात्री शिवजीको स्नान करानेके लिये अपने साथ गङ्गाजल लाते हैं वे तो स्नान कराते ही हैं, किन्तु जो नहीं लाते उन्हें यहाँसे भी कुछ दक्षिणा देनेपर गङ्गाजल मिल सकता है । वैसे तो हिन्दुसरोवरका जल भी सर्व तीर्थोंका जल है, उससे भी शिवजीको स्नान कराकर पूजनादि किया जा सकता है ।

पूर्वकालमें भुवनेश्वरको कोटिलिङ्ग कहकर पुकारते थे । त्रिभुवनपुरी वत्शीकी भौति इस स्थानपर भी कोटि (बट्ट-से) शिवलिङ्ग स्थापित थे और इस पवन वनमें हजारों ऋषि-मुनि तपस्या करते थे ।

श्रीजगन्नाथजीकी भौति भुवनेश्वर महादेवजीको भी दिनमें कई प्रकारका राजसी भोग लगाया जाता है । मुख्य-मुख्य

उत्सवापर देवताओंकी प्रतिमाओंको नौकापर उठाकर त्रिदुसरामें जलविहार कराया जाता है । जिस प्रकार जगन्नाथजी चन्दन सरोवरमें जलविहार करने हैं और उम सरोवरके बीचमें एक मन्दिरमें कुछ दिन निवास भी करते हैं उसी प्रकार त्रिदुसरके बीचमें भी एक मन्दिर बना है, उममें देवताओंको विभान कराया जाता है । यहाँ एक आग है जिम्को कुञ्जरन कहकर पुकारते हैं तथा बहुत-से मन्दिर हैं जिनमें कई अति प्राचीन होनेके कारण गिरते जा रहे हैं । काशीकी भौति भुवनेश्वर भी मन्दिरोंका एक उम हा है । यहाँ भी त्रिदुस पार्वती सदैव निवास करते हैं ।

भुवनेश्वरक्षेत्रमें आर भी बहुत-से मन्दिर हैं । कहते हैं, किसी समय यहाँ १००० शिवमन्दिर थे, किन्तु अब तो केवल ५०० ६०० ही हैं । यहाँके मन्दिरोंकी रचना प्राय एक मी ही है तथा उनपर पत्थरके बेल-मूठ भी एक-जमे ही हैं । इनमें सबसे प्राचीन मन्दिर परशुरामेश्वरका है । यह पाँचवीं शताब्दीमें बनाया गया था । इसकी कारीगरीपर दक्षिणी शिल्पकलाका प्रभाव है । मुख्य मन्दिर भी प्राय ११०० वर्षका पुराना है । इसे उड़ीसाके राजा ययाति केमरीने बनवाया था । इसमें आज मालकी दूरीपर सिद्धारामजनमें मुक्तेश्वरका मन्दिर है । इसकी शिल्पकला और चित्रकला प्रथम श्रेणीकी है । इसके विषयमें कठोरिदोंका ऐसा कथन है कि यदि यह मन्दिर रेतिले पथरका न होता तो इसकी सुन्दरता

18 फ़ारीगरी आगरेके ताजमहलसे कम न होती । मुजनेशर-
दिरके पूरुओत्तर कोणमें भास्करेशरका मंदिर ह । उमके
श्विम ओर रानरानोक़ा मंदिर ह, जो सुटरनामे अपर्ना
मता नहीं ररता । इनके सिवा मसुने, अन त ओर म्नाल
मतादि ओर कई देमन्दि ह ।

मुजनेशरसे चार पाच मीलकी दूरीपर उदयगिरि ओर खण्ट-
गिरि नामकी दो पहाडी हँ जिनमें बुद्धमगजानके समयकी बनी
हुई अनेकों गुफाँ हँ । ये गुफाँ परत काटकर म्नायी गयी हँ ।
इनमें बाद्ध मिशुओने आमजान-प्राप्तिका साधन किया था ।
इनमेंसे कित्ती कित्तीपर शिलालेख दिये गये हँ । उनसे पता
चरता है कि इनका निर्माणमाल ईसासे ५० वर्षसे लेकर ५००
वर्ष पीछेतरक है ।

ये गुफाँ इस प्रकार ब्नायी गयी हँ कि मामने आगन
भी निकळ आया है । इनमेंसे एक-एकमें कई कोठरियों आर बरामदे
आदि हँ, जिनमें कई आदमी सुनिगापूर्कर रह सकते हँ । इन
गुफाओमेंसे बु ळकी नामानली रस प्रकार है । सर्पगुफा, व्याघ्रगुफा,
स्वर्गद्वारीगुफा, रानीनूरगुफा, गणेशगुफा, वैकुण्ठगुफा आदि ।
ये उदयगिरि पहाडीकी गुफाँ हँ । इसी प्रकार खण्डगिरि पहाडीमें
भी कई गुफाँ हँ । खण्डगिरि पहाडीपर ऊपर चढ़ाई पडती हे ।
यहा जैनमम्प्रदायके आचार्य श्रीपारसनायजाका मंदिर हे
आर आकाशगगा नामका सरोवर है । यहाँका प्राकृतिक दृश्य

देवने ही बनता है। ये पहाड़ियाँ जैन और बौद्धमतानुसंधियोंके पवित्र तीर्थस्थान मानी जाती हैं। जैन और बौद्ध यात्रियोंके मित्र। यहाँ अनेक धर्माग्रज भी आनसे दस हजार वर्ष पहलेकी भारतका काशीगरी और उन नपाधन ऋषियोंके स्मृतिचिह्न देवनेके लिये आया करते हैं।

शुननेश्वर महादेवके पूजोपचारके लिये हजारों रुपया सालका आमदनीकी जागीर लगी हुई है। यहाँ प्राय ४००० जनसंख्याकी उम्मी है। किन्ता समय यह स्थान उड़ीसाका राजधानी भी रह चुका है। इस समय अधिकांश तार्थगुरुओंके ही घर हैं। यहाँ सस्यूत पाठशाला, अन्नक्षेत्र और डाकघाना भी है। यह लता त्रिपोंमे लगी हुई बड़ी रमणाक वस्ती है। यहाँका जलवायु भी अच्छा है। मोहनका मामूली सामान मिल जाता है। कभी-कभी फलदिक भी मिठ जाते हैं।

माहात्म्य-शिवपुराण और स्कन्दपुराणमें लिखा है कि पुरपोत्तमक्षेत्रमें शुननेश्वर महादेव है, जिनका दर्शन और पूजन करनेवालेके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। यह तीर्थ काशीका भाति बड़ा पवित्र है। यहाँपर निरास करके जो प्राणी मृत्युका प्राप्त होते हैं उनको शिवनेकी प्राप्ति होती है। जो यात्री यहाँ गहण और सकाति आदि फलके अन्नमपर आकर पुण्य दानादि करन हैं उनको कोटि गुण फल प्राप्त होता है। नम तीर्थका क्षेत्रफ दो योत्नके बीचमें माना गया है।

वैतरणी

भुवनेश्वर महादेवके दर्शन और त्रिदुसरका स्नान करके यात्रीलोग वैतरणीकी यात्रा करते हैं। वैसे तो भुवनेश्वर स्टेशनसे पुराको सींगी गाडी जाती है। वैतरणीका स्नान करनेवाले यात्री पहले कटक जाकर वैतरणीरोड अथवा जाजपुर स्टेशनपर उतरने हैं। जाजपुररोडसे वैतरणीतक पक्की सडक बनी हुई है, मित्तु वैतरणीरोड उतरनेसे अनुमान ग्यारह मीलका कच्चा रास्ता पार

करनेपर वैतरणाके दर्शन होते हैं। मुरनधरमे वैतरणा (ताण्डुर) ६२ मात्र है, यह B N R का स्टेशन है।

यहापर कुगराम, यज्ञानीकी धमशाग है। जिममें रात्र मुनिशार्पूरक ट्टर मकते हैं। ऋषिकुच्याका धारामे वैतरणाके वाराक इग यानन पुरातनमंत्र माना गया है। पुराणोंमें इसका नाम विरजाक्षेत्र भी है।

यात्रीजग वनरणीक गाठपर निमको पादगयानीर्थ भी कहते हैं ज्ञान करते हैं। यहापर पिण्डदान करनेका बड़ा माहात्म्य है अतः खानेके पश्चात् पिण्डदान किया जाता है। जा यात्री सम्प्राप्त होते हैं वे यहापर गात्री पूँज परुइकर वैतरणा पार करते हैं ओ वट गो अपने तीर्थपुरोहितका दान कर देते हैं। वैतरणीयाट्टे ऊपर त्रिभु भगवान् और नाराहजीका मन्दिर है। वनरणीक निन्द और भी कई देवमन्दिर और मूर्तिया हैं। यहासे प्राय एक माटका दूरापर गरुडमम्भ है। इस स्थानपर गरुडजीने तप किया था। यहाँ ब्रह्मकुण्ड नामका एक सरोवर है, इसके निन्द विरजाक्षेत्रीका मन्दिर है। यात्रा ब्रह्मकुण्डका स्नान और भगवतीका दर्शन करके आनन्दित होने हैं।

यहाक तीर्थपुजारियोका कथन है कि भगवती विरजाक्षेत्रीकी स्थापना ब्रह्मकुण्डक समाप यज्ञानीने की थी। वैतरणीका दशन करनेसे कुछ यात्रियोंको भयका सञ्चार हो जाता है। शास्त्रके कथनानुसार श्रुत्युक्त पश्चात् वैतरणी नदी पार करनी होती है।

गरुडपुराणमें क्या है कि पापामाओंको वैतरणी नदी रक्त, पीत्र
आदि दूषित पदार्थोंसे भरा दृष्टिगोचर होती है। उन्हें सर्पादिक
दृष्ट जंतु तैरते दिखायी देते हैं, जो अपनी कराएँ डाढ़ोंमें काटकर
अपन पीड़ित कर देते हैं। अतः समयमें वैतरणीतटके लिये
जिया हुआ गोदान प्रायः कुम्भिन ब्राह्मण स्वीकार नहीं करते।

लोगोंका ऐसा विश्वास है कि यहा पादगयाघाटपर वैतरणीमें
स्नान और वैतरणी पार करके त्रिप्रित्तु गोदान कर देनेपर फिर
मृत्युके उपरान्त उस भयकर वैतरणीका भय नहा रहता। फिर
तो यह वैतरणी शुद्ध जलसे भरी दिखायी देती है। शास्त्रमें बताया
हुई यमलोककी वैतरणीसे छुट्टी पानेकी अभिप्रायसे वारुणीपर्वके
असुरपर यहाँ लाखों यात्रियोंकी भीड़ होती है।

वैतरणीके तीर्थपुजारी अधिकतर शंभु हैं। यहाँपर अनेक
शिवमंदिर हैं। यह स्थान पार्वतीजीके रहनेका बताया जाता है।
यहाँपर आप्तशाला, सस्कृतपाठशाला और टाक्याना आदि भी
हैं। भोजनकी वस्तुओंमें फलादि और अच्छे आटेको ठोडकर और
सब वस्तुएँ मिलती हैं। यहाका जलवायु अच्छा है।

माहात्म्य—आदित्रयपुराणकी क्या है कि ब्रह्माजीकी
स्थापित की हुई त्रिजादेवीका दर्शन करनेसे मनुष्य पवित्र हो
जाना है और सम्पूर्ण पापोंके हरनेवाली वैतरणीका स्नान त्रिपुलोक
प्रदान करनेवाला है। यहाँ देहत्याग करनेसे उत्तम गति मिलता है।



जगन्नाथपुरी

नित्यानन्दैकरसं मच्चिन्मात्र स्वयज्योति ।

पुरुषोत्तममजमीश चन्द श्रीपाटवाधीशम् ॥

पैतरणी (जानपुर) से पुरा स्टेशन १०० मील है । यह B N R का स्टेशन है । यहींरु गाड़ी जाती है । जब गाड़ी स्टेशनके निकट पहुँचती है तो जगन्नाथजीके मंदिरके ऊपर जो नीलचक्र लगा हुआ है उसका दर्शन होने लगते हैं । यात्रीलगभग भगवान्को प्रणाम करके स्टेशनपर उतर पडते हैं । अपिनाश यात्रियोंका ऐसा निरास है कि जिन्हें चक्रके दर्शन हो गये उनका भगवान्के भी दर्शन हो ही जायेंगे ।

पुरी स्टेशनपर यहांके पण्डे और उनके कर्मचारी अपने अपने यात्रियोंकी खोजमें मौजूद रहते हैं, जो उनके नाम ओर निवासस्थान आदिका पता पूजने लगते हैं । यदि यात्रियोंको अपने तीर्थपुजारीका नाम माट्रम होता है तब तो उसका पीछा छूट जाता है अन्यथा जहा ने ठहरते हैं, वहाँ सेकड़ों पण्डे अपने-अपने ऋणीगते उतर पहुँचते हैं । पुरी स्टेशनसे तीर्थस्थान (भगवान्का मंदिर) दो मीलकी दूरीपर है । यहाँसे रक्काड़ी या घोडागाड़ी मिठ जाती है । पुरीक्षेत्रमें बहुत सी धर्मशास्त्राएँ हैं

यात्रीलोग अपनी सुविधा देखकर जहाँ रुचि होती है ठहर जाते हैं। पुरीकी प्रान प्रान धर्मशालाएँ ये हैं।

१-श्रीजनजी मूलजीकी धर्मशाला जो भाटियासी धर्मशाला भी कहलाती है।

२-सर हरीराम गोयनकाकी धर्मशाला-यह पुरी स्टेशनसे आती गार सदर सड़रूपर गयेँ हायको है।

३-सेठ हजारीमल दुधनेरालेकी धर्मशाला-यह पुरीके राजा साहबके महलके सामने हैं।

४-श्रीआशाराम मोतीलालजीकी धर्मशाला-यह धनजी मूलजीकी धर्मशालाके पास है।

५-श्रीगनपतराय सेमकाकी धर्मशाला-यह जगन्नाथजीके मन्दिरकी पूर्वदिशामें समुद्रकी ओर है।

६-श्रीकन्द्यालालजीकी धर्मशाला-यह चन्दनसरोवरके मार्गमें है।

यात्रीलोग धर्मशालामें ठहर जाते हैं और भगवान् श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरमें जाकर दर्शन करते हैं। मन्दिरके भीतर जाकर अष्टोंको भगवान्के दर्शन करनेका अधिकार नहीं है। सिंहपोरि (दरवाजे) पर पत्तिनगण भगवान्की मूर्ति है। अष्ट लोगोंने लिये इनके - श्रीजगन्नाथजीके दर्शनका फउ माना जाता है

जगन्नाथपुरी

नित्यानन्दकवस मदिन्मार स्वयं
 पृथोचममनमीश गन्द श्रीयाडयार्थ

यनरणी (जाजपुर) से पुरी स्टेशन १००

II V R का स्टेशन है। यहीनरु गाड़ी जाता है।
 स्टेशन निकट पहुँचनी है तो जगन्नाथजीके मन्दिर
 तीरथ लगा हुआ है उसरु दर्शन हान लगते हैं।
 भगवान्को प्रणाम करके स्टेशनपर उतर पदते हैं।
 यात्रियोंका णसा विश्वास है कि गिहें चक्रके दर्शन हो ग
 भगवान्के भी दर्शन हो ही जायेंगे।

पुरी स्टेशनपर यहाँके पण्डे और उनके कर्मचारी
 अपने यात्रियोंकी गोजम मौजूद रहते हैं, जो उनका ना
 निगामस्था आदिना पना पूडने लगते हैं। यदि यात्रि
 अपने तार्वपुजाराना नाम माडम हेला हं तर तो उसका
 टुट जाता है अथवा जगु वे ठहरते हैं, वहाँ सैरुडा पण्डे
 अपने वहीराते तर पहुँचते हैं। पुरी स्टेशनसे तीरथ
 (भगवान्का मन्दिर) का मोरुकी दूरीपर है। यहाँसे त्रैग
 या घोडागाडो मिल जानी है। पुरीक्षेत्रमें बहुत सी धमदागर्ण हैं

यात्रीलोग अपनी सुविधा देखकर जहाँ रुचि होती है टहर जाने हैं । पुरीकी प्रगन प्रगन धर्मशालाएँ ये हैं ।

१-श्रीमनजी मूलनीकी धर्मशाला जो भाटियाजी धर्मशाला भी कहलती हे ।

२-सर हरौराम गोपनकाकी धर्मशाला-यह पुरी स्टेशनसे आती थार मंदर सड़कपर राये हाथको हे ।

३-सेठ हजारिमल दुग्गेशालेकी धर्मशाला-यह पुरीके राजा साहबके महलके सामने हे ।

४-श्रीआशाराम मोतीलालकी धर्मशाला-यह धनजी मूलनीकी धर्मशालाके पास है ।

५-श्रीगनपतराय खेमकाकी धर्मशाला-यह जगन्नाथजीके मन्दिरकी पूर्णदिशामे समुद्रको ओर हे ।

६-श्रीकल्याणकी धर्मशाला-यह चन्दनमरोरके मार्गमे हे ।

यात्रीलोग धर्मशालामे टहर जाते हैं और भगवान् श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरमे जाकर दर्शन करते हैं । मन्दिरके भीतर जाकर अट्टनोंको भगवान्के दर्शन करनेका अधिकार नहीं है । मिहपोरि (दरवाजे) पर पणितपावन भगवान्की मूर्ति है । अट्ट लोकोके लिये इनके दर्शनसे ही श्रीजगन्नाथजीके दर्शनोंका फल माना जाता है ।

मार्कण्डेयमरोवर—यात्रियोंने निवासस्थानमें मार्कण्डेय सरोवर प्राय आग्रा मीलका दूरीपर है। पुरीके तीर्थपुजारी पहले यहाँपर तीर्थविधि करनेका विधान करने लगे हैं। यहाँ यात्रीजोग सरोवरमें स्नान करके तपण ण्य पिण्डदानादि करते हैं। स्नानके पश्चात् श्रीमार्कण्डेय महादेवके दर्शन करते हैं। इस स्थानपर मार्कण्डेयने दीर्घायु-लाभके लिये श्रीमहादेवजीकी आराधना की थी। तब उनकी अनन्य भक्तिसे प्रमत्त होकर श्रीभोलानाथने प्रकट होकर उन्हें यमराजके पाशसे छुटाया और मात कल्पपर्यन्त दीर्घायुका वर देकर वृत्तार्थ किया।

भगवान्के दर्शन—मार्कण्डेयसरोवरमें स्नान और श्रीमहादेवजी की पूजा कर यात्रीजोग भगवान्के दर्शनोंको करते हैं। भाव यह है कि दर्शनोंसे पूर्व स्नानादि विधि कर लेनेसे उसके मनर्म परिशुद्ध हो जाती है। प्राय सभी तीर्थोंमें यही नियम है। ऐसा करनेसे दर्शन करनेमें विशेष आनन्द आता है।

भगवान्का मन्दिर नीलगिरि परतपर बना हुआ है। जिनकी ऊँचाई अनुमान पच्चीस फुट है। मन्दिरके गहर कोठ बना हुआ है। उसमें चारों दिशाओंमें चार दरवाजे हैं। इनमें पूर्व दिशाका द्वार सबसे बड़ा और उत्तम है। इस दरवाजेपर सिंहाकी दो मूर्तियाँ हैं, इसलिये इसे सिंहद्वार नामसे पुकारा जाता है। अत्रिनाथ यात्री इसी द्वारसे भगवान्के दर्शनार्थ आते हैं।

इसी द्वारके सामने काले पत्थरका अम्णस्तम्भ है। इसकी ऊँचाई लगभग ४० फुट है। उसपर मूर्त्य भगवान्के सारथी अरुणकी मूर्ति है। यात्रियोंको इस कीर्तिस्तम्भको दाहिनी ओर रखकर जाना चाहिये। यहाँपर पतितपावन भगवान्का भी दर्शन होता है। अछूतलोग इन्हींके दर्शन करके लौट जाते हैं। उनको मन्दिरके भीतर जानेकी आज्ञा नहीं है। हाँ, यदि वे कोई फलादि या रुपया-पैसा भगवान्को समर्पण करना चाहते हैं तो वे स्वीकार कर लिये जाते हैं।

फाटकके भीतर जानेपर दूसरा परकोटा मिश्रता है। इसमें भी बाहरके परकोटेके दरवाजेके ठीक सामने चार द्वार हैं। भीतरी परकोटेमें कई मन्दिर हैं, जिनमें पातालेश्वरका मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर चार भागोंमें विभक्त है। १ निमान, २ जगमोहन, ३ नृत्यमन्दिर और ४ भोगमन्दिर। निमानमें भगवान् विराजते हैं। उसके आगे जगमोहन है। जगमोहनसे आगे भोगमन्दिर है और इसके आगे नृत्यमन्दिर है। इस प्रकार चारों मन्दिर एक साथ बड़े हुए हैं। इसलिये इनका आकार एक दुर्गके समान हो गया है।

भीतरी परकोटेमें प्रवेश करनेपर पहले पातालेश्वर महादेवके दर्शन मिलते हैं। यात्री उन्हें प्रणाम करके आगे बढ़ते हैं तो गरुडस्तम्भ मिलता है। यहाँ गरुडजीको पुष्पादि समर्पण करके आगे बढ़नेपर सामने भगवान्के दर्शन होने लगते हैं।

तक यथाक निगामी घृशुशय्यापर पड़े हुए व्यक्तिको स्वर्गात् दर्शन करा है। यहाँ समुद्रमें कड़ हाथियोंकी गदगदाहटके सुशब्द श्रवण हो रहा है। जिन यात्रियोंके गोश्रमों काई बड़ा मग नहीं है उन्हें समुद्रमें दर्शनसे ही भय उत्पन्न हो जाता है।

ऐसे ही कुछ भयभीत यात्रियोंको छोड़कर शेष सब समुद्रती लहर छरुत मान करत हैं। समुद्र-तटपर ब्राह्मण पुत्र कुशा उद्ये रहे रहत हैं। वे यात्रियोंमें तर्कशिरि कराते। यात्रीलोग पुरीसे ही नारियठ आदि पूजनकी सामग्री और ब्राह्मण भोजन करानके लिये मिश्रण ले जाते हैं क्योंकि समुद्र-तट छोड़ें ग्राम वस्तु नहीं मिलता।

जब यात्री तार्कशिरि कर चुकत हैं तो वे पास ही समुद्र भयना अमृतकूप नामक एक माउ तटके कूपपर पुन जान हैं, क्योंकि समुद्रका जल इतना गारा एता है कि यदि मुहमें जाय तो मरन हो जाय है। श्मश्रु मिया समुद्र घातसे जो श श्वारपन हो जाता है उसे मिटानेके लिय भी उन्हें दृष्टारा ज्ञान पड़ता है। इस कूपके जन्म ज्ञान करनेका एक पैसा दक्षिणा है।

धरमाशर्द्धना स्थान-समुद्रतटके उपर ही करमावादी कुश है। यहा प्रसादमें ग्विगरी मिश्री है। करमावादी बड़ा भगवद्भक्ता थी। जिस प्रकार मातका पुत्रपर स्वाभाविक स्नेह होता है उसी प्रकार उसका भगवान्के प्रति वासन्ध था। वह प्रातः प्रातः विना शांत्तादि गये हा अंगाठीरर गिचड़ी बनाकर भगवान्को भोग लगाती था, जिसमें उन्हें अधिक डर भूम्बा न रहना पड़े। उसके पश्चात् अपना दैनिक कार्य करती थी।

भगवान्को निशुद्ध भक्तिके सामने किसी प्रकारकी जानि-पानि और पवित्रताका ध्यान नहीं रहता । वे जगदीश्वर तो एक भक्तिके ही भूखे हैं । एक बार भगवान्ने जगन्नाथ-मन्दिरमें प्रातःकालका भोग स्वीकार नहा किया, पिदुरके सागकी भाँति उन्होंने करमावार्की विचडी हो गया । नवसे अवनक भगवान्को प्रातःकालका भोग विचडीका ही लगना है । इसणिय यात्रीलोग करमावार्की विचडीका प्रमाद बड़े प्रेमसे लेते हैं ।

मदरुदासका आश्रम—समुद्रतटपर कल मठ है । उनमें बाबा मदरुदासका आश्रम अधिक प्रसिद्ध है । ये महात्मा जिन ग्लाहागढ़के कड़े ग्रामके रहनेवाले थे । इनका जन्म गेशागर ग्नी ५ सन् १६३१ में हुआ था और १०८ वर्षका आयुमें आप परलोक सिंगारे थे । आप भगवान्के अनन्य भक्त और उच्चकोटिके महात्मा थे । भक्तमाठमें इनका वृत्तान्त दिया है । आपका चलाया हुआ टुकड़ा आजतक यात्रियोंको दिया जाता है ।

गोवर्द्धनमठ—जगद्गुरु श्रीशक्ताचार्यजान भारतपरके धार्मिक शासनके ग्ये चार दिशाओंमें चार मठ स्थापित किये थे । उन्होंने जगन्नाथपुरगमें जिस मठकी स्थापना की थी वह गोवर्द्धनमठके नामसे प्रसिद्ध है । उसका भव्य-भवन समुद्रतटपर बना हुआ है ।

तीन लोकका दर्शन—राम्तमं यात्रियोंको गोम्बामा कुजलान् भागवतरत्नका निर्माण कराया हुआ एक पक्का मन्दिर मिला है । उसके दग्बाजेपर लिखा हुआ है—मर्त्यलोक यमलोक और स्वर्गलोक । यहाँके दर्शनकी दक्षिणा एक आना है ।

मन्दिरेके भीतर धुमनपर जोगन मित्ता है । उममे माम मर्यगक गान्ना आर यमगेक आर ऊपरके तलेपर स्वर्गलोक है नममे पहल यात्रा मर्यगकका दर्शन करते हैं ।

उन नागों लकका गिदशन मूर्तियोंद्वारा हो जगया र है । उन मूनियापर मफ्ट रगका कठनी तरता गगा हुई निनरर काल अपगम सजिस परिचय दिये हुए ह । उन ता गकाका इशन करनेसे यात्रियोंका बुद्धिपर अच्छा प्र पइता है । इममे यात्रियोंको यह शिक्षा रना चाहि कि चागमा लक्ष यानियाम मनुष्य नम मिलना बड पुण्य है तपस्याका फल है । प्रयत्न शरान्धार प्राणा दु रगा निवृत्ति सुगरी प्राप्तिकी कामना करता है किंतु सुग दृ ख ता अपने कामकी ग्यान है । जा प्राणा अपन पूर्वजममे जसा बीजारोपण करक जाता है उमे जनुमार हा इस जममे फरका प्राप्ति होला है । नावन अपने निशय ममयले भागे नहीं बढ सकता, इसलिये मर्यलाकरपा इस शगरम अकर नागको यमगेकरपा पापवासनाओंका निजालकर उनका गगह मदिचारण स्वर्गलोकका बमाना चाहिये ।

शैतगगा सरोवर—यह पवित्र कुण्ट लोरुनाथ महादेवके पाम है । यात्रागैम यहां भा गानादि करते हैं । इमक तटपर भगवान् श्वेतेशका मदिदर है । उनका प्रतिमा भा काष्ठका हा है आर जय ११ वर्षमे श्रानगजारजाका कनेर करल जाता है ता यह मूर्ति भा बल्ल जाती है ।

चक्रतीर्थ—स्टशनर समीप समुद्रके किनारे चक्रतीर्थ है । कहते हैं, इसमें भगवान्का सुदर्शनचक्र पडा हुआ है । इसका जल

मीठा है। यह समुद्रसे प्राय २०-२५ कदमकी दूरीपर है। भगवान्की अद्भुत महिमा है कि समुद्रका जल इतना खारी और उमके त्रिंकुल समीप कुण्टका जल ऐसा माठा है।

। **साखीगोपाल**—जगन्नाथपुरीसे ग्यारह मीठका दूरीपर रेलवे लाइनेके पास साखीगोपालका मन्दिर है। यहां श्रीकृष्ण और राधिकाजीकी सुन्दर मूर्तियां हैं। यहां इसके अनिरिक्त आर भी कई मन्दिर हैं तथा एक पक्का तालाब भी है।

कोणार्क—यह जगन्नाथपुरीसे १८ मीठ है। इसे सर्वसाधारण लोग 'कनारक' कहते हैं। 'कोणार्क' संस्कृत शब्द है। इसका अर्थ [उड़ीसाके] कोनेका सूर्य है। यहाँका मार्ग बड़ा सुहावना है। मार्गमें कुशभद्रा नामकी एक छोटी नदी मिलती है। यात्रालोग भोजनादिकी सामग्री पुरासे हाँ ले जाते हैं। इस जगह माघ शुद्ध सप्तमाका बड़ा मेला होता है। यहां 'चन्द्रमाला' नामका एक छोटा सा नदी है। उसमें यात्रालोग प्राय स्नान करते हैं। कोणार्कमें सूर्यभगवान्का बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है। इसको राजा नृसिंहदेवने उड़ीसाका बारह वर्षकी आमदना खर्च करके सन् १०३७ और १२८२ ईसाके मध्यमें बनवाया था। उस समय यह मन्दिर जीर्ण शार्ण दशांशमें है। इसका वर्तमान शिखर १०४ फुट ऊँचा है। इसकी दीवारोंपर तरह-तरहकी चित्रकारी हो रहा है। जो तत्कालीन कलाका अच्छा नमूना है। जगन्नाथजीके मन्दिरके सिंहद्वारपर जो १६ कोणका अरुणस्तम्भ है वह यहींमें ले जाकर वहाँ लगाया गया है। यह मन्दिर केवल पत्थरका ही बना हुआ है। इसके प्रस्तरपण्ड एक-दूसरेसे जोड़ेदाग जड़ दिये गये हैं।

पुरीकी परिष्कार और दर्शन—यहाँके तीर्थ पुजारी यात्रियोंके सन दत्तात्रेयके दर्शन करानके अनन्तर पुरीकी परिक्रमा कराते हैं और फिर निरा गेते समय दर्शन करानेको ले जाते हैं। जगन्नाथ-मन्दिरमें स्वर्गात्म नामका एक सुन्दर स्थान है जहाँपर यात्रियोंमें तीर्थगुरु अपनी श्रिणिणा लेते हैं। यहाँ यात्रियोंसे अटका नामकी एक मारी श्रिणिणा भी माँगा जाता है। उसके विषयमें यह धनत्रया जाता है कि अटकाके श्रिये दिया गया धन भगवान्के अटका फाँडम बढ़ा दिया जाता है और उसके अनुसार जगन्नाथजीके प्रसाद बढ़ानेमें सहायक होना है। यहाँ तीर्थगुरुका पूजनकर अपनी श्रदानुसार उन्हें यज्ञात्मिक भट करते हैं और तीर्थत्रिपि करके देवादिदेव श्रीजगन्नाथस्वामीका माहात्म्य श्रवण करके अपनी पहले धामकी यात्रा समाप्त करते हैं।

जगन्नाथक्षेत्र माधुओंके श्रिये सुख हा रहता है। यहाँका जलवायु पहले तो अच्छा नहीं था किन्तु अब तो इतना स्वास्थ्यप्र है कि स्वस्थ होनेके लिये लोगोंने जगन्नाथजी (पुरा) आकर कुछ महीना निवास करनेके लिये डाक्टरलोग अपनी व्यवस्था देते हैं। यहाँ सदावर्त, सस्कृतपाठशाला, गोशाला अनायाज्य डाकशाला, तारघर आदि कई संस्थाएँ हैं। अस्पताल और धर्मार्थ धारणालय आदि कई लोकप्रकारी संस्थाएँ भी हैं। उड़ीसा प्रान्तमें चावलका ही र्वर्च अधिक है। आटेमें भी चावलका आटा मिला रहता है। यद्यपि उड़ीसा भाषा भटा प्रकार समझम नहीं आती तथापि पण्डेलोग तथा ओर भी तीर्थ पुजारी आदि ऐसे गहन मनुष्य हैं, जो अच्छी तरह हिंदीमें गोल सकते हैं।

जगन्नाथपुरी वड़ी रमणीक ह । यहा कुष्ठियोकी सरया अधिक है । कहा जाता है कि कुछ दिन निरन्तर रहनेपर यहाके जलवायुसे कुछ रोग शान्त हो जाना ह । कितने ही श्रद्धालु यहा मरणपर्यन्त निवास करते हैं ।

श्रीजगन्नाथमाहात्म्य—एक नमय लोक-कल्याणक लिये अष्टासा मह्य ऋषियोने मृनजीसे प्रश्न किया कि मनुष्यको पवित्र करनेवाला इस भारतवर्षमें कहां तीर्थ ह नो वृषा करके बतलाइये । सूतजा महाराज उस समय त्र्यामगणपर विराजमान थे । उन्होंने कहा कि उड़ीसा प्रांतमें १० योवन लम्बा आर ५ यानन चौडा पुरपोत्तमक्षेत्र ह, जहा नीलगिरी पर्वतपर भगवान्का सदैव निवास रहता ह । वहाकी शास्त्रत्रिके अनुमार यात्रा करनेपर ओर महाप्रमात् प्रहण करनेमे प्राणा पापमुक्त हो जाता ह ।

भगवान्की दारमया मूर्तिका प्रक्षानीन स्थापित किया ह । पद्मपुराणमें लिखा ह कि पुरपोत्तमपुगमें निवास करनेवालेका जन्म-मरणमे छुटकारा मिल जाता ह । जो पुरुष यहा शरीरत्याग करते हैं वे धन्व ह । यहाके महाप्रमात्का एमा प्रभाव ह कि उससे पितृकर्म करनेपर पितृगण तृप्त होकर त्रिष्णुलोकको चले जाते हैं । देवताओं भगवान्क दर्शनोका अभिलाषासे नित्य हा पुरपोत्तमपुरीमें आते हैं । इसलिये हे मुनिसरो ! यदि आपलोगोंको पुण्यकी वृद्धि और पाप-व्यका क्षमना ह तो अपना जन्म सार्थक करनेके लिये आप जगन्नाथक्षेत्रका पवित्र यात्रा कर ।



साक्षीगोपाल

पतिव्रता श्रावणीगर्भीर दर्शनति पथात् भगवान् मशी-
गणान्क दशन किय कार है । भगवान्के मठिरमे स्टदान प्रय
एक माल है । मठिरमे भगवान् वृगसा मनोप्रातिना मूर्ति है ।
यात्रागेग उह अपनी यात्रासा मार्ग। उनाने है ।

साक्षीगोपालने नियमें एसा धरा है कि बहुत कार हुआ
एक वृक्ष श्रावण और उनके एक युवक माथारी अभिजात हुए कि
वृक्षान्क यात्रा करें । म् इच्छामे वे जानों पैसा ही श्रावणान-
का चर लिये । धीरे धार वे रहा पहुँच गद और बड़ी भद्रापूर्वक
भगवान्के दर्शन कर जुठ समय रहा म् किन्तु मार्गकी धमरक
काण बूढ़े यात्रा प्रीमार पड़ गये । उनर युवक माथीन उनरी तन-भन्-
नमे बड़ा मेरा की । उमम प्रमत्त होकर उहान नीराग हानपर घर
गाठने समय भगवान् वृक्षान्कविहारके मठिरमे यह प्रतिज्ञा कर कि
मैं घर पहुँचनपर म् युवकके साथ अपनी कथासा मन्थन कर दूंगा ।

दोनों यात्री भगवान्का स्नान कर घरको चर लिये । परउ
अपन पुत्र और जानिभाय्योके भयवश वृद्ध महान्य दग्ध युवकके
साथ अपनी कथासा पाणिग्रहण करनमें आनामानी करन लगे ।
जब युवकने जातिके पक्षोसे म्का निर्णय करनेको कहा तो वे
बोले, 'इन वृद्ध महान्यन निम्के मापन तुमसे प्रतिज्ञा की है, यदि

वह आकर कह द तो हम इन्हे तुम्हारे साथ अपनी अन्याका
पिनाह करनेके लिये विवश कर सकते हैं ।'

तब भगवान्से साक्षी टिलानेके लिये यह युक्त फिर वृत्तावन
गया और उनसे साथ चलकर साक्षी देनेकी प्रार्थना करते हुए
यह प्रतिज्ञा की कि यदि आप नहीं चलेंगे तो मैं अनशन करके
यहां प्राण त्याग दूंगा । जब अनशन करने-करत उसे मान दिन हो
गये तो भगवान्को उस दृष्टीके भक्तकी जान मानना पड़ा, और
उन्होंने स्वप्नमें उसे दर्शन कर आज्ञा की कि हम अन्य रहकर
तुम्हारे साथ उरुद्वारा चरणों मिलतु नुम पाउकी ओर मत देरना,
यदि इस प्रतिज्ञाके विरुद्ध करोगे तो हम उमा स्थानपर टहर जायेंगे ।

युक्त अपनी मकरता और भगवान्का कृपामें कृतकृत्य हो
दूसरे दिन घरका ओर चल गया । उसके पाठे भक्तमल्ल भगवान्
भी चल दिये । उसे केरत भगवान्के नूपुरोंका गनि सुनाया दती
थी, किन्तु तब ममुद्रके रेतल तटपर पहुँचे तो यह गनि सुनायी
न दी, इससे उसे सदेह हुआ कि भगवान् लट तो नहा गये ।
इस सदेहमें पडकर उसने उ्यों ही पाछेका ओर देखा कि भगवान्
साक्षात् मर्त्यरूपमें दर्शन देकर अतीर्ण हो गये । वम, उमा
स्थानपर भगवान् साक्षात्गोपाकी स्थापना हुई । तबमें जो यात्री
श्राजगताशका यात्राको आने हैं वे भगवान्को उमाका साक्षी बनानके
लिये यहा भी अग्य आने हैं ।

यहापर रायबहादुर श्राविश्वेन्द्रलाल हत्यासियाका उर्मशाला
है, निममें यात्रियोंका सुनिगाका अच्छा ध्यान रक्खा जाता है ।
उमा प्रबन्ध हत्यासिया स्टेटकी ओरसे ट्रस्टियोंद्वारा होता है ।

रामेश्वरखण्ड



गोदावरी

रामेश्वरवा ओर जानवाया यात्रा माक्षागापालमे गुन्गारोड जिसे जटला जइदान भी कहने ह आन है । एम स्टेशनपर प्राय चार पेटेका अस्तर मिउता ह । यात्रागेम यहाँसे आटा-दाल छानि जायत्यस मामान लकर रण गते ह क्योंकि स्थिणमे शुद्ध छोटका अभाव ह । यहा मुस्ताफिरखानके आस पास वृम्भोके नावे हा भोजनादि बनाना पइता है । स्टेशनर पास कोई अय विश्राम-म्यान नहीं है । यहाँ एक अच्छा धमगालाका बहुत आरक्ष्यता ह ।

सुदाराडसे यात्रियोंको जाल्टेयर एक्मप्रेससे जाना चाहिये । श्रीरामेश्वरजीके पण्डे या उनके गुमास्ते यहींमे यात्रियोंके साथ हो लेते हैं । यात्रियोंको उनके साथ चलनेमें दक्षिणाकी बात खोल लेनी चाहिये, नहीं तो पीछे झगड़ा होनेकी सम्भावना रहती है ।

सुदाराडमे शामको चार बजे चक्कर यात्रा दूसरे दिन प्रातः काल पाच बजे जाल्टेयर स्टेशनपर पहुँचते हैं । स्टेशनपर दूसरी ओर गाडी तयार मित्रता है । उममें बठकर दोपहरको ग्यारह बजेके लगभग गोदावरी स्टेशन पहुच जाते हैं । स्टेशनपर बलगाडियों तयार रहता है । यहाँसे तीर्थ प्राय एक माल है, सत्रिये अधिकांश यात्रा पदल हा चने जाने हैं । जिनके पास बोझा अधिक होता है व बलगाडा कर लेने हैं । पुरीसे गोदावरी स्टेशन M S M रेलवेगइनपर ४१३ माल्की दूरीपर है ।

गोदावरी ग्राम गोदावरीनगरके तटपर बसा हुआ है । यहाँके तीर्थपुजारी सख्तनक होते हैं । गोदावरीमें दुर्वासेतुमतादेवीकी धर्मशाला है । इन देवीजाके तीनकालमे इस प्रमशागमे अन्नक्षेत्र भी था, किंतु अब यह बरु कर दिया गया है और धर्मशाग भी म्युनिमिपेन्ट्रीके अग्रान कर दा गयी है ।

गोदावरानिवासी भा प्राय गोदावरजीका हा जत्र सेवन करत है । यहाँ पिण्डदान करनेकी प्रिधि है । कर्म करानेवाले प्राक्षण धर्मशालाहीमें आ जाते हैं और वे ही उमके त्रिये आनखक सामग्रा जुटा दते हैं । पिण्डदान गोदावररु तटपर एरु फंसके मण्डपमे होता है । यहाँके तीर्थपुगेहित कर्मत्रियेके

हाना हान है। ये बहुत विविध रस करके हैं। यानामें कमराष्ट और दमराणाका नैसा आठ टक्कणम है वसा अयत न्हा न्हा जाना। यहाका मियाँ परग नहीं रगनी। ये स्नान घरक भाग रपडामें लय हा वर भक्क ए जाता है।

स्नान आर नार्थगिरिक पधन मटिरमें नारर न्शन काना चाणिय। गोदापराके नटपर जा नन ह उसम रहनेवाले कान-नीगरो दखकर भागान गमचट्टक उनगामी मगाओंका मरण हाता ह। ये अयत न्यामर्ण मगलखभार ओर श्रद्धालु होने हैं। दरिद्रतासे ता गाना न्का चिरमगा ह। न्के पास शरीर दकनक लिय पर्याप्त रखाति भी नहा हान। जय ये धर्मशागम आने हैं तो यागा उनके जङ्ग फलोंको वड़ी प्रसन्नतासे खराते हैं। ये फल न्गनमें साताप वेग, शरकरबन्द, आम तथा जामुन आदिके समान हान ह, फितु न्वात्म मय माटे आर बहुत रचिकर हान हैं। घटाक निगामा हें बहुत नारयपर्वक मतगते हैं।

गातापराका जल मन्धता आर गुणामें गह्वानलसे बहुत समानता रगता ह। जिम प्रकार गह्वानीका गाना भीमथ तपस्या करके लाये थे उमी प्रकार गादापरीना महर्षि गौतमका तपस्याका प्रताप ह। गोतापरी गात्रमें मरुतपाटगाटा, जीपशाल्य, टानगाना आर तारकर भी ह। यहाँका जग्रायु अच्छा ह। फण्टिका तो अभाप ही ह।

कृष्णगङ्गा-पन्ना-चुसिह

कृष्णगङ्गाखान और पन्ना-चुसिह भगवान्के दर्शन करनेवाले यात्रियोंको बेजगडा स्टेशनपर उतरना पड़ता है। यह गोशवरी स्टेशनसे ९१ मीलकी दूरीपर है। स्टेशनपर गाड़ी पहुँचनेपर इतनी भीड़ और कलहल होता है कि यात्रियोंका निद्रा भंग हो जाती है। यहाँके निवासी पन्ना चुसिह-यात्रियोंका बड़ा माहात्म्य मनाते हैं। स्टेशनपर ही पण्डेलोग मिल जाते हैं। उनके कारण यात्रियोंको असुविधा नहीं होती।

त्रैजवाडामें सेठ रामगुणमकी धर्मशाला है। धर्मशालासे अनुमान दो मायपर कृष्णगङ्गा (कृष्णा) है। प्रातःकालका

समय एतन्के कारण स्नानक त्रिप अभिक्रमण यात्री पत्र हो
 चर जाते हैं। वृष्णगङ्गाका जल यमुनार्जाक समान है। दूमे
 दर्शन करनपर यहा मादम लोना है कि श्रीयमुनाजी ही है, किन्तु
 इनका पसाट बहुत सज है।

वृष्णगङ्गाम स्नान और तीर्थस्नानि करके यात्री महान्नीरि
 पर पना-चुमिहदखरे दर्शनार्थ जाते हैं। इस पर्वतपर अजुतान
 चार सौ सादियों चढ़नेपर भगवान् दर्शन लोते हैं। भगवान्के
 शरवतम भोग ग्गाया जाता है और वहा प्रमाणमे लिखा है।
 इसठिये दशनाविषोकोरी तीचेमे हा गुड़ या चानी ले जानी ग्गिये।

पर्वतक उपर भगवान्का सुदर मन्दिर है। यात्री दर्शन
 करके वृत्तव्य लो जाते हैं। अल। भक्ताम् भगवान् भक्त
 शिरामणि प्रहादका रक्षा करनेके त्रिप ही एमा भोवण पर गरण
 किया था। इससे उनकी अहनुकी वृथाता स्मरण करके हृदय मन्द
 हो जाता है। मन्दिरमें अहर्निदा अगाड तापक जटता है। पुनारी
 खोग रामानुजसम्प्रदायक है। यहा विविधत् पूजा करानेक पात्र
 धाना दधिगा है। दक्षिणर्म कट मन्दिरमें पाँच आना दधिणा लेकर
 विविधत् पूजन करानेका प्रथा सी देवोमें आता है। भगवान्क
 सा नामोका पाठ करीपर पूजा समान होता है। पर्वतके उपरसे
 उत्तरकी ओर चली और वृष्णगङ्गाम मनाहर दृश्य देखत हा बनता
 है। दर्शनादिसे निवृत्त हाकर फिर चर्मशालाको हा छोडकर अपना
 होता है।



चिदम्बरम्

बैजनाबासे मद्रास होते हुए चिदम्बरम् आना
 यात्रा मुदरिरोड या जटनीमे कोर्ड रामेश्वरका पण्टा
 यहाँसे अश्य किर्हानो साथ ले लेना चाहिये ।
 सुरिग रहती हे । यहाँ उनके कर्मचारी खय ही
 हुए भा जाते हैं । बैजनाबासे मद्रासतक
 १२ घटेकी यात्रा हे । मद्राससे ओटी लान
 उससे श्रीचिदम्बरम्तक प्राय १२ घटे हा
 कर बैजनाबा जकशनसे चिदम्बरम्
 सदरन दण्डिया रेलवेका स्टेशन हे ।
 मिगती हैं । दक्षिणमें सवारीके

है, या कहा कही नहीं रे नहा जाती रहा माटरमरिमरा भा प्रचार हान लगा है। यात्रा अत्रिक मर्यामें पैदल ही चल देते हैं।

चिन्म्वरम जन्नाम प्रवेश करत हा एक फाटक मिलता है, उसमें गंगा गुम्बजोपर राम जानकीका बड़ी मनाहर मूर्तिया है, ना हाथसे चिन्म्वरर पुराके मार्गका और सङ्गत कर रहा है। रास्तेमें निमल जन्के ना सुन्दर सरायर भी है। यहा कद धर्मशास्त्र है। अत्रिकाश यात्रा म्युनिसिपैलिटाका धर्मशास्त्रमें टहरने है। यह न अत्रिक बड़ी है न अत्रिक अत्र। इसके मिरा अत्र भी अपना सुत्रिकाके अनुसार यात्रालोग टहरन है। दक्षिणका धमशालाअमि शाचादिके त्रिय उचित प्रवचन किमी किमा धर्मशास्त्र ही देखा जाता है।

रमशालाम टहरकर यात्रालोग पहले शिखरहासरायरमें स्नान करते ह। कहते है इस सरायरमें नियमानुमार निय स्नान करनेमें महागन हिरण्यवर्मका कुष्ठरोग जाना रहा था। तभामे इसके प्रति लागका श्रद्धा उत्तरात्तर बन्ता गया है। यहा स्नान करके ही यात्रा भगवान् नटराजक दानाथ जात है। भगवान् नटराज या नटेश महास्त्रम मन्त्रिके चारों ओर ऊँचा परकाटा है जिसमें चार फाटक है। दक्षिण नाम में गोपुर कहत है। इन गापुराका ऊँचाई १४० फीटके लगभग है। इनमें मञ्जिठ हैं, तथा दीपारोपर दक्षिण नारताय शायका बड़ी सुन्दर चिमनारी है।

गोपुरक मानर प्रवेश करनेपर बडा सहन मिलता है तथा परवाटेसे लगे हुए बहुत से अटे-छाटे स्तम्भे मे हैं। यहाके तीर्थ

पुनारियोंसे पूठनपर यह माट्टम हुआ कि पहले इस मन्दिरमें वेद-
पाठगाय था, उसका उत्रोके रहनेके लिये य स्थान बनाये गय थे ।

आगे चलकर एक दमरा दरवाजा आता है । उसका पार
दरनपर धाकाया-विश्वनाथका मन्दिरकी भौति श्रानटराजके मन्दिरका
दशन होता है । उसका गिर सुवर्णपत्रमे मडा हुआ है । मन्दिरके
जगमोहननक जानके लिये चाटासे मडा हुई मॉटिया है । जगमोहन-
न पहुँचकर यात्रा भगवान्के दर्शन करक मन्त्रमुद्रा-मे होकर गडे
रह जाने है । यहाँके पुजारा नन रडाया-यायाका पाठ करने हुए
भावान्का स्तवन करते हैं ता उनका यह वेदोप सुनकर चित्त
जानम मग्न होन लगता है । यहा भगवान्का एक हारेका त्रिप्रह
है, जो अयत्त म्बच्छ ओर देनायमान है तथा नर्मदरम महादेवके
समाल प्राय दार्ड म्ब लम्बा है । पुनारीगोग इनका त्रिप्रियत्
पूजन कर यह भानमे डरु देते हैं । फिर दमरे दिन पूजनके समय
हा उनके दर्शन होने है । दमरा त्रिप्रियत् मन्दिरके भातर है ।
उमके उपर सुवर्णका हार मुशाभित है नया पाम ही सुवर्णमयी
-तपुर्णिमाजाका भी दर्शन हाना है । तासरी मूर्ति नीळमणिना है,
निमरा दर्शन समाप्त होनेपर तार्थपुजारा मूर्तिके पीठे वृतका दीपक
रकर पूननात्ति कराने है । यह क्षिप्रद्वि प्राय आठ म्ब लम्बा
आर चार म्ब चाडा है । उसके भातर दापकके प्रकाशम जिनजीके
सष्ट दर्शन होते है ।

यम प्रकार भगवान्क दर्शन कर यात्रीलोग मन्दिरके प्राचीरके
अन्तर्गत अय देवमूर्तियोंके दर्शन करने हैं फिर भगवान्के जय-

घान्के साथ परिक्रमा करत हुए वे विष्णु भगवान्के मन्दिरमें प्रवेश करते हैं। मन्दिरके द्वारपर उन्हें चाअस फीट ऊँचे सुरगमण्डल तन्मन्मन्कर दर्शन होते ह और फिर तीमरे द्वारके भीतर दाएके प्रकाशमें भगवान्के दर्शन कराये जाते हैं। चतुर्भुजमूर्ति भगवान् शेषशय्यापर शयन किये हुए ह। विचित्र कथाभूषणसे आपकी अनुपम शाभा है। आप यहाँ गोविन्द भगवान्के नामसे विख्यात हैं। नायका विग्रह मनुष्यके अकारसे भा यदा है। आपकी मनाहर उम्किा शम्बर यात्री मुख्य हो जाते हैं और बड़े भक्ति भासे आपकी श्रद्धाप्रति समर्पित करने हैं। श्मके पश्चात् परिष्क में आर भी बहुत से देवमन्दिरमें दर्शन-पूजन करने तथा मह्य मण्डप लगान हुए यात्री फिर उगी महनमें आ जाते हैं।

यह त्रिगाड दगाय बहुत-सा प्राचान संस्कृति आर कथाओं का स्मरण कराना ह। त्रिमा समय श्मम संरुद्धों सेपर भगवान्की सेवा करते हान। श्मके त्रिगायम भागों त्रय वेद-वेदाङ्गाकी शिक्षा प्राप्त करने टाग, अहर्निश वेदपूजा होता होगी। मन्दिरके परिष्कारादिका सनापनकर प्रबंध टागा। यहाका वायु हर समय अग्न आदि सुगन्धित द्रव्यासे सुगन्धित रहता टागा। यह त्रिगाड मन्दिर गणेश स्फया श्माकर बनाया गया ह। श्मके स्तूपके अनुसार अत्र ता इसका कुठ भा प्रनय नहा है। फिर भा भारतके अन्य स्थानोंकी अपेक्षा यहा वेदविधाका बडा आदर है। हालहीमें श्रीपद्ममलाई चैटी महादयने श्म मन्दिरको कू शरय स्फया दान

दिया है जिससे कि सरकारसे भी सहायता लेकर यहाँ एक संस्कृत महाविद्यालय स्थापित किया जाय। इस समय भी यहाँ संस्कृतकी चार अच्छी पाठशाखाएँ हैं।

जगन्नाथपुराणी भौति यहाँ भा तीर्थपुजारियोंके सकड़ा घर हैं और उन सबका अपने-अपने पूजनका समय भा बँटा हुआ है। सायंकालके पश्चात् शिवमन्दिरमें पुजारियोंके सुप्रबन्धमें दीपमालिका-सी हा जाता है। पण्डेलोग यात्रियोंमें मन्दिरके आगममें दक्षिणा लेकर प्रमाणरूपमें काशीप्रक्षिणाप्रका भौति शिवजापर चढ़ा हुआ कैशर-रक्तूरीमिश्रित मुगाग्नि चन्दन देते हैं।

दक्षिण प्रान्तमें चिदम्बरम्का मन्दिर बहुत प्राचान बनाया जाता है। इसके प्रति यहाँके निग्रामियाकी बड़ी श्रद्धा है। अप्रिकाश यात्रा चिदम्बरम्पुराका परिक्रमा करते भा टक्क जाते हैं।

यहाँ अन्नक्षेत्र अनायालय, डाकखाना और औषधालय आदि हैं। एक दातव्य औषधालय है निम्न प्रदेशों यात्रियोंकी चिकित्सा आदिका अच्छा प्रबन्ध है।

इस पुराणमें नारियणके वृक्षोंकी अधिकता है। इसकी शोभा देखकर यात्रियोंको बड़ा आनन्द होता है। चिदम्बरम्क्षेत्र अत्यन्त पवित्र है। यहाँ महर्षि पतञ्जलिने तप किया था। स्कन्दपुराणमें सेतुनभमाहात्म्यके प्रसङ्गमें लिखा है कि चिदम्बरम्क्षेत्रमें निग्राम और तप करनेवालेको उत्तम धर्म करनेवालेके लोभोंकी प्राप्ति होती है।

मद्रा

चिदम्बरम स्टेशनसे मद्रा १५६ मी० ह। यहा मर्न गीज रेन्वका स्टेशन ह। मोनाक्षा भगवताका मन्दिर स्टेशनमे एक माका दुरापर है। सारा मिल् जाता ह। यहा वेगानग ह उमके पाम हा गन्नेरम् नामका एक रिगाल् र्मशाठा है। उमके मिया पार प्रहुत से स्थान हैं। मद्रा काफा बडा शहर ह। यहा ट्वेन्थे स्थानोंका बमी नहा ह।

भगवता मानाक्षाक मन्दिरमें दक्षिणकी शिन्धुपत्तिका बडा हा अनूठा प्रशान किया गया ह। इसका विस्तार बहुत अधिक है। यह पाम चार मा गज लम्बा आर उतना ही चौडा है। उनके चारो ओर चार गणपुर अर्थात् मुख्यद्वार है जो ग्यारह ग्यारह मजिर् ऊँचे है। मन्दिरक फाटकसे यात्रागेग अष्टउत्सामण्डप-म हान हुए मानाका देवीके दर्शनार्थ जाते है। उस मण्डपमें लम्ब-जोकी आठ मूर्तिया है। इमा प्रसार आर भा रूट मण्डप पाम बनने होने ह तब सुवर्णपुष्करिणा नामका मगर आता है। जगन्नाथन का भाति उस मण्डपमें भा मुख्य मुख्य उत्सवोंके अरसरपर भगवता आदि देवताओंकी मूर्तियोंको नौकाम उठाकर जलविहार कराया जाता ह। यहा चारह स्तम्भ हैं, तिनपर पाण्डवोंका प्रतिमाएँ बनी हु है।

तीन पौरियोंको पार करनेपर दीपकके प्रकाशमें भगवतीके दर्शन होते हैं। भगवतीका शरीर श्यामवर्ण और उखाभूपणोंसे सुसज्जित है। इस प्रकार अभयकरी उरदायिनी जगमाताका दर्शन कर यात्री प्रफुल्लित हो जाते हैं। मन्दिरके द्वारपर सिंहोकी दो विशाल मूर्तियाँ हैं, ये भगवतीके द्वारपाल हैं। दर्शन करके लौटते समय यात्रीलोग इन्हें भी मन्मक नगाते हैं। जिस यात्रीकी इच्छा होती है उससे दक्षिणा लेकर पुजारीलोग उमकी ओरसे भगवतीका विधिवत् पूजन कर देते हैं।

यह मन्दिर १५६५ ई० के लगभग बना बताया जाता है। इसकी दीवारोंपर पुराणोंकी कथाएँ और उहाँके अनुसार तरह-तरहके चित्र अंकित हैं। मन्दिरके भीतर बाजार भी लगता है। बहुत से यात्री इस मन्दिरका फोटो भी उतरवाकर ले जाते हैं।

इसी मन्दिरमें सुन्दरेश्वर महादेवका भी एक विशाल मन्दिर है। अपने नामके अनुसार जैसा भगवान्का निग्रह सुन्दर है वैसे ही यह मन्दिर भी है। मन्दिरके सामने एक सुनहरा स्तम्भ है। भगवान् रामचन्द्रजी जत्र लङ्कात्रिजय करनेके लिये जा रहे थे उस समय उन्होंने सुन्दरेश्वर शंकरका पूजन किया था। यहाँ दर्शन पूजन कर यात्रियोंको बड़ी प्रसन्नता होती है। यह मन्दिर २८२ गज लम्बा, २४८ गज चौड़ा और प्राय १४२ फुट ऊँचा है। मदूराकी कारीगरी भारतवर्षमें प्रसिद्ध है।

यहाँ राजा तिरमलाई नामका महल भी देखनेयोग्य है। जिस प्रकार तिरुवकी यात्रा करनेपर नाना साहबके महलोंके खण्डहर

देखकर यात्रियोंको समारसे उदामीनता हो जाती है उसी प्रकार यहाँ राजा तिरुमगई नामके महर्लाको देखकर भी मट्टराज भर्तृहरिके वैराग्यशनकरा का कथा स्मरण हो आती है ।

मट्टरासे पाँच मीलकी दूरीपर एक पर्वत है । कहते हैं, जिस समय मीनाजीको खोजते हुए चानरोंको पता लगा कि वे समुद्रपर लकामें हैं तो वहाँ पहुँचनेका कोई उपाय न देखकर सब प्रायोपवेश करके समुद्रतटपर बैठ गये । किमीको भी सौ योजन समुद्र लँघनेका साहस नहीं हुआ । उस समय इसी पर्वतपर ऋक्षराज जाम्बवान्ने हनुमान्जीको उनके बलका स्मरण कराया था, जिससे वे समुद्र छँटनेके लिये तैयार हुए थे । बहुत से भावुक ओर श्रद्धालु यात्री इस पर्वतके दर्शनार्थ जाते हैं । यहाँ कोई धर्मशाला आदि बन जाय तो यात्रियोंको ठहरनेकी सुविधा हो जाय ।

यहाँके ब्राह्मण वेत्पाटी और उडे कर्मनिष्ठ होने हैं । यहाँ सस्कृत विद्याका अच्छा प्रचार है । यह जिलेका स्थान है, जलवायु अच्छा है । भोजनकी सब सामग्री मित्र जाती है । फलादिका भी अभाव नहीं है । डाकगाना, तारघर, कई सस्कृत पाठशालाएँ तथा ओपशाल्य आदि हैं । भगवती मीनाक्षी और भगवान् सुदरेश्वरका दशन-पूजन सब प्रकारके पापोंका नाश करनेवाला और दरिद्रताको दूर करनेवाला है । इस स्थानका माहात्म्य शिवभक्तिविलास और महाभारतमें कई जगह आया है । पाण्ड्यप्रशके राजालोग मीनाक्षी देवीका सदासे पूजन करते रहे हैं ।

श्रीरामेश्वरम्

लङ्का विजेतु कपिमालुमुच्यै-
निगध्य सेतु सरिता पतौ च ।
श्रीरामचन्द्रेण सुपूजित वै
रामेश्वरारय सतत नमामि ॥

मद्रासे रामेश्वरम् १३८ मील हे । रामेश्वरपुरी रायराजाकी जमींदारीमें है, परंतु रामेश्वरजीका प्रपन्न ब्रिटिश गवर्नमेण्ट करती है । निस स्थानपर रामेश्वरजीकी स्थापना हुई है उसे शास्त्रोंमें गणमादनपर्वत कहा गया है । यह अनुमान आठ-दस मील लम्बा चौड़ा एक टापू-आ है । जनरोंने जो सेतु बाँधा था यह

सम्भवन उसीका एक गण्ड है। यात्रीगेग मद्रासे रामेश्वरम् जानेके लिये जिस गाड़ीमें बैठने हैं, वह सीरी धनुषकोटितीर्थको चली जाती है। यहाँ समुद्रतीरपर वानरसेनाने डेरा डाला था, इसलिये यह प्रान्त 'वानरवनम्' के नामसे प्रसिद्ध है। यहाँमे रामेश्वरमृतक बीचमे समुद्रकी खाड़ी है। उसपर रेलवे कम्पनीने सेतुबन्धपर ही लोहेके गार्टर खडे करके पुल बनाया है, उसीके ऊपर होकर रेल आती-जाती है। सेतुके खण्डोंके ऊपर समुद्रका जल हिलोरें ले रहा है, कहीं कहीं खण्डके दर्शन हो जाते हैं।

जिस समय गाड़ी सेतुके ऊपर होकर जाने लगती है उस समय उसकी गति मद्ध पड़ जाती है। तीर्थपुजारियोंके साथ यात्रियोंको समुद्रके नीचे स्थित सेतुके दर्शन कराते हैं। उस समय श्रद्धालु यात्री खिडकियोंसे सिर निकालकर श्रीरामचन्द्रजीकी जय बोलते हुए सेतुकी पूजाके लिये पुष्प, सुपारी, पैसा, रुपया, यज्ञोपवीत, नारियल आदि वस्तुएँ समुद्रके जलमें छोड़ देते हैं। सेतुकी लंबाई चार सौ कोस और चौड़ाई ४० फोस बतलायी जाती है। कहते हैं, कभी-कभी सूर्योदयके समय, जब समुद्रकी तरङ्गें उतरी होनी हैं, सेतुके दर्शन भी हो जाते हैं। इसके बीचमें कई जगह गहरी खाइयाँ हैं। उनके नियममें ऐसी कहावत है कि निभीषणकी प्रार्थनासे भगवान् रामने सेतुको तोड़ दिया था।

इस प्रकार पुल पार करके गाड़ी रामेश्वरम् स्टेशनपर पहुँचती है। पुरी तथा मन्दिर स्टेशनसे बहुत दूर नहीं है। स्टेशनपर

पहुँचते ही यात्रीलोग आनन्द और उत्साहपूर्वक रामनाथब्राह्मका जयगोप करते हुए अपना-अपना सामान लेकर पैदल या बैलगाड़ियों पर चढ़कर चल देते हैं। पुरीमें प्रवेश करनेसे पूर्व सदर सड़ककी बायीं ओर सर हरीराम गोयनकाकी धर्मशाला है। इसके सामने सड़कके किनारे पानीका नल लगा हुआ है। दूसरी धर्मशाला श्रीरामेश्वरजीके मन्दिरसे कुछ ही दूरीपर शीलाल अरीरचन्द्रकी है। यह भी बहुत अच्छी है। तीसरी रायप्रह्लादुर भगवानदास बागलानी है। यह रामशरोखाको जाते समय उस रास्तेमें दाहिने हाथकी ओर है। इसमें सग प्रकारकी सुनिगाएँ हैं। इन्हींमें यात्रीलोग अपनी-अपनी सुनिगाके अनुसार टहर जाते हैं।

ऊपर कहा जा चुका है कि रामेश्वरका मन्दिर जिस टापूर है वह गन्धमादनपर्वत कहलाता है। इसके त्रियमें ऐसी कथा प्रचलित है कि यह पर्वत सेतुके गोचमें पडता था। इससे सेतुके काममें अड़चन पडती देख भगवान् रामने हनुमान्जीको इसे दानेकी आज्ञा दी। हनुमान्जीने इसे अपने पैरोंसे दगाकर सेतुसे समतल कर दिया, तब भगवान्ने सेतुकी प्रतिष्ठा करते समय इसके ऊपर एक शिवलिंग स्थापित करनेका विचार किया और हनुमान्जीको कैलाससे शिवलिङ्ग लानेकी आज्ञा दी, किन्तु हनुमान्जीके जानपर कार्यमें अधिक तिलम्ब होता देख भगवान्ने वहाँ बालुनामय शिवलिङ्गकी स्थापना कर दी और अपने धनुषकी कोटि (नोक) से प्रकटकर भगवान् रामेश्वरका अभिषेक किया। इतने-

हीमें हनुमान्जी शिवडिह लेकर लौट आये, किन्तु यहाँ पहले ही स्थापना हुई देखकर उन्हें चित्तमें कुछ गेद हुआ। तब भगवान् ने उनका लिये हुए डिहकी स्थापना श्रीरामेश्वरजीकी प्राची ओर हनुमतीश्वरके नामसे कर दी और कहा कि जो स्त्री पुरुष श्री-रामेश्वरके साथ हनुमतीश्वरपर भी गहोतरीका जठ चढ़ावें वे भय मागरसे पार हो जायेंगे।

तीर्थ विधि

गङ्गापूजन—यहाँ पहले गङ्गापूजा करना होता है। जिन यात्रियोंके पास गङ्गाजडी होती है व उसे लेकर अपने तीर्थपुरोहितके घर जाते हैं, जिनके पास नहीं होती उन्हें दक्षिणा देनेसे यहाँ गङ्गाजल मिल जाना है। यहाँके तीर्थपुजारी बड़े विद्वान् होते हैं। वे सनसे पहले यात्रियोंके मस्तकपर धारण करनेके लिये ब्रह्मभस्म लेते हैं। फिर विधिवत् पूजन कराते हैं।

रामेश्वरपूजन—पण्डेलोग पूजनका सब सामग्री बाजारसे मँगवने हैं। उसके साथ यात्रीलोग रामेश्वरपुरीके बाजारमें होकर मन्दिरके शिखरका दर्शन करने हुए चले जाने हैं। जिस समय यात्री मन्दिरके पास पहुँचते हैं उस समय भगवान् रामेश्वरकी जयगति करते हैं। इस विधाउ देवालयको देखकर उनका हृदय उत्साहसे भर जाता है। यह प्राय एक हजार फीट लम्बा, साढ़े छ सौ फीट

चौड़ा ओर सवा सौ फाट ऊँचा है। इसके प्राचीरमें चारों दिशाओंमें चार द्वार हैं। प्राचीरमें प्रवेश करनेपर मन्दिरका वानार मिलता है। उसमें शम्भु, सीपी, ब्रह्मभस्म, नारियल और तरह तरहके चित्रोंकी दूकानें हैं। मन्दिरकी परिक्रमामें श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, महादेवजी, गणेशजी और महात्मारजी आदिक दर्शन होते हैं। जहाँ तहाँ रामोंसे लगे हुए अनेको राजा महाराजाओंके चित्र हैं, जिन्हें देखनेसे ऐसा जान पड़ता है मानो वे उस मन्दिरका भार उठाये हुए हैं।

परिक्रमाकी सड़क काफी चौड़ी है। इस प्रकार कई परिक्रमाएँ करके यात्री श्रीरामेश्वरजीके जगमोहनके समीप पहुँच जाते हैं। यहाँ एक ओर मोटे-मोटे सीरुचोंसे घिरे हुए दरवाजेपर सङ्गीनी पट्टा लगा है। पूछनेपर मालूम हुआ कि यह शिवजीका राजाना है। इसका प्रवेश गर्भमण्डलके हाथमें है। यहाँ एक परीक्षा-गृह भी है जिसमें ब्राह्मण यात्रियोंकी परीक्षा होती है। मन्दिरके जगमोहनमें जाकर तो चारों वर्ण भगवान्के दर्शन कर सकते हैं, किन्तु ब्राह्मणोंको यदि वे साक्षर हों और सन्ध्याके मन्त्र तथा गायत्रीका शुद्ध उच्चारण कर सकते हों तो दूसरे दरतक जानेके लिये एक टिकिट मिलता है जिसको देखकर मन्दिरका पुजारी उन्हें यहाँतक जानेकी आज्ञा दे देता है। भगवान् रामेश्वर तीसरे दरमे हैं। उस साक्षर ब्राह्मणके साथ उसके घरकी देवियाँ भी जा सकती हैं। इसी जगह, जो लोग श्रीरामेश्वरजीपर चढ़ानेके लिये गङ्गाजल लाते हैं, वे उसे एक टिकिटके सहित पुजारीको दे देते हैं और पुजारीजी उनके सामने ही उसे भगवान्पर चढ़ा देते हैं।

यम प्रकार भगवान् रामेश्वरका दर्शन करके आग बढ़नेपर कीर्तिस्तम्भक पास गीगमन गगये घृह्ण्काय श्रीनदीधरक दर्शन होते हैं। आप श्रीरामेश्वरजीके टीक मामने जगमोहनके गहर विराजमान हैं आर अपनी जिह्वासे ओठोंको चाट रहे हैं। जगमाहन की कुर्मी प्राय चार फीट ऊँचा है, उसके सामने प्राय पन्द्रह फीट उम्ना आर चार फीट चौड़ा मोट मोटे सीरुचोंसे विरा हुआ एक स्थान है, उसीके बीचमें श्रीनदीधरका मूर्ति विराजमान है। मन्दिरके दाहिनी ओर जगज्जननी श्रीपार्वतीकी मन्दिर है, जिसे श्रीअन्नपूर्णाकी मन्दिर कहते हैं तथा बायीं ओर श्रीहनुमदीधरका मन्दिर है इन्हें त्रिचनयनी भी कहते हैं। इन तीनों मन्दिरोंके जगमाहनमेंसे ही दर्शन होते हैं। यात्रीओग गङ्गाजल तथा पुष्पादि अथ पूजनकी मामग्री जिये सदे रहते हैं। जिस समय रामेश्वरजीके पट खुलते हैं, उनके हर्षका कोई टिप्पाना नहीं रहता। पुजारीनी क्रमश एक-एक व्यक्तिसे गङ्गाजल लेते जाते हैं। इस प्रकार जब सब यात्रियोंका गङ्गाजल शिर्षार्पण हो जाता है तब पट बन्द कर दिये जाने हैं। इस समय भगवान्का शृङ्गार होता है। जब पट खुलते हैं तो वे उत्तम श्वेत वस्त्र, सुवर्णमय त्रिपुण्ड्र और पुण्य तथा त्रिन्वपत्रोंका हार धारण किये होते हैं। उस समय कर्पूरादिसे उनकी आरता का जाती है। भगवान्के दर्शन पाकर यात्री भोगनामकी जय बोलते हुए आनन्दमग्न हो जाते हैं। जबतक पुन पट बन्द नहीं होते तबतक दर्शकोंमें आनन्दोत्साहकी लहर-सी उठती रहती है। इसी प्रकार जब यात्रियोंका एक दल दर्शन कर चुकता है तो पट बन्द हो जाते हैं और

इसी क्रमसे दूसरा दल दर्शन करता है। इसी प्रकार रात्रिके दम बजेतक दर्शन पूजनका क्रम चलता है।

समुद्रस्नान—मंदिरके पूर्वकी ओर समुद्रपर एक घाट है। उसका नाम अग्नितीर्थ है। यहाँ समुद्रस्नान किया जाता है। यहाँपर लङ्कासे आते समय भगवान्का पुष्पक विमान उतरा था। उस जगह अबदान करनेका घटा माहात्म्य है।

रामेश्वरधामके अन्य तीर्थ

इस धाममें बहुत-से तीर्थ हैं। वे प्रायः कुण्डोंके रूपमें ही हैं। उन सभीका जल मीठा है। उनके सिवा ओर किसी कुएँका जल मीठा नहीं है। नीचे उनका संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

१-**लक्ष्मणसरोवर**—यह रामेश्वरपुरीसे प्रायः २ मील है। रास्ता अच्छा न होनेके कारण गाड़ी भाड़ा प्रायः ॥) सगरी लगता है। सरोवरमें जल अधिक है, इसके तटपर पक्का घाट और श्रीलक्ष्मणजीके स्थापित किये हुए श्रीलक्ष्मणेश्वर महादेव हैं। इस सरोवरमें स्नान तथा पिण्डदान करनेकी विधि है।

२-**रामसरोवर**—यह एक पक्का कुण्ड है। जल बहुत स्वच्छ है। किनारेपर भगवान्का मन्दिर है।

३-**सीतासरोवर**—इसका जल सूख गया है।

४-**चक्रतीर्थ**—यहाँ गाल्य मुनिने कठोर तपस्या करके श्रीविष्णुभगवान्को प्रसन्न किया था। इसमें स्नान करनेसे गङ्गा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी आदि नदियोंमें स्नान करनेका पुण्य होता है और भगवान्के चरणोंमें भक्ति बढ़ती है।

५-मङ्गलतीर्थ-इस पवित्र तार्यमें श्राद्धभीजीरा निगम है। यहाँ तीर्थत्रिभि कर्मसे उनकी प्रगन्नता एतनी है और दरिद्रता नष्ट हो जाती है।

६-अमृतमार्पातीर्थ-इस म्यानपर भगवान् राम सातानी, लक्ष्मणा तथा हनुमार्त्तिके सन्ति निगम करते हैं, इमका मेहन करनेसे निमल पाप्मी प्राप्ति होती है।

७-ब्रह्मरुण्ड-यहाँ श्राद्धाजीने बहुत-से या क्रिये हैं, इसका दूमरा नाम 'ब्रह्महत्याविमोचनीय' भी है। यहाँ तार्यत्रिभि करनेसे बड़े से बड़ा पाप नष्ट हो जाता है।

८-लक्ष्मीतीर्थ-निस समय महाराज युधिष्ठिर रननासके कारण दुःखी हो गये थे उस समय भगवान् कृष्णने द्वारकामे आकर उनको मान्यना डेते हुए यह उपदेश किया था कि तुम रामेश्वर-पुरीमें जाकर लक्ष्मीतीर्थमें ज्ञान आर तीर्थत्रिभि करो। उसके प्रभायसे तुम्हें राज्यसुख प्राप्त हागा। युधिष्ठिरने ऐसा ही किया और इसीसे वे कुरुक्षेत्रके महासमरमें विजयी हुए।

९-शुक्रतीर्थ-यह तीर्थ अह्निबुज्य ऋषिकी तपस्यासे प्रकट हुआ है। यहाँ त्रिभिस्नानादि करनेसे अङ्गहीन पुरुष भी दिव्य देह प्राप्त करत हैं।

१०-शिवतीर्थ-जब कालभरने ब्रह्माजीरा पाचरों गिर काट लिया था उस समय उस हत्याकांड दूर करनेके लिये उन्होंने शिवतार्यपर आकर स्नान किया। यहा स्नानादि करनेसे सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

११-शङ्खतीर्थ-इस तीर्थको प्रकट करनेके लिये शङ्खमुनिने सहस्रों वर्ष बढोर तप किया था और त्रिणुमगवान्मे यह वर मँगा

था कि रामेश्वरमें आकर जो यात्री इस पवित्र तीर्थमें स्नानादि करे वे माता-पिताके निरादर-नसे पापोंसे भी मुक्त हो जायें ।

१२—साध्यामृततीर्थ—इस पुनीत तीर्थमें स्नानादि करनेसे सूर्य जैसे अधकारको और इन्द्रका वज्र जेमे दैत्योंको नष्ट कर देता है उसी प्रकार सारे पाप नष्ट हो जाते हैं ।

१३—सर्वतीर्थ—कहते हैं, यज्ञ, दान, जप, वेदपाठ, व्रत तथा भगवान् विष्णु और शिवका भक्तिसे जो फल प्राप्त होते हैं वे सभी इस तीर्थमें स्नान करनेसे मिल जाते हैं । मनुष्यके शरीरमें पाप तभीतर रहते हैं जबतक वह 'सर्वतार्थ' में स्नान नहीं करता ।

१४—धनुषकोटितीर्थ—नर्मदातटपर तपस्या करनेसे, भागीरथी-तटपर मरण होनेसे, कुरुक्षेत्रमें दान देनेसे जिस फलकी प्राप्ति होता है वहां फल धनुषकोटितीर्थमें स्नान करनेसे मिलता है ।

१५—पापविनाशनतीर्थ—इस तीर्थमें स्नान करनेसे ही समस्त पापोंका नाश होकर विष्णु भगवान्में भक्ति बढ़ने लगता है ।

१६—कपितीर्थ—लङ्कासे विजय प्राप्त करके जब भगवान्ने पुष्पक विमानका उतारकर रामेश्वरजीका पूजन किया तो उनका अभिप्रेरक करनेके लिये उन्होंने गङ्गाजीका आवाहन किया । उस समय उन्होंने अपने धनुषकी नोकसे गङ्गाजलको प्रकट किया था । जो यात्री गङ्गाजल नहीं ले जा सकते वे कोटितीर्थके जलसे ही भोलानाथको प्रसन्न करते हैं ।

१७—वैतालवग्दतीर्थ—इस तीर्थपर स्नान करनेसे निर्मल मनुष्य बचान् हो जाते हैं । यहाँ वैतालपरदने तप किया था आर भगवान्से

यहाँ पर माँग था कि यहाँपर जा प्राणी स्नान एवं जन्मानादि करें उनके शरीर वृद्धि हो। कहते हैं, इस जन्में पाचनशक्ति अधिक है। इसका नियमपूरा करने करनेसे प्राणा रोगमुक्त हो जाते हैं।

१८-सीताकुण्डतीर्थ—इस कुण्डमें ममी तीथाका निवास है। कदा आदि तीर्थ भी इस पुनात तार्यका सेन करते हैं। - इसी तद्गहत्या इस तीर्थमें स्नान करनेसे दूर हुई थी। इसका जीर्णाधारकी आवश्यकता है।

१९-जटातीर्थ—भगवान् ने लङ्कासे लौटकर इस तीर्थपर अपनी जटाएँ ग्योकर स्नान किया था। इसमें स्नान करनेसे गादासी आदिके स्नानका फल मिलता है।

२०-गंगा-यमुना-सरस्वतीतीर्थ—इस पवित्र तीर्थकी बड़ा महिमा है। यह रैक्य मुनिका प्रकट किया हुआ है। कहते हैं, वे पण्डित थे। जब कोई पुनीत पत्र पड़ता तो गंधमादनपर्यन्तनिशामी समस्त ऋषि मुनिगण तीर्थस्नानके लिये चले जाते थे। रैक्य मुनि अकेले ही रह जाते थे। इससे उन्होंने दृष्टी होकर राजा भगीरथकी भक्ति तपस्या करनी आरम्भ कर दी। उन्होंने प्रण किया कि जयतक गङ्गा, यमुना और सरस्वती आकर प्रकट न होंगी तबतक मैं अन-जठ ग्रहण नहीं करूँगा। इस प्रकार सहस्रों वर्ष निराहार रहकर तपस्या करनेपर गङ्गा, यमुना और सरस्वती तीनोंहीको अलग-अलग तीन धाराओंमें प्रकट होना प्रकट। इस प्रकार यह तीर्थ त्रिवेणीके समान है और इसमें स्नान करनेसे त्रिवेणीस्नानका फल प्राप्त होता है।

२१—चन्द्रतीर्थ—इसमें स्नानादि करनेसे हृदयके दाहका रोग शान्त होता है और शरीरकी कान्ति बढ़ जाती है। इसका नित्य सेवन करनेवाले भक्तको चन्द्रलोकका प्राप्ति होती है।

२२—सरस्वतीतीर्थ—यहाँ तीर्थत्रिणि करनेसे मूर्ख मनुष्य भी विद्वान् हो जाता है। इस तीर्थमें सरस्वतीदेवी लोककल्याणके लिये सदा ही निरास करती हैं।

२३—गायत्रीतीर्थ—इस तीर्थपर गायत्रीदेवीका निवास है। यहाँ प्राचीनकालसे ही भक्तजन गायत्रीका पुरश्चरण करते रहे हैं। इस स्थानपर नियमपूर्वक गायत्रीजप करनेवालेको अत्र भी गायत्री-देवीका दर्शन हो सकता है।

२४—रामझरोखा—यह पवित्र स्थान रामेश्वरपुरीसे प्राय दो मीलकी दूरीपर है। रास्ता रेतीला है। प्राय ॥), ॥) में पैलगाड़ी हो जाती है। मार्गमें पहले सुप्रीततीर्थ आता है। कहते हैं, एक बार धानरी सेनाके अत्यन्त तृपासुल होनेपर धानरराज सुप्रीतने कुपित होकर पृथ्वीपर अपनी गदा दे मारी। उससे एक जलकी धारा प्रकट हुई। वही इस समय एक छेदे-से कुण्डके रूपमें निधमान है। उससे आगे एक हनुमानजीका मन्दिर आता है। इसके सामने जो बागीचा है उसका जल बहुत ठण्डा और मीठा है। यहाँ पुजारीलोग हनुमान्जीके प्रसादरूपसे घीमें छुके हुए चने देते हैं। इसके आगे रामझरोखा है। यह बाड़के टीलेके ऊपर एक दो मञ्जिला खुला हुआ स्थान है। इसके तीन ओर समुद्र लहरा रहा है। वर्षा-ऋतुमें यहाँ बड़ा आनन्द रहता होगा। बड़ा

द्वारकास्कण्ड



श्रीरङ्गजी

श्रीरङ्गम् जानेके लिये त्रिचनापल्ली स्टेशनपर उतरना पड़ता है। यह सदरन इण्डिया रेलवेका स्टेशन है और श्रीरामेश्वरम्से १०६ मीलकी दूरीपर है। स्टेशनसे मन्दिर प्रायः दो मील है। यह जगन्नाथसिद्ध मन्दिर इतना बड़ा है कि दूरसे एक किलेके समान जान पड़ता है। उसमें भात परकोटे हैं निनमेंसे प्रत्येक इतना चौड़ा है कि एक भात सहस्रों मनुष्य परिक्रमा दे सकते हैं। परिक्रमामें हा बहुत मी दुकानें हैं, निनके कारण बड़ा अच्छा खासा बाजार ही लगा रहता है। मन्दिरके द्वारपर हाथियोंकी दो

विशाख मूर्तियाँ हैं, तथा जगमोहनके सामने प्रायः पचास फीट ऊँची गरुडजीकी मूर्ति है। गरुडजीकी इतनी बड़ी मूर्ति भारत-रूपमें सम्भवन आर कहीं नहीं होगी। इस मन्दिरमें दक्षिणात्य शिल्पकलाका बड़ा सुन्दर प्रदर्शन किया गया है। कई जगह सुवर्णका भी काम है। जगमोहनसे हा भगवान्के दर्शन होने हैं। मन्दिरके भीतर अँधेरा रहता है, इसलिये अहर्निश एक घृतका दीपक जलता रहता है उसके प्रकाशमें भगवान्के दर्शन होते हैं। भगवान् शेषशय्यापर शयन किये हुए हैं, उनके शिरपर सुवर्णका मुकुट है, चार भुजाएँ हैं, गलेमें सुवर्णका यज्ञोपवीत है, वे श्यामशरीरपर सुन्दर पीताम्बर और पुष्पहार धारण किये हैं। भगवान्की भव्य उग्रिका दर्शन करके यात्री वृत्तवृत्त्य हो जाते हैं। भगवान्के आस-पास लक्ष्मीजी तथा त्रिभोवणजी आदिकी प्रतिमाएँ भी विराजमान हैं। यहाँ प्रसादमें मिष्ठान्न तथा भगवान्के अङ्गका उत्तरा हुआ सुगन्धित चन्दन मिलता है।

भगवान्की प्रतिमा बहुत प्राचीन है। वर्तमान मन्दिरका पुनरुद्धार भगवान् रामानुजाचार्यने सन् ११३३ ई० में किया था। तबसे यह मन्दिर उन्हींकी गद्दीके अधीन है। श्रीवृन्दावन धामका रङ्गजीका मन्दिर इसी मन्दिरकी प्रतिकृति है।

इस मन्दिरसे कुछ दूरीपर श्रीजम्बुकेश्वर महादेवका मन्दिर है। यह भी सुन्दरता और विस्तारमें श्रीरङ्गजीके मन्दिरकी होड़ करता है। इसमें पाँच परिक्रमाएँ हैं। इसकी सेवाके लिये १५ गाँव लगे हुए हैं, जिनकी शार्षिक आय प्रायः दश हजार रुपया

श्रीबालाजी

श्रीबालाजीके दर्शनके लिये यात्रियोंको तिरुपट्टी स्टेशनपर उतरना होता है। काञ्चीनरम्से तिरुपट्टी जानेके लिये रेनीगुण्ठामें गाड़ी बदलनी पड़ती है। स्टेशनके पास ही कई धर्मशालाएँ हैं। यहाँमें प्रायः एक मील सुवर्णमुखी नदी है और पास ही कपिल-गंगासरोवर है, उसके पास अश्वत्थामाजीका मन्दिर है। अश्वत्थामाजी द्रोणाचार्यजीके पुत्र हैं और अभीतक जीवित माने जाते हैं। यहाँ उन्होंने तपस्या की है। तीर्थपुजारियोंका कथन है कि भारतवर्षमें अश्वत्थामाजीका केवल यही एक मन्दिर है।

इसके पश्चात् बालाजी जानेके लिये यात्रियोंको बैकट्टाचल पर्वतपर चढ़ना होता है। यह पर्वत समुद्रके धरातलसे प्रायः पचीस सौ फीट ऊँचा है। जो चढ़नेमें असमर्थ हैं उनके लिये नीचे डोली मिल जाती है। पर्वतके ऊपर कुछ दूर चढ़ चुकनेपर स्वर्गेश्वर आता है। यहाँसे ऊपरको सीधी सीढ़ियाँ जाती हैं।

यहाँ बहुत से यात्री सीढ़ियोंपर अपना नाम गुदवाते हैं। चढाईकी जगह विश्राम करनेके लिये जगह बनी हुई है जहाँ जलपानके लिये कुछ फल आदि भी मिल जाते हैं और जलके कुण्ड भी हैं। यात्री उठते-बैठते पर्जनपर पहुँच जाते हैं। यहाँ एक मैदान है और एक धर्मशाला भी बनी हुई है। इस स्थानपर पहुँचकर यात्री कुछ देर आराम करते हैं और फिर सरोवरमें स्नान कर देवाधिदेव श्रीबालाजीके दर्शन करते हैं।

भगवान्का मन्दिर अच्छा विशाल है। तीन परकोटोंसे घिरा हुआ है। बीचमें गुम्बजदार मन्दिर है, जिसके द्वारपर जय और विजयकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरमें अहर्निश घृतका दीपक जलता रहता है, उसके प्रकाशमें चतुर्भुजमूर्ति भगवान् त्रिष्णुके रूपमें श्रीबालाजीकी झोंकी होनी है। मन्दिरके निवाड़, चौखट चाँदी-सोनेके पत्तोंसे मढ़े हुए हैं। यहाँ नित्य सैकड़ों यात्री दर्शनार्थ आते हैं, विशेष पत्नोंपर तो सहस्रोंकी भीड़ हो जाती है। मन्दिरके निरुद्ध स्वामिपुष्करिणी नामका सरोवर है जिसमें चारों ओर मीढ़ियाँ बनी हुई हैं। सरोवरके पास एक मण्डप है और वाराह भगवान्के दर्शन भी हैं।

मन्दिरकी वार्षिक आय प्रायः दो लाख रुपया है और ऐसा ही खर्च भी है। सन् १८४३ ई० तक इस मन्दिरका प्रबंध गवर्नमेण्टके हाथमें था, फिर एक महत्तके हाथमें रहा और अब एक कमेटी इसका प्रबन्ध करती है। मन्दिरके पुजारी श्रीसम्प्रदायके वैष्णव हैं।

श्रीबालाजी

श्रीबालाजीके दर्शनके लिये यात्रियोंके तिरुपती स्टेशनपर उतरना होता है। काञ्चीरुत्से तिरुपती जानेके लिये रेनीगुण्ठामें गाड़ी बदलनी पड़ती है। स्टेशनके पास ही बर्ड धर्मशालाएँ हैं। यहाँसे प्राय एक मील सुवर्णमुत्ती नदी है और पास ही कपिल गंगासरोवर है, उसके पास अश्वत्थामानीका मन्दिर है। अश्वत्थामाजी द्रोणाचार्यजीके पुत्र हैं और अभीतक जीवित माने जाते हैं। यहाँ उन्होंने तपस्या की है। तीर्थपुजारियोंका कथन है कि भारतवर्षमें अश्वत्थामानीका केवल यहाँ एक मन्दिर है।

इसके पश्चात् वागनी जानेके लिये यात्रियोंको वैकुण्ठाचल पर्वतपर चढ़ना होता है। यह पर्वत समुद्रके धरातलसे प्राय पच्चीस सौ फीट ऊँचा है। जो चढ़नेमें असमर्थ हैं उनके लिये नीचे डोग मिल जाती है। पर्वतके ऊपर कुछ दूर चढ़ चुकनेपर स्वर्गद्वार आता है। यहाँसे ऊपरको सीधी सीढ़ियाँ जाती हैं।

यहाँ बहुत से यात्री सीढ़ियोंपर अपना नाम खुदवाते हैं। चढ़ाईकी जगह मिश्राम करनेके लिये जगह बनी हुई है जहाँ जलपानके लिये कुछ फउ आदि भी मिल जाते हैं और जलके कुण्ड भी हैं। यात्री उठते-बठते पर्वतपर पहुँच जाते हैं। यहाँ एक मैदान है और एक धर्मशाला भी बनी हुई है। इस स्थानपर पहुँचकर यात्री कुछ देर आराम करते हैं और फिर सरोवरमें स्नान कर देवाग्निदेव श्रीगालाजीके दर्शन करते हैं।

भगवान्का मन्दिर अच्छा विशाल है। तीन परकोटोंसे घिरा हुआ है। श्रीचम्रे गुम्बजदार मन्दिर है, जिकके द्वारपर जय और विजयकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरमें अहर्निश घृतका दीपक जलता रहता है, उसके प्रकाशमें चतुर्भुजमूर्ति भगवान् विष्णुके रूपमें श्रीगालाजीकी शौंन्नी होती है। मन्दिरके किवाड, चौखट चौंदी-सोनेके पत्रोंसे मढे हुए हैं। यहाँ नित्य सैकड़ों यात्री दर्शनार्थ आते हैं, विशेष पत्रोंपर तो सहस्रोंकी भीड़ हो जाती है। मन्दिरके निम्नट स्वामिपुष्करिणी नामका मरोर है जिममें चारों ओर सीढियाँ बनी हुई हैं। सरोवरके पास एक मण्डप है और वाराह भगवान्के दर्शन भी हैं।

मन्दिरकी वार्षिक आय प्राय दो लाख रुपया है और ऐसा ही खर्च भी है। सन् १८४३ ई० तक इस मन्दिरका प्रबन्ध गवर्नमेण्टके हाथमें था, फिर एक महन्तके हाथमें रहा और अब एरु कमेटी इसका प्रबन्ध करती है। मन्दिरके पुजारी श्रीसम्प्रदायके वैष्णव हैं।

यात्रीलोग यहाँ मण्डारे भी कराने हैं और तिनके साथ नाउ प्रचे होने हैं वे उनका मुण्डन भी कराते हैं । यहाँ छहरोके त्रिये धर्मशास्त्र हैं तथा कुठ दुकानें भी हैं ।

मदिरमे प्राय तीन मौलजी दूरीपर पापनाशिनी गङ्गा है, जो पहाड़ोंके बीचमें गहती हुई इसी स्थानसे नीचेको गिरती है । फिर बालाजीजी ओर छोटनेपर आकाशगङ्गाके दर्शन होते हैं । इस पर्वतके उपर ही हाथीबाग नामके एक महात्माका स्थान है, जिहोंने यहाँ गारह वर्षतक एक प्रकारकी पत्ती खाकर तपस्या की थी । यह पहाड़ छाल परकरका ह । ऊपर जानेको जो मीठियों बनी हैं वे किही एक ही सज्जनकी बनयायी हुई बतलाया जाती हैं । पर्वतके उपर जानेमें जैमी यशान होनी ह, नीचे उतरनेमें नैसा कुठ भी कष्ट नहीं होता । नीचे आकर यात्री तीर्थगुरुको दक्षिणा देकर निदा कर देते हैं और फिर तिरुपतीसे आगेकी यात्रा आरम्भ करते हैं । तिरुपती भी अच्छा दर्शनीय स्थान ह ।

दक्षिणके तीर्थमें बालाजीका बड़ा महत्त्व ह । कहते हैं, इस तीर्थको पर्वतको गरुडजीने वैकुण्ठसे लाकर यहा स्थापित किया था । यह पर्वत शेषभगवान्का ही विग्रह हे । इस पर्वतको भगवद्विग्रह समझकर इसके उपर महाराज अम्बरीष, प्रह्लाद और भृगु आदि ऋषियोंने बहुत दिनोंतक तपस्या की थी ।

किष्किन्धा

किष्किन्धा जानेके लिये यात्रियोंको रेनीगुण्डा जकगन होकर होसपेट स्टेशनपर उतरना चाहिये। रेनीगुण्डासे होसपेट ७१ मीलकी दूरीपर है। यहाँसे किष्किन्धा ७ मील है, यहींपर वानरराज सुप्रीयसी राजधानी थी। यहाँकर जानेके लिये होसपेट स्टेशनपर बैलगाडियाँ मिल जाती हैं। किष्किन्धामें धर्मशाला या पण्डोंके स्थानपर लहरकर यात्री तुगभद्रानदीमें तीर्थनिधि करते हैं और फिर विरुपाक्ष महादेवका दर्शन करते हैं। यह मंदिर भी बहुत बड़ा है। इसके पास ही एक सुनहरी मम्म हैं।

मंदिरके पास एक सरोवर है और कुछ दूर हेमकूट नामक पर्वतके ऊपर कई देवमंदिर बने हुए हैं। तुगभद्राके निकट ही शृष्यमूक पर्वत है। यहाँ भगवान्का एक मंदिर है, जिसमें श्रीरामचन्द्रजी तथा अन्य देवी देवताओंके भी दर्शन हैं। यहाँ भगवान् बनयासी थे, इसलिये उन्हें फल-शुल ही समर्पण किये जाते हैं।

तुगभद्राको चक्रतीर्थ भी कहते हैं। उसके निकट ही सीताकुण्ड है तथा भगवान् राम, सीता और लक्ष्मणजीके चरणचिह्नोंके दर्शन हैं।

चक्रतीर्थसे प्राय तीन मील स्फटिकशिला है, जहाँ मान्यवान् पर्वतपर भगवान्ने वर्षाश्रुतमें निवास किया था। यहाँपर एक गुफामें राम, सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान्जीके दर्शन होते हैं।

किष्किन्धासे तीन मीलकी दूरीपर पम्पासरोवर है। यह दो सौ फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है। इसके निकट बहुत-से प्राचीन देवमंदिर हैं। इसीके तटपर भक्तिमता शयरीने भगवान्

रामजी पहुनाड की थी। कहते हैं, शवरी जगलमें रहा करती थी। उसकी पम्पातारनिवासी महर्षि मतगके प्रति म्भामत ही बड़ी श्रद्धा थी। उनकी कोई सेवा करनेके लिये वह सदा ही उत्सुक रहती थी। वह रात्रिके समय अज्ञातरूपसे महर्षिके आश्रमपर सूखी लकड़ियाँ पहुँचा जाती और आश्रमका चोरु बुहार जाती। जब महर्षिको उनकी इस अहैतुकी सेवामें पता लगता तो वे उसपर बहुत प्रसन्न हुए और उसे अपने आश्रममें रहनेकी आज्ञा दे दी। जिस समय महर्षि योगमार्गसे अपना शरीर त्यागने लगे तो उन्होंने शवरीको बुलाकर कहा, 'तू यहीं रहकर भगवान्का भजन कर, त्रेताके अतमें तूसे उनका दर्शन होगा।' शवरी गुरुजीकी आज्ञासे यहीं रहकर भगवद्भजन करने लगी। वह निरंतर भगवान्के पधारनेकी बाट देखती रहती थी, रोज बहुत दूरतक जाकर मार्ग बुहार आती, जिससे प्रभुके पादपद्मोंको किमी प्रकारका कष्ट न हो। अतमें उसकी साध पूरी हुई और उसने प्रभुके पादपद्मोंकी सन्निधिमें ही देहत्याग करके सद्गति लाभ की।

इसके सिवा यहाँ उस स्थानके भी दर्शन कराये जाते हैं जहाँमें भगवान्ने बालीको बाणसे मारा था तथा वानरराज सुग्रावना मधुवन भी दिखाया जाता है, जिसे सीताजीकी सुधि लेकर छोटे हुए वानरोंने उनाडा था।

यहाँ भोजनोंका सब सामान मिळ जाता है, धी अच्छा मिलता है, परन्तु फलदिका अभाव है। पद्मपुराणमें लिखा है कि भगवान् रामचन्द्रजीने फाल्गुनमासकी अष्टमी तिथिको किष्किधापुरीसे वानरी सेनाके सहित लम्बकको प्रस्थान किया था। सब सरोवरोंमें पम्पासर श्रष्ट माना गया है तथा तुगमद्रामा स्नान भी अत्यंत पुण्यप्रद है।

पञ्चवटी

पञ्चवटी गोदावरीके उद्गम स्थानके पास है। क्रिष्किगापुरीसे पञ्चवटी आनेमें रेनीगुण्ठा, धोधजकशन और मनमाडम गाड़ी बदलनी पड़ती है तथा नासिक स्टेशनपर उतरना पड़ता है। गोदावरीके बायें तटपर जो नासिक बस्ती है उसीको पञ्चवटी कहते हैं। नासिक बड़ा अच्छा शहर है। इसमें ट्रामगाड़ी भी चलती है।

यात्रीरोग धर्मशालामें ठहरकर रामघाटमें, जिसे रामगया भी कहते हैं स्नान तथा पिण्डदान करते हैं। इस स्थानपर भगवान् रामने महाराज दशरथको पिण्डदान किया था, इसीसे यह रामघाट

कहलाता है। यहाँ कड़ कुण्ड बने हैं, जिनमें गोदावरीका जल आता जाता रहता है। एक झरनेका जल गोमुखीद्वारा रामकुण्डमें गिरता है, इसे अरण्यसगम कहते हैं और इसी प्रकार एक दूसरे झरनेका जल दूसरे कुण्डमें गिरता है उसे वरुणसगम कहते हैं।

पञ्चवटीमें गोदावरीके किनारे बहुत से देवमन्दिर हैं। इनमें एक राम मन्दिर बहुत बड़ा है। पुजाराना कहना है कि इसके बनवानेमें आठ लाख रुपया लगा था। एक स्थानपर पाँच बटवृक्ष हैं, जो एक ही वृक्षकी जटाओंसे बने जान पड़ते हैं। यही मुख्य पञ्चवटी है। यहीं भगवान्ने महारानी सीता और लक्ष्मणजीके सहित निवास किया था।

पञ्चवटीतीर्थके अन्य स्थान

१-गोतमतपोवन-यहा गोतम ऋषि तपस्या करते थे। इसके पास ही वह स्थान है जहाँ श्रावणजीने शूर्पणखाके नारु कान काटे थे।

२-पञ्चतीर्थ-यहा पर्वतसे गिरती हुई गोदावरी और फण्डिकासगम हुआ है। यहा पाँच कुण्ड हैं, जो पञ्चतीर्थ कहलाते हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—(१) मुक्तयोनि, (२) अग्नियोनि, (३) त्रिष्णुयोनि, (४) ब्रह्मयोनि आर (५) रुद्रयोनि। इनमें अग्नियोनिमें जल अधिक है।

३-सप्तर्षि-आश्रम-सगमके उस पार यह पवित्र आश्रम है। यहाँ सप्तर्षियोंने तपस्या की थी।

रिपर्वतने
 तो दूरीपर
 जो प्राय
 है । उद्गम-
 शररीजीकी
 होती हुई
 चक्रतीर्थ-

गुणदायक
 । जटाआ-
 ल होनेके
 ल होनेसे

। कुम्भका
 र आता
 ।-महात्मा

पिछानसे
 ने पश्चात्
 ऐयरका

त्र्यम्बकेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग पञ्चगटीसे १८ मीलकी दूरीपर है। मोटर, तागा या बैउगाड़ीसे यात्रा की जा सकती है। मार्गका दृश्य बहुत सुन्दर है। पास ही धर्मशाळाएँ हैं। उनमें ठहरकर यात्री कुशावर्त सरोवरपर स्नानार्थ जाते हैं। इस सरोवरपर चारों ओरसे पक्की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं तथा इन्में गोदाररीका जल आता है। यहाँ तीर्थप्रियाँ की जाती हैं। इसके पास ही गंगासागर नामका एक अन्य सरोवर है। उसके तटपर भगवतीका मन्दिर है।

कुशावर्तमें स्नानादि करके यात्री त्र्यम्बकेश्वरका दर्शन करते हैं। यह मन्दिर भी बहुत ही बड़ा है। दक्षिणके अन्य मन्दिरोंके समान इसमें भी जगमोहनमेंसे ही दर्शन किये जाते हैं, केवल सध्या गायत्री जाननेवाले ब्राह्मण ही भीतर घुस सकते हैं। यह शिवलिंग अलग-अलग तान भागोंमें विभक्त सा दिखायी देता है। इसकी जलहरीमें जल भरा रहता है। इसकी गणना प्रसिद्ध द्वादश योतिर्लिंगोंमें है। भगवान् त्र्यम्बकेश्वरकी

सेवा-पूजाके लिये सहस्रों रुपया वार्षिकता आमदनी है और आश्चर्यकतानुसार गवर्नमेण्टसे भी सहायता मिलती है ।

गगाद्वार—यह गोदावरीका उद्गमस्थान है और ब्रह्मगिरिपर्वतके ऊपर है । ब्रह्मगिरिपर्वत त्र्यम्बकेन्द्रसे प्रायः पौन मीलकी दूरीपर है । ऊपर गगाद्वारतक जानेके लिये सांझियों बनाई हुई हैं जो प्रायः एक सहस्र होंगी । इन्हें बम्बईके मेठ करमजीने बनवाया है । उद्गमस्थानपर एक कुण्ड बना हुआ है उसमें गोमुखीमेंसे गोदावरीजीकी धारा गिर रही है । यही धारा रामकुण्ड, उद्गमकुण्ड होती हुई कुशावर्तमें जाती है । आगे यह अदृश्य रहती है और फिर चक्रतीर्थमें प्रकट होकर गोदावरीके नामसे विख्यात होती है ।

गोदावरीजीका जल श्रीगगाजलके समान ही पवित्र और गुणदायक माना जाता है । कहते हैं, इनका प्रादुर्भाव भी श्रीमहादेवजीकी जटाओंसे ही हुआ है । गगाका राजा भगीरथकी तपस्याका फल होनेके कारण भागीरथी कहलाती है और ये गोतमजीके तपका फल होनेसे गोतमी कही जाती है ।

नासिकका कुम्भ—प्रयागकी भाँति यहाँ भी त्रारह वर्षमें कुम्भका मेला होता है । यह महापर्व सिंहराशिके बृहस्पति होनेपर आता है । उस समय यहाँ देश-देशांतरोंके लाखों यात्री और साधु-महात्मा एकत्रित होते हैं ।

माहात्म्य—विशेषरसहितमें लिखा है कि गोदावरीस्नानमें गोहत्या और ब्रह्महत्या-जैसे पाप भी नष्ट हो जाते हैं तथा मृत्युके पश्चात् त्रिलोककी प्राप्ति होती है । कूर्मपुराणमें लिखा है कि त्र्यम्बकेन्द्रका त्रिधित् पूजन करनेसे ज्योतिषोमयज्ञका फल प्राप्त होता है ।

डाकोर

धादारराधीशजात्रा मुख्य प्रतिष्ठा डाकोरमें है । नामिकसे डाकोर पहुचानेके लिये बम्बड और आनन्द दो स्टेशनोंपर गाडी चलानी हानी है । घट्टा-से यात्रा मार्गमें बम्बडकी भी रैर चलने है । नामिकसे घन्टा ११३ मीट है । यात्रियोंके लहरनेके लिये इसमें बहुत सी धर्मशागणें और टोट्टाणि हैं । श्रीरक्ष्मीनारायण, महारक्ष्मा, कालरादेनी, मुम्बादेनी और द्वायफारीशवा मन्दिर— ये यहाँके प्रधान रराट्ट्य हैं । इनके मिया लुट्ट, चौपाटी, अजायबघर, मिस्टोरियापार्क और तुडसी-तागव भी दर्शनीय गगट है । यों तो यह मारा शहर ही देगने योग्य है, परन्तु लिन्द केगठ तीर्थदर्शनकी ही अभिगगा है उनसे लिये तो उपर्युक्त मन्दिरोंके दर्शन और समुद्रस्नान ही यहाँके आनन्द्यक कृत्य हैं ।

घन्टासे आनन्द २६६ मीट है, यहाँसे ३० मीट डाकोरकी है । डाकोरका स्टेशन ता ओटा मा ही है, परन्तु मुसाफिरखाना फाफी बडा है । यहा प्रतिरप लाखों यात्री श्रीरणओइजी महाराजके दर्शनसे अपन नेत्रोंसे कृतार्थ करनेके लिये आते हैं । स्टेशनपर ही तीर्थपुजारियोंका दल मिट जाता है, वे अपने अपने बही-खातोंमें दर्शकोंके पूर्वजोंके नाम डूँढने गगने हैं, यात्री नाम बताते बताते थक जाते हैं, आखिर उँहें किहीको अपना पुरोहित स्वीकार करना ही पडता है ।

डाकोर पहुँचकर यात्री श्रीदामोदरभजन अथवा किसी अन्य धर्मशास्त्रमें ठहर जाते हैं। दामोदरभजनमें यात्रियोंसे ५) पेशगी लेकर जमा कर लिये जाते हैं, जिससे यदि कोई टूट फूट हो जाय तो उसकी मरम्मत करा दी जाय। ये रुपये यात्रीको जाते समय लोटा दिये जाते हैं।

यहा गोमतीसरोवरमें तीर्थत्रिपि की जाती है। यह सरोवर दामोदरभजनके पास ही है। इसका जल बड़ा स्वच्छ है तथा किनारेपर महात्माओंकी कुटियाएँ हैं। इसमें स्नानादि करके चित्त बहुत प्रसन्न होता है। सरोवरके तीरपर ही लक्ष्मण महादेवका मन्दिर है। कहते हैं, इस क्षेत्रका अमली नाम भी लक्ष्मणक्षेत्र ही है। अपभ्रंश होते-होते लक्ष्मणका डाकोर हो गया है। पूर्वकालमें यहाँ एक ऋषिने तपस्या करके श्रीमहादेवजीको प्रसन्न किया था इसीसे उनके नामानुसार इस क्षेत्रका नाम लक्ष्मणक्षेत्र पड़ा।

लक्ष्मण शिवलिंग अनगढ़ है। यात्री इसका पास जाकर स्नान ही इसका पूजनादि कर सकते हैं, कोई रोक-टोक नहीं है। लक्ष्मणके पास गोमतीसरोवरके तारपर ही गंगादेवीकी विश्रान्ति है। इसमें एक तुला रक्की हुई है। कहते हैं, यहाँ भगवान् द्वारकाभीश-को गंगायात्रिके कानकी यात्रीसे तोला गया था। यह उसीका स्मारक है। इस घटनाका महाके निजामी इस प्रकार वर्णन करते हैं कि बहुत दिन हुए डाकोरमें रामदास नामक एक भक्त रहते थे। उनकी धर्मपत्नीका नाम गंगाबाई था। भक्तजीका नियम था कि वे प्रत्येक पूर्णिमाको पेदल ही श्रीद्वारकाभीशके दर्शनार्थ द्वारकाको जाया। यह नियम उनका बृद्धानस्थातक चलता रहा।


एक बार वे द्वारप्रणायकी परिक्रमा करते-करते मंदिरमें ही सो गये । मार्गके परिश्रमसे श्रांत होनेके कारण उन्हें निद्रादेनान् स्वयं ही घेर लिया । भगवद्रिच्छसे पुजारियोंकी दृष्टि भी उनपर नहा पड़ी । रात्रिमें उन्हें भगवान्ने स्वप्न देकर कहा कि यदि तुम्हारा मेरे इस विग्रहसे ही विशेष प्रेम है तो तुम मुझे डानोर ले चलो । मैं प्रत्येक पूर्णिमापर तुम्हारा यहा आनेका कष्ट सहन नहा कर सकता । मंदिरके द्वारपर बलगाड़ी खड़ी है, उसीसे मुझ ले चलो । भगवान्का यह आदेश पाकर भक्त रामदासन्ने गोमतासरोवर आनन्दनिमोह हो गया । उन्होंने भगवान्की प्रतिमाको गाड़ीमें रख कर डानोरकी राह ली । मार्गमें उन्हें इमना भी कुछ पता नहँ लगा कि कौन गाड़ी हाँक रहा है और पीछे इस चोरीका क्या परिणाम होगा ।

डानोर पहुँचकर उन्होंने मन्व वृत्तान्त गगान्को सुना दिया वन, दोनों पति पत्नी प्रभुके इस अनुग्रहसे कृतकृत्य हो गये । इन पुजारियोंने मंदिरको सूना देख इतर-उतर रोज आरम्भ की और कुछ लोग डानोर भी पहुँचे । उन्हें आया देल रामदासनीने भगवान्की प्रतिमाको गोमतासरोवरमें ठिया दिया । पुजारियोंन रामदासके घरकी खोन करक फिर सरोवरमें डूँढना आरम्भ किया और अन्तमें उन्हें वह प्रतिमा मिल गयी ।

इस रामदास ओर गगान्ने पुजारियोंके आनेके समयसे ही उपवास आरम्भ कर दिया था और यह निश्चय कर लिया था कि यदि ये लोग भगवान्को यहाँ नहीं ओड़ेंगे तो इसा प्रकार निराहार रहकर प्राण त्याग देंगे । उनक इस दृढ़ सन्न्यसे डानोरकी जनता

भी उन्हींके पक्षमें हो गयी । सब लोगोंने पुजारियोंपर जोर डाला कि रामदास भगवान्की इच्छासे ही उन्हें यहाँ लाये हैं, इसलिए आप लोगोंको हट नहीं करना चाहिये । इसपर पुजारियोंने यह प्रस्ताव रक्खा कि या तो रामदास इस प्रतिमाके बराबर सुवर्ण देकर इसे यहाँ रख दें या हमने इसके बराबर सुवर्ण लेकर इसे हमें दे दें ।

वेचारे निर्धन रामदासके पास कतना सुवर्ण कहा था ? इसलिये वे बड़े चिन्तित हुए । रातमें उन्हें भगवान्ने स्वप्न दिया कि तुम भगवान्की मालके साथ मुझे तोल देना । उतने सुवर्णसे ही मैं तुल जाऊँगा । दूसरे दिन रामदासने पुजारियोंकी शर्त स्वीकार कर ली और भगवान्को एक तराजूके पलडेमें रखकर दूसरे पलडेमें भगवान्के फानकी वाली रस्मी । इतनेसे जब पलड़ा न उठा तो उन्होंने उममें तुलसील आर रक्खा । उमके ग्यते ही धात्रीका पलड़ा नीचा हो गया और प्रतिमा ऊँचा । इससे पुजारी बहुत लज्जित और दुःखी हुए तथा उन्हें प्रतिमा डाक़ोरमें ओढ़नी पड़ी । रात्रिके समय भगवान्ने उन्हें भी स्वप्न दिया कि तुम द्वारका लौट जाओ, यहाँ चक्रतीर्थमें मेरी एक प्रतिमा है उसे पधरा दो । मैं सात मुहूर्त डाक़ोरमें रहूँगा और एक मुहूर्त द्वारकामें ।

इस प्रकार अपने भक्तकी प्रसन्नता करनेके लिये भगवान् द्वारकासे डाक़ोर पधारे थे । डाक़ोरजीका मन्दिर सन् १२१५ ई० के लगभग बना है । इसकी लागत पाँच लाख रुपया बतायी जाती है ।  पत्थरका बड़ा सुन्दर मन्दिर है । भगवान्का

शृंगार भी बडा ही मनोहर हे । आपका श्याम र्ण है, सुंदर पीताम्बर धारण किये हैं, अग प्रत्यर्गोंमें रत्नजटित मनोहर आभूषण हैं, शिरपर मणिमय मुकुट है और करकमर्गोंमें बाँसुरी सुशोभित हे । यात्रीनेग सुगन्धित पुष्पादि समर्पण करके अपनेको धन्यभाग्य समझने ह । इस मन्दिरमें भक्त रामदास और गंगाबार्गकी प्रतिमाएँ भी हैं । यहा भगवान्को मान्यन मिथ्रीका भोग लगता हे । टाकोरकी मिथ्री बहुत अच्छी होती है ।

इसीसे सटा हुआ स्वर्गधाम है । इसकी सजावटमें सहस्रा रुपया व्यय हुआ है । इसमें चित्रोंद्वारा पुण्यात्माओंको प्राप्त होनेवाले स्वर्गाय भोगोंका प्रदर्शन किया गया ह ।

टाकोरसे कपिध्वज जाते समय प्राय १८ मीठपर एक गर्म पानीका कुण्ड ह । इसमें स्नान करनेसे बहुत से रोग निवृत्त हो सकते ह । यहाँ सहस्रों यात्री प्रतिर्ग आते हैं ।

टाकोरजीमे हा द्वारकाधीशजाकी मुख्य प्रतिमा है । इसलिये द्वारका जानेवाले प्राय सभी यात्री यहाँ भी उतरते हैं । यहाँ पूर्णिमापर अत्रिक भीड रहती है, कार्तिकी पूर्णिमापर तो लाखों यात्री आते हैं । यहाँ भोजनकी सब सामग्री मिल जाती है । जलवायु भी अच्छा हे ।

श्रीडाकोरजीकी यात्राका बडा माहात्म्य है । कहते हैं, गोमतीमरोरमें स्नान तथा श्रीडकोर ओर श्रीरणजोइजीके दर्शन करनेसे मनुष्यके समस्त पाप इमी प्रकार भस्म हो जाते हैं जैसे अग्निमें डालनेसे तृण ।



सावरमती

(वेदाश्रम)

ढाकोरके बाद यात्री प्रभासक्षेत्र जाते हैं । यहीं पारस्परिक कलहसे यदुपशका विनाश हुआ था और यहा भगवान्ने भी अपने दिव्यमङ्गलविग्रहके सहित स्वधामको प्रस्थान किया था । इस क्षेत्रकी पवित्रता सर्लोकप्रसिद्ध है । यहासे यात्रियोंको श्रीद्वारकापुरीके दर्शनार्थ जाना होता है । किन्तु ढाकोरमे ही लेखरुके चित्तमें एक प्रकारका ऐसा उद्वेग हुआ कि उनने प्रभामक्षेत्रकी यात्रा स्थगित करके सावरमती जाना निश्चय कर लिया । सावरमतीमें लेखरुका गुरम्यान हे जो वेदाश्रम नामसे प्रसिद्ध है । उसकी पावनस्मृतिने इमे अपना प्रोग्राम बदलनेके लिये निश्चय कर दिया । इसलिये ढाकोरजीसे आनन्द होता हुआ सावरमती आ गया । आनन्दसे सावरमती ४६ मील है । सावरमती जानेके लिये अहमदाबाद स्टेशनपर भी उतर सकते है । म अहमदाबाद स्टेशनपर ही उतरा था । यहाँसे अहमदाबाद शहर देखना हुआ सावरमतीनदीपर

आया और यहाँ स्नानादि किया। परन्तु मेरा चित्त तो वदाश्रम की दूर्गाओं की ओर उतारना हो रहा था। इन्द्रियों के स्तनादिमें निवृत्त हो गायरमतीनदी पारकर दूधनाथ महादेवके मन्दिरपर होता हुआ वेदाश्रम का जोर चला। यह शान्ता जङ्गलों होकर जाता है। दूधनाथका मन्दिर भी बहुत पुराना है। यहाँ पुराधरण और एकान्तमेव करने का अर्थ सुभागा है। यहाँके पुनर्जायोंका फल है कि यह शिवमन्दिर स्वयं ही प्रकट हुआ है, किमीन स्थापित नहीं किया। यहाँ प्रसादमें भस्मका गोत्र मिटना है।

दूधनाथ महादेवकी पूजन कर तरह-तरहके भावोंमें इतना-उत्तमा गुरुदेवके आश्रमकी ओर चला। पूर्य श्रीमहागजनी इस नगर समारको सं० १०६९ में छोड़ चुके हैं। आन उनरी स्मृतिने इसके चित्तको श्रुत कर दिया था। इसके मानमिक नेत्रोंके सामने उनकी परमरूपमया दिव्यमूर्ति अद्वित हो रही थी। तरह तरहकी उपेक्ष-मुन करता यह वेदाश्रम पहुँचा।

आश्रमको सूना देखकर चित्तमें बड़ी व्यथा हुई। अब भी आश्रम तो ज्यों-का-त्यों था, परन्तु इसके आराध्यदेवके बिना यह इसे सूना मादम होता था। इस आश्रममें किमी प्रकारका आडम्बर नहीं है। यह एक खपरैलसे छये हुए घरके रूपमें है। आँगनमें एक अनारका वृक्ष है। सामनेकी ओर विष्णुभगवान्का मन्दिर है और दाहिनी ओर शिवमन्दिर है। दोनों मन्दिरोंके बीचमें एक जगमोहन है। मन्दिरके दाहिनी ओर वेदपाठशाळा थी। वदाध्ययन और गोसेवा ये ही विद्यार्थियोंके काम थे।

श्रीमहाराज जगमोहनमे वावम्बरपर नेठकर तपस्या क्रिया करते थे। आप बड़े कर्मकाण्डी थे। अपने जीवनमें आपने बारह ज्योतिर्लिङ्गयज्ञ और कई रिष्णुयाग किये थे। यज्ञोंके लिये उनके बर्जर आदि स्थानोंके बहुत-से सेवक आवश्यक सामग्री जुटा देते थे। सायंकालकी आरतोंके समय आप कुछ चुने हुए विचारियोंके साथ सामश्रुतियोंसे भगवान्‌का स्तवन करते थे। आप प्राय एक कौपीनमें ही रहते थे, केवल यज्ञ करते समय पीताम्बर धारण करते थे। अपने पूर्वार्थमें आप दक्षिणकी किन्नी स्टेटके दीवान रह चुके थे।

गुरुजीका जसा सरल जीवन था वैसा ही उनका उपदेश भी बड़ा सीधा-सादा होता था। आप मिथ्याके त्याग और सत्यके अनुसन्धानपर विशेष जोर देते थे। आप प्रवृत्तिप्रधानोंको परोपकार और स्वधर्मपालनका उपदेश करते थे तथा निवृत्तिपरायणोंको विवेक रेराग्यपर जोर देनेका आदेश करते थे। इस आश्रममें आकर वे सारी बातें एक-एक करके इसके सामने आने लगीं। उनकी यह अमृत-वाणी इसके हृदयमें गूँजने लगी। आज गुरुदेवकी अनुपस्थितिने इसे बहुत बेचेन कर दिया और हठात् इसके नेत्रोंसे कुछ आँसू निकल पड़े। गुरुदेवका स्वर्गगमन म० १९६९ के अगहन मासकी शु० ११ को हुआ था। उनका तैलचित्र इस समय भी श्रीपटेश्वरनाथके मन्दिरमें लगा हुआ है।

इस प्रकार चार घण्टे वेदाश्रममें विताकर तथा गुरुजीके शिष्य स्वामी श्रीपूर्णानन्दसे मिलकर इसने उनसे प्रिदा ली।

गिरनार पर्वत

डाकोरसे गिरनार पर्वतपर चढ़नेके लिये यात्री जूनागढ़ आते हैं। वेदाश्रमका प्रसङ्ग तो लेखरूपा हृदयोद्गार है। डाकोर से २६ मील साबरमती है, यहाँसे १४४ मील धांग जङ्गल है और धाङ्गासे १११ मील जतलसर एव जतलसरसे १७ मील जूनागढ़ है। इस प्रकार इन सत्र स्टेशनोंपर उतरने चढ़ते यात्री जूनागढ़ स्टेशनपर उतरते हैं। यहाँसे ९ मील गिरनार पर्वत है। जूनागढ़से ही उसका शिखर दिखायी देता है। जो यात्री पर्वतपर स्वयं नहीं चढ़ सकते उन्हें प्रायः ४) में डोली मिल सकती है। कोर्-कोर् यात्री तो एक ही दिनमें चढ़कर उतर भी आते हैं।

गिरनारपर चढ़नेके लिये चोडी चाड़ा सीढ़ियाँ हैं। बीचमें कई जगह विश्राम करनेके भी स्थान हैं। पर्वतके बीचमें जैनमन्दिरके समीप एक सुन्दर धर्मशाळा है। जो यात्री लोटकर नहीं आ सकते वे उमीमें ठहर जाते हैं। कुछ दूर चढ़नेपर गोमुखीगंगा नामका एक स्थान है। यहाँ गोमुखसे जलकी धारा गिरती है। यहाँ क' कुण्ड हैं। वदुत से यात्री उनमें स्नानादि करते हैं। इसमें आगे गोरखनाम्नीकी धूनी है। यहाँ उन्होंने तपस्या की थी। यात्री इस धूनीकी भस्म मस्तकपर चढ़ाते हैं। धूनीमें पहले एक देवोका

मन्दिर भी मिलता है। वहाँ पौमाला लगा हुआ है। इमलिये बहुत-से यात्री यहाँ शीतल जल पीकर उत्तरीमे मिश्राम करते हैं।

बीचमें जो जैनमन्दिर आता है उससे नाचेकी ओर देखनेपर और भी बहुत मे जैनमन्दिर दिखायी देते हैं। यह पर्वत जैसा हिन्दुओंका तीर्थ है वैसा ही बौद्ध ओर जैनियोंका भी है। यहाँ नेमिनायजीका एक विशाल मन्दिर है ओर उसके आस-पास और बहुत से छोटे-मोटे मन्दिर हैं।

इससे आगे पाण्डुगुफा ओर मुचुकुन्दगुफा हैं। मुचुकुन्दगुफामें हां भगवान्ने राजा मुचुकुन्दकी दृष्टिसे कालयजनको भक्त कराया था। इम जगह रामानुजस्वामीकी चरणपादुकाओंके दर्शन होते हैं। आस-पास ओर भी बहुत-सी गुफाएँ हैं। किन्तु उनके इतिहासका यहाँके पण्डोंको कोई सतोयजनक ज्ञान नहीं है।

इस प्रकार उठते-बैठते ओर दर्शन करते यात्रा श्रीदत्तात्रेयजी के पर्वतपर पहुँचते हैं। यहा दत्तभगवान्का छोटा-सा मन्दिर है। उममें उनके चरणोंके दर्शन होते हैं। भगवान् दत्तात्रेय महर्षि अत्रिके यहाँ देवी अनसूयाके गर्भसे अवतीर्ण हुए थे। इनकी गणना भगवान्के चौबीस अवतारोंमें है। इम प्रातमें इनकी उपामनाका बहुत प्रचार है। इनका ज म अगहन मासमें हुआ था। इसलिये उहाँ दिनों यहाँ यात्रियोंकी प्रियेय भीड़ रहती है।

यहासे प्राय दो सौ फीटकी ऊँचाईपर कमण्डलुनीर्थ है। श्रीदत्तभगवान् यहीं स्नान करते थे। यहाँतक पहुँचना बहुत कठिन है। यहाँ केदारनाथजी हैं ओर उनसे आगे एक स्थान है, जहाँमे

पूर्वज्ञान बढ़ाने लग मद्रनिप्राप्तिके लिये कृष्ण प्राणयाग करने थे। किन्तु अब यह प्रथा सर्वथा उन्मूलित हो गयी है। इस पर्यटन पर महाराज अत्यन्त तथा अत्यन्त परमर्षी राजाओंकी शिष्टाचार सुद्धे लगे हैं। उनकी लिये सर्वसाधारणके लिये अपरिचित है, परन्तु उनका दरनागरा त्रिपिमें अनुवाद हो गया है। इस प्रकार गिरनारका यात्रा कर यात्रा नाचे आते हैं तथा लामोखुण्ड और रेवाखुण्डमें स्नान करके तीर्थगुरुओंको दक्षिणा देते हैं। गिरनारको ही पहाड़े रत्नरूपपर्यटन कहते थे। यह श्रीरामभद्रजी आदि यादवोंका प्रधान गिरनारस्थ था।

गिरनारपर्यटनसे फिर जूनागढ़ छँटकर आगे जाना होता है। जूनागढ़ सुप्रसिद्ध भक्त श्रीनरसी मेहताका जन्मस्थान है। यहाँ आकर उनकी निदरुण भगवन्निष्ठता स्मरण हो आता है। प्रेमद्विजाने नरसी हर समय भगवद्धित्तन और भगवन्नामस्मरणमें ही तल्लीन रहते थे। वे गृहस्थ थे, ज्ञानयोगी थे, परन्तु इसकी उहे कोई चिन्ता नहीं थी। ऐसे कर्मशून्य व्यक्तियोंका घरमें निरादर रहता ही है। इसलिये उनके भादने उन्हें उनके परिवारके सहित घरसे अलग कर दिया था। परन्तु नरसीको इसको काई परवा नहीं थी। उन्होंने अपने निर्वाहके लिये कभी कोई उद्योग नहा किया। उनकी सारी आवश्यकताओंको किसी न किसी प्रकार श्रीमगन्नाही पूरा करते थे।

एक बार नरसीको किसी आवश्यक कृत्यके लिये कुछ रुपयेकी आवश्यकता थी। उमा समय द्वारकाधामको जानेवाले चार यात्री उनके पास जाये और ५००) लेकर द्वारकाके किसी सेठके नाम

हुण्डी देनेकी प्रार्थना की। उन दिनों चोरोका भय होनेके कारण रुपया लेकर यात्रा करना सम्भव नहीं था। इसलिए यात्रीलोग किमी धनी पुरुषके यहां रुपया जमा करके उससे हुण्डी डिग्रा लेते थे। ये यात्री जूनागढ़के लोगोंसे किमी सेठका पता पूछ रहे थे। कुछ धूर्तलोग नरसी मेहताकी भगवन्निश्रुतिसे जलते रहते थे और उन्हें तरह-तरहसे नीचा दिवानेका अग्रसर योजते रहते थे। उनसे जब इन यात्रियोंने किमी साहूकारका पता पूछा तो उन्होंने नरसीका नाम बना दिया। अतः उन्होंने उनके पास आकर हुण्डी देनेकी प्रार्थना की। नरसीने यह भगवत्प्रेरित सहायता समझकर रुपये ले लिये और उन्हें सामन्साहके नाम हुण्डी लिखकर दे दी।

वे यात्री हुण्डी लेकर द्वारकामें पहुँचे और वहां सेठ सामन्साहका पता लगाने लगे। परन्तु उन्हें उनका कहीं पता न लगा। उस समय भगवान्का अपने भक्तकी लज्जा रक्षनी पड़ी। वे स्वयं सामन्साह वनकर एक मुनीमके साथ आये और उस हुण्डीके रुपये भरकर हुण्डी ले ली। इसी प्रकार भगवान्ने कई बार भक्तराज नरसिंहकी लज्जा रक्खी थी। नरसिंह वर्तमान युगके प्रसिद्ध भक्त हो गये हैं। जूनागढ़के एक मन्दिरमें उनके और उनके भगवान्के दर्शन होते हैं।

जूनागढ़ अच्छी बड़ी बस्ती है। यहां प्रायः सभी आवश्यक वस्तुएँ मिल जाती हैं तथा टाउनघाना, तारघर, औषधालय और पाठशाळाएँ आदि भी हैं।

प्रभासक्षेत्र

प्रभासक्षेत्रका दूसरा नाम सोमनाथपट्टन भी है। इसका रेलवे स्टेशन बेरानल है, जो जनागढ़से ५७ मील है। स्टेशनसे बलीढाई मालके लगभग है। यहां बहुत सी धर्मशाअरें हैं, उहींमेंसे किनामें यात्री ठहर जाते हैं। प्रभासक्षेत्र भारतके प्रधान पुण्यस्थानों मेंसे है। जिस समय दक्षके शापसे चन्द्रमात्री प्रभा क्षीण हो गयी थी उस समय उसे इस क्षेत्रमें स्नान करनेसे ही पुनः प्रभा प्राप्त हुई थी। इसीसे इसका नाम प्रभासक्षेत्र पड़ा है। यहाँके प्रधान प्रधान तीर्थोंका विवरण इस प्रकार है—

१ त्रिवेणीसगम—इस स्थानपर सरस्वती, हिरण्या, इण्डु, कपिला और वृजिनी इन पाँच नदियोंका सगम हुआ है। भगवान् कृष्ण इसी स्थानसे स्वधामको सिधारे थे।

२ वाणतीर्थ—यह वह स्थान है जहा भगवान्के चरणमें जरा नामक व्याधने वाण मारा था। यदुशका त्रिधम होनेपर भगवान् इस स्थानपर अशक्त्यवृक्षके नीचे पालयी लगाये बैठे थे। उन्हें दूरसे कोई मृग समझकर जरा व्याधने वाण छोड़ा। इस वाणकी नोकमें यदुवशाशिनाशक मूसल्का बचा हुआ टुकड़ा लगा था। वह वाण भगवान्के चरणमें लगा और उसके पीछे ही भगवान् सवेह गोलोरुको पधारे, तथा अपने अपराधके कारण भयभीत हुए जरानो भी उहोंने मद्दति प्रदान की।

३ पद्मतीर्थ—यह वह स्थान है जहा वाण लगनेपर भगवान्ने अपने पादपद्मको धोया था।

४ सोमनाथ—यहाँ भगवान् सोमनाथका एक प्राचीन मन्दिर है। इसे सन् १०२४में मुहम्मद गजनवाने तोड़ा था। सोमनाथ द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक है। इस मन्दिरमें उन दिनोंमें अतुडित धनराशि थी। उसके लोभमें गजनवाने मन्दिर और मूर्तियोंको तोड़कर इसका सारा धन छुट ठिया और वह करोड़ोंकी सम्पत्ति अपनी राजधानीको ले गया, वर्तमान मन्दिर उसीका भग्नावशेष है।

इसके स्थानपर महारानी अटिल्यागईने एक नवीन मन्दिर बनानेपर उसमें सोमनाथजीको स्थापित कर दिया है। यह मन्दिर सन् १८६०के लगभग बना है। इसमें बोसों सीढ़ियाँ

पतिभीरु तीरे भगवान् रुत दर्शन होते हैं। यहाँ अर्जुनित ६७४
 तर जन्मा रहता है।

रुत विना मम धैर्यो भीरु तत्र दृष्ट मे गाँवर है, जिनके
 एत एतार गुरुद्वय है और एक देवताएँ। एक मन्त्रिणे
 भावना भी तन्वेवत्तक प्रान होने हैं तथा विना चान्तर
 प्रारद्वयगतो योगमागते शरीर त्याग या उनके भी दर्शा रहा है।

प्रगाथ त्रयो आर्य यदांगरिशाश्रया श्य नत्रोके सगो
 तारा गगा है। अने ' जिनके मंग गुरु और विना साक्षर
 गगतान् एग ध उा छानन कंठि याशरीरोंको भी उनक गते
 एक क्षणमें गए कर लिया ' फिर गाँवरोंका ना काए ही क्या है।
 यद्यपि यह प्रण प्रद्वय प्रमिद है, फिर भी यहाँ मंगेरा इगक
 उन्हेय कर रना अप्रामगिक न हागा। जिस साथ महाभारत
 युद्धम समागके समन उगत और अयागरी चारोंका नाग हा गया
 उत नराय भगवान् अवन अरातरय प्रयोग पूर्ण हुआ देवकर
 स्वधामगानका विचार किया। परन्तु उन्होंने देगा कि मेरे आभयमें
 रहकर बड़ा हुआ यह यदुवरा बहुत ममृद है, मेरे पीछे य
 मगृदि इसके उमाइका कारण हागी। इसट्रिये इनकी भी मेरे
 सामने ही समाप्ति हो जानी चाहिये।

उन दिनोंमें दुर्गागा आदि कुछ मुनिगण द्वारकाके पाम
 तरस्था कर रहे थे। एक दिन कुछ यदुवशी रात्रुमार गेन्ते
 रोत्रते उधर जा निरन्ते। श्रुतियोंको देवकर भगवान् की प्रणसे
 उन युवक रात्रुमारोंको एक श्वन्नलता सत्री। उन्होंने भगवान्

कृष्णके पुत्र साम्बका स्त्रीवेश बनाया और उसे ऋषियोंके पास ले जाकर कहने लगे, 'मुनिगण ! यह स्त्री गर्भवती है, आपलोग त्रिकालदर्शी हैं, यह आपमे पूछना चाहती है कि मेरे पुत्र होगा या पुत्रा ?' इति योगत्रयसे सत्र रहस्य जान गये और बाउकोके कपटमे कुछ क्षुब्ध होकर बोले, 'यह तुम्हारे बुल्का नाश करनेवाला एक मूसल जनेगी ।'

ऋषियोंके शापसे शत्रु बहुत भयभान हुए और उन्होंने साम्बके पेटका रख गेला तो उसमे एक लोहेका मूसल निकला । उ होने वह मूसल राजा उग्रसेनके आगे रखकर सारा हाल कह सुनाया । महाराज उग्रसेनने उसका चूरा कराकर समुद्रमें फिंरका दिया, एक टुकड़ा रह गया था उसे भी समुद्रमें ही डलवा दिया । किंतु समुद्रकी तरंगोंसे यह चूरा किनारेपर आ गया और उससे एकना नामकी घास उत्पन्न हो गयी, तथा उस मूसलखण्डको एक मछली निगल गयी, जिसे जरा नामक व्याधने जालमें फँसाया और उसे चोरनेपर जब यह लोहखण्ड निकला तो उसे उसने अपने बाणकी नोकपर लगा दिया ।

इस तरह-तरहके अपशकुनोंसे यादवोंका अतकाल उपस्थित हुआ देव भगवान् कृष्णने उन सत्रको प्रभासक्षेत्र जाकर उन अमगलोंकी शांति करनेकी सम्मति दी । भगवान् कृष्ण और बठदेवजीके सहित समस्त यादव प्रभासक्षेत्र चले आये । यहाँ एक दिन गैरेय नामकी मडिरा पीकर उभर हुए वे सब धीरे समुद्रतटपर बैठे थे । वहां बाना ही-बालोंमें उनमें परस्पर त्रिवाद होने लगा ।

वह यहाँ तक रहा कि पहले हाथापाई और फिर शस्त्राघातोंसे युद्धी नीरव था गयी। जब शरर समाप्त हो गये तो वे समुद्रतटपर उगी हुई एकटा घाम उगड़कर उमासे उड़न लगे। उस घामने तन्हारका काम किया आर उमसे बोड़ी हा देरम समस्त यादवोंका काम तमान हो गया। कन्ग भगवान् टूंग और बन्गमजी, जो इस युद्धसे अन्ग इसके दृष्टा बन बैठे थे, उच रहे। इस अन्तिम भूभारको भी निवृत्त हुआ देग उन्होंने स्वय भी महाप्रस्थानका विचार किया। श्रान्तदेवकीने योगमार्गसे शरर त्याग दिया। उनके मुगसे एक महासर्प निनत्रकर समुद्रमें घुस गया, क्योंकि ये शेषाशतार थे तथा भगवान् जरा व्याधके कारणसे विमित्त बनारर सदेह गोगेक-धामको चले गये।

यह कथा धनमद, शक्तिमद और मदिराशानके दुष्परिणामका अन्धा निन्दर्शन है। पाठकाको इसमे शिक्षा लेकर मर्दा सावधान रहनेका प्रयत्न करना चाहिये।

प्रमाम अच्छी बड़ी बस्ती है। यहाँ टाकनागा, तारधर, ओपगाल्य और अत्रशेत्रादि कई सम्थारें हैं, भोजनका भी मन् सामान मिठ जाना हे। जलवायु अच्छा है। यहाँकी बोली गुजराती है, परन्तु हिन्दी भी पाव सरलोग समथ लेते हैं। धामनपुराणमें लिखा हे कि त्रिवेणीमगममे तीथत्रिधि करके भगवान् सामनाथके दर्शन करनेसे रानसूययज्ञका फल मिळता हे आर अन्तमें कैलासमें निवास होता है।

सुदामापुरी

सुदामापुरी जानेके लिये पोरबन्दर स्टेशनपर उतरना होता है । बेराबलसे जतलसर होकर पोरबन्दर आते हैं । बेराबलसे जतलसर ६७ मील है और वहाँसे पोरबन्दर ७८ मालकी दूरापर है । पोरबन्दरके पास ही सुदामापुरी है । यहाँ पहुँचकर भक्त सुदामाकी सरलता, सतोष और भगवन्निष्ठाका चित्र सामने आने लगता है । सुदामाजीके पास पेटभर अन्नका भी प्रबंध नहीं था । त्रिभुवननाथ उद्दमीपति भगवान् कृष्ण उनके बालसखा थे, फिर भी उनसे कभी कोई सहायता लेनेको उनका मन नहीं हुआ । वे अपने तपोमय जीवनमें बहुत सन्तुष्ट थे । जब अपनी धर्मपत्नीके आग्रहमें वे द्वाारका गये तो वहाँ भी उन्होंने किसी प्रकारकी याचना नहीं की । परन्तु अकारण कृपालु दीनबधु श्रीभगवान् तो घट-घटवामी हैं, उनसे उनकी आवश्यकता और निःस्पृहता छिपी छोड़े ही थी ।

उठाने अपने दरिद्र बालमर्याका आदर्श पहनाई की । हजारों दाम दामियोंके होते हुए भी अपनी पटरानियोंके सहित स्वयं ही स्नान आर भोजनादि कराया तथा अपने स्नेहमय सरस व्यवहारसे सुदामा का निहाल कर दिया ।

भोजनादि करनेके पश्चात् जब सुदामाजीको मलयगरी शय्यापर शयन कराया गया तो स्वयं भगवान् उनकी चरणसेवा करने लगे । घरमे चलते समय ब्राह्मणीने एक सूखे चानडोंकी मोट भेटके उप दी थी । राजरानेश्वर यदुराजको यह नगण्य भेट देनी अनुचित समझकर सुदामानी उसे बड़े जननसे बगलमें दबाये हुए थे । भगवान्से यह बात केमे लीयी रह सकती थी । उन्होंने भाभीकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये एक लीन थी । मित्रसे कहा, 'भाई साहन, भाभीने हमारे लिये क्या दिया है ?' सुदामाजी मञ्जोच करने लगे परन्तु कृष्णचन्द्रने पुर्तसे उनकी बगलसे भाभीकी सोगात बटक ली और झटपट दो मुनी तटुल चला गये । तीसरी मुनी लानेको थे कि रुक्मिणानीने हाथ पकड़ लिया । इस प्रकार दो मुनी तटुलके बदले दो लोकोका ऐश्वर्य देकर भाभीको निहाल कर दिया, परन्तु भिगारी सुदामाको इसका कुछ भी पता नहीं था । दूसरे दिन सुदामाजी मित्रसे निदा होकर अपनी कुटीरको चले दिये । मार्गमें अपना नि स्पृहतासे प्रसन्न होते जाते थे और यह सोचकर भगवान् को धन्यवाद देते थे कि मैंने कृष्णसे कुछ माँगा नहीं । धीरे धीरे जब वे अपनी झोपड़ीके स्थानपर पहुँचे तो वहाँका दृश्य देखकर हकके-बकके रह गये । 'हैं ! एक ही रातमें यहाँ ये किमके मटल बन गये ? मेरी झोपड़ी कहाँ गयी ? बेचारी ब्राह्मणीका क्या हुआ ?'

इसा प्रकार वे तरह-तरहकी उधेड़-बुन कर रहे थे कि एक सर्वालङ्कारविभूषिता रमणीरत्नने बहुत-सी सखियोंके साथ आकर उनका परिउठन किया और प्रार्थना की कि भगवान् ! यह सत्र श्यामसुन्दरका कृपा है। मैं आपकी दामी हूँ। उर्हिके आदेशमे विश्वकर्माने एक रातमें ही ये सत्र महल तैयार किये हैं और हमें यह सब ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। सुदामाजीने ध्यान देकर देखा तो अपनी ग्राहणीको पहचान लिया और उसके साथ महलमें चले गये। उन्होंने अपनी धर्मपत्नीको धन तथा विषयभोगके दोष दिखाते हुए निर्लिप्तभावसे रहकर भगवान्‌का भजन करनेका ही उपदेश किया और दोनों पति-पत्नी जलकमलत्रय असङ्ग रहकर भगवान्‌का ही भजन करते रहे।

इस पुरीमें पहुँचकर इन सब बातोंकी स्मृति होने लगती है। वास्तवमें, सन्तोपके समान कोई ऐश्वर्य नहीं है और भजनानन्दके समान कोई सुख नहीं है। जिन्हें ये प्राप्त हैं वे ही भच्चे श्रीमान हैं।

इस पुरीमे सुदामाजीका सङ्गमरमरका मन्दिर है, उसमें भगवान् कृष्ण आर सुदामाजीकी प्रतिमाओंके दर्शन होते हैं। उत्सवोंपर यहा बड़ी भीड़ होती है और सुमधुर सङ्गीर्तन सुननेका सोभाग्य प्राप्त होता है। पोरबन्दरमें ही लोफत्रियात महात्मा गांधीजीका जन्म हुआ है। यहाका जलवायु अच्छा है तथा समुद्रतट होनेके कारण दृश्य भी बड़ा सुन्दर है।



या बेलगाड़ियोंसे जाना होता था । उममें कागलोंसे लुट जानेका भय रहता था तथा मार्गमें धूहर आदिके सिवा अन्य अयादार वृक्षोंका अभाव होनेके कारण यात्रियोंको कष्ट भी अधिक होता था । अब वैसी कोद असुविधा नहीं है ।

द्वारका स्टेशनसे द्वारकाधीशका मन्दिर प्राय २ मील है । यहीसे उमकी ध्वजाके दर्शन करके यात्री प्रणाम करते हैं । रेलसे जानेवाले यात्रियोंको राजकोट या जामनगरसे ही पण्डे मिल जाते हैं । द्वारका स्टेशनपर पहुँचने में अपरिचित पुरुष रहते हैं, वे किमी-न-किमी बहाने यात्रियोंका ध्यान अपना ओर आकर्षित कर लेते हैं और इमी बीचमें उनके दूसरे मापी यात्रियोंके सामानमेंसे जो कुछ हाथ लगाता है उड़ा ले जाते हैं । इसलिये यहाँ पण्डोंके सहित स्वयं भी बहुत सावधान रहना चाहिये ।

स्टेशनके पास ही रा० २० बलदेवदाम प्रसन्नलाल दुधनेगलेकी विद्यालय धर्मशाला है । इसमें पीनेको मीठा पानी है । परन्तु यहाँसे मन्दिर डेढ़ मील दूर पड़ता है, इसलिये दिनमें २-३ बार दर्शन करनेकी इच्छा रखनेवाले यात्रियोंको आने-जानेमें गाड़ी-भाड़ा अधिक खर्च करना पड़ता है । इसलिये अत्रिकाश लोग यस्तीमें ही ठहरते हैं ।

धर्मशालामें ठहर चुकनेपर पहला काम गोमतीजीमें स्नान करना है । स्नानको जाने समय मार्गमें उडोदा स्टेटकी ओरमें १=१

प्राची का कर लिया जाता है। पहले, जवनरू रेल नदी निकला भी, ५) कर था। उमका रमाद मित्र जानी है। इसके गद फिर अग किमी दिन टैम नगी दना पड़ता। गोमतीका घाट पया बना हुआ है। उमपर ऊपर गारात्री भी है। उममें तर्पणादि कराये जाते हैं। गामतीमें मठणियो अधिक है। उन्हें यात्रीलोग जाँके आटना गोणिया गिगते है।

द्वारकाधीशमन्दिर—गोमनामे थोड़ी ही दूर द्वारकाधीशका मन्दिर है। ५६ मीदियो चढ़नेपर मन्दिरका मुख्य द्वार आता है। मीदियोंपर ही मागन मिथी और पट इत्यादिकी दुकानें मजी रहती है। उनसे भगवान्के लिये भोग लेकर जीर्नन करने हुए मन्दिरमें प्रवेश करते हैं। ऊपर पहुचते ही समुद्रका दर्शन होता है। ऊँचाईसे देखनेके कारण उमका दृश्य बड़ा सुन्दर जान पड़ता है तथा उसकी गङ्गसाहट और शानलयापुमे यात्रियोंका सारा परिश्रम दूर होकर चित्त प्रमत्त हो जाता है।

मन्दिरमें प्रवेश करनेपर माणियोंकी दुकानें मिलती हैं, उनसे पुष्प तथा पुष्पहार लेकर आगे बढ़ते हैं। मामने भगवान्की अतर्नेदीका जगमोहन है। उमके बायें हाथकी ओर बलदेवजीका मन्दिर है। भगवान्के मन्त्रपर रत्नजटित मनोहर मुकुट सुशोभित है, स्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति है, हाथोंमें शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धारण लिये हैं, कानामें मन्त्राकृत कुण्डल, गलेमें त्रैजयन्तीमाला और उक्ष स्वल्पपर कौस्तुभमणि सुशोभित हैं। शरीरमें पीला शगा और जाम्ब सुशोभित है। यहाँ भगवान् राजराजेश्वर हैं। दर्शक

वृन्द तरह-तरहके स्तोत्र, पद और नामोंका कीर्तन करके अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करने उगने हैं। सर्वत्र आनन्दकी तरङ्ग-मौ फेठ जाती है। दक्षिणकी भौंति यहाँ यात्रियोंको भगवानसे दूर नहीं रहना पड़ता, पुष्पादि स्वयं ही चढ़ाये जा सकते हैं।

दर्शनके पथात् भगवान्की परिक्रमा की जाती है। परिक्रमामें कुशेश्वर महादेव, बलदेवजी, प्रद्युम्नजी, रुक्मिणी आदि आठ पटरानी, वेणीमाधवनी, लक्ष्मीनारायणजी, पुरपोत्तमजी और माता देवकीजी आदिके मन्दिर हैं। इन मन्दिरोंमेंसे किसीमें १) ओर किसीमें २) दक्षिणा देनेसे यात्री स्वयं देवपूजन कर सकता है। द्वारकाधीशजाके मन्दिरका प्रवेशशुल्क ॥) है। इस दक्षिणाकी एक रसीद मिलनी है। एक बार दक्षिणा देकर फिर रोज पूजन करनेका अधिकार मिल जाता है। कुशेश्वर महादेवके नियममें यहाँ ऐसी कथा प्रचलित है कि इन्हें श्रीगणेशभगवान्ने कुश नामक राक्षसको मारकर स्थापित किया था। माता देवकीजीका मन्दिर भगवान्के सामने है। माताजी अपने लालका भुग्य देखते नहीं अघाती, इसीलिये वे मानो सर्वदा उनके सामने रहता हैं। इस प्रकार परिक्रमसहित श्राद्धारकाधीशके दर्शनसे नेत्रोंको तृप्त करके यात्री अपने निवासस्थानपर लौट आते हैं। इस मन्दिरकी ऊँचाई १४० फीट है, अच्छा लम्बा-चौड़ा जगमोहन है और सब ओर सङ्गमरमरका पर्श है।

द्वारकाधीशके मन्दिर और गोमतीसरोवरके नियममें यहाँ एक कथा प्रचलित है, उसे यहाँ दे देना अप्रासङ्गिक न होगा। कहते हैं, जिस समय समस्त यदुगणका नाश हो गया ओर वच्चे हुए खी

ए वचोंको अजुन हस्तिनापुर ले गये तो भगवान्की इच्छासे सूनी हुई उस सुवर्णपुरीका समुद्रने अपनी गादमें छान कर लिया । वहाँ यादगोके सुवर्णमय महल और मनोहर उद्यान थे, उस स्थानपर रत्नाकरकी उत्ताल तरङ्गे खेलने लगी तथा उस सुवर्णपुरीका कोड भी चिह्न अपशिष्ट न रहा ।

यह देखकर पितामह ब्रह्माजीने उस पुण्यपुरीका उद्धार करनेकी कामनासे समुद्रतटपर तप करना आरम्भ किया । कुछ काल तप करनेपर उन्हें आकाशवाणी हुई कि चक्रवर्त्यमें मेरी प्रतिमा है । उसे निकालकर गोमतीगङ्गाके जलसे अभिषेक कराकर समुद्रतटपर स्थापित कर दो । उसमें मैं रहूँगा । तब ब्रह्माजीने चक्रवर्त्यसे प्रतिमा निकाटकर गोमतीजीका आग्रहण किया । जब वे प्रकट हुईं तो उनका जलसे अभिषेक कराकर ब्रह्माजीने उस मूर्तिकी विधिरत प्रतिष्ठा की । उस समय विश्वकर्माने एक रातमें ही उसके लिये एक दिव्य मन्दिर तैयार कर दिया । इस प्रकार यह द्वारकाधीशजीकी प्रतिमा श्रीब्रह्माजीकी स्थापित की हुई है ।

गोमतीजीकी विश्रान्ति—गोमतीजीकी विश्रान्ति धनुषाकर है । यह समुद्रतक चली गयी है । इसमें समुद्रका जल भी आता रहता है । इसलिये इसका जल खारी है । समुद्र दो बार दिनमें और दो बार रातमें इसे भर देता है, और समुद्रके उतरनेके साथ इसका जल भी उतर जाता है । इसके किनारे बहुत से मन्दिर और घाट बने हुए हैं । घाटोंके नाम इस प्रकार हैं—गोमना या सङ्गम-घाट, वासुदेवघाट, गङ्गाघाट, ब्रह्माघाट, पाण्डवघाट, रूपघाट और

पार्वतीघाट । इसके दक्षिणतटपर पाँच मरोर हैं, उनमें आचमनादि करनेका विशेष माहात्म्य है । यहाका दृश्य बहुत सुन्दर है ।

पुरीपरिक्रमा—पुरीकी परिक्रामे बहुत-से तीर्थ हैं । उनमें स्वर्गद्वार, त्रयपुरी, दामोदरकुण्ड, गयाकुण्ड, कृष्णलासकुण्ड और दुर्गासाकुण्ड प्रधान हैं । कृष्णलासकुण्ड यह स्थान है जहाँ भगवान्ने कृष्णलास (गिरगिट) ने हुए राजा नृगन्ध उद्धार किया था । परिक्रामे ही मदारानी जाम्बवनाके देहत्यागके स्थान तथा नरमीकी टुण्डी मिथरनेके स्थानके भी दर्शन होते हैं । इनके सिवा सिद्धनाथ महादेव आर जय त्रिजयकी प्रतिमाएँ भी यहीं हैं ।

ध्वजारोहण—जिम समय कोई श्रीमान् यात्री भगवान्के मन्दिरपर ध्वजारोहण करता है उस समय यहाँ बड़ी चहल-पहल होती है । ध्वजामें ५० गज कपड़ा लगना है । सब यात्री मन्दिरके आम पास इकट्ठे हो जाते हैं । ब्रह्मपुरीमें तरह-तरहके भोजन तैयार किये जाते हैं । पुजारीजी मन्दिरके ऊपर चढ़कर पुरानी ध्वजा उतार देते हैं तथा नयी ध्वजा लगाकर उसे फहराने हैं । उस समय ऊपरसे एक नारियठ ओड दिया जाता है । यह महाप्रसादके रूपमें बाँटा जाता है । इसके पश्चात् ब्रह्मभोज होना है । इस कार्यमें प्राय एक महस्र रुपया लगना है ।

द्वारकानाथका पूजन—जो यात्री भगवान्का स्वयं पूजन करना चाहे वे प्रातःकाल उसमें भाग ले सकते हैं । उसमें १॥) दक्षिणा लगनी है । पूजनके समय पहुँचकर यात्री स्वयं ही खानादि

करा सकते हैं । जवनक श्रृंङ्गा और पूजन होकर आरती होती ह तवनक यहाँ रह सकते हैं । जो यात्री श्रृंङ्गा नहीं कर सकते वे ॥) दक्षिणा देकर भगवान्के चरण स्पर्श कर सकते हैं । इसके मित्रा चिनकी इच्छा हो वे शयनके समय उपस्थित रहकर भगवान्को पुष्पहार पहना सकते ह । वह पुष्पहार रानभर भगवान्के गलेमें रहता है, इसलिये जिहें इसका पना ह वे उस समय उपस्थित रहकर पुजारीको हार दे देते हैं और वे उसे भगवान्को पहना देते हैं ।

मन्दिरका सेराका प्रबन्ध बडोडा स्टेटकी ओरसे ह । यात्रियोसे भी महलों रुपया सालाना आमदनी होती है । मन्दिरकी सेराका टेरा दे लिया जाता ह । उसमें यदि कुछ कमी रहती ह तो उसे शासनकाइ बडोडा पूरा कर देने हैं । द्वारकापुरी सप्तमोक्षदायिका पुरियोमेंसे एक ह और चारों धामोंके अतर्गत भी ह । इसलिये यह बडा पवित्र स्थान माना जाता ह । गहन से श्रद्धालु भक्तजन यहाँ प्राणपरित्यागके लिये भी रहते ह । यहाँ द्वारकापीठके जगद्गुरु शङ्कराचार्यजीकी भी मदी ह । कभी कभी मन्दिरमें उनका उपवेश होता ह ।

गोपीबुण्ड

गोपीबुण्ड द्वारकाधामका एक प्रवान तीर्थ ह । यहाँ जानेके लिये मोटर लारी और रेलगाडी दोनों ही मिठ जाती हैं । एक

यात्रीके पीठे प्रायः ॥१॥ किराया पडता है। बहुत-से यात्री तो तिस दिन जाते हैं उसी दिन लट आते हैं, जिन्हें रहना हो अथवा ब्राह्मणोंको भोजन कराना हो उन्हें साधारण वस्त्र और भोजनकी सामग्री साथ ले जानी चाहिये। यदि कोर लोग गोपीकुण्डसे पालनौका-द्वारा वेदद्वारका जाना चाहें तो उनसे ही जा सकते हैं। इसमें कुछ खर्चकी किरायात हा जाती है परन्तु समुद्रम अत्रिक दूर चरना पडता है। जमी जिसकी सुविधा हो उसके अनुसार वह कर सकता है।

गोपीकुण्ड जाने समय मार्गमें जङ्गल पडता है। बीचमें नागेश्वर महादेव आते हैं। कोई-कोई इत्ते द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें प्रकलते हैं। इस त्रिस्थयमें 'नागेशो द्वारकायने' इस उचनका प्रमाण देते हैं। यह अत्यन्त निर्जन स्थान है।

नागेश्वरके दर्शन करके यात्री गोपीतालाबपर पहुँचते हैं। यह एक छोटा-सा सरोवर है, सम्भव है पहले बग रहा हो। इसके तटपर गोपीनाथजीका मन्दिर है तथा पास ही एक धर्मशाला और साधुआने लिये क्षेत्र है। यात्रीलोग तालाबमें तीर्थयात्रि करके श्रीगोपीनाथजीका दर्शन करते हैं और फिर जित उहाँ ठहरना होता है धर्मशालामें ठहर जाते हैं इस सरोवरमें पीले रंगकी रज है। इसे गोपीचन्दन कहते हैं। यह उहुत पवित्र मानी जाती है। कोई यात्री इसे तालाबसे निकालकर ले जाते हैं, वैसे इसका सूखा गोला मोल भी मिल जाता है।

है। उस मन्दिरका सेनाका प्रबंध भी बड़ोदास्टेटकी ओरसे ही है।

यह स्थान गामनाद्वारकाकी अपेक्षा अधिक रमणीय है। चारों ओर समुद्र लहरा रहा है, समुद्रका शीतल पान यात्रियोंके श्रांत शरीराम नयनीयनका संचार कर देना है तथा सायकालका सुगन्धित धूप, आरती और शम्भुनिसे उनका चित्त ध्यानन्तमें स्थिर हा जाना है। यहां एक स्थान सुवर्णकी द्वारका भी है। वह भगवान्की सुवर्णमयी द्वारकाकी नकल ही है। उसमें सत्र ठोटे बड़े घर पाए रंगके बनाये गये हैं। इसके दर्शनकी दक्षिणा एक अना है। इसकी दख रेखके लिये एक सेरक नियुक्त है, वह उसके सत्र स्थानाका मर्म समझा देता है।

पीपा भक्तकी छाप—मन्दिरके बाहर एक पीपलके वृक्षके नीचे पीपा भक्तकी छाप लगती है। बहुत से साधु-पुरुष यह छाप लगाते हैं। उनका ऐसा विश्वास है कि यह छाप लगा लेनेपर यमराजका दण्ड नहीं हो सकता, तथा सन्ततिके अभावमें पिण्डदानादि न होनेपर भी दुर्गति नहीं होती। पीपानी भगवान्के बड़े भक्त थे। उन्हें सुवर्णका द्वारकाके दर्शन होते थे। परंतु लोग उनकी बातका विश्वास न करके हँसीमें ढाल देते थे। एक दिन कुछ गिन्न होकर वे समुद्रमें कूद पड़े और कहा कि यदि

१ वैष्णवोंमें छाप लगवानकी प्रथा तो बहुत प्राचीन है। माझम नहीं यहाँ पीपाजीक नामसे ही यह क्यों प्रसिद्ध हुई। सम्भव है इसमें आलोका कथानक हा इतु हो।

हमारी बान ठीक होगी तो हम भगवान्‌का कुल चिह्न लेकर जीपिन ही बाहर आ जायेंगे । उस समय जब वे निकले तो उनकी भुजाएँ भगवान्‌के आयुध शर, चक्र, गदा, पद्मसे अंकित थीं । भगवान्‌ने उहे अपना गोदमें लेकर स्वयं अङ्कित करके यह वर दिया कि इस घटनाके कारण ही लोग तुम्हारा स्मरण करेंगे । पीपाजी-ने बाहर आकर लोगोंका अपना भुजाएँ दिग्यायीं और कहा कि जो कोई द्वारकाग्राममें ऐसी आप लगानेवेगे उन्हें मृत्युके पश्चात् यमका दर्शन नहीं होगा । तभीसे लोग आप लगाने लगे हैं । कोई-कोई पक्षी छाप न लगानकर कच्ची लगाने हैं । परन्तु यह सब अपनी अपनी श्रद्धापर अवलम्बित है । सबके त्रिय आप लगाना जरूरी नहीं है ।

शखोद्धार तीर्थ

धेठद्वारकाके पास ही शखसरोवर है । कहते हैं, यहाँ एक ऋषि तपस्या किया करते थे । उनके एक शिष्यने उनकी शख इस सरोवरमें त्रिपा लिया । जब ऋषिको योगबलसे उसकी इस चञ्चलताका पता चला तो उन्होंने उसे शाप दिया कि तू शर होकर इसी सरोवरमें रह । इसपर उसने बड़ी वरणापूर्वक मुनिसे अपराध क्षमा करनेकी प्रार्थना की । तब उन्होंने कहा, 'अच्छा, द्वापरके अन्तमें भगवान्‌का अवतार होगा, वे तेरा उद्धार कर देंगे, तबमें यह सरोवर शखोद्धार तीर्थके नामसे विख्यात होगा और जो कोई इसमें स्नान करेगा उसे गंगा, प्रभासक्षेत्र, गोदावरी और नर्मदादिके स्नानका फल प्राप्त होगा ।'

वस, वह शिष्य उसमें शय्य होकर रहने लगा । अन्तमें भगवान्ने उसका उद्धार किया और तभीसे यह मरीच शब्दोद्धारक नामसे विख्यात हुआ । इसके किनारे श्रीशखनारायणका एक मन्दिर भी है । उस तीर्थका बड़ा माहात्म्य है ।

इसके सिवा यहाँ समुद्रके किनारे श्रीमहानीरजीका एक मन्दिर है । उस स्थानकी रमणीयता देखते ही बनती है ।

बेटद्वारकाकी परिक्रमा—जो यात्री बेटद्वारकाकी परिक्रमा करना चाहते हैं वे पालनाकाम चढ़कर उसके चारों ओर घूम आते हैं । यह एक ठोठा सा टापू है । इसका रेतीमें शालग्राम और चक्रका अनगढ़ मूर्तियाँ मिलती हैं । बहुत से यात्री उनमेंसे कुछ मूर्तियाँ साथ ले आते हैं । फिर जिन्हें यहाँ रात्रिवास करना होता है वे धर्मशाठम ठहर जाते हैं, नहीं तो उसी समय नौकाद्वारा ओखापोर्ट लोटकर फिर गोमतीद्वारका आ जाते हैं । यहाँ धर्मशाठमों तीर्थगुरुकी चरणपूजा कर उन्हें दक्षिणा देकर यात्रा सुफुल्ल कराते हैं । फिर चळतीगर भगवान्के दर्शन कर उनसे विदा होकर आगेकी यात्रा आरम्भ करते हैं ।

दारजा मोक्षपुरियामसे एक पुरी ओर चार धामोंमेंसे एक धाम है । इतिथ्ये इसका बड़ा माहात्म्य है । यहांके तीर्थगुरु इसका माहात्म्य इस प्रकार सुनाते हैं—

“एक बार नैमिषारण्यमें एकप्रित हुए शानकादि अडासी महल ऋषियोंने सूतजी महाराजसे प्रश्न किया कि ससारमें ऐसी किस तीर्थकी यात्रा है जिसे करनेसे पुण्य अनायास ही पापमुक्त हो जाते हैं ?”

इसपर सूतजीने कहा कि द्वारकाकी यात्रा और वहा गोमती-
स्नान करनेके इतने फल हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता।
शास्त्राने द्वारकाको मोक्षपुरी बतलाया है। कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणके समय
स्नान करनेसे, सिहराशिके बृहस्पति होनेपर गोदानरीस्नान करनेसे,
निराहार रहकर ब्राह्मणोंको वेदाध्ययन करनेसे और भागीरथी,
कावेरा तथा नर्मदामें सर्वदा स्नान करनेसे जिन फलोंकी प्राप्ति होती
है वे सब द्वारकायात्रा करके गोमतीस्नान और द्वारकानाथके दर्शन
करनेमें मिल जाते हैं।

* पद्मपुराणमें लिखा है कि गोमतीचक्र और द्वादश शालग्रामोंका
पूजन करनेसे पुत्रप मृत्युके पश्चात् स्वर्ग प्राप्त करते हैं। जो पुरुष
द्वारकामें तीन रात्रि निवास करते हैं उनके सब पाप नष्ट हो जाते
हैं तथा जो अपने शरीरमें गोपीचन्दन लगाते हैं उनके भी बड़े-से-बड़े
पाप नष्ट हो जाते हैं। जिम् स्थानमें गोमती-द्वारकाके चक्र और
शालग्रामकी मूर्ति रहते हैं वह पवित्र हो जाता है। द्वारकामें समुद्र-
के किनारे जो पाँच कुण्ड हैं उनमें स्नान करनेसे मनुष्यका कोई पाप
नहीं बचता।

इसलिये हे मुनियो! द्वारकायात्रासे जीव निष्पाप हो जाता
है। आपलोगोंकी इच्छा हो तो द्वारकायात्रा कीजिये।

इस प्रकार संक्षेपमें यह द्वारकाका माहात्म्य है। यहाँका
जलवायु भी अच्छा है। भोजनादिकी आवश्यक सामग्री मिल जाती
है। बाज़ारवाला आदि सब हैं ही।

द्वारकाखण्ड समाप्त

बदरी-केदार-खण्ड



सिद्धपुर

द्वारकासे सिद्धपुर आनेके लिये राजकोट ओर अहमदाबादमें गाड़ी बदलनी पड़ती है । द्वारकासे राजकोट १३८ मील, राजकोटसे अहमदाबाद १५५ मील ओर अहमदाबादसे सिद्धपुर ४३ मील है । यह स्थान भगवान् कपिलदेवकी जन्मभूमि है । इसका दूसरा नाम मातृगया भी है । गयामें जैसे पितृपक्षके पूर्वजोंका श्राद्ध करनेकी विधि है उन्हीं प्रकार यहाँ मातृपक्षके पूर्वजोंका श्राद्ध किया जाता है ।

मिद्वपुर पहुँचनेसे पहले हा महोके तीर्थपुत्रा मित्र व्रते है, यदि न भी मिले तो सिद्धपुर स्टेशनपर ना अग्रही टिकने पेट हो जाती है। स्टेशनके पास ही बड़ौदा नरोगाल्पन्साग है, परन्तु वह जीर्ण-शीर्ण अवस्थामें है, इसत्रिय सर्वत्राग देहके नीचे ही ठहर जाते हैं। मिद्वपुरका प्रधान तीर्थ विदुसर है। यह बन्नासे प्राय एक मील है। कहते हैं, इसाके तपपर महर्षि मर्दाने तप किया था। उनकी तपस्यासे प्रसन्न हस्कर ब्रह्म भगवान्ने उन्हें दर्शन दिया तो उनका भक्तिभाव देखकर भगवान्के नरोमे कुछ आंसूकी पूँट इस सरोवरमें गिर गयी। उसने इमका नाम विदुसर हुआ, और यह महान् पवित्र समझा जाने लगा। इमका तटपर तीन मन्दिर हैं, जिनमें श्रीलक्ष्मीनारायण, श्रीगणेशी भगवान् और श्रीसीनारामजीके दर्शन होते हैं। इनके निर एक मन्दिरमें महर्षि कर्दम और देवहृतिजीकी प्रतिमाए, है और एक अन्य मन्दिरमें सिद्धेश्वर महादेव हैं। इनके पास ही ब्रह्मेशना नामकी एक बागकी है। विदुसर पक्का सरोवर है। इमम चणों आगेमे तपपरनी सीदिया बनी हुई हैं। इसाके तटपर श्राद्धादि तीर्थत्रिपि की जाती है। इसाके पास एक दूसरा सरोवर है, जिसका जल साईनी के कारण मिगड़ गया है। इसकी महर्षीकी आ... कुल महाभारत वनपर्वके अनुमार पाण्डयोंन भी त्रि... काल निवास किया था।

उपर कहा जा चुका है यह ग्यान महर्षि कपिलकी ज... है। उन्होंने अपनी माता देवहृतिजीस सा... ५५५

था। मानाफो उपदेश कर्के ने तो गंगासागरका चउ गये थे और देव-गिज्ञाने यहाँ अपना शरीर त्यागा था। श्यामद्रागवनमें लिखा है कि उनका वह मृतक शरीर एा जम्बतानदीके रूपमें परिणत हो गया है। अन यात्रीगेग यहाँ सरस्वतीतीमें बड़ी श्रद्धापूर्वक स्नान करते हैं। इस नदीमें एक प्रकारके मय होत हैं परन्तु वे किसीको काटते नहीं हैं।

एनके मिंग गोविन्दरायस्य मन्दिर और रङ्गमहालय भी यहाँके प्रधान भ्णान हैं। रङ्गमहालयके अत्र बैरव रागउहर ही अगशिष्ट हैं। क्रिमा समय यह श्रीमहादेवजाका एक प्रमिद्ध मन्दिर था। इसे सन् १३०० ई० में अट्टाउदीन गिज्ञाने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था।

सिद्धपुरमें और भी बहुत से देवालय हैं। स्टेशनके पास एक मन्दिरमें शेषशायी भगरान्की बड़ी दर्शनीय मूर्ति है। यह बहुत प्राचीन सिद्ध स्थान है। यहाँ तीर्थगुरुओक सहस्रो घर हैं। इस स्थानका जलनाथु अच्छा है तथा सत्र प्रकारकी आवश्यक सामग्री मिल जाती है। डारुगाना आदि भी हैं ही।

पद्मपुराणम लिखा है कि बिन्दुसरपर श्राद्ध-तर्पण करनेसे पितरोंको रुद्रलोकका प्राप्ति होनी है। जो लोग यहाँ अपने मातृपक्षाय पितरोंका श्राद्ध करते हैं वे बन्ध हैं। यह स्थान केदारतीर्थकी भाँति पवित्र माना गया है।



उज्जैन

उज्जैन सान मोक्षदा पुरियोंमेंसे एक है । यह महाकालेश्वर उज्जोतिर्लिंग है । यह पुरी क्षिप्रा नदीके तीरपर बसी हुई है । इसका प्राचीन नाम अजतिमौ है । यह बहुत प्राचीन कालसे बड़े-बड़े सम्राटोंकी राजधानी और विद्वानोंका शिक्षापीठ रही है । जगद्गुरु शकराचार्यके समय यहाँ राजा सुधया राज्य करता था । उसने वैश्विक धर्म छोड़कर जैनधर्म स्वीकार कर लिया था । उसीने इसका नाम अजतिमौसे बदलकर उज्जैन रखा । पीछे उसने भगवान् श्रीशकराचार्यकी बहुत प्रशंसा सुनकर उन्हें आदरपूर्वक बुलवाया

१ इसका सिवा शास्त्रोंमें इसके अमरावती, अवन्ती, पद्मावती, शिव पुरी और विशाल आदि नाम भी मिलते हैं ।

२ 'उज्जैन' शब्दका यौगिक अर्थ इस प्रकार होगा 'उद्भूतो जैन जैनधर्मो यत्र' अर्थात् जहाँ जैनधर्मका उत्कर्ष हो ।

था। माताका उपदेश करके वे तो गंगासागरको चले गये थे और दाहू निवान गयी अपना शरीर त्यागा था। श्रीमद्भागवतमें लिखा है कि उनका यह मृतक शरीर हा सरस्वतीनदीके तटमें परिणत हो गया है। जन यात्रीयोग यहाँ सरस्वतीनामें गड़ी श्रद्धापूर्वक स्नान करते हैं। इस नदीमें एक प्रकारके सर्प होने हैं, परन्तु वे किसीको काटते नहीं हैं।

एके सिवा गोविन्दरायका मन्दिर और रुद्रमहालय भी यहाँके प्रधान स्थान हैं। रुद्रमहालयके अब केरल खण्डहर ही अवशिष्ट हैं। किसी समय यह श्रीमहादेवजीका एक प्रसिद्ध मन्दिर था। इसे सन् १२०० ई० में अलाउद्दीन खिलजीने नष्ट-भष्ट कर दिया था।

सिद्धपुरमें और भी बहुत से देवालये हैं। स्टेशनके पास एक मन्दिरमें शेषनाथी भगवन्की बड़ी दर्शनाय मूर्ति है। यह बहुत प्राचीन सिद्ध स्थान है। यहाँ तीर्थगुरुओंके सहस्रों घर हैं। इस स्थानका जलवायु अच्छा है तथा सब प्रकारकी आवश्यक सामग्री मिल जाती है। डाकघाना आदि भी हैं हा।

पद्मपुराणमें लिखा है कि त्रिदुसरपर श्राद्ध-तर्पण करनेसे पितरोंको स्वर्लोककी प्राप्ति होती है। जो लोग यहाँ अपने मातृपक्षीय पितरोंका श्राद्ध करते हैं वे धन्य हैं। यह स्थान केदारतीर्थकी भौतिक पवित्र माना गया है।



उज्जैन

• उज्जैन सान मोक्षदा पुरियोंमेंसे एक है । यहाँ महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग है । यह पुरी क्षिप्रा नदीके तीरपर बसी हुई है । इसका प्राचीन नाम अजन्तिका है । यह बहुत प्राचीन कालसे बड़े-बड़े सम्राटोंकी राजधानी और विद्वानोंका शिक्षापीठ रही है । जगद्गुरु शंकराचार्यके समय यहाँ राजा सुधन्वा राज्य करता था । उसने वैदिक धर्म छोड़कर जैनधर्म स्वीकार कर लिया था । उसीने इसका नाम अजन्तिकासे बदलकर उज्जैन रखा । पीछे उसने भगवान् श्रीशंकराचार्यकी बहुत प्रशंसा सुनकर उन्हें आदरपूर्वक बुलवाया

१ इसक गिवा शास्त्रोंमें इसके अमरावती, अवन्ता, पद्मावती, शिव पुरी और विशाग आदि नाम भी मिलते हैं ।

२ 'उज्जैन' शब्दका यौगिक अर्थ इस प्रकार होगा 'उद्गतो जैन जैनधर्मो यत्र' अर्थात् जहाँ जैनधर्मका उत्कर्ष हो

आर अपने जैनधर्माग्रन्थी सभापण्डितोंसे उनका शास्त्रार्थ कराया । शास्त्रार्थमें आचार्यकी विजय होनेसे उसने पुन वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया और फिर उसने उस धर्मके प्रचारमें आचार्यकी महायत्ना भी प्रवृत्त की । वसी प्रकार उज्जैनके साथ महाराज विक्रमादित्य और उनके कालिदासादि नररत्नोंका भी सम्बन्ध है । अपने बड़े भाई भर्तृहरिके विरक्त हो जानेपर राजा विक्रमादित्यने अतिसाम्राज्यकी वाग्दोर सँभाली और उसका ऐसा अच्छा सुप्रबंध किया कि वे आजतक भारतके आदर्श सम्राटोंमें गिने जाते हैं । उन्हींकी स्मृतिमें विक्रमी सत्र चलाया गया है । कहाँतक कहें, अतिसापुरी भारतीय सभ्यता, साहित्य, कला, धर्म और शासन सभीका बहुत प्राचीन कालसे केन्द्र रही है । एक एक करके यहाँ कितने ही राजवंशोंका अभिकार हुआ, परंतु सभीने इसके गौरवको अभ्युष्ण रखा । हा, जत्रसे यहा मुसलमान शासकोंका पदार्पण हुआ तत्रसे इसकी यह पूर्ववर्ती स्थिर नहीं रह सकी । जो ही, आस्तिक हिन्दुओंका तो वह आज भी एक पवित्रतम तीर्थस्थान है । प्राचीन पुरी भूमध्य और क्षिप्रा नदीकी बाढ़से नष्ट हो गयी है । उसके केवल रण्डहर दिग्वासी देते हैं । अब रेठवे स्टेशनसे प्राय एक मीलकी दूरीपर नवीन ढंगसे उज्जैन नगर बसाया गया है ।

सिद्धपुरसे उज्जैन जानेके लिये अहमदाबाद, बड़ौदा और नागदामें गाड़ियाँ बदलनी पडती हैं । ये सत्र B II & C I R y के स्टेशन हैं । सिद्धपुरसे अहमदाबाद ४३ मील, अहमदाबादसे बड़ौदा ६२ मील, बड़ौदासे नागदा १६८ मील और नागदासे उज्जैन ३४ मील है ।

इसके सिवा दूसरा रास्ता अहमदाबाद, गोयरा और रतलाम होकर है। यहाँ स्टेशनके पास ही सेंप्रिया सरकारकी एक विशाल धर्मशाला है, जिनमें प्राय ३०० यात्रियोंके ठहरनेका स्थान है। दूसरा धर्मशाला क्षिप्रा नदीके रामघाटपर है और तीसरी कार्तिक चौकमें है। इनके सिवा यात्री अन्य धर्मशास्त्र अथवा पण्डोंके मकानोंमें भी ठहर सकते हैं।

धर्मशालामें ठहर जानेपर यात्रीलोग क्षिप्रा नदीमें स्नानादि तीर्थनिधि करके भगवान् महाकालेश्वरके दर्शनार्थ जाते हैं। महाकालेश्वरजीका मन्दिर पांचमखिला है। शिवगिरी नीचेके मखिलके भी नाचे है। इसके दर्शनार्थ दाखनकी बगलसे एक अँघरे रास्तेसे गुफाके भीतर जाना होता है। यहाँ घृतका अखण्ड दीपक जलता रहता है। यात्रीलोग महाकालेश्वरजीपर मेवा, मिष्ठान और विन्वपत्रादि चढ़ाते हैं तथा उनका प्रसाद भी ले जाते हैं। महाकालेश्वरजीके समीप गणेशजी और पार्वतीजीकी भी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरका सेवा-पूजाका प्रबन्ध महाराज सिप्रिया, महाराज टोन्कर तथा अय राजा और रईसोंकी ओरसे है। यहाँके पुजारी तैय्य ब्राह्मण होते हैं, जिनकी नियुक्ति सिप्रिया सरकारकी ओरसे होती है। प्रतिदिन प्रातः काल चार बने प्रातः पूजा होती है। स्नानके बाद भगवान्के चितामस लगायी जाती है। उसके पश्चात् पुष्प-पत्रादि चढ़ाकर आरती होती है। यात्रियोंको आरतीके समय शिव-दर्शन अवश्य करना चाहिये।

महाकालेश्वरजीके मन्दिरके चारों ओर सुन्दर मकान और धर्मशालाएँ हैं। मन्दिरके भीतर ही एक तालाब है, जिसे कोटितीर्थ

यहते हैं। नागर एक जोर मन्दिर है और तीन आर पात्र मयज
हैं। मन्दिरके दूसरे मण्डिर भीअश्वरेधर नामक शिवमि है।
मन्दिरके अक्षरमें एक विशाल मयन है जिसमें नरसा मनुष्य बैठ
सनी है तथा पान हा वृद्ध महाशरेश्वरका प्राचीन मन्दिर है।

यह ज्यातिर्द्विष्ट पद्मपुराणमें कौ ह्य मुएय त्रिगिणोमसे
एक है—

जाकाले तारक लिङ्ग पाताले हाटकेधम् ।

मृत्युलोके महाकाल लिङ्गत्रय नमोऽस्तु ते ॥

इसके त्रिषयमें शिवपुराणमें एमी कथा है कि उज्जैनमें एक
शिवभक्त ब्राह्मण रहता था। उसका चार पुत्र थे। वे भी अन्य
शिवभक्त थे। उहीं त्रिनों रममाडा परितपर दूषण नामक एक
दयने जम त्रिया। उसने तपस्याद्वारा भयानीरु प्रसन्न कर उनसे
घर प्राप्त किया और सगको कष्ट देने लगा। सर्वत्र जाहि-आहि मच
गयी। यह शिवभक्तानो नष्ट करता हुआ उज्जैन पहुँचा। यहाँ
उसने बहुत-से शिवभक्तानो मार डारा और अन्तमें उपर्युक्त ब्राह्मणों
के पास पहुँचकर उन्हें भी ललकारा। इस समयवे सब शिवाराधन
में तपर थे, इसलिये उन्होंने उसकी कुठ भी परवा नहीं की।
इससे दूषणका क्रोध और भी बढ़ गया, वह उन्हें नष्ट करना ही
चाहता था कि भूकम्प और भयवर शब्दके साथ पृथिवा फट गयी
और उससे श्रीमहादेवजीने महानालरूपसे प्रकट होकर उसे मार
डारा। दूषणका नाश हो जानेपर उन भक्त ब्राह्मणोंने प्रार्थना की
कि भगवन् ! आप यहीं निवास करें। आपका दर्शन करनेसे

लोगोंके जन्म मरणके ब्रह्मन नष्ट हो जायँ । आपने महाकालरूपसे दूषणका नश किया है, इसलिये भक्तजन आपको महाकालेश्वर नामसे स्मरण करें । उसी समयसे उज्जैनमें श्रीमहाकालेश्वर निराजमान हैं ।

उज्जैनके प्रधान तीर्थस्थान

हरसिद्धिदेवी—महाकालेश्वरके सामने रुद्रप्रयागतालके उस पार हरसिद्धिदेवीका मन्दिर है । ये महाराज विक्रमादित्यकी कुलदेवी थी । उनकी इनमें बहुत श्रद्धा थी । तान्त्रिकोंके मतानुसार यह सिद्धपीठ है । जिस समय त्रिष्णुभगवान्ने अपने चक्रसे सती-देवीके मृत शरीरके खण्ड किये थे उस समय इस स्थानपर उनकी एक कोहिनी गिरी थी । इनकी नवदुर्गाओंमें भी गणना है । यह मन्दिर बहुत विशाल और शिखरदार है । इसके सामने एक चौपहला दीपस्तम्भ है, जिसपर उत्सवके समय सहस्रों दीपक रखे जाते हैं ।

चौबीस स्तम्भोंका दरवाजा—यह एक बहुत प्राचीन दरवाजा है । इसमें चौबीस खम्भे हैं । लोग इसे महाराज विक्रमादित्यके किल्लेका एक भाग बतलाते हैं । इसके दोनों ओर देवमूर्तियाँ हैं और फाटकके भीतर चौबीस स्तम्भे हैं । लोग देवमूर्तियोंका पूजन करते हैं । नगरात्रमें ग्वालियर महाराजकी ओरसे यहा देवीका पूजन होता है ।

गोपालमन्दिर—यह मन्दिर ग्वालियरकी महारानी बेजाप्राईका बनवाया हुआ है । मन्दिर बहुत सुन्दर है । इसके शिखर और फर्श सगमरमरके हैं तथा चौकट और सिंहासनपर चाँदीका पत्र चढ़ा है । इसमें सदानर्त भी है ।

त्रिष्णुमन्दिर—गोपालमंदिरमे प्राय आधा मीटर दिव्य भगवान्का मन्दिर है। इसरु निकट क्षीरसागर नामरु सरोवर है। मन्दिररु भीतर क्षाराब्धिनाथ भगवान् शंभुशायीकी मूर्ति है। उनरु साथ लक्ष्मीजी और ब्रह्माजी भी हैं तगरु समीप ही राम, लक्ष्मण, जानकी और हनुमान्जारी मूर्तियाँ हैं।

मिद्वघट—यह शहरसे तीन मीठ त्रिप्रानदीके तीरपर है। नीचे पत्थरका मुठर घाट बना हुआ है, पास ही धर्मशाला है। यहां कार्तिकशुद्ध चतुर्दशको मेला लगता है। यहाँका दृश्य बड़ा मनोहर है।

श्रीनागचण्डेश्वर—ये महाकालेश्वरजीरु दागान कहे जाते हैं।

इनके सिवा और भी कई मंदिर हैं, जिनमें सूर्यनारायणजी, श्रीनाथजी और वैकुण्ठनाथजी आदि प्रधान हैं। ऊपरके वर्णनमें क्षीरसागर ओर रुद्रप्रयागनालका उल्लेख हो चुका है। उनके अतिरिक्त यहाँ पाँच ताल और हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—(१) त्रिष्णु-सागर, (२) गोवर्धनसागर, (३) पुरुषोत्तमसागर, (४) पुष्करसागर और (५) रत्नाकरसागर। ये सब मिलाकर सप्तसरोवर कहलाते हैं।

अन्य दर्शनीय स्थान

सान्दीपनि ऋषिक्रा आश्रम—यह आश्रम बस्तीमे दो मील गोमतीगंगा नामरु सरोवरके तटपर है। यहाँ सान्दीपनि मुनिका विद्यापीठ था। इसी विद्यापीठमे भगवान् वृष्ण, बलराम और उनके सखा सुदामाजीने साङ्गोपाङ्ग वेदायन किया था। इस समय यहाँ कई मंदिर हैं, उनमें सान्दीपनि मुनि और इन तीनों गुरुभ्राइयोंकी मूर्तियाँ हैं।

भर्तृहरिकी गुफा—महाराज भर्तृहरि राजा विष्णुमादित्यके ज्येष्ठ भ्राता थे। वे सस्कृतके बड़े विद्वान् और कवि थे। उन्होंने नीति, श्रृंगार और वैराग्यविषयक तीन शतकाकी रचना की है, जो सस्कृतसाहित्यके सुप्रसिद्ध ग्रन्थरत्न हैं। अन्तमें वे राज्यभोगसे विरक्त हो गये थे। इस गुफामें उन्होंने बहुत दिनों तपस्या की थी। इसीमें उनके गुरु गोरखनाथजी भी रहते थे। उनकी धूनी इस समय भी वसमें मौजूद है।

गोपीचन्दकी गुफा—इस गुफामें राजा गोपीचन्दने तपस्या की थी। लोकोक्तिके अनुसार ये राजा भर्तृहरिके भानजे थे।

गोरखनाथजीकी गुफा—गुरु गोरखनाथजी एक सुप्रसिद्ध सिद्ध महात्मा हो गये हैं। भारतमें कई जगह उनके तपस्याके स्थान हैं। यहाँ भी यह गुफा उन्हींका स्मारक है।

कालियादह महल—यह उज्जैनका अत्यन्त प्राचीन और ऐतिहासिक महल है। पुराणोंमें इसे 'ब्रह्मकुण्ड' कहा गया है। प्राचीन कालमें यह सूर्यभगवान्का मन्दिर होनेका प्रमाण मिलता है। खोज करनेसे यहाँ प्राचीन हिन्दूसंस्कृतिके बहुत-से चिह्न मिलते हैं। इस महलको माण्डनके सुल्तान नसीरुद्दीन खिलजीने एक प्राचीन स्थानको तोड़कर बनवाया था। यह क्षिप्रा नदीके तटपर बहुत ऊँचे स्थानपर बना है। इसमें क्षिप्राके जलसे भरे हुए ५२ कुण्ड हैं। इनमें क्षिप्राका जल सर्तदा इधरसे उधर कल्लोल करना आता-जाता रहता है, परतु इन कुण्डोंकी रचना ऐसी चतुराईसे की है कि जलके आगमनका भान नहीं होता। यहाँपर चक्कीके

आकारका एक जलयंत्र है। उसमें जल एक बार टायीं ओर और दूसरी बार टायीं आर प्रूमता रहता है। यह देखनेमें ऐसा मनोमोहक है कि बहुत दूरतक निरंतर देखने रहनेपर भी तृप्ति नहीं होती।

इस महलपर सम्राट् अकबर और उसका पुत्र जहाँगीर भी सुगंध थे। वे यहाँ आकर महीना गृहा करते थे। कहते हैं, इस महलमें रहनेके समय ही सम्राट् जहाँगीर उज्जैनके जङ्गलमें रहनेवाले महान् योगी जयरूपके दर्शनार्थ जाया करता था। कुछ समय बाद यह महल जीर्ण होन लगा। तत्र सन् १८८६ में ग्वालियररान्यके सेण्ट्रल इण्डिया निभागके सरसूना सर माईकेड फिलोनने इसका जीर्णास्वार कराया। उनके जानके बाद यह यों ही पड़ा रहा। फिर सन् १९२० ई० में स्वर्गीय महाराज माधवराज सिप्रियाने इसकी मरम्मत करायी है और एक सुन्दर उद्यानसे सुसज्जित करके इसकी शोभाका आर भी बढ़ा दिया है। अब तो यह स्थान स्वर्गलुन्य हो गया है। सायकालमें यहाँका शोभा बड़ी मनोहारिणी होती है। उज्जैन आनेवालोंको एक बार इस महलको अवश्य देखना चाहिये। यह उज्जैन नगरीसे ६७ मीलकी दूरीपर है।

न्यायालय—इस स्थानको महाराज विक्रमादित्यका न्यायालय बतलाया जाता है। यह जीर्ण-शीर्ण अवस्थामें है। इसकी मरम्मतकी आवश्यकता है।

उज्जैनके मेले

यहाँ हर कार्तिकी पूर्णिमाको एक बड़ा मेला लगता है। इसके अनिर्दिष्ट शिवरात्रि और वैशाखपूर्णिमाको भी मेले लगते हैं। उज्जैन-

से डेढ़ मीटर क्षिप्रा नदीके बायें तटपर भैरवगढ़ है। यहाँ उम्पेश्वर महादेव हैं। वे उज्जैनके चौरासी डिगमें ही गिने जाते हैं। वहाँ भा आषाढ़ शु० १५, वैशाख शु० १४ और कार्तिक शु० १४ को मेले लगते हैं।

उज्जैनका कुम्भ-प्रयाग और नासिककी भाँति यहा भी प्रत्येक बारहवें वर्ष जब सिंहराशिके बृहस्पति होते हैं कुम्भका मेला लगता है। यह मेला प्राय वैशाख मासके लगभग होता है। उस समय यहाँ लाखों यात्री और साधु सन्यासी एकत्रित होते हैं। उनमसे बहुत-से एक मास रहकर कल्पव्राम भी करते हैं। इस मेलेका प्रयत्न ग्वात्रियरराज्यकी ओरसे होता है। प्रयत्न अच्छा होनेपर भी कभी-कभी हेजेकी शिकायत हो जाती है। यात्रियोंको चाहिये कि ताजा आर हल्का भोजन कर तथा उमाला हुआ श्रद्धा पौरे।

शास्त्रोंमें उज्जैनकी बहुत महिमा गायी गयी है। *शिवपुराण* लिखा है कि अमृतिकापुरी पापोंको नष्ट करती है और *उज्जैन* मोक्ष प्रदान करता है। जो लोग क्षिप्रा नदीमें *स्नान* काठेश्वरके दर्शन करने हैं वे धन्य हैं।

यह बहुत प्राचीन पुरी है। उस समय *शिव* और साधु महात्माओंका एक केन्द्रस्थान है। *शिव* और साधु आश्रमोंकी अतिक्रान्त है। *आर* मिल ही जाती हैं।

ओंकारनाथ

ओंकारनाथ भारतके प्रशानतम तीर्थस्थानोंमें है। यहा द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे ओंकारेश्वर और अमलेश्वर नामक दो ज्योतिर्लिंग हैं। यहा जानेके लिये B I & C I रेलवेके मोरटक्का स्टेशनपर उतरना होता है। उजैनसे मोरटक्का ७५ माल है। बीचमें फतिहा बाद और इन्दोरके स्टेशन पड़ते हैं। मोरटक्कासे ओंकारनाथ आठ मीठके लगभग है। वहाँ छारियों या बेलगादियोंसे जा सकते हैं। स्टेशनके पास ही धमशाला है। यन्ि किसी समय सगरी न मिळे तो उसमें ठहर सकते हैं।

ओंकारेश्वरका मन्दिर ओंकार माघाता नामक गाँवमें है । यह एक पहाड़के ऊपर है । इस पहाड़ीके दक्षिणी भागमें श्री-नर्मदाजी बहती हैं । उनमेंसे ओंकारपुरीमें एक मील ऊपर कावेरी नामकी एक शाखा निकली है, जो इस पहाड़के उत्तरकी ओर बहती हुई प्रायः डेढ़ मीलपर नर्मदाजीमें ही मिल जाती है । इस प्रकार यह एक टापू-सा बन गया है । लोग इस टापूको मान्धाता नामसे पुकारते हैं । स्कन्दपुराणके नर्मदाखण्डमें लिखा है कि प्राचीन कालमें सूर्यवंशी महाराज मान्धाताने इस पहाड़ीपर तपस्या करके भगवान् शंकरको प्रसन्न किया । जब उन्होंने प्रकट होकर वर माँगनेको कहा तो महाराजने प्रार्थना की कि मुझे तो आपकी अनन्य भक्तिके सिवा और किसी वस्तुकी अभिलाषा नहीं है, किन्तु आप जीवोंके कल्याणके लिये इसी पहाड़ीपर विराजमान रहनेकी कृपा करें । तबसे वे ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंगके रूपमें यहाँ विराजते हैं ।

मान्धाता टापूका क्षेत्रफल एक बर्गमीलसे भी कम है । इसके ऊपर एक छोटा-सा गाँव है, जो शिवपुरी कहलता है । नर्मदाके दक्षिणतटपर त्रिण्यपुरी और ब्रह्मपुरी हैं । इन तीनों पुरियोंका दृश्य बड़ा ही मननाभिराम है । टापूके एक किनारे पहाड़के शिखरपर यहाँके राजाका सुन्दर महल है । बहातक जानेके लिये नर्मदाके तटसे ढाढ़ रास्ता बना हुआ है । यहाँका राजा मिलाग जातिकी है । सन् ११६५ ई० में भरतसिंह चौहानने इस पहाड़ीको टापू-भीलसे छीन लिया था । तबसे यहाँ उसके वंशधरोंका शासन है । अबतक ३० पीढ़ियाँ हो चुकी हैं । नर्मदाके दोनों तटोंके मन्दिरोंका

प्रमथ इमी रानमजके हाथमें है और यही इन मन्दिरोंका पूजामें चढा हुआ द्रव्य भी लेता है ।

नर्मदानटसे रानमहलको जो रास्ता जाता है उसके किनारे पहाड़के ढालपर श्रीओंकारेश्वरका मन्दिर है । ओंकारेश्वर और उनके आस-पासके मन्दिर पेगजाओके बनगये हुए हैं । मन्दिरका प्रधान द्वार उत्तरकी ओर है और दूसरा द्वार पश्चिमकी ओर । ओंकारेश्वरजीकी मूर्ति अनगढ़ है, मूर्तिके आस पास एक निश्चिन्त मर्यादातक हमेशा जल भरा रहता है । पुजागियोंका कथन है कि यह पाताल-गंगाका जल है । वे अनादिजालसे महादेवजीका अभियेक करती रहती हैं । मन्दिरके दूसरे भस्त्रिमें गुम्बजके नीचे श्रीमहाकाेश्वर शिखरिद्ध हैं । इस मन्दिरमें यह एक नयी बात है कि ओंकारेश्वर शिखरिद्ध गुम्बजके नीचे नहीं है । उनके पास ही पार्वतीजीकी प्रतिमा है तथा एक दूसरी कोठरीमें शुरुदेवजी और राजा माधवानकी मूर्तियाँ हैं । इस मन्दिरमें दो नलीश्वर हैं ।

ओंकारेश्वरजीके पास अहर्निश घीका टापक जलता रहता है । इनकी दिनमें तीन बार पूजा होती है और नियमित रीतिसे नित्य श्रृंगार कराया जाता है । मन्दिरके नीचे नर्मगके तटपर कोटितीर्थ नामका पक्का घाट है । यहां यात्री स्नानादि तीर्थत्रिधि करते हैं । ओंकारेश्वरके आस-पास अमिमुक्तेश्वर, त्वाटेश्वर, केदारेश्वर और गणपति आदिके मन्दिर हैं ।

परिक्रमा—टापूके भानर हा ओंकारेश्वरकी छोटी आर बड़ी दो परिक्रमाएँ हैं । छोटी परिक्रमामें पश्चिमको थोड़ी दूरपर खेडापति

हनुमान् तथा केदारेश्वरके दर्शन होते हैं। फिर कावेरीका पश्चिमी सगम मिलता है। इनके पास ही ऋणमुक्तेश्वर महादेवका मन्दिर है। वहासे फिर पूर्वकी ओर चलनेपर गौरी-सोमनाथका मन्दिर मिलता है। इसकी मूर्ति विशाल और मन्दिर पुराने ढंगका है। इससे साँ गजकी दूरीपर एक २० फीट ऊँचा स्तम्भ है। ठोटी परिनामागले यहाँसे ओंकारेश्वरकी ओर चले जाते हैं। सोमनाथगिर्गके विषयमें यहाँ यह कथा प्रसिद्ध है कि पहले यह शिवलिंग श्वेत था। इसमें देखनेगलेको अपने पूर्वजन्म और आगामी जन्मका चित्र दीप्त जाता था। एक बार इसकी सत्यताकी जाँचके लिये ओरगजेवने इसमें अपना प्रतिनिम्ब देखा। उसे उममें सूअरका रूप दिखायी दिया। इससे चिढ़कर उसने इस शिवलिंगको जलवा दिया। तत्रसे यह काला हो गया है।

बड़ी परिक्रमामें गौरी-सोमनाथसे पूर्वकी ओर थोड़ी दूरपर सिद्धेश्वरका मन्दिर है। यह यहाँके सत्र मन्दिरोंकी अपेक्षा प्राचीन और विशाल है। इसके खम्भोंमें देवताओंकी मूर्तियाँ हैं तथा फाटकपर भीमसेन और अर्जुनकी मनुष्याकार मूर्तियाँ हैं। मन्दिर कटापूर्ण है तथा हिंदू शिल्पकलाका अच्छा नमूना है। लार्ड कर्जन अपने शासनकालमें इसे देखनेके लिये खय आया था। सिद्धेश्वरसे थोड़ी दूर कावेरीके दूसरे तटपर जैनियोंका प्रसिद्ध स्थान सिद्धरकूट है। उसके पास ही श्रीपिण्डुभगवान्के चौबीस अत्रतारोंके दर्शन हैं। इससे कुछ आगे नर्मदातटपर एक खड़ी पहाड़ी है। प्राचीन समयमें लोग मुक्ति पानेके लिये इस पहाड़ी-

परने गर्भजामें कृष्ण पड़ते थे। अब सन् १८२४ ई० में यह प्रथा बन्द हो गई। यह स्नान 'शिरसाग' कहलाता है। यहाँमें पश्चिमजाना नानागीक विचारों के कारण जातिमें चकत्कार आ जाता है और बड़ा परिक्रम पूजा हो जाती है।

ओम्कारनाथके अन्य स्थान

जमनेश्वरज्यातिलिंग-गर्भजामें दक्षिणदिश में शिखरके सामने ब्रह्मपुरी है। यह एक पहाड़के ऊपर है। इसके पश्चिमकी ओर दूसरी पहाड़पर विष्णुपुरी है। इन दोनों पहाड़ोंके बीचमें जो धारा बहती है उसे कपिलधारा कहते हैं। यह एक गोमूत्राद्या नर्मजामें गिरती है। इसे कपिलाम्बुज कहते हैं। इस गोमूत्रामें कुछ लोह के चकत्कार या धीरे-धीरे शिरसि है। यह मन्दिर पषाणोंके समान बना हुआ है और बहुत सुन्दर है। यहाँ होकर मत्स्यकी ओरसे प्रायण पार्ष्णिगोत्री पूजा करते हैं। इस स्थितिमें नियमों के अनुसार पूजा है कि एक बार विष्णुदेव और शिवके चक्रमें पार्ष्णिग बनाकर पूजन करने लगा। इससे प्रसन्न होकर कुछ समय बाद शिवजा प्रकट हुए। उन्होंने विष्णुसे यथेष्ट धर्म माननेकी कहा। इसपर विष्णु तथा अन्य देवताओं ने प्रार्थना की कि भगवान् ! आप यहीं निराजनेकी कृपा कीजिये। तब यहाँ दो लिंग उत्पन्न हुए। ओम्कारस्यन्त्रसे आम्बरेश्वर और पार्ष्णिगसे अम्बेश्वर। वे ही यहाँ स्थापित किये गये हैं।

ब्रह्मेश्वर महादेव-यह मन्दिर ब्रह्मपुरीमें है। इसीके कारण यह ब्रह्मपुरी बनी जाती है।

विष्णुमगयानूका मन्दिर—यह विष्णुपुरीमें है । इसमें श्री-लक्ष्मीनारायणके दर्शन हैं ।

मार्कण्डेय शिला—यह विष्णुपुरीके पश्चिमकी ओर नर्मदाजीमें एक चट्टान है । इसपर नर्मदाजीका जल बहता रहता है । यात्रीलोग धमके पाशसे मुक्त होनेकी कामनासे इसपर लोट लगाते हैं । इसके पास ही पहाड़ीपर मार्कण्डेय ऋषिका मन्दिर है ।

कुबेरभण्डारी—ओंकारेश्वरसे डेढ़ मील पूर्व नर्मदाके दक्षिण-तटपर कावेरी नदीका सगम हुआ है । परन्तु यहा लोगोंकी ऐसी धारणा है कि उसका जल नर्मदाजीमें मिलता नहीं है । वह एक माल नीचे नर्मदाजीसे अलग होकर शिवपुरीके उत्तरकी ओर बहता हुआ ओंकारेश्वरकी परिक्रमा करके फिर उत्तरतटसे ही नर्मदामें मिलता है । लोग ऐसा भी कहते हैं कि यदि दक्षिणतटके कावेरी-सगमपर कोई पुरुष कावेरी कहकर नारियल छोड़ दे तो वह नर्मदामें न जाकर उत्तरकी धारामें ही जाता है । दक्षिणतटके कावेरीसगमपर एक शिवमन्दिर है । यह कुबेरभण्डारीका स्थान कहलाता है । कहते हैं, यहाँ कुबेरने तपस्या की थी । कुबेरजी भगवान् शंकरके प्रधान गणोंमें हैं इसलिये यह स्थान बहुत पवित्र माना जाता है ।

सप्तमात्रा—कुबेरभण्डारीसे ढाई मील पूर्व नर्मदाजीके तटपर सप्तमात्रा तीर्थ है । यहाँ बाराही, चामुण्डा, ब्रह्माणी, वैष्णवी, इन्द्राणी, कौमारी और माहेश्वरी इन सात मातृकाओंके मन्दिर हैं । यहाँका दृश्य बड़ा सुन्दर है ।

वायडीकुण्ड—मारटक्का स्टेशनसे करीब बीस मीटरकी दूरीपर यह एक प्रसिद्ध जम्प्रपात है। यह सप्तमात्राओंमें १५ मील है। सड़क कच्ची है, जगगी रास्ता है। यहाँ नर्मदातीका जल बड़ी चगानोंमें फोड़कर प्राय ५० फीटकी ऊँचाईसे गिरना है। गिरनेके स्थानमें एक कुण्ड सा बन गया है। नर्मदाके वेगके साथ जो पत्थरके खण्ड गिरते हैं वे इस कुण्डमें रगड़ लग-लगकर गोल हो जाते हैं। उन्हें गोताग्वोर निकाउते हैं, बहुत-से श्रद्धालु यात्री यहाँसे ये शिगडिंग ले जाते हैं। ये ही नर्मदेश्वर शिव कहलाते हैं। यह स्थान अवश्य देखना चाहिये। यहाँका दृश्य बड़ा ही मनोरम है।

ओंकारेश्वरकी शालोंमें बड़ी महिमा है। यहाँ राजा माधवाके सिंग बुवेरजी, मार्कण्डेयजी और शुकदेवजीने भी तपस्या की है। इसलिये यह स्थान बड़ा पवित्र हो गया है। नर्मदाजी भी भारतकी प्रधान नदियोंमें हैं। मध्य भारतमें इनका महत्त्व गंगाजीके ही समान है। ये इस पुरीकी चारों ओरसे परिक्रमा करती हैं। इससे पवित्रताके साथ इसकी शोभा भी बहुत अधिक बढ़ गयी है। बहुत से यात्री तो यहाँके मनोरम दृश्यको देखनेकी लालसासे ही आते हैं। यहाँका जलवायु भी बड़ा ही स्वास्थ्यप्रद है। भोजनादिनी आवश्यक सामग्री यहाँ सब मिल जाती है। यहाँ कई धर्मशालाएँ, पाठशालाएँ और एक अन्नक्षेत्र भी है।

नाथद्वारा

नाथद्वारेमें बल्लभसम्प्रदायकी प्रधान गद्दी है। यह स्थान उदयपुर स्टेटके अन्तर्गत है। ॐकारेश्वरसे यहा आगेके लिये मोरटक्का स्टेशनसे चित्तौड और चित्तौडसे मागली आना पड़ता है जो क्रमश २४० और ४५ मीलकी दूरीपर हैं। पहले मागलीसे ही नाथद्वारा आना होता था किन्तु अब नाथद्वारेका भी स्टेशन बन गया है। बहुत-से यात्री बीचमें चित्तौडगढ़ देखनेके लिये भी उतरते हैं। यह मध्यकालीन आर्य वीरोंका वीरताके स्मृतिचिह्नसे परिपूर्ण है। मुगलसाम्राज्यके पूर्ण अभ्युदयके समय भी केवल चित्तौडहीने अपनी स्वतन्त्रता और शुद्धताको अक्षुण्ण रखा था। इसके सिवा गुजपूत नृपनिगणको अपनी स्वतन्त्रता खोनी पड़ी थी—

यही नहीं, उनमेसे बहुतोंको अपनी कयाँ भी मुगलसम्राटोंको देनी पड़ी था। किंतु चित्तोड़ने सर्वस्व खोकर भी मुगलोंके सामने शिर नहीं झुकाया। उनके घर लूटे गये, नगर और गाँवोंमें आग लगायी गयी, एक-एक गीर केसरिया वस्त्र धारण कर युद्धक्षेत्रमें वन्दितान हो गया और उनके पीछे नगरकी सारा राजपूतरमणियोंने एक साथ ही अपनेको अग्निदेवकी मेट चढ़ा दिया, किन्तु किसीन भी मुगलको सरदारी खीकार नहीं की। जब युद्धके अन्तमें मुगलोंने किलेक भीतर प्रवेश किया तो उजड़े हुए मरान और गीर लडनाओंके दग्ध और अर्धदग्ध ककाल ही हाथ लगे। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार हुआ। ये सब घटनाएँ इस वार भूमिमें आकर मानसनेत्रोंके सामने नाचने लगती हैं। चित्तोड़के किलेके भीतर भगवती कालिका, अन्नपूर्णा और तुलजा भवानीके प्राचीन मंदिर हैं। चित्तोड़के रणजोकुरे वीर इहँके उपासक थे।

अब हम नाथद्वारेकी ओर आते हैं। यहाँ आकर यात्री धर्मशालाओंमें ठहर जाते हैं और रनासनदीमें स्नान कर श्रीनाथजीके दर्शनार्थ जाते हैं। श्रीनाथजीके मंदिरमें गिरादि नहीं है, एक विशाल महल जैसा है, केवल ध्वजासे ही मंदिर जान पड़ता है। इस भगवत्प्रासाद और इसमें रहनेवाले भगवान्के दर्शन करके यात्री आनन्दनिभोर हो जाते हैं। अन्य समस्त वेष्णवसम्प्रदायोंकी अपेक्षा उठभुज्जमें सेवा भक्तिकी प्रधानता है और वह भी इस स्थानमें परमात्माको पहुँची हुई है। भगवान् श्रीनाथजीकी जैसी सेवा होती है वैसी सम्भवत कहीं नहीं होती। इस सम्प्रदायमें बालभान्की

उपासना है । इनके भगवान्की आयु ७-८ वर्षसे अधिक नहीं है । उनकी जैसी सेवा होती है वह ममी भावुकोंके लिये अनुकरणीय है । भगवान्के भोगमें ही सैकड़ों रुपये नित्यप्रति लगते हैं । यहाँका राग-भोग सर्वत्र प्रसिद्ध है । यहाँ चकियों-मे केशर पीमी जाती है और घृतके कूप भरे रहते हैं । भगवान्को लाखों रुपयेके मणिमय आभूषण पहनाये गये हैं । दिनमें कई बार शृंगार होता है और वह भी प्रत्येक दिनका नये-नये प्रकारसे । तरह-तरहके सुवर्णमय खिलौनोंसे भगवान्को खेलाया जाता है । प्रभुकी दिव्य छत्रके दर्शन करके यात्री मन्त्रसुग्ध रह जाते हैं ।

फिर आरतीके दर्शन आर भगवच्चरणारविन्दोंमें अपनी श्रद्धास्रलि समर्पित कर वे भगवान्के अनर्पण भण्डारके दर्शन करते हैं । यहाँ तरह-तरहके व्यञ्जन तयार हुआ करते हैं । कोई-कोई यात्री उममें अपनी सेवा प्रदान कर कर्मचारियोंका हाथ बँटाने हैं । यहाँके कर्मचारियोंको वेतनरूपसे प्रसादकी कुछ निश्चित पत्तलें दी जाती हैं । वे लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक पत्तलोंको दूसरे लोगोंको बेच देते हैं । इस प्रकार जो लोग चाहें उनको बहुत थोड़े खर्चसे ही भगवान्का दिव्य प्रसाद मिल सकता है । इससे यहाँ अधिक दिन रहनेवालोंको भी खय भोजनादि बनानेका शंका नष्ट करना पड़ता ।

यता नहीं, उगमें नहुआको अपनी कृत्याएँ भी मुगलमराठोंस
 देनी पड़ी थी। किन्तु चित्तौड़के गर्भव गोरक्ष भी मुगलके सामन
 शिर नहीं झुकाया। उगरे घर लुटे गये, नगर और गाँवोंमें जाग
 लगाया गयी, एक-एक वीर केलरिया वगैरे धारण कर युद्धक्षेत्रमें
 शक्तिमान हा गया और उनके पीछे नगरकी सारी राजपूतरमणियोंने
 एक साथ ही अपने-अपने अग्निदेवकी भेंट चढ़ा दिया, किन्तु किमोन
 भी मुगलको सरदारी स्वीकार नहीं की। जब युद्धके अन्तमें
 मुगलों किञ्च भीतर प्रवेश किया तो उग्रद हए मरान और
 गार लडनाआके दग्ध और अर्धदग्ध यन्त्र ही हाप लगे। ऐसा
 एक बार नहीं, अनेक बार हुआ। य सब घटनाएँ इस वीर भूमिमें
 आकर मानमात्रोंके सामन नाचने लगती हैं। चित्तौड़के किञ्चके
 मात्र भगवती कालिका, अन्नपूर्णा और तुलजा भवानीके प्राचीन
 मंदिर हैं। चित्तौड़के रणत्रैकुरे वीर इतकि उपासक थे।

अब हम नाथद्वारेकी ओर आते हैं। यहाँ आकर यात्री
 धर्मशास्त्रोंमें टहर जाते हैं और रनामनदीमें स्नान कर श्रीनाथजीके
 दर्शनार्थ जाते हैं। श्रीनाथजीके मंदिरमें गिरादि नहीं है, एक
 विशाल महल-जैसा है, केवल राजासे ही मंदिर जान पड़ता है।
 इस भगवत्प्रासाद आर इसमें रहनेवाले भगवान्के दर्शन करके यात्री
 जान-दमिभोर हो जाते हैं। अन्य समस्त वेष्णवसम्प्रदायोंकी अपेक्षा
 चण्डभुक्तम सेवा भक्तिकी प्रधानता है और वह भी इस स्थलमें
 पराकाष्ठाने पहुँची हुई है। भगवान् श्रीनाथजीकी जैसी सेवा होती
 है वैसी सम्भवत कहा नहीं होती। इस सम्प्रदायमें बालभानकी

उपासना हे । इनके भगवान्की आयु ७-८ वर्षमे अधिक नहीं है । उनकी बेसी सेवा होनी है यह सभी भावुनोंके लिये अनुकरणीय है । भगवान्के भोगमें ही सैरुद्धो रुपये नित्यप्रति लगते हैं । यहाँका राग-भोग सर्वत्र प्रसिद्ध है । यहाँ चकियों-से केशर पीसी जाती है और घृतके कृप भरे रहते है । भगवान्को लाखों रुपयेके मणिमय आभूषण पहनाये गये हैं । दिनमें कई बार शृंगार होता है और वह भी प्रत्येक दिनका नये-नये प्रकारसे । तरह-तरहके सुवर्णमय खिलोंसे भगवान्को खेलाया जाता है । प्रभुकी दिव्य छविके दर्शन करके यात्री मन्त्रमुग्ध रह जाते हैं ।

फिर आरतीके दर्शन आर भगवद्धरणारविन्दोंमें अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर के भगवान्के अन्नपूर्ण भण्डारके दर्शन करते हैं । यहाँ तरह-तरहके व्यञ्जन तैयार हुआ करते है । कोई-कोई यात्री उसमें अपनी सेवा प्रदान कर कर्मचारियोंका हाथ बँटाते हैं । यहाँके कर्मचारियोंको वेतनरूपमे प्रसादकी कुठ निश्चित पत्त दी जाती है । वे लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक पत्तोंको दूसरे लोगोंको बेच देते हैं । इस प्रकार जो लोग चाहें उनको बहुत थोड़े खर्चसे ही भगवान्का दिव्य प्रसाद मिल सकता है । इससे यहाँ अधिक पिन रहनेवालोंको भी स्वयं भोजनादि बनानेका संकल्प नहीं करना पड़ता ।

यहाँ गहाँ, उनममे बहूतोंसे अपनी कल्पार्थ भी मुगलसम्राटोंके देनी पड़ी थी। किन्तु चित्तौड़ने सर्वश्व श्योकर भी मुगलोंके सामने शिर नहीं झुकाया। उनके घर छूटे गये, नगर और गाँवोंमें आग लगायी गयी, एक-एक वीर कमरिया बग धारण कर युद्धक्षेत्रमें वीरदान हो गया और उनक पीछे नगरकी मारी रामपूतरमणियोंने एक साथ ही अपनेसे अग्निदबसी भेट चढ़ा दिया, किन्तु किसीन भी मुगलोंसे सरदागी स्वीकार नहीं की। जब युद्धक अन्तमें मुगलोंने क़िल्के भीतर प्रवेश किया तो उनसे हुए मरगन और गीर लखनाओंके दग्ग और अर्धदग्ग कसाल ही हाथ लगे। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार हुआ। ये सब घटनाएँ इस गीर भूमिमें आकर मानमनेत्रोंके सामने नाचने लगती हैं। चित्तौड़के क़िल्के भीतर भगवती षाठिका, अत्रपूर्णा और तुलजा भगवतीक प्राचीन मंदिर हैं। चित्तौड़के रणभेदुरे वीर इहँके उपासक थे।

अब हम नायद्वारेकी ओर आते हैं। यहाँ आकर यारी धर्मशाखाओंमें टहर जाते हैं और बनासनदामें स्नान कर श्रीनाथजीके दर्शनार्थ जाने हैं। श्रीनाथजीके मंदिरमें शिखरदि नहीं है, एक त्रिशाठ महत् जैसा ठे, केरठ राजासे ही मंदिर जान पड़ता है। इस भगवत्प्रासाद और इसमें रहनेवाले भगवान्के दर्शन करके यारी जान दरिभोर हो जाते हैं। अन्य समस्त वैष्णवसम्प्रदायोंकी अपेक्षा बलभद्रुमें सेवा भक्तिकी प्रगणता हे ओर वह भी इस स्थानमें परानाष्ठामो पहुँची हुई है। भगवान् श्रीनाथजीकी जैसी सेवा होती है वैसे सम्भवत उहा नहीं होती। इस सम्प्रदायमें बालभानवी

उपासना है । इनके भगवान्की आयु ७८ वर्षमें अधिक नहीं है । उनकी जैसी सेवा होनी है वह सभी भावुकोंके लिये अनुकरणीय है । भगवान्के भोगमें ही सैकड़ों रुपये नित्यप्रति लगते हैं । यहाँका राग-भोग सर्वत्र प्रसिद्ध है । यहाँ चक्रियों से केशर पीसी जाती है और घृतके कूप भरे रहते हैं । भगवान्का लाखों रुपयेके मणिमय आमूषण पहनाये गये हैं । दिनमें कई बार शृंगार होता है और वह भी प्रत्येक दिनका नये-नये प्रकारसे । तरह-तरहके सुवर्णमय खिलानोंसे भगवान्को खेलाया जाता है । प्रभुकी दिव्य छविके दर्शन करके यानी मन्त्रमुग्ध रह जाते हैं ।

फिर आरतीके दर्शन आर भगवच्चरणारविन्दोंमें अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर वे भगवान्के अन्नपूर्ण भण्डारके दर्शन करते हैं । यहाँ तरह-तरहके व्यञ्जन तैयार हुआ करते हैं । कोई-कोई यानी उसमें अपनी सेवा प्रदान कर कर्मचारियोंका हाथ बँटाते हैं । यहांके कर्मचारियोंको त्रेनरूपसे प्रसादकी कुठ निधित पत्तों दी जाती हैं । ५ लोग अपनी आश्रय-मत्तासे अधिक पत्तोंको दूसरे लोगोंको बेच देते हैं । इस प्रकार जो लोग चाहें उनको बहुत थोड़ा खर्चसे ही भगवान्का दिव्य प्रसाद मिठ सकता है । इसमें यहाँ अधिक दिन रहनेवालोंको भी स्वयं भोजनादि प्रदानका इश्ट नहा करना पड़ता ।

कहते हैं, श्रीगुरुमाचार्यजी भगवान्‌के आदेशसे ही उन्हें गोरुखमे मेराडमें लाये थे। जिस समय वे उन्हें रथमें बिठाकर ला रहे थे इस स्थानपर आकर उम रथके पहिये रेतमें घुम गये। फिर बहुत प्रयत्न करनेपर भी वे टस से-भम न हुए। इससे उन्होंने निश्चय किया कि भगवान्‌की इच्छा यहीं रहनेकी है। इस घटनाकी सूचना तत्कालीन महाराणा राजमिहको दी गयी। उन्होंने खय आकर इसकी जाँच की, और इसे ठीक पाकर उसके आसपासकी भूमि और एक गौड़ श्रीनाथजीकी सेवामें भेंट कर दिया। उसीसे अब धन्ते-धन्ते श्रीनाथजीकी आमदनी लाखों रुपया वार्षिक हो गयी है। अब इस स्थानकी महिमा दिन दिन बढ़ रही है। बहुत लोग तो श्रीनाथजीके दर्शन करनेसे ही श्राद्धारक्षणीशके दर्शनोंका फल मान लेते हैं।

श्रीनाथजीके दर्शन कर यात्री आगेकी यात्रा आरम्भ करते हैं। नाथद्वारेमें सब आवश्यक सामान मिल जाता है। यहाँकी चित्रकला प्रसिद्ध है। बहुत से हाथके जने हुए चित्र बाजारमें मिलते हैं। नाथद्वारेमें कोई भी किमी प्रकारकी जीवहिंसा नहीं कर सकता। नाथद्वारेके पास ही काकरौली है। वहाँ भी गुरुमसम्प्रदायकी एक प्रधान गद्दी है। नाथद्वारा आनेवालोंको इस स्थानके दर्शन भी अवश्य करने चाहिये।

पुष्कर

नाथद्वारेसे पुष्कर आनेवाले यात्रियोंको चित्तौड़ होकर अजमेर जंक्शनपर उतरना होता है। मान्सीसे अजमेर १६१ मील है। अजमेर अ-या बड़ा शहर है। स्टेशनके पाम ही जैनधर्मशाला है। उत्तम यात्रो ठहर जाते हैं। यहांसे पुष्कर ७ मील है। मोटर या तौंगेका मार्ग है। रास्ता पहाड़ी है। सड़क उतरती-चढ़ती कुठ फेरसे गयी है। रास्तेमें सड़कके किनारे अन तसागर नामकी एक झील पड़ती है, जो प्राय उद मील लम्बो चौड़ी है। अत्र यह क्रमश पटती जाती है। इसमें नौकाद्वारा भ्रमण करनेसे

वदा आन द आना है । इसके मित्र और भी कई जगह धर्मशाला, पागाग तथा अन्नक्षेत्र आने हैं जो पर्येके समय मोत्र द्रिये जाते हैं । पुष्करम एक मीठ इस तरफ जाय हाथको एक गढ़ा सुंदर वीचा पडना है । इसके गचमें एक मंदिर है । यहाँ अनिभियोंको भोजन भा निया जाता है । बहुत-से सातु महामा इम वगीचमें रहते हैं ।

पुष्करवा द्रस्य गढ़ा हा सुंदर है । यह चारों ओर पर्वतोंसे घिरा हुआ है । ऐमा जान पड़ता है मानो मत्र ओरसे आये हुए पर्वत पुष्करराजके दर्शनार्थ ठहर गये हैं । यहा आकर यात्री धर्मशालामें ठहर जाते हैं । पुष्करक पण्ड तो उनके साथ अजमेरसे ही हो जाते हैं । वे सत्रसे पहले ब्रह्मघाटपर ले जाने हैं । यहाँ स्नानादि तीर्थत्रिधि की जाता है । तीर्थमें आकर यात्रियोंको यहाँकी तीर्थत्रिधि अदश्य करनी चाहिये । इसके मित्रा यात्रा सफल नहीं होनी और न तीर्थदर्शनका आन द ही आता है । पुष्करजामें जलजतुओंकी अभिरुता है, क्योंकि कोई मी पुरप यहाँ जीवहत्या नहीं कर सगता । इसत्रिये स्नान करते समय नाने आदिसे रक्षा करनेके लिये तीर्थगुरुका सेरक जलमें लाठी घुमाता रहता है । इस प्रकार स्नान, विण्डदान ओर तर्पणादिमे निवृत्त होकर यात्री श्रीब्रह्माजीके दर्शनार्थ जाते हैं ।

भारतगमें ब्रह्माजीका मंदिर केवत्र पुष्करजीमें ही है । कहते हैं, शास्त्रोंमें भी ब्रह्माजीकी उपासनाका केवत्र पुष्करक्षेत्रमें ही मिगान है । मंदिर बहुत सुंदर है । यह एक ऊँचे स्थानपर है । गामियों सीढ़िया खदनेपर मुख्य द्वार आता है । उसके भीतर सहन

है। अतर्पेदोंके आगे सगमरमरका जगमोहन है। ब्रह्माजामी मूर्ति भी सगमरमरकी ही है। वे श्वेन ख धारण किये हैं, चारों हाथोंमें चार वेद हैं तथा उनके ऊपर-उपर सावित्री और गायत्रीकी मूर्तियाँ हैं। इस मूर्तिके दर्शन करके बड़ा आनन्द होता है। मन्दिरकी स्वच्छता दर्शनीय है।

इसके सिवा श्रीगाराहमन्दिर, रगजीका मन्दिर एव और भी कई देवस्थान बहुत प्राचीन तथा दर्शनीय हैं।

अन्य स्थान

सावित्री देवी—यहासे ३६० साठियों चढ़नेपर सावित्रीदेवके दर्शन होते हैं। इस स्थानपर एक कुण्ड भी है। उसका जल अत्यन्त स्वच्छ है। कोई-कोई यात्री यहाँ एक रात ठहर जाते हैं, किन्तु अभिजात तो उसी दिन लोट आते हैं।

यूदा पुष्कर—यह ताल अजमेर ओर पुष्करके बीचमें एक दूसरे रास्तेपर है। यहाँका दृश्य बड़ा सुन्दर है। यह स्थान एकान्तसेवनके लिये अच्छा है।

पुष्करके घाट—पुष्करताल भागतेके पवित्रतम तीर्थोंमें है। इसपर स्नान करनेके लिये एकदशीसे पूर्णिमातक बहुत लोग आते हैं। कार्तिकी पूर्णिमापर तो लाखोंकी भीड़ हो जाती है। वृक्षोंके कारण इसका दृश्य भी बड़ा मनोहर है। इसके चारों ओर बहुत-से पक्के घाट बने हुए हैं। उनमें ब्रह्मघाट, रामघाट, वदरीनारायणघाट, कोटितीर्थघाट और गोघाट प्रधान हैं। इनपर कई तैयार भी हैं। यात्रीके श्रद्धाके अनुसार उनके दर्शनादि करते हैं।

परिक्रमा

पुष्करजीका तीरा परिक्रमाएँ हैं, जो क्रमशः तीन, पचीस और पन्नाम मोर्की है। अभिजात यात्री छोटी परिक्रमा ही करते हैं। यदा परिक्रमाम ब्रह्मपुष्कर, रुद्रपुष्करआदि बहून से तीर्थ, कुण्ड एव देवाय्य पड़ते हैं। इनमें चक्रकुण्ड, नागकुण्ड, गगाकुण्ड और गयाकुण्ड आदि प्रान हैं। अजमेरवाडी मन्कमे कुठ एटरर एक गामुग्धानुण्ड ह। उसक आस पाम छावनी पड़ी हुई है। यहाँ जलका धारा गोमुग्गमेंसे निकलकर एक कुण्डमें गिरती है। यहा एक पुजारी रहता है। इस गोमुग्गका पूजा की जाती हे। यह जल बहुत पवित्र और स्वास्थ्यप्रद ह। अजमेरके धनीयोग कौरोंद्वारा मंगारर इसे सेवन करते हैं।

माहात्म्य

शाखोंमें पुष्करजीकी बड़ी महिमा ह। यहा प्रात-सात बहुत से तीर्थ स्नान करने आते हैं। सारे तीर्थ करनेपर भी बिना पुष्कर स्नान किये तीर्थयात्रा पूर्ण नहीं होनी। इस पवित्र क्षेत्रमें श्राद्धादि करनेसे कई पीढ़ियोंका उद्धार हो जाना है। इम स्थानपर सहस्रों वर्षतक ब्रह्माजीने तप किया है तथा सहस्रों ऋषि मुनियोंने भी अपने तपोमय जीवनमे इमे पावन किया ह। जो पुरुष इस तार्पराजका सेवन करते हैं वे धन्य हैं।

यहाँका जलवायु भी बहुत अच्छा है। सत्र प्रकारकी आवश्यक सामग्री मिल जाती है, तथा पाठशाला, औषधालय, वाचनालय एव अत्रशैलादि भी हैं।

मथुरा

मथुरा भारतके प्रगानतम तीथोंमें हे । यह सात मोक्षदा पुरियोंमें एक है । इन पुरियोंके विषयमें यह श्लोक प्रसिद्ध है—

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अबन्तिहा ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका ॥

अर्थात् अयोध्या, मथुरा, मायावती (हरिद्वार), काशी, काञ्ची, अत्रितीका (उज्जैन) ओर द्वारावती—ये सात पुरियाँ मोक्ष देनेवाली हैं । अतः यहाँ भी बहुत से लोग प्राणत्यागके लिये रहते हैं । इसी पुरीमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने जन्म लिया था । इसलिये श्रीकृष्णभक्तोंके लिये तो यह अत्यन्त प्रिय और पजनीया है ।

इसका प्राण ता मधुपुरी या मधुरा है। यहाँ मधु नामक
 देवता का स्थान था। उन देवताओं श्रीशत्रुघ्नजीने मारकर यहाँ
 यह नगर बनाया और इसका शासन करने पुत्र मुवाहुको सौंपा।
 इस प्रकार मधुरा की नींव पड़ी और सुनाहू उनके समने पड़
 अधिपति हुए। कालांतरम ममका शासन मूर्यनशसे चट्टनी
 राजाके हाथमें आ गया और यहाँ यदुवशासनगत भोजप्रशिक्षण
 आश्रम था। भोजनशमें ही राजा उपसेन हुए थे। उनका पुत्र
 वम था। उसे मारकर भगवान् कृष्णने पुत्र उपसेनको ही राजा
 बनाया। पीछे जब प्रभासभेत्रमें सम्पूर्ण यदुवशिक्षणका नाश हो
 गया तब महाराज युधिष्ठिरने यदुवशिक्षणके एकमात्र अधिष्ट पुरुष
 वमका मधुराके राजमिहासनपर अभिविक्त किया, जो भगवान् कृष्णका
 प्रपौत्र था।

तबसे मधुरा कई बार उजड़ती-बमना रही है। सन् १०१७ में
 इने मुहम्मद गजनवीने लूटा। उसके बाद सन् १५०० ई० में
 मिरजुदर लोदीने इसका सर्वनाश किया। सन् १६६९ ई० में
 आरङ्गजेबने इसपर धारा किया और सन् १७५७ ई० में
 अहमदशाह अब्दालीने इसमें हत्याकाण्ड मचाकर लूट की। इस
 प्रकार कई बार अध्याचारियोंसे पीड़ित होनेपर भी इस पुरीने अपना
 गौरव पूर्ववत् सुस्थिर रखा है। यह आज भी एक सधन, सुसज्जित
 और सुसम्पन्न नगर है। इसके बाजारोंमें प्रायः चारहों महीने
 देश देशांतरके यात्रियोंकी चहल-पहल रहती है। यह यमुनाके
 दाहिने तटपर बसी हुई है। दूसरे तटसे देखनेपर इस नगरके

पक्तिबद्ध घाटों और ऊँचाईमें ण्फ-दूसरेसे होइ बढ़ते हुए मन्दिरोंका दृश्य देखने ही योग्य होता है । इसके बाजारमें पत्थरका पटिया मिठी हुई हैं, इमारतें ऊँची-ऊँची और कलापूर्ण हैं तथा दूकानें तरह-तरहकी वस्तुओंसे सुसज्जित हैं । नगरमें भीतर जानेके लिये चार दरवाजे हैं—होलीदरवाजा, घुन्दावनदरवाजा, डीगदरवाजा और भरतपुरदरवाजा, तथा इसी चार दिशाओंमें चार महादेव हैं—उत्तरमें गोकर्णेश्वर, पूर्वमें पिप्लेश्वर, दक्षिणमें रंगेश्वर और पश्चिममें भूतेश्वर ।

पुष्करसे मथुरा जानेवालोंको अजमेरसे जाना होता है । यहासे मथुराको सीधी गाड़ी जाती है । अजमेरसे मथुरा २७३ मील है । मथुरामें बहुत-सी धर्मशालाएँ हैं, उनमें प्रधान प्रधान ये हैं—(१) राजा साहब तिगेईकी धर्मशाला—यह बह्नालाघाटपर है, इसमें प्राय दो सहस्र यात्री ठहर सकते हैं । (२) राजा साहब अनागढ़की धर्मशाला—नगरके बीचमें है, इसमें प्राय तीन सहस्र यात्री ठहर सकते हैं । (३) हरमुखराम दुलाचन्दकी धर्मशाला—स्वामीघाटपर है । (४) हरनटराय फूलचन्द हृष्यरसवालोंकी धर्मशाला, (५) माहेश्वरियोंकी धर्मशाला, (६) कलकत्तानालोंकी धर्मशाला, (७) सिधी धर्मशाला, (८) बीकानेरियोंकी धर्मशाला, (९) माटियोंकी धर्मशाला, (१०) पञ्जाबी धर्मशाला, (११) लुहाणोंकी धर्मशाला । इनमें जिन धर्मशालाओंका किसी जाति या देशविशेषसे सम्बन्ध है उनमें उसी जाति अथवा देशके लोगोंको

धर्मशालामें टहरनके अनन्तर यात्रियोंका पहला काम यमुना-
स्नान होता है। यहां तीर्थपुरोहित चौब कहलाते हैं। उनके
अपने मान रखना न रगना यात्रियोंका इच्छाके ऊपर निर्भर है।
यमुनातीर बहुत से घाट हैं। उनमें सबसे प्रधान त्रिश्रान्तघाट है।
इसके मिला अथ प्रधान घाटोंकी नामावली इस प्रकार है—बङ्गाली
घाट धुवघाट, कृष्णगङ्गाघाट, सोमनोर्यघाट और असाकुण्डाघाट।
इसका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

त्रिश्रान्तघाट—इसे त्रिश्रामघाट भी कहते हैं। भगवान् कृष्णने
कर्मको मारकर इस स्थानपर त्रिश्राम किया था। इसीसे इसका यह
नाम पड़ा है। यह मथुराकी प्रधान सड़कके पास है। सड़कसे जल
की धारातरु पथरकी पटियोंका फर्श और साड़ियों बनी हुई हैं।
इस घाटपर यमद्वितीया अर्थात् कार्तिक शु० २ को बहुत बड़ा मेला
होता है, जिसमें लाखों यात्रियोंकी भीड़ होती है। यमुनानदर
सबसे अधिक माहात्म्य इसी घाटपर स्नान करनेका है। यहाँ साय-
कालमें नित्यप्रति यमुनाजीकी आरती होती है। वह दृश्य देखने-
योग्य होता है। यमुनाजीकी ऐसी आरती सम्भरा अत्र नहीं होती।

बङ्गालीघाट—यह घाट बी० बी० एण्ड मी० आई० रेखवेनी
छोटी लाइनके पुलके पास है। इसे गोसेन नामक एक बङ्गाली
सज्जनने बनवाया था। इसीके पास राजा माहब तिलोईकी धर्मशाला है।

धुवघाट—यह घाट सन् १८६८ में बना है। कहते हैं,
इसी स्थानपर धुवजीने तप किया था। घाटके ऊपर टीलेपर एक

ओटा सा मन्दिर है। उसमें धुनजाती मूर्ति है। यहाँ पिण्डदान भी किया जाता है।

कृष्णगङ्गाघाट—यह घाट पक्का बना हुआ है। इसके ऊपर कई दर्शनीय मन्दिर हैं।

सोमतीर्थघाट—इसे वसुदेवघाट भी कहते हैं।

असीकुण्डाघाट—यह पत्थरका पक्का घाट है। इसे वाराहक्षेत्र भी कहते हैं। यहाँ एक मन्दिरम वाराहजी और गणेशजीकी मूर्तियाँ हैं।

मथुराके मन्दिर

मथुराजीमें बहुत-से मन्दिर हैं। जिस प्रकार काशीकी गङ्गी-गङ्गीमें श्रीमहादेवजीके दर्शन होते हैं उसी प्रकार यहाँ गली-गलीमें श्रीकृष्णचन्द्र विराजमान हैं। यहाँ उनमेंसे कुछ प्रधान मन्दिरोंका विवरण दिया जाता है।

द्वारकाधीशजीका मन्दिर—मथुराके मन्दिरोंमें निशालता, सुन्दरता, सम्पत्ति और सेवाकी दृष्टिसे इसका प्रथम स्थान है। यह मथुराकी प्रधान सड़कपर है। इसकी लम्बाई १८० फीट ओर चौड़ाई १२० फीट है। यह ग्वालियर राज्यके राजानकी सेठ गोरुलदासजी पारिव्यक्त बनवाया हुआ है। इसकी लागत प्राय २ लाख रुपये है तथा इसकी सेवाके लिये २५ सहस्र वार्षिक आयकी स्टेट छगी हुई है। सेठजीने सन् १८१५ ई० में इसे तैयार कराकर इसकी स्टेटमहित अपने गुरु कॉन्करीलीके गोसाईंजीको भेंट कर दिया था। अत अब इसका सारा प्रबंध उर्हकि हायमें

है। इसका सेवा तन्त्रासुद्धा रीतिसे होती है। निर्दिष्ट समयपर भाग्यार्क पट गुन्ते हैं, अथ मन्दिरोंकी तरह यहाँ हर समय दर्शन ली जा सकते। यहाँ निच अनेकों प्रकारके व्यापारोंका बन्दगावा जाता है, जो शीत दुकानोंकर दिखा है। ये दुकानें मन्दिरके पास ही खर हैं। विशय विशय अस्मत्पर यहाँ धर्मि फर्ड उमा हाते हैं। मन्दिर सनया दर्शनीय है। इसमें पाणरकी सुन्दर फारीगरी का गयी है।

गौरधननाथजीका मन्दिर—यह द्वारकाश्रीशान्तिने थोड़ी ही दूर है। विगाउनाने इसका दूसरा नम्बर है। इसे सन् १८३० ई०में सेठ वामदार थापूनामक एक गुजरानी मचनने बनवाया था। इसमें दो शीरु है। इसकी पाणरकी फारीगरी सराहनीय है। यारोपियन लोग उसका फोटो उतारकर ले जाते हैं। इसका प्रबन्ध भी द्वारकाश्रीशान्तिके अधिकारियोंके ही हाथमें है।

केशवदेवजीका मन्दिर—यह मथुराजीका सबसे पुराना मन्दिर था। श्रीकेशवदेवजीकी स्थापना भगवान् कृष्णके प्रपौत्र धन्ने की थी। परन्तु भीरुजने उस मन्दिरको तोड़कर उसकी जगह एक विशाल मसजिद बना दी है। वही भगवान्का जन्मस्थान भी था। अब मसजिदके पीछे दूसरा मन्दिर बनाया गया है, इसे श्रीकेशवदेवजीका कटरा भी कहते हैं। इस मन्दिरके पीछे पोतराकुण्ड है। कहते हैं, उसमें भगवान्के जन्मके समयके बिट्टीने आदि घोये गये थे।

गोविन्ददेवजीका मन्दिर—यह मन्दिर सेठ गुरसहायमलजी रामगढ़वालोकका बनाया हुआ है। इसकी शौकी बहुत सुन्दर है। मन्दिरमें सदावर्त और सस्कृतपाठशाला भी हैं।

निहारीजीका मन्दिर—यह खामीघाटपर है। इसकी बनायट गोविन्ददेवजीके मन्दिरके ही समान है।

मदनमोहनजीका मन्दिर—यह भी खामीघाटपर ही है। इसका प्रबंध बहुत अच्छा है। यहाँ अभ्यागतोंको भोजन और चने बाँटे जाते हैं।

गतश्रमनारायण—यहाँ भगवान्ने श्रमनिवारण किया था। इसलिये इसका नाम गन्श्रमनारायण पड़ा है। इसमें भगवान्के दोनों ओर श्रीराधिकाजी और कुञ्जाजीकी मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर श्रीसम्प्रदायवालोंके अधिकारमें है।

धाराहजीका मन्दिर—यह द्वारकागीर्णजीके पीछेकी ओर है। इसमें धाराहजी और गरुडजीकी मूर्तियाँ हैं।

किशोरीरमणजीका मन्दिर—यह किशोरीलालजी दूसरका बनाया हुआ है। इसका प्रन्ध बहुत अच्छा है। इसीके अगले एक कल्याणपाठशाला और एक हार्टस्कूल भी चल रहे हैं।

इनके सिवा गोपीनाथजी, मथुरानाथजी, दाऊजी, ब्रजगोविन्दजी और राधाकृष्णजी आदिके और भी बहुत-से दर्शनीय मन्दिर हैं।

परिक्रमा

मथुराकी परिक्रमा सालमें कई बार की जाती है। उनमें प्रत्येक एकादशी और अक्षयनयमीको सामूहिक परिक्रमा होती है।

उसमें यहाँके सभी प्रसिद्ध स्थान आ जाते हैं। परिक्रमामें जो स्थान आते हैं उनकी नामावली इस प्रकार है—विश्रामघाट, गतश्रम नारायणजीका मंदिर, कसग्वार, सतीका बुर्ज, चर्चिका देवी, योग घाट, पिप्पलेधर महादेव, योगमार्ग बटुक, प्रयागघाट, वेणीनाथका मंदिर, श्यामघाट, श्यामजीका मन्दिर, दाऊनी, मदनमोहनजी और गोकुलनाथका मंदिर, कनखलतीर्थ, तिदुकतीर्थ, मूर्यघाट, धुनक्षेत्र, सतर्पिटीलौ, कोटितीर्थ, राणगढा बुद्धतीर्थ, बलिटीलौ, रङ्गभूमि, रङ्गेश्वर महादेव, सतसमुद्रकूप, शिवताल, बरुभद्रकुण्ड, भूतेश्वर महादेव, पोतराकुण्ड, ज्ञाननापी, जमभूमि, केशवदेवमन्दिर, कृष्णकूप, कुञ्जाकूप, महानिधा, सरस्वतीनाग, सरस्वतीकुण्ड, सरस्वतीमन्दिर, चामुण्डा, उत्तर कोटितीर्थ, गणेशतीर्थ, गांकरेश्वर महादेव, गौतम ऋषिकी समाधि, सेनापतिका घाट, सरस्वतीसङ्गम, दशाक्षमेघघाट, अम्बरीषका टीका, चक्रतीय, कृष्णगङ्गा, प्रह्लाघाट, वैकुण्ठघाट, धारापतन, वसुदेवघाट, असिजुण्टा, वाराहक्षेत्र, द्वारका धीशका मंदिर, मणिकर्णिकघाट, महाप्रभुजीका बैठक और विश्रामघाट।

यह मथुराकी परिक्रमाका विवरण है। इसके सिवा चौरासी कोस व्रजकी परिक्रमा करनेका भी नियम है। यह परिक्रमा सामूहिकरूपसे तीन बार होती है। (१) मथुराके चौबोंकी परिक्रमा जो भाद्रपद कृ० ११ को आरम्भ होकर सोलह दिनमें समाप्त हो जाती है। (२) भाद्रपद कृ० १३ को आरम्भ होकर

१ अत्र यद तीर्थं हतं होना जाता है।

२ यहाँ सतर्पियोंके दर्शन हैं और यत्पुस्त भी मिलता है।

३ यहाँ राजा बधि और वामन भगवान्के दर्शन हैं।

सोलह दिनमें समाप्त होती है और (३) गोसाइयोंकी परिक्रमा जो भाद्र० शु० ११ को आरम्भ होकर डेढ़ मासमें समाप्त होती है । इस परिक्रमामें गोसाईंजी स्वयं सायं रहते हैं तथा नाटकमण्डली भी रहती है । परिक्रमाके जिस स्थानपर भगवान्ने जां लीला की है वहाँ वही लीला नाटकद्वारा प्रदर्शित की जाती है । तथा कथा और उपदेश आदि भी होते जाते हैं । इस परिक्रमामें विशेष आनन्द रहता है । व्रजकी परिक्रमामें १२ वन, ५ सरोवर, ८४ कुण्ड, १० श्रीमहादेवस्थान, ९ श्रीदेवीस्थान, ४ नदी, २६ उपवन, १२ कूप, २ ताल, ७ बन्देजजीके स्थान, २ राजाजीके स्थान और ५ पर्यटन आ जाते हैं । एक यात्रा फाल्गुनमें भी जाता है । इसमें पहले निरक्त लोग ही जाते थे और अब गृहस्थ भी सम्मिलित होने लगे हैं । इसमें वर्षाका कष्ट नहीं होता ।

मथुराके अन्य स्थान

मथुरा जिलेका स्थान और एक प्राचीन नगर है । इसलिये

१ महावन, तालवन, कुमुदवन, बहुलवन, कामवन, वृंदावन, मधुवन, खदिरवन, मद्रवन, भाण्डोरवन, बेलवन और लोहवन ।

२ मानसरोवर, पानसरोवर, हंसरोवर, चन्द्रसरोवर और प्रेमसरोवर ।

३ गोमुल, गोवर्धन, धरसाना, नन्दगाँव, सद्धेत, परममद्र, अर्द्धीग, शेषशायी, माट, अजगाम, खेल्वन, धीकुण्ड, गधर्ववा, परसौली, तिलहू, यच्छवन, आदिबद्री, करहला, आजगोखर, पितायो, कोकिलावन, दधियन, फोटवन, राजल, सुरभीर (सुरीर) और मुञ्जाटनी ।

४ गोवर्धन, धरसाना, नदीश्वर, चरणपहाड़ी और दूसरी चरण पहाड़ी ।

यह मन्दिर, घाट और कुण्डोंके सिवा और भी कई उपयोगी स्थान हैं। उनका सक्षिप्त परिचय देना अनावश्यक न होगा।

जामामसजिद—यह शहरके बीचो-बीचमें है। इसकी कुम्भी १४ फीट ऊँची है, जिसके नीचेके भागमें तरह-तरहकी दूबगें हैं। इसे अप्पुलनगीरानने मन्दिरोंको तोड़कर उनही जगह बनयाया था।

म्युजियम—इसमें ऐतिहासिक मूर्तियाँ और वस्तुओंका संग्रह है। इतिहास और पुरातत्त्वशास्त्रके लिये यह बहुत उपयोगी है। इसमें दो सहस्र वर्ष पूर्वतकके शिलालेख, मूर्तियाँ, सिक्के और शूपादि मिलते हैं।

शिवनाथम—इसमें वेजशाग है, जिसमें मर्मटीयन्त्र, पल्लभायन आदि खगोलसम्बन्धी यन्त्राका संग्रह है।

औरङ्गजेयकी मसजिद—इसे औरङ्गजेयने श्रीनेशयदेवके प्राचीन मन्दिरको तोड़कर बनयाया था। यही वास्तविक श्रीकृष्णजमस्थान है। यह मथुरामें सबसे बड़ी मसजिद है।

शिक्षाविभाग—यह शिक्षासम्बन्धी कई संस्थाएँ हैं। उनमें किशोरीरमण हाईस्कूल, चम्पा अपराध काउन्सिल, गवर्नमेण्ट हाई स्कूल, मिशन काउन्सिल, माथुरचतुर्वेदविद्यालय और नारायणमठयुक्त विद्यालय प्रमुख हैं। इनके सिवा और भी कई संस्कृतपाठशालाएँ, मिडिलस्कूल और कानूनविद्यालय आदि हैं।

सरकारी संस्थाएँ—यों तो यहाँ अम्नी, जज, मुफ्ती आदि सभी कुछ हैं परन्तु लोकोपकारी संस्थाओंमें गवर्नमेण्टहॉस्पिटल तथा म्युनिसिपलबोर्डके कुछ मदरसे आदि ही हैं।

कुछ अन्य बातें

मथुराकी कई चीजें बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँके पेड़े, खुरचन, सूतकी निगाड़, डोरी, तौबेके कतरए, ठाकुरजीके सलमा सितारे और मोने-चाँदीके मुकुट एव फ़िरोट आदि शृङ्गारके सामान, चदन ओर हाथीदाँतकी मूठके चँवर एव पङ्के आदि बहुत अच्छे बनते हैं। अत्र कपड़ेकी उगार्डका काम भी अच्छा होने लगा है। यात्रीलोग इनमेंसे बहुत-सी चीजें प्रसाद और सोगातरूपमें ले जाते हैं।

यहाँ वर्षमें कई मेले होते हैं। श्रीकृष्णजन्माष्टमीका यहाँका-सा उत्सव ओर कहीं नहीं होता। क्यों न हो, यह तो जन्मस्थान ही है। श्रावणके शुक्लपक्षमें यहाँ हिडोलोंका बड़ा सुन्दर दर्शन होता है। उन दिनोंमें बाहरके यात्रियोंकी भीड़ भी अधिक रहती है। आश्विन कृ० ११ से शरत्पूर्णिमातक रामलीलाकी धूम रहती है। कार्तिकमें दीपावली और अन्नकूटके उत्सव बड़े अनोखे होते हैं। कार्तिक शु० ८ को गोपाष्टमी ओर दशमीको कसनवका उत्सव होता है। इसी प्रकार समय-समयपर यहाँ बहुत-से उत्सव और मेले होते हैं।

पद्मपुराणमें लिखा है कि मथुरा भगवान्‌को अत्यन्त प्रिय है। कार्तिकमासमें तुलसीके सूर्य आनेपर श्रीयमुनाजीका स्नान मोक्ष देने-वाला होता है। इसी प्रकार पुराणोंमें इम पुण्यपुरीकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है। जो लोग मथुरासेवन करते हैं वे धन्य हैं।



वृन्दावन

यह मथुरासे उत्तरकी ओर यमुनाजीके दायं किनारेपर ही बसा हुआ है। राजभूमिक प्रान्त प्रधान स्थानोंको मथुरासे ही सड़कें गयी हैं। इसलिये यात्रियोंको जहाँ भी जाना होता है वहाँसे होता है। वृन्दावन जानेके लिये रेल और पक्की सड़क दोनों ही मार्ग हैं। रेलसे प्राय ९ मील पड़ता है और सड़कसे ६ मील। अधिकांश यात्री सड़कसे ही जाते हैं।

भायुक भक्तोंकी दृष्टिमें वृन्दावनका महत्त्व मथुराजीकी अपेक्षा बहुत अधिक है। मथुरा भगवान्की जन्मभूमि है, परन्तु वृन्दावनमें उन्होंने मथुरातिमथुर बाललीलाएँ की हैं। यहाँके सयनवन, मनोहर निकुञ्ज और पानन यमुना पुत्रिनमें ही उन्होंने गोचारण, वशीरादन और अनेकों गोपसखाओंके साथ तरह-तरहके खेल खेले हैं। इस समय भी जैसा मनोहर और चित्तानुर्पक दृश्य वृन्दावनके ऊँचे-नीचे काठारों और हरे भरे मैदानोंका है वैसे मथुराके धन-जनाकीर्ण प्रामादोंका नहीं है।

भगवान् कृष्णके समय वृंदावन एक वन ही था । मथुरा तो उस समयसे भी सहस्रों वर्ष पूर्व मूर्याशी एव चन्द्रवशी राजाओंकी राजधानी बन चुकी थी । संस्कृतमें 'वृंदा' तुलसीको कहते हैं । अतः जान पड़ता है, यहाँ पहले तुलसीका वन होगा । तुलसी है भी भगवान्को स्वभागत ही अत्यन्त प्रिय । यहाँ 'वृंदा' नामकी एक देवीका मन्दिर भी है । कहते हैं, उसकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान्ने उसको इच्छानुसार यह नर दिया था कि यह स्थान तेरे नामसे प्रसिद्ध होगा । अस्तु ।

मथुरासे वृंदावन जाते समय मार्गमें भी कई दर्शनीय स्थान पड़ते हैं । मथुरासे तीन मीलपर ऊँची दीवारोंसे घिरा हुआ एक बाग है । इसे सेठ बुशलनी नामक एक गुजराती सज्जनने लगाया था । इससे थोड़ी दूर सड़कके दूसरी ओर खुले मैदानमें लाल पत्थरकी एक बागली है । इसमें ५० सीढियाँ हैं । यह इन्दौरकी सुप्रसिद्ध महारानी अहिल्याबाईकी स्मृतिमें सन् १७९५ में बनवायी गयी थी । बागलीसे दक्षिण पूर्वकी ओर अक्रूरजीका स्थान है । यहाँ अक्रूरजके साथ मथुरा जाते समय भगवान्ने उन्हें अपने भगवदीय स्वरूपके दर्शन कराये थे । इसके पास ही भतरौड़ है । यहाँ यज्ञपत्रियोंने भगवान्को भोजन कराया था । इस स्थानपर पहले एक बहुत प्राचीन मन्दिर था । उसे औरङ्गजेबने नष्ट कर दिया । इस मन्दिरकी रक्षाके लिये बहुत-से हिन्दू राजाओंने उसका सामना भी किया, किन्तु अन्तमें जीत आरङ्गजेबकी ही हुई । मन्दिरके खण्डहर अब भी विद्यमान हैं । इससे एक मील आगे तरासके राजासाहजका बाग

हं और उसके दूसरी ओर जयपुर नरेशका मगीचा है । इससे आने वृन्दावनका रेलवे स्टेशन है ।

वृन्दावनमें बहुत सी धर्मशाळाएँ हैं । इनमें यात्रो आसने ठहर सकते हैं । किन्हीं किन्हीं मन्दिरोंमें भी ठहरनेके स्थान हैं तथा पण्डोंके घर भी हैं ही । बाजारमें भोजनकी सब प्रकारकी कच्चा-पक्की सामग्री मिलती है । इसके सिवा कुछ मन्दिरोंमें प्रसाद भी बिकता है । वहाँ भी दो चार आने देकर एक व्यक्ति लिये पर्याप्त भोजन मिठ सकता है ।

वृन्दावनमें यमुनास्नान, देवदर्शन और परिक्रमा ये ही प्रधान कर्म हैं । यमुनातीरे बत्तीस घाट हैं, उनमें चीरहरणघाट, कालाघाट और केशाघाट बहुत प्रसिद्ध हैं । यहा यमुनाजी घाटोंसे दूर हो गयी थी, इसलिये सुन्दर होते हुए भी उनकी शोभा नष्ट हो गयी थी । अब बहुत-सा व्यय करके उनकी धाराको पुनः घाटोंपर लाया गया है । वृन्दावनकी परिक्रमा चार मीलकी है । सामूहिक परिक्रमा प्रायः एक-दशकी होती है । कोई-कोई लोग साष्टाङ्ग परिक्रमा करते हैं, वह कई दिनमें समाप्त होती है ।

वृन्दावनके मन्दिर

वृन्दावनमें जितने मन्दिर हैं उतने सम्भवतः किसी भी तीर्थमें नहीं हैं । यहाँ मन्दिर आर बटवोंकी हा बिक्रिता है । उनमें से कुछ प्रधान मन्दिरोंका परिचय नाचे दिया जाता है । इनमें पहले चार अधिक प्राचीन हैं ।

गोविन्ददेवजीका मन्दिर—इस मन्दिरको श्वारूप और

सनातन गोस्वामिपार्दोंकी आज्ञासे अंबेरके राजा मानसिंहने सन् १५९० ई०में बनवाया था । श्रीगोविन्ददेवजीकी मूर्ति भी भगवान्के प्रपौत्र वज्रनामकी पधरायो हुई थी । यह श्रीरूपगोस्वामीको नदगाँवमें मिली थी । यह मन्दिर लाल पत्थरका बना हुआ है । कला-कौशलकी दृष्टिसे इसके मुकामिलेका कोई अन्य मन्दिर उत्तर भारतमें नहा है । पहले यह बहुत ऊँचा था । इसकी ऊपर नित्य एक मन घीका दीपक जलाया जाता था । उसकी ज्योति दिल्लीमें दिग्रायी देती थी । उसे देवकर औरगजेबकी लड़कीको उसका हाल जाननेकी इच्छा हुई । वह सायमें सेना लेकर यहा आयी ओर इसे भीतरसे देखनेकी इच्छा प्रकट की । किन्तु पुजारियोंने उसे भीतर घुसनेकी अनुमति न दी । इससे कुपित होकर उमने सेनाको मन्दिर नष्ट करनेकी आज्ञा दे दी । बस, इसकी सारी बहुमूल्य वस्तुओंको छूट छिया गया और इसके ऊपरके पाच खण्ड तोड़ दिये गये । गोविन्ददेवजीकी मूर्ति किसी प्रकार आवेर पहुँचा दा गयी । अब वह जयपुरमें राजप्रासादके सामने एक मन्दिरमें विराजमान है । पाच मञ्जिल उतर जानेपर भी इस समय इसकी ऊँचाई सब मन्दिरोंसे अधिक है । इससे ही इसकी पहली ऊँचाईका अनुमान किया जा सकता है ।

गोपीनाथजी—यह श्रीकृष्णचैतन्यसम्प्रदायका मन्दिर है । प्राचीन गोपीनाथजी जयपुर पधार गये है । कहते हैं, मधुपण्डित नामके कोई बंगाली सज्जन वृंदावनमें आये थे । उन्हें भगवान्के दर्शनोंकी उत्कण्ठा हुई । तत्र भगवान्ने गोपीनाथरूपसे वशावटके

नाचे दर्शन दिये। पहला मंदिर जयपुरनिवासी राधशोडकान बनवाया था। अत्र दूमरा मंदिर थानदकुमार बानू नामक एक बगाली सज्जनने बनवाया है।

मदनमोहनजी-श्रीमदनमोहनजीका पूर्वनिघट मधुरामें एक धामने पास था। उमें श्रासनावन गोस्वामी घृन्दावन छे आये थे। पहले रामदास नामक एक पजाबी सज्जनने मदनमोहनजाका छोट पत्थरका मंदिर बनवाया था। किन्तु यन्नोंके अयाचारके समय ने मदनमोहनजी तो काकरौंगे पधार गये। अत्र नदकिशोरनाबूने दूमरी मूर्ति स्थापित की है। इस मन्दिरकी कारीगरी अच्यन्त दर्शनीय है।

युगलकिशोरजी-इसमें श्रीकृष्ण और बलरामजीकी मूर्तियाँ हैं। इसे सन् १६२७ ई०में चौहान राजपूत नारकरनने बनवाया था।

रङ्गजीका मन्दिर-घृन्दावनके मन्दिरोंमें यह सबसे बड़ा है। यह पूर्वसे पश्चिमतरफ ७७५ फीट लम्बा और उत्तरमें दक्षिणतरफ ४४० फीट चौड़ा है। इसका आकार प्रखर त्रिचनापन्टीके रङ्गजीके मन्दिरके समान है। इसमें चार परकोटे हैं जिनमेंसे प्रत्येक १५२० फीट ऊँचा है। चौथे परकोटेके भीतर पत्थरके खम्भोंके दाटानमें तान दरके भीतर भगवानकी चतुर्भुजी मूर्ति है। पूर्वके पहले दरवाजेकी दाहिनी ओर एक बड़ा पक्का तालाब है। उसमें गजेंद्रोद्धारकी लीला दिग्वायी जाती है। मन्दिरके जगमोहनके सामने ६० फीट ऊँचा गरुडस्तम्भ है, जो भीतरमें चन्दनका है और ऊपरसे सोनेके पत्रसे मँढा हुआ है। यह मन्दिर सेठ लक्ष्मी

चद्रके छोटे भाई सेठ राधाकृष्ण और गोविन्ददासजीने ४५लाख रुपया लगाकर बनवाया था। यह सन् १८५१ई०में तैयार हुआ था। इसकी सेवाके लिये ५३ सहस्र वार्षिक आयकी रियासत दी हुई है। सेठजीने यह मन्दिर अपने गुरु श्रीरङ्गाचार्यजीको भेंट कर दिया था। उन्होंने इसका प्रबंध एक रजिस्टर्ड ट्रस्टको सौंप दिया है। व्रजमें यह मन्दिर श्रीसम्प्रदायका कीर्तिस्तम्भरूप है। प्रबंध-कारिणी कमेटीके प्रधान सर्वदा सेठजीके वंशधर ही होते हैं। यहाँ प्रतिदिन प्रायः सो मनुष्योंको भोजन कराया जाता है। मन्दिरके अधीन कई पाठशालाएँ भी हैं, जिनमें अधिकतर न्याय पढ़ाया जाता है।

बाँकेबिहारीजीका मन्दिर—ये टट्टीसम्प्रदायाचार्य श्रीहरिदास-जीके पूज्य देव हैं। ये उन्हें निमिन्नमें मिले थे और इहाँकी आज्ञासे उन्होंने इन्हें प्रतिष्ठित किया था। वृंदावनमें यह मूर्ति सबसे अधिक मनोहर समझी जाती है। यहाँकी कई बातें प्रिलक्षण हैं। आप सवेरे दश बजे सोकर उठते हैं, दर्शन होते समय क्षण-क्षणमें पर्दा आता रहता है, वर्षमें एक ही दिन केवल अक्षय तृतीया-को आपके चरणोंके दर्शन होते हैं, एक ही दिन आश्विन शु० १५-को मुकुट धारण करते हैं और केवल श्रावण शु० ३को ही हिडोलेमें झूलते हैं। आपका प्रधान भोग दूध भात है। मन्दिरमें शख, घड़ियाल, ज्ञान आदि कोई बाजा नहीं बजाया जाता। आपके दर्शन निरंतर न होनेका यह कारण प्रतलाया जाता है कि एक बार आपकी बाजी झाँकीपर रीझकर एक भक्त बहुत देरतक आपकी ओर

भेंट कर दिया था। इसकी लागत चार लाख रुपया है। इसके तीन द्वार हैं। बीचके द्वारसे राधागोपालजीके, बायें द्वारसे नृत्य-गोपालजीके और दाहिने द्वारसे हंसगोपालजीके दर्शन होते हैं। इसमें पत्थरका बहुत सुंदर काम है।

राधारमणजीका मन्दिर—यह मंदिर मन्गोडसम्प्रदायके आचार्योंका है। श्रीराधारमणजी श्रीगोपालभट्टके पूज्यदेव थे। उस समय ये शालग्रामरूपमें थे। श्रीगोपालभट्टके पास चारह शालग्रामशिलाएँ थीं। आप उन्हींका पूजन किया करते थे। एक दिन एक सेठने सभी मंदिरोंके ठाकुरोंके लिये ब्रह्माभूषण बाटे। सबके ठाकुरोंकी सेवा होती देखकर भट्टजीका भी बलगती इच्छा हुई कि हमारे उपास्यदेवके अंग-प्रत्यंग होते तो हम भी ब्रह्माभूषणोंसे प्रभुका शृंगार करते। उनकी निरुलता उत्तरोत्तर बढ़ती गयी और इसी चिन्तामें उनकी आँखें लग गयीं। वाञ्छारूपतर श्रीभगवान्के लिये कुछ कठिन तो है ही नहीं। थोड़ी देरमें भगवान्ने उन्हें जगाया कि 'गोपाल! उठ मेरे दर्शन कर।' भट्टजीने पिटारी खोली तो देखा कि ग्यारह शालग्राम तो ज्यों-के-त्यों हैं, किंतु एकमेंसे बड़ी मनोमोहिनी प्रतिमा प्रकट हो गयी है। यह वैशाख शु० १४ की रात्रि थी। अत्र भी प्रतिवर्ष उस दिन भगवान्के प्राक्तन्धका उत्सव मनाया जाता है।

श्रीराधावल्लभजीका मन्दिर—श्रीराधावल्लभजी गोस्वामी श्रीहित-हरिवंशजीके उपास्यदेव हैं। गोस्वामीजी महाराज देवयन्दके रहनेवाले थे। वे श्रीवृंदावन आ रहे थे। मार्गमें वे चिरपापुड गाँवमें ठहरे। वहाँ आत्मदेव ब्राह्मणके यहाँ उन्होंने इनके दर्शन

टन्टका लगाकर देगन रहे थे । तब आप उनका प्रेमके रसकृत
 होकर उनके माथ चले गये और फिर बहुत अधिक अनु-
 प्रिय करनेपर मस्तिष्क पधारे । तबसे यह नियम हो गया है कि
 क्षण ज्ञानमें पटना डाल दिया जाय, तबसे कोई भक्त आपके आँसू
 देर दर्शन न कर सके ।

शाहजीका मन्दिर—यह मंदिर लगनऊके शाह गिरिधारीका
 जाके पुत्र शाह जुन्दनगउ और शाह पुन्दनलालजीका बनगा
 हुआ है । ये दोनों भाई बड़े उच्च कोटिके भक्त और कवि थे ।
 वृंदावन आनेपर ये क्रमग लडितकिशोरी और लडितमाधुरीके
 नामसे प्रसिद्ध हुए थे । यह मंदिर रागमरकरका बना हुआ है ।
 इसकी कारीगरी दशनीय है । इसमें भगवान्की सेवा बड़े भावसे
 होती है । वसन्तपञ्चमाके दिन आप वसन्ती कमरेमें निराजते हैं ।
 यह भा अपने ढंगका एक ही मंदिर है । सुन्दरनामी दृष्टिसे यह
 मंदिर सयमे अच्छा है । इसकी लागत प्राय दस लाख रुपया है ।

लालाशायूका मन्दिर—लाजानानू बगालके बहुत बड़े रईस थे ।
 वे अत्तमें निरक्त होकर वृंदावन चले आये थे और यहाँ ब्रजवासि-
 योंके दुःखदे खाकर भगवान्का भजन करने लगे थे । यह मंदिर
 उर्हीना बनगाया हुआ है । इसकी पूजा सेवाके लिये कई गौंन लगे
 हुए हैं ।

गिरिधारीजीका मन्दिर—इसे राधागोपालजी और ब्रह्मचारीजी-
 का मंदिर भी कहते हैं । यह ग्वालियर नरेशका बनगाया हुआ
 है । इसे बनगाकर उन्होंने अपने गुरु ब्रह्मचारा गिरिधारीदासजीको

की हुई थी। कालक्रमसे बहुत दिनोंतक यह क्षीरसागरमें शयन करती रही। एक दिन बलदेवजीने कल्याणजी नामक एक अहिवासी ब्राह्मणको स्वप्न देकर कहा कि मैं क्षीरसागरमें शयन किये हुए हूँ, मुझे निकालकर स्थापित करो। उन्होंने निकालकर इन्हें एक कच्चे मंदिरमें स्थापित कर दिया।

कल्याणजी अहिवामी ब्राह्मण थे। वे गोसाईं गोगुलनाथजीके सेवक थे। गोसाईंजीने उन्हें कुछ मासिक वृत्ति बाँधकर बलदेवजीकी सेवा सौंप दी। श्रीदाऊजीके श्रृंगारार्थ ऋतुओंके अनुसार बल मिलते थे। किंतु कल्याणजी शीतकालमें एक कम्बलमें गुड़ी मुड़ी हुए पड़े रहते थे। उम समय दयानिधान दाऊजी अपनी रजाई उतारकर कल्याणजीको उड़ा देते थे। कल्याणजी सबेरे उठकर उसे फिर दाऊजाको ही उड़ा देते। होते होते कल्याणजीकी यह शिकायत गोसाईं श्रीगोगुलनाथजीतक पहुँची। तब एक दिन रातको बारह बजे वे गोगुलसे दाऊजी आये। इसी समय श्रीबलदेवजीने कल्याणजीको जगाकर कहा कि 'अरे उठ! गोसाईंजी आ रहे हैं, तू मेरी रजाई मुझे उड़ा दे और अपना कम्बल ओढ़कर सो जा।'।

कल्याणजीने ऐसा ही किया। इतनेहीमें गोसाईंजीने आकर देखा तो कल्याणजी कम्बल ओढ़े पड़े हैं। गोसाईंजीने उनसे सच्ची बात पूछी और उन्होंने जैसी बात थी वह सब कह दी। तब गोसाईंजी प्रसन्न होकर बोले 'आजसे बलदेवजी तुम्हारे ही हैं, तुम

बलदेव

महाजनमे प्राय ६ माल बलदेव गौर है । इसका नाम रीका गाँव भी है । परन्तु यह बलदेवजी या दाऊजीके नामसे ही अधिक प्रसिद्ध है । यहाँ बलदेवजीकी बड़ी विशाल और मनोहर मूर्ति है । मूर्तिको आकार मनुष्याकारमे भी कुछ अधिक है । इनके सामने कोनेमें शारदेवतीजी हैं । दोनों मूर्तियाँ काठे पत्थरकी हैं । इनका भोग मापन मिश्री है । बलदेवजीकी मिश्री बहुत प्रसिद्ध है । बहुत-से यात्री यहाँकी मिश्री घरका भा ले जाते हैं । मन्दिरके बाहर क्षीरसागर नामका एक ताल है । कहते हैं, यह मूर्ति राजा बज्रनामसी स्थापित

गोवर्धन

गोवर्धन या गिरिशान मधुगणे १६ मास्का दूरीपर छे, यहाँ मोटर या तंगे आठिने वा मक्ने छे । यह गौर गोवर्धनपर्वतके समीप शीर उमके ऊपर बसा हुआ छे । गोवर्धनपर्वत न बहुत ऊँचा छे और न घाँटा छे । रहते छे, यह पहाड़ बहुत ऊँचा था, और अब जेमे जेमे काँड्युगका प्रभाव बढ़ता जाता तेरेमे जैसे छे ये पृथिवीमे घुमते जात छे । इस समय हाथा ऊँचाई १०० फीटसे अधिक बढा नही छे । इन्हें सब लोग बहुत पूज्य दृष्टिमे देखते छे, यहाँके निजामा भी इनके ऊपर जना पहनकर नही चढ़ते । आपदा शु० १५ और

गोवर्धनपर्वतके इनकी परिणामा भी हानी छे । बहुत-से

मानो इनका दृष्टयता परिक्रमा करते हैं । यह परिक्रमा सात कोश की है । इसमें षड सुन्दर और एकान्त स्थान हैं । जमें भजनान्ता महामात्रका यह स्थान अत्रिक पसन्द है और अरिस्तार वे गायनकी परिक्रमामें हा कहीं न-कहीं रहते हैं । परिमानभीगगाम आरम्भ होनी है । इसमें ब्रह्मकुण्ड, दानगी गाराचाकुण्ड, किराकुण्ड, मारवन, माधुरीकुण्ड, राधाकुण्ड ए धुसुमसरोवर आदि बहुत-से प्रसिद्ध स्थान आते हैं ।

मानसीगगा—यह गौरवन गाँवमें एक बहुत बड़ा पड़ा सरोवर है । इसके तीन आर मन्दिर और एक आर गिरिराज सुशोभित हैं । कार्तिकी अमास्याको इसपर जंसी दीपावली होनी है वैसी अपत्र कहीं नहीं होती । इस सरोवरको भगवान्ने अपने मनसे ही प्रकृत किया था । इसका खान गगाखानके समान ही महत्त्व रगता है । मानसीगगार श्रीशुभनीनारायणजीका मन्दिर है, जो उत्तर भारतमें रामानुजसम्प्रदायकी गौरधनगरीके नामसे प्रसिद्ध है । इसीके तटपर भरतपुरके राजाओंकी उत्रिया (समाग्रियाँ) हैं । वे बहुत सुन्दर बनी हुई हैं ।

यहा कद् धर्मशास्त्रों हैं, निनमें सज्जनसिंह सिंहनी और तुलाराम साधूरामकी धर्मशास्त्रों बहुत अच्छी हैं । एक किशोरीगल बनायाग्य भी है । इसे किशोरीगलजी कलरुतेवालोंने दो लाख रुपमें लगाकर स्थापित किया है । इसके सिवा यहाँ कयापाठशाला, मिडिलस्कूल, डाकघर तथा तारघर आदि भी हैं ।



बरसाना

गोरधनमे बरसाना मान कोस है । कच्चा रास्ता है । डींग होकर पत्नी गढ़क भी गयी है । अधिमंश यात्री डींग होकर ही जाते हैं । इस रास्ते यह २१ मीठके लगभग पड़ता है । बरसाना श्रीरात्रिजीका पितृगृह है । यहाँ एक उँची पहाड़ीपर लाडिलीजी का मन्दिर है । यहाँके अधिमंश लोग श्रीजीके ही उपासक हैं, वे 'राधे-राधे' कथा करते हैं । लाडिलीजीके मन्दिरकी सेवा-पूजाका बहुत अच्छा प्रवन्ध है । पहाड़ीपर मन्दिरतक सीढ़ियाँ बनी हुई हैं ।

मन्दिर भी बहुत विशाल और सुन्दर है । इसीके बरामत नरेशजी मन्दिर है । वह भी बड़ा हा मनोहर है । यह - ब्रह्मारूप मानी जाती है । इसके चार शिखर हा चार मुक्त हैं चिनपर चार मन्दिर बने हुए हैं ।

पर्यटनके नीचे बस्ती है । उसमें भोजनादिकी आवश्यक वस्तु मिल जाता हैं । वस्ती और उक्त पहाडोकी परिक्रमामें बहुत से मन्दिर और सरांर हैं, जिनमें गहरखन, वृषभानुसरोर, साँररीखोर, मानगू और त्रिशसगढ़ आदि प्रसिद्ध हैं । गहरखनमें शारायणदास नामक एक ब्राह्मण भजन क्रिया करते थे, उह स्वप्न देकर रात्रिकाजा कहा था कि अमुक स्थानमें मेरी प्रतिमा है, उसे निकालकर स्थाप करो । उहीने लाडिलाजारी स्थापना की और उनके वशधर हा उनके पुजारी हुए । साँररीखोर में पर्यटकोंके बीचमें एक तारापाटी है । वहाँ एक कदम्बका वृक्ष है, जिसके पत्ते दोनेके आकारके होते हैं । मानगूह वह स्थान है जहाँ भगवान्ने मानवता रात्रिका जीको मनाया था ।

समाना बड़ी सुन्दर वस्ती है । यहाका दृश्य देखते ही बनता है । यहा भाद्रपद शु० ८ से १४ तक बड़ा मेला होता है । यहाका होनी दर्शनाय होती है । जलप्रायुक्ती नदिसे भी यह स्थान बहुत अच्छा है ।



नन्दगौव

वर्मानेस तान मोर नन्दगौव है । इत दोनोके बीचमें प्रम-
नगौर नागका एक मुन्दर तार है । इस स्थानपर श्रीराज कृष्णरा
पुष्पिजन हुआ पतता था । इसके समीप हा सठ गुप्तसहायमन्त्रका
वनवाया हुआ श्रीराजपुत्रिनामर्जाका मन्दिर है । नन्दगौव न दबावाजा-
का निवासस्था है, इसे नदिप्रवास भी कहते हैं । नन्दगौव और
वर्मानगौवमें अभीनक परस्पर समप्रियानेका भार चलता है ।
होटाके समय दोनों परस्पर होठी खेलते हैं । नन्दगौवगळे अपनेको
वर्मानगौव मानते हैं और वर्मानगौव अपनेको कन्यापक्षका ।

हरिद्वारा स्नान सिद्धिदायक, तर्पण और अस्थिप्रसाह प्रधान वर्त-
 द । कर्पुमेरु और रगतत्रिविक्रि त्रिये तो यहा रक्षनात्रक
 दसात्मा ही प्रधानता है । मरिहोकी यहाँ अस्थिता नहीं है ।
 न कुठ ह वै भी जहुन प्रा िन नडा ह । यद्वर्य पाच तर्पणे
 गनात्िका रिगत मात्ाम्य है । इम त्रियमे यहा धरक प्रसिद्ध है—

हरिद्वारे दुशापत त्रियके नील्पर्वते ।

स्नातना कनगल तीर्थ पुनर्जन्म न त्रियते ॥

भर्षत हरिद्वार (हरिकी पैडा), कुशावर्न, त्रिव्योम्बर
 नील्पर्वत और कनगल इन ताथामे स्नात करनमे पुनर्जन्म नहीं
 होता ।

हरिकी पैडी-पही प्रगान हरिद्वार है । यहींसे श्रीभागारथी
 त्रिमायत्री गान्धे त्रियत्रय मन्तनमे पदार्पण करती हैं । यह घाट
 ऊपरसे नीचेतक पडा बना हुआ है । इसके दाहिनी ओर दो-तीन
 मदिद है । घाटके ऊपर का भी व्यक्ति जूता पहनकर नहीं जा
 सकता । हरिकी पैडियोंके सामने थोड़ी दूरपर ग्गाजीके बाचमे
 एक लम्बा-चीडा चतूतरा है, त्रिसे प्लेटफार्म कहत है । प्लेटफार्म
 और पैडियोंके बीचमे जो श्रीगगाजीका भाग है उसे ब्रह्मकुण्ड कहते
 हैं । इसके उत्तरी आर दक्षिणी दोनो त्रियोंपर प्लेटफार्मपर जानेके
 त्रिये तो पुठ उने हुए हैं । ब्रह्मकुण्डके स्नानना बडा ही माहात्म्य
 है । इसामे अस्थिप्रसाह भी त्रिया जाना ह । यहाँके तीर्थगुरु त्रि-
 पूर्नक अस्थिप्रसाह कराते हैं । कहते हैं, त्रिन पुरुषोंकी अस्थिया
 इस कुण्डमे प्रसाहित की जाती हैं उनको त्रिष्णुलोकाकी प्राप्ति होती

है। ब्रह्मकुण्डमें बहुत मी मउटियाँ रहती हैं, उह यात्री आटेकी गोटियाँ बिगते हैं। वे श्ममें आन-दसे फ़िरोल करनी रहता है और मनुष्योंसे प्रिन्कुल नहीं टरती। पहले यह घाट छोटा ही था। इसलिये कुम्भके अउसरपर बहुत प्रबध करनेपर भी भीडकी अरिक्तताके कारण सैरुडों मनुष्य दनकर मर जाते थे। अब इसके उत्तरकी ओरके कुछ मकान गिराकर इसे पहरेकी अपेक्षा बहुत बड़ा दिया है। प्लेटफार्मपर सायकालमें बडी चहल पहल रहती है। बहुत-से महामा ओर देश निदेशके नर-नारी दिग्वायी देते हैं। कथा उपदेश हो रहा है, कथा कथा हो रही है, कथा कोर्ण दार्शनिक विचार चल रहा है और कहीं ज्ञान ओर खाने-पीनेका टग-डौंग दियायी देना है। जिस समय हरिकी पैडियोंपरसे गगानीकी आरती की जाती है उह दृश्य भा बडा ही अपूर्ण होता है। घाटके मदिरोमें श्रागगाजी, शिरनी, श्रीराधाशृष्णनी ओर श्रासीतारामजी आदिकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ स्नान ओर देवदर्शन करके प्राय सभी यात्रियोंका चित्त प्रसन्न हो जाता है ओर वे एक अपूर्ण पवित्रता एव स्फूर्तिका अनुभव करने लगते हैं।

कुशार्त—यह हरिकी पैडियोंसे दक्षिणकी ओर थोड़ी हा दूरीपर गगाजीका एक घाट है। इस स्थानपर पितरोंको पिण्डदान करनेकी विधि है। यहाँ मेपकी मकान्तिपर विशेष भीड़ होना है। इस घाटपर यात्रियोंके सुभीतेके लिये इन्दौरनरेशने एक लम्बा छायादार चबूतरा बनवा दिया है। स्कन्दपुराणमें लिखा है कि जो पुरुष श्म तीर्थमें स्नान, दान, जप, होम, पिण्डदान, श्राद्ध ओर तर्पणादि

करेगा उमर का पूरा उमर अनंत फल देनेवाला होगा। इसी पुराणमें हमनी उपनिषद् श्रित्तमें ऐसा लिखा है एक बार श्रीमन्नारैयनी यहाँ एक श्रममें लड़े होकर तपस्या कर रहे थे। उन्होंने अपने वस्त्र, भाग्यन्त्री पूजाका सामग्री और बुझ आदि गंगातीरके तटपर रख दिये थे। जिस समय वे ध्यानमें लगे। गंगातीरके एक प्रवाहमें वे सब बह गये, किन्तु उनके तपोमलसे वह गंगातीरका प्रवाह रुक आरतामर प्रूमन लगा। जब ध्यान टूटनेपर उन्होंने यह सब देखा तो उन्हें कुछ क्रोध हुआ। किन्तु उस समय देवताओंने प्रार्थना परके उन्हें शांत किया। तब देवताओंने ब्रह्मादिक देवताओंसे कहा कि आपगोत्रके अनुरोधसे मैं यह वर देता हूँ कि आजसे यह स्थान एक पवित्र तीर्थ बनगा। इसने मेरा बुझ आदि सामग्री रक्षा का है, इसलिए लोग इसे कुशावर्त कहेंगे। आप सब लोग यहा निवास करें। तब देवगण 'तथास्तु' कहकर अंतर्धान हो गये। आर यह स्थान कुशावर्त नामसे प्रसिद्ध हुआ।

विन्ध्यकेशर—हरिद्वारसे पश्चिमकी ओर रेलवे लाइनके दूसरे पारमें एक पहाड़की नीचे विन्ध्यकेशर महादेवका मंदिर है। यहा विन्ध्य (नेत्र)के वृक्ष अधिक हैं। इससे ये विन्ध्यकेशर कहे जाते हैं। मंदिर छोटा सा ही है और बहुत पुराना भी नहीं है। एक शिखरिण मंदिरके भीतर है और एक उसके सामने एक चतूरेपर नीमके घुलने नाचे। मादम होता है यहाँ पहले कोई विशाल विन्ध्यवृक्ष था, जो अब नष्ट हो गया है क्योंकि गरुडपुराणमें लिखा है कि महा (उम विन्ध्यपर्वतपर) एक शिखरका वृक्ष है, उमव

नीचे एक शिवलिंग है, जिसके दर्शनमात्रसे मनुष्य शिवगुण हो जाता है ।*

त्रिच्यपर्जनके पाले गोरीगुण्ड है । इममें स्नानादि करके ही त्रिच्येश्वरके दर्शन किये जाते हैं । यह एक कुण्डके समान है । इस स्थानपर बन्दरोंकी अधिकता है । पुराणोंके आधारपर पता चलता है कि किसी समय यहाँ गगाजीका प्रवाह था । यह प्रदेश बड़ा ही मनोरम है । मन्दिरके पाम ही ऋचीक मुनिका आश्रम और एक गुफामें दुर्गादिजीकी मूर्ति है ।

नीलपर्वत—यह गगाजाके दूसरी ओर एक पहाड़ी है । इसके नीचे गगाजीकी जो शारा गहती है वह नीलगारा कहलाती है । पर्वतके ठीक शिखरपर चण्डीका मन्दिर है । यह स्थान हरिद्वारमे प्राय २-२॥ मील पड़ता है । पर्वत चढ़नेके लिये दो रास्ते हैं— गौरीशंकर महादेवके मन्दिरसे और कामराजकी कालीके मन्दिरसे । इनमें पहलेसे चढ़ना और दूसरेसे उतरना चाहिये । ऐसा करनेसे इस पर्वतकी परिक्रमा हो जाती है और मार्ग भी अच्छा कटता है । चण्डीके मन्दिरसे आसपासका सारा प्रदेश दिखायी देता है । बड़ा ही मनोरम दृश्य है । सारी थकान दूर हो जाता है । चण्डाके पास अञ्जनादेवीका छोटा-सा मन्दिर है तथा पर्वतकी तलेगीमें नीलेश्वर महादेव हैं । यह पर्वत नील नामक एक शिवगणकी तपस्याका स्थान है ।

* तत्रैको नित्त्वृक्षस्तु तस्यथ शिवलिङ्गवम् ।

दर्शनाभाषेण शिवता याति मानव ॥

इनरवल—यह हरिद्वारके प्राय तीन मील दूरिगरी अं
 ५ मील दूरी है। इसका विनाम प्राय हरिद्वारके समान है।
 मा, जाने जा रा थार मंगलनादिके स्थान भी यत्रोगे कम नहीं है।
 ११३। पर भी यहाँ भी चहल-पहल नहीं है। विनाम पुरे
 विनाम जाय प्राय सग है। यह मूलान-मा रूपा है। यहाँ
 मंगलनाम विनाम बहुत से घाट और मलागअके स्थान है।
 कल १२३ स्थानोमे एक प्रजापतिना मंदिर और यत्रोमे रामना
 प्रान है। एक प्रजापतिना स्थान कलगरी दक्षिणी समार
 गगातक तटपर है। इसमें दशेश्वर महादेव तथा वीरभद्र और भद्रकालीके
 मंदिर हैं। एक कुण्डमें, जिसे मतीकुण्ड कहते हैं भस्म रहते
 हैं। कहते हैं यह वही यानुण्ड है जिसमें दक्षयनके माय सर्पने
 देहपाग किया था। कुण्डक उपर चार राभोपर गुम्बजदार छत है।
 यात्री यह भस्म श्रद्धापूर्वक मस्तकपर चढ़ाने हैं। शक सिमा एक
 दाठानमें हनुमाननाम भी मूर्ति है। कनक आनेवाले यात्री
 दक्ष प्रजापतिके स्थानपर अवश्य आते हैं। रामवाट कलगलके बीचमें
 है। यहाँ स्नान तथा तर्पणादि क्रिये जाते हैं।

हरिद्वार एवं कनखलके अन्य स्थान

श्रवणनाथ महादेवना मन्दिर—यह मंदिर कुशावर्तके
 समीप है। इसे श्रवणनाथ नामक एक महात्माने बनवाया था। यह
 पत्थरका बना हुआ शिखरदार मंदिर है। इसमें पञ्चमुखा महादेवकी
 मूर्ति है। मन्दिरके सहनमें ५ फीट लम्ब और ३ फीट चौड़े
 सगरमरके नदीधर है। इनके आसपास और भी छोटे छोटे मंदिर

हैं, निनमेंसे एकमें स्वामी श्रवणनाथजीकी भी सगमरमरकी प्रतिमा है। इस मन्दिरके चर्चके लिये कुछ गाँव लगे हुए हैं।

श्रीगगाजीका मन्दिर—यह श्रवणनाथजीके मन्दिरसे पूर्वकी ओर है, इसे महाराज बीरानेरने बनवाया है। वमम सदापर्व भी मिलता है।

गोघाट—यह घाट हरिकी पैड़ी आर कुशापर्वने बीचमें है। यहाँ गोहत्याका प्रायश्चिन कराया जाता है।

चौबीस अवतार—यह हरिकी पंढीसे उत्तरकी ओर गगा-तटपर काँगड़ेके राजाका बनवाया हुआ मन्दिर है। इममे विष्णुभगवानके चौबीसों अवतारोंके दर्शन होते हैं।

भीमगोडा—यह हरिकी पैड़ीसे प्राय एक मील उत्तरकी ओर ऋषिकेशवाली सबके बायीं ओर है। इसके ऊपरमे रेलवे लाइन गयी है। नीचे छोटा सा मन्दिर ओर उसके आगे एक चतूतरा तथा पक्का कुण्ड है। कहते हैं, भीममेनके घुटना दानेसे यह कुण्ड उभन्न हो गया था।

मायादेवी—यह मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दीका बना बनलाया जाता है। देवीकी प्रतिमा तीन शिर आर पाँच भुजाओंकी है। इसके पास ही अष्टभुजी शिव और भैरवजीके भी मन्दिर हैं। ये तीन मन्दिर बहुत पुराने बतलाये जाते हैं।

आमादेवी—हरिद्वार स्टेशनसे थोड़ी दूर लाइनके दूसरी ओर एक पहाड़ी है। उसके उपर आमादेवीका मन्दिर है। रास्ता दुर्गम है, परन्तु यहाँका दृश्य बहुत सुन्दर है।

मायापुर—यह बनारस और हरिद्वारके बीचकी बस्ती है। मानसम पहाड़ मायापुर या मायापुरी ही प्रान नगर था। यह बहुत विस्तृत और वैभवसम्पन्न था। परन्तु अब केवल उसका कुछ गडहर हैं, जिनमें प्राचीन मूर्तियाँ, ईंट पत्र खम्भे आदि मिल जाते हैं। यहाँ राजा जेनमी उजड़ी हुई गद्दी बनी हुई है।

सममरोर—यह हरिद्वारके उत्तरमें है। यहाँ गंगाजीके कुछ धाराएँ हो गयी हैं। कहते हैं, इस स्थानपर सप्तधियोंका तप किया था और यहीं धृतराष्ट्र तथा विदूरजीने देहत्याग किया था। यहाँसे ज्वालामुखी उल्टी एक ही म्युनिमिपैलिटीके अधीन है जो यूनियन म्युनिसिपैलिटी कहलाती है। यह उम्ती ज्वालामुखी कनकपुर, मायापुर और हरिद्वार इन चार विभागोंमें बँटी हुई है।

नहरगंग—यह नहर मायापुरके पासमें श्रीगंगाजीसे निकली गयी है। गंगाजीसे निकली हुई नहरोंमें यह सबसे बड़ी है। यह कानपुरमें फिर गंगाजीमें ही मिल गयी है। इसके उद्गमस्थानके पास गंगाजीपर एक पुल बनवाया गया है, जिसमें छोटे-बड़े फाटक लगा दिये गये हैं। उहे उद कर देनेपर गंगाजीका सारा जल नहरमें आ जाता है। वर्षाकालमें एक फाटकर खुला रहता है, इसलिये नहरमें आमतौरसे अधिक जल नहा आता।

प्रधान मस्थाएँ

श्रीपिठुल—यह मनातनधर्मियोंकी प्रसिद्ध शिक्षा मस्था है। इसकी स्थापना सन् १९०६ ई०में हुई थी। यह मायापुरमें नहर और पकी महकके मिनारे हैं। इसमें प्राचीन शैलीसे बने, वेदांग,

दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष और आयुर्वेदादिकी शिक्षा दी जाती है। यहांके आयुर्वेदविभागको गर्भमेण्टसे दश सहस्र वार्षिक सहायता मिलती है। वमें डाक्टरोंकी भी शिक्षा दी जाती है तथा शिक्षा ममात कर लेनेपर विद्यार्थियोंको L M S की उपाधि मिलती है। साथ ही अग्रेजी, गणित, भूगोल और शिल्पकलादि सामयिक विषय भा पढ़ाये जाते हैं। इस संस्थामे रात्रिके चरित्रगठन और धार्मिक संस्कारोंपर विशेष ध्यान रक्खा जाता है। यहाँ ३००के लगभग ब्रह्मचारी हैं। ब्रह्मचारियोंसे २००) प्रारम्भिक व्यय और १००) वार्षिक लिया जाता है। इसके संस्थापक रायमाहन प० दुर्गादत्त पंत हैं।

गुरुकुल—यह आर्यसमाजियोंकी प्राचीन पद्धतिकी सबसे बड़ी संस्था है। इसे सन् १९०८ई०म महामा मुशीरामजीने (जो पीठे स्वामी श्रीद्वानन्दजीके नामसे प्रसिद्ध हुए थे) स्थापित किया था। यह संस्था उत्तरोत्तर उन्नति कर रही है। इमें अनेक छात्रों रुपयेकी इमारत बन गयी है। यह पञ्जाबप्रतिनिधिसभाके अधीन है। अबतक इससे प्राय २०० स्नातक निकल चुके हैं। उनमेंमे अधिकांश धर्मप्रचार तथा शिक्षामन्वन्धी क्षेत्रोंमें कार्य कर रहे हैं। किहीं किन्हींकी साहित्यिक सेवा भी स्तुत्य है। यह संस्था स्वतन्त्र जीवननिर्वाहका मार्ग दिखानेवाली है। इसके स्नानशाला, विद्याशाला, वेदालय, सिद्धान्तशाला, तर्कशाला, आयुर्वेदशाला आदि उपाधियाँ होती हैं।

जालापुर महाविद्यालय—यह भी आर्यसमाजकी ही संस्था है। गुरुकुलकी अपेक्षा इसमें प्राचीन संस्कृतिपर विशेष ध्यान रक्खा जाता है। इसमें संस्कृत साहित्यकी उच्च कोटिकी शिक्षा दी जाती है। इसमें १२सालका है। इसके ब्रह्मचारी काशी, मल्लिका और

गौर गौरी परमेश्वर ने हैं और उन्हें विद्याभ्यासकी उपाय
 भी जाता है । यह मन्त्रोंमें प्रयोज्योने कोई शुद्ध नहीं
 जाता । श्रावण अर्चनमें एक क्षाप्रस्थाश्रम है । जो आश्विन
 मन्त्र परमेश्वर जीवने अंग रहकर मान और श्रावण
 चारन मन्त्रोंमें जाता है उक्त उममें शुद्ध बनाकर रहनेमें
 श्रावण मन्त्र मन्त्र है ।

मन्त्रतपाठशालाएँ—हरिद्वारमें मन्त्रतपाठशालाएँ बहुत हैं ।
 मन्त्रतपाठशालाएँ मन्त्रतपाठशालाएँ हरिद्वारमें फरशाके बाद हरिद्वारमें ही
 नम्बर है । इन पाठशालाओंमें विद्यार्थियोंमें कोई शुद्ध नहीं
 जाता, किन्तु उनमें विभिन्न प्रकारमें उन्हें कुछ मन्त्रोंकी दी जाती
 है । या तो यहाँ ऐसी बहुत सी पाठशालाएँ हैं, परन्तु उनमें १०
 बन्धोरामकी पाठशाला, हरिद्वार गोपबन्धु-पाठशाला, भगवान्शिव
 धामविद्यालय, १० हरिद्वारमन्त्रतपाठशाला, पानीपतमन्त्रतपाठशाला
 तथा इन्दौर राजकीय पाठशाला आदि प्रसार हैं ।

अन्य मन्त्राएँ

साधुआश्रम—यहाँ साधुआश्रम भी बहुत हैं । उनमें
 अधिकांशमें भोजनादिकी भी व्यवस्था है । किन्हीं कि हीमें अपने
 अपने सम्प्रदायके साधुओंके मित्रों का जाना है और कुछ ऐसे भी हैं
 जिनमें किसी भी सम्प्रदायके साधु मित्रों का पा सकते हैं । ऐसे
 आश्रमोंमें बाराकालकमनीशालोंका क्षेत्र और मिथ पञ्जाब क्षेत्र प्रचलित
 हैं । अन्य आश्रमोंमें चेतनदेव अश्वतथी धुटी, दादूदास,
 महामण्डलाश्रम, अश्वतथमण्डलाश्रम, हरिहराश्रम, भोगगिरिआश्रम

योगाश्रम और गुरुमण्डलाश्रमादि प्रधान हैं। इनमेंसे कई आश्रमोंमें पाठशालाएँ भी हैं।

श्रीरामकृष्णसेवाश्रम—यह आश्रम कनखलमें है। श्रीराम-कृष्णपिण्डन सेवाको ही अपना प्रधान धर्म समझता है। उससे दीक्षा प्राप्त करनेवाले सन्यासी आर ब्रह्मचारी किसी न-किसी प्रकारका सेवाकार्य ही किया करते हैं। इस कार्यके लिये भारतके प्रान्त प्रान्त स्थानोंमें उनके सेवाश्रम हैं। मयुक्तप्रान्तमें हरिद्वारका सेवाश्रम बहुत बड़ा है। काशीके बाद इसका ही नम्बर है। इसमें अमहाय और टीन पुरुषोंकी चिकित्साका कार्य होता है और उनकी सब प्रकारकी सेवा बड़े प्रेमसे की जाती है। इस आश्रमका कार्य उदा ही मराहनीय और अनुकरणीय है।

सेवामित्तिनालचरमण्डल—इसका दफ्तर हरिकी पैड़ियके दाहिनी ओर है। यह सत्या प्रयागसेवासमितिके अंगीन है। उड़े-बड़े उत्सन आर पत्रोपर यह उडा काम करती है। नसकी ओरसे एक छोटी टिसपेसरी भी है।

धायुयानयात्रारूपनी—स १९३६ ई० से हरिद्वारमे हवाई जहाजद्वारा नदरी-केदारकी यात्राका प्रबन्ध किया गया है। परन्तु इन दोनों स्थानोंमें जहाजके उतरनेयोग्य मीदान नहीं है। इसलिये केदारके दर्शनार्थियोंको अगन्नमुनि और ऋगीनाथके यात्रियोंका गौचरचट्टीपर उतरना पड़ता है जो हरिद्वारमे क्रमश १०५ और ११० मी० दूर है। इन स्थानपर हवाई जहाजद्वारा यात्री १-१ घटमें ही पहुँच जाता है जो यात्री हवाई जहाजद्वारा अगन्नमुनिम उतरकर वहाँसे नौलीद्वारा केदारनाथ और बदरीनाथके

दर्शन कर फिर गोचर छोटना चाहे उसे २२६ मीठकी यात्रा करने होगी । जो गोचर उतरकर केरग बदरनाथजी दर्शन करने गटना चाहे उसे १४० मीठ चलना पड़ेगा । जहाजका किराया हरिद्वारसे अगस्तमुनि और गोचरतकका एक ओरका ४५ ४५ रुपया है । यदि आने-जाने दोनों ओरकी यात्रा जहाजमें ही की जाय तो ७५ रुपया गना है । और जो जहाजमें बैठे-बैठे आकाशसे ही बदरीनाथ और केदारनाथके दर्शन करना चाहें उन्हें १७५ रुपया देना होता है । गोचर या अगस्तमुनिमें जहाजसे उतरनेवाले यात्रीके लिये कुली और डाढ़ी आदिका प्रबंध हो सकता है, किन्तु इसकी सूचना जहाजकी कम्पनीको नीचे लिखे पतेपर एक सप्ताह पूर्व दे देनी चाहिये-

दी हिमालय एयर ट्रांसपोर्ट एण्ड सर्वे लिमिटेड,

नई दिल्ली ।

इस कम्पनीका तारका पता Air Transport है और फोन न० ३२५७ है । ऊपर जो किराया दिया है वह दो मनतकका है । यदि यात्री और उसका बोझ दो मनसे अधिक होता है तो अग्रिक बोझका १/२ सेरके हिसाबसे ओर किराया लगता है । इस यात्रामें केवल समय और श्रमकी ही रकब होती है परन्तु तार्ययात्राका महत्त्व और आनन्द तो पैदल यात्रा करनेमें ही है । इसलिये जो चल सकते हैं उन्हें तो पैदल ही यात्रा करनी चाहिये । डोंडी या झपान आदिसे यात्रा करनेसे भा मार्गका अच्छा आनन्द मिल सकता है । इससे गरीब लोगोंकी आजीवनिकामें भी सहायता हो जाती है । अस्तु, जिनकी जमीन रुचि हो वे उसी प्रकार यात्रा कर सकते हैं ।

उत्सव और मेले

हरिद्वारमें यों तो प्रत्येक अमावास्या ओर पूर्णिमा आदि तिथियों-पर यात्रियोंकी भीड़ रहती है, फिर भी कुछ निधियाँ ऐसी हैं जिनपर यहांके ज्ञानका विशेष महत्त्व समझा जाता है। लोगोंका विश्वास है कि श्रावणमासी मेंपत्नी सक्रातिके दिन ब्रह्मलोकसे भूतलपर उतरी थीं, इसलिये उस दिन यहां बड़ा उत्सव होता है। लाखों यात्री एकत्रित होते हैं तथा घोड़ोंका क्रय-विक्रय होता है। ज्येष्ठमासका गगादशहरा गगाजीका चमदिन है। इसलिये उम दिन भी यहां बड़ी खुशी मनायी जाती है। इनके सिवा सामन्ती अमावास्या ओर गारुणी पर्वपर भी यहाँके ज्ञानका बड़ा महत्त्व है। उम समय भी काफी भीड़ होती है।

कुम्भमेला—यहांका सबसे बड़ा मेला कुम्भका है। यह प्रति बारहवें वर्ष कुम्भके बृहस्पति हानेपर आता है। इसके बीचमें ३ वर्ष याद अर्जुम्भी आती है। उसपर भी बड़ी भीड़ होती है। कुम्भके अमरपर ब्रह्मजुण्डमें स्नान करनेका बड़ा माहात्म्य है। इसलिये उस समय यहाँ बड़ी भीड़ होती है। पर्वके समय असाध्य नर-नारी हरिकी पैड़ियोंपर ही स्नान करनेको दूट पड़ते हैं। पहले इस सवर्षमें सैरुड़ों मनुष्य टकर मर जाते थे, किन्तु अब उसका यथासाध्य सुप्रबन्ध किया गया है। हरिकी पैड़िका घाट बहुत बड़ा दिया गया है तथा भिन्न भिन्न सम्प्रदायके साधुओंके लिये स्नानका समय भी निश्चित है। एक सम्प्रदायके लिये निश्चित समयमें कोई दूसरा व्यक्ति नहीं आ सकता।

कुम्भ मन्थर हरिद्वारमें कई लाख यात्री एकत्रित होते हैं। यहाँ स्थानका समोच है, इसलिये गगनाके ऊपर नाचोंका पुत्र बनाकर दूगरा और वाजार लगाया जाता है और बहुत-से यात्री भी उता आर टरन्त हैं। इस समय यहाँ भिन्न भिन्न मन्थ्रदायोंके लागों साउ, राजा-महागना गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी आदि आते हैं। दूर-दूरसे सभी प्रकारकी दुकान आता हैं। तथा जगह-जगह अन्नक्षेत्र, औषधालय और सेवा समितियोंके दफ्तर खोले गिये जाते हैं। यह मेरा बराबर एक मामतक रहता है। कोई-कोई सज्जन पूरे महीने रहकर कल्पवास करते हैं।

हरिद्वार सात मोक्षदा पुस्तियोंमेंसे है। इसलिये बहुत-से लोग यहाँ प्राणपरित्यागके लिये भी रहते हैं। शास्त्रोंमें इस क्षेत्रकी बड़ी महिमा है। उत्तराखण्ड अनादिकालसे बड़े-बड़े महापुरुषोंकी तपोभूमि रहा है। हरिद्वार उसका मुग्व है। इस पवित्र स्थानकी जितनी महिमा कही जाय थोड़ी ही है। यहाँ अनेकों आश्रालय, अन्नभेन, डाकखाना, तारघर, कन्याशिक्षालय और पाठशालाएँ हैं। सयासियोंकी तो यह राजधानी है। इतने सयामा भारतवर्षमें सम्भवत अन्यत्र नहीं मिलगे। जलवायु भी यहाँका बहुत ही स्वास्थ्यप्रद है। बाजारमें सामान भी सब प्रकारका मिल जाता है।



सत्यनारायण

हरिद्वारसे उत्तरकी ओर चलनेपर प्रायः चार मीलकी दूरीपर श्रीसत्यनारायणजीका सुप्रसिद्ध मंदिर आता है। यह हरिद्वारसे श्रविकेश जानेवाली सड़कपर रायचाल स्टेशनसे प्रायः एक मील है। भगवान्की बाँकी बडी ही मनोहर है। स्वच्छ सङ्गमरमरकी मूर्ति है, जिसमें कुछ पीली-पीली चल्क मारती है। मंदिर सतलज्जी सिन्धीकी माता श्रीकर्मोवार्ज्जीका बनवाया हुआ है। इसकी लागत ५०००) के लगभग है। इसके आस पास कई धर्मशाळाएँ हैं तथा एक कुण्ड भी है, जिसमें पहाड़ी चर्मोंसे जल आता है। यह स्थान बड़ा ही मनोरम और दर्शनीय है।



ऋषिकेश

हरिद्वारसे ऋषिकेश जानके लिये पक्की सड़क और रेलवे लाइन दोनों प्रकारके मार्ग हैं। सड़कसे यह पन्द्रह मील दूर पड़ता है और रेलवेसे तेर्स मील। भगवती भागीरथीके दक्षिण तटपर चारों ओर पर्वतमागसे चिरी हुई यह पानन पुरी बड़ी ही मनोहर जान पड़ती है। स्कन्दपुराणमें लिखा है कि इसी स्थानपर भगवान् विष्णुने मधुनाैटमादि दैत्योंका संहार ओर रैभ्य ऋषिना उद्धार किया था।

तभीसे इसका नाम ऋषिकेश हुआ। यह स्नान बहुत प्राचिन काउसे ही बड़े-बड़े महामा और योगियोंका लोभ है। परन्तु यहाँ सधन जन और महात्माओंका कुटियों ही से मिल अब तो यह अच्छा करना हो गया है और सभी प्रयत्नों शक्यतः मामुप्री यहाँ मिल जाती है। यहाँकी आस्था इनके फल और मायु-आधन ही हैं तथा बस्ती भी अस्किर ~~द्वारा~~ ~~ज्यामिणी~~ ही है।

त्रिवेणीस्नान—ऋषिकेशमें स्नान करनेका प्रथम घाट त्रिवेणी तट है। यहाँ श्रीगङ्गाजीमें एक एकल नल मिला है। पाम ही कुठ उँचाईपर श्रीरामचन्द्रजीका स्नान और एक कुण्ड है, जिसे कुजाभक्त अपना ऋषिकेशकुण्ड कहते हैं। गङ्गानदीमें स्नान करनेके पश्चात् गीले वस्त्रसे ही स्नान करना किया जाता है। इस कुण्डमें तीन धाराओंका स्नान होता है, जो गङ्गा, यमुना और सरस्वती कहली जाती है। इनमें स्नानमें त्रिवेणीस्नानका फल मिलता है।

स्वामी विशुद्धानन्दनी धारा कालीकमलीगालोंको है। ये बड़े शिखर और निष्ठानान् महात्मा थे। उत्तराखण्डकी यात्रामें बड़े-बड़े कर्णोंका सामना होते देख आपने करुण हृदयमें उनकी निवृत्तिमा सङ्कल्प उठा और उसकी पूर्तिके लिये आपने इम मटान् सस्थाकी स्थापना की। ऋषिकेशम इसका प्रधान कार्यालय है। इसे देशके बड़े-बड़े धनी माना लोगोंका सहयोग प्राप्त है। इस सस्थाने उत्तराखण्डमें आर्यकृतानुसार बहुत-से अन्नसत्र, धर्मशाळा, आपरालय, अनायालय, विद्यालय, पौशाळा और वाचनालय स्थापित किये हैं। स्थान-स्थानपर इमकी बहुत-सी शाखाएँ हैं। उनके नाम हुण्डो-परचा करा लेनेसे यात्रियोंको अपन साथ रुपया पेसा रखनेकी जोखिम भा पड़ना नहीं होता। यात्रा करनेवाले साधुओंको बागजीकी चिट्ठी मिल जाने पर प्रत्येक चीपर मित्राकी सुविधा हो जाती है तथा गृहस्थोंको भी बाबाजानी चिट्ठा ले लेनेपर प्रत्येक पडापर अपने ठहरनेकी व्यवस्थामें विशेष सुविधा रहत है। इस सस्थासे जनताका बड़ा उपकार हुआ है। श्रीविशुद्धानन्दजीके पाछे इसके सञ्चालनका भार धारा रामनाथजीपर रखा था। उन्होंने इसकी बड़ी उन्नति की थी, उनके पीछे इसका प्रबन्ध एक कमिटीको सौंप लिया गया है, जिसके प्रधान धारा मनीरामजा हैं। उत्तराखण्डके यात्रियोंको बागजीकी चिट्ठी अवश्य ले लेनी चाहिये, उसके साथ ही उन्हें उत्तराखण्डके जलनी लागसे सुरम्भिन रम्बनेवाली एक ओषध भी मिलती है।

मिन्ध पञ्जाब-क्षेत्र—यह भी उत्तराखण्डका एक प्रधान सस्था है और इमका प्रधान कार्यालय भी यहीं है। जो जो कार्य बाबा

कालीकमलीगर्भके क्षेत्रद्वारा होते हैं वे ही यह भी करती है। इसकी स्थापना उसके पीछे हुई है और इसका कार्यक्षेत्र भी उसकी अपेक्षा कुछ कम है।

कैलासाश्रम—ऋषिकेशमं जो साधुओंके आश्रम हैं उनमें कैलासाश्रम प्रान है। इसके सस्थापक श्रीस्वामी धनराजगिरिजी महाराज थे। यह दशनामी सयासियोंका स्थान है और इसमें श्रीशङ्कराचार्य और भगवान् शङ्करके दर्शनीय मन्दिर हैं।

गङ्गाभेत्र—कैलासाश्रमके सामने गङ्गाक्षेत्र है। इसमें सायकालमें महात्माओंको भिक्षा मिलनेका व्यवस्था है।

मुनिकी रेती—कैलासाश्रमसे आगे मुनिकी रेतीनामक स्थान है। यह देहरी राज्यके अन्तर्गत है। यहाँ यात्रियोंका सामान तोल्फर कुलीको सौंपनेसे पहले उसका नाम-पता लिखकर उसपर कुलीके हस्ताक्षर कराकर एक चिट्ठी यात्रीको दे दी जाती है और उसी प्रकार दूसरी चिट्ठी यात्रीके हस्ताक्षर कराकर कुलीको दे देते हैं। इस कुलीके भागने अथवा चोरी करनेका भय नहीं रहता। जो यात्री पैदल नहीं चल सकते उन्हें डाँडी, श्प्यान या कण्डी किरायेपर करनी होती है। उनका प्रबन्ध भी यहाँ सुभीतेसे हो सकता है। इन तीनों सजारियोंमें डाँडी विशेष सुविगाननक एर सुंदर होती है। इसमें यात्री कुरसीकी तरह बैठ सकता है, तथा थोडासा सामान भी रख सकता है। धूप तथा वर्षासे बचनेके लिये इसमें ऊपर टप भी लगा होता है। जो लोग डाँडी नहीं कर सकते वे श्प्यान कर लें हैं। यह एक पीढेके ममान होता है। इसके दोनों

ओर लम्ब लम्ब बॉस कसे रहते हैं, जिन्हें क वेपर रखकर चार कुर्गी इसे उठाते हैं। इससे भी सस्ती कण्डी होती है। इसे एक हा कुर्गी उठाता है ओर इसमें बैठनेवाले यात्रीको भा बंसी सुविधा नहा रहनी। यह कुलीनी पीठार रहती है ओर इसमें बैठनेवाले यात्रीस मुग पीछेवा ओर रहता है।

ऋषिकेशसे केदारनाथ होकर बदगनाथ जाने-आनेका मार्ग प्राय एक मासका है। इसका कण्डीका भाडा प्राय ३०), शम्पानका प्राय १००) और डाँडीका प्राय १२५) होता है। इसके सिवा कुलियोंकी खुराक आर इनामका खर्चा और भी लगता है। यदि यमुनात्तरी-गङ्गोत्तरी होकर यात्रा करनी होती है तो किराया और भी अधिक लगता है। बोझेका भाडा प्राय १) प्रति सेर लगता है।

रामाश्रम—यह प्रहलीन स्वामी रामतार्थकी पुण्यस्मृतिमें स्थापित किया हुआ एक पुस्तकालय है।

धन्वन्तरिमन्दिर—यह ऋषिकेश ओर मुनिनी रताके बीचमें है। इसमें आयुर्वेदिक निद्यालय आर ओपरालय भी हैं।

म्यर्गाश्रम—रामाश्रमके सामने गङ्गाजाके दूसरे तटपर यह एक सुप्रसिद्ध आर सुरम्य स्थान है। श्रीगङ्गाजी आर पर्वतमाळके बीचमें प्राय डेढ़ मीऊतक सेऊँहों कुटियाँ और धर्मशालाएँ बनाई हैं, जिनमें सेकड़ों महामा ओर गृहस्थ यात्री निवास करते हैं। यह स्थान तपोभूमिके अर्तर्गत है। कलकत्तमे उद्मणशूलानकके स्थानको तपोभूमि कहते हैं। म्यर्गाश्रमके जन्मदाता स्वामी

आत्मप्रकाशजी थे । उन्होंने इस स्थानकी महत्ता प्रदर्शित करते हुए जननाको यहाँ आश्रम स्थापित करनेके लिये प्रेरित किया । तत्र सबसे पहले मामराज रामभग्न डालमिया चिड़ागालोंने इस आश्रमकी प्राय दो मील लंबी भूमि यहाँके जमींदारोंमें खरीद की । अब इस स्थानपर कुटियोंके अनिरिक्त अग्न अलग भण्डार, पुस्तकालय और बहुत से सुन्दर-सुन्दर निवासगृह बन गये हैं । यहाँ बहुत से सन्यासी ओर साधुलोग भजन करते हैं । उनकी सुविधाके लिये एक अन्नक्षेत्र आर सदान्त खुला हुआ है ।

यहाँकी रमणीयता आर शान्तिमय वातावरणको देखकर इस स्थानपर दिनोदिन कुटियोंकी मर्या बढ़ती जाती है । इस स्थानतक पहुँचनेके लिये आश्रमकी ओरसे एक नोका नियुक्त है, जो हर समय गङ्गाके आर पार आती-जाती रहती है । इसमें यात्रा करनेसे यात्रीको कोई महसूल नहीं देना पड़ता । स्वर्गाश्रममें जहाँ नाका लगनी है वहाँपर रामजुण्ड नामका एक पक्का घाट है । उसके पास ही श्रीरामेश्वर महादेवकी मनोहर बाँकी होनी है ।

उत्तराखण्डकी यात्रा ऋषिकेशसे ही आरम्भ होती है । यहाँसे यात्राके कई मार्ग जाते हैं । यात्री अपनी इच्छाके अनुसार उनमेंसे किसी भी मार्गसे यात्रा कर सकते हैं ।* यात्रा करनेसे पूर्व यात्रियों-

मागोंका विवरण गीताप्रेक्षे प्रकाशित 'श्रीरदरी-केदारकी' पुस्तकम दिया है ।

को निम्नलिखित सामग्री हगिद्वार या ऋषिभेशसे एकत्रित कर लेना चाहिये ।

२ ऊनी कम्बल ।

जोड़ा ऊनी पायताय ।

१ बांसकी टाठी ।

२ जोड़ा रगड़के तल्बेके जूते ।

१ अता ।

१ मोमी कण्डा, सामानको त्र्यसे उचानेके लिये ।

१ लालटेन ।

६ मोमबत्ती ।

१ छोटी बालटी ।

१ छोटा ।

२ सेर मेया ।

पिसा हुआ मसाला ।

दुलियोंके भाड़े आदिसे अञ्ज कम् से-कम् ५०) भोजन खर्चके लिये ।



ऋषिकेशसे केदारनाथ

लक्ष्मणझूला

बदरी-केदारकी यात्रा करनेवाले अत्रिक्रश यात्री लक्ष्मणझूला-देवप्रयाग होकर ही जाते हैं। जिन्हें यमुनात्तरी आर गङ्गोत्तरीकी भी यात्रा करनी होती है वे देहरादून या नरेन्द्रनगर होकर भी जाते हैं। उन मार्गोंकी अपेक्षा उन्हें लक्ष्मणझूला-देवप्रयागवाला मार्ग बहुत लम्बा पड़ता है। परन्तु तीर्थ प्रेमियोंको तो इसी मार्गसे यात्रा करनी चाहिये, क्योंकि इसमें श्रीगङ्गाजीका साथ रहता है आर कई तीर्थ भी आने हैं।

ऋषिकेशसे लक्ष्मणझूला प्रायः तीन मील है। यहाँ श्रीलक्ष्मणनकि दर्शन होते हैं। तथा गङ्गाजीको पार करनेके लिये एक झूलना हुआ पुल है। यहा गङ्गाजी चट्टानोंसे टकराती हर-हर घनि करती एक मद्धुचिन घाटम होकर बहती हैं। यहाँतक वे दोना आर पर्यन्तमाळा-से घिरी हुई हैं। उसके आगे पर्वतोंने उन्हें कुछ रुटफर बहनेका अवकाश दे दिया है। पाठ थोड़ा होनपर भी गहगई बहुत अश्वि है तथा जलकी गति भी तेज है। इसलिए उसे बाँध नहीं ज

समता। यही कारण है कि यहाँका पुल रम्भके ऊपर बना
 बनाया गया। दोनों तीरोंपर लोहेके ऊँचे ऊँचे रम्भ गढ़े गिये
 हैं। उनमें जो गजके अतरपर लोहेके तारोंके मोटे मोटे रस्ते बने
 दिये हैं, उनमें लोहेके मोटे मोटे सीरुके रंगे हुए हैं। अतः
 काठने तानोंका पुल बनाया गया है और ऊपरसे फर्रेट निकल
 हुए सीमेण्ट गिग दी गयी है। पहला पुल सन् १९२४ का बना
 गया था। तब कुछ समयकर यात्रियोंका नुकसानमें गहना पर
 फरना होती थी। प्रस्तुत पुल कलकत्तेके मेठ राय सूरजमलने
 अपने पिताजीकी स्मृतिमें बनवाया है। यह बहुत सुंदर और
 सुदृढ़ है। इसका उद्घाटन युक्तप्रान्तके गवर्नर सर मालकम हेलने
 ११ अप्रैल १९३० में किया था। यहाँ जा मिलानेप है
 उसमें यह भी ठिया है कि इस पुलको पार करनेका कभी कोई बर
 नहीं लिया जायगा।

लक्ष्मणशूला पार करनेपर श्रीवदरीनेदारका मार्ग मिलता है।
 जो यात्री पैदल नहीं जाना चाहते वे श्रृषिकेशसे देवप्रयागक
 लारीमें जा सकते हैं। पंदरके रास्ते श्रृषिकेशसे देवप्रयाग ४५ माइल
 है, किन्तु मोटरके रास्ते कुछ अधिक दूर पड़ता है (यथा ५) प्रति
 यात्री भाड़ा लगता है। मोटरसे जानेवाले यात्री कुली आदिका
 प्रबन्ध देवप्रयागमें भी कर सकते हैं। हम तो पैदलके रास्तेसे ही
 यात्राका वर्णन करेंगे।

शूलके उस पार सातापुण्ड आर सूर्यकुण्ड हैं। कई
 धर्मशालाएँ और साधु आश्रम उस तटकी शोभाको ओर भी बढ़ा
 देते हैं। थोड़ा आगे बढनेपर दायें हाथको श्रीस्त्यनारायणजीका

अति मनोहर मन्दिर दृष्टिगोचर होता है। इनके सिवा एक पाठशाळा और सदावर्त भी है। यहाँसे दो मील आगे गरुडचट्टी है।

गरुडचट्टीमे महादेवसैणचट्टी (८॥ मील)

गरुडचट्टीकी प्राकृतिक शोभा उड़ी ही मनोरम है। यहाँ केला तथा आमके सहस्रों वृक्ष लगे हुए हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये एक-दोमजिली धर्मशाळा है। उसके पास ही श्रीगरुडजीका सुन्दर मन्दिर है। भगवान् गरुडकी श्यामवर्ण प्रतिमा अत्यन्त दर्शनीय है, उनके पजोमें सर्प दिग्यायी देते हैं। मन्दिरके समीप एक स्वच्छ जलका झरना गिरता है, जो एक पक्षे सरोवरके रूपमें परिणत हो जाता है। इस सरोवरमें कटिप्रदेशतक जल रहता है। इससे अधिक होनेपर सरोवरसे निकरकर श्रीगङ्गाजीमें गिर जाता है। इसलिये उसकी निर्मलतामें कोई अंतर नहीं पड़ता। गर्मियोंमें बहुत से यात्री ऋषिकेशमें इस स्थानकी शोभा निहारनेके लिये आते हैं और गरुडजीकी सायनात्मिक आरतीमें सम्मिलित होते हैं।

यहाँसे दो मीलकी दूरीपर फूलचनी है। यह स्थान भजनानन्दी पुरणोंके लिये बहुत उपयुक्त है। ठीक गङ्गाजीके तटपर स्थित है तथा पीपलके वृक्षकी सघन छाया है। यहाँ फूलनदी और भागीरथीका सङ्गम होता है। आगे फूलनदीके झुलके पुलसे पार करके तीन मील जानेपर गूलरचनी आती है। इसके पाम हीमल नदी बहती है, उसके तटपर रसोई आदि बनानेका सुभीता रहता है। यहाँसे



होती है और टह मील चलनेपर महादेवसैणचट्टी पञ्चायती धर्मशाळा है और भगवान्दाम् सीतारामजी

रगूनवालोंकी ओरसे सदावर्त उगा हुआ है। यात्राके दिनोंमें पौसाज भां लगा दी जाती है।

इस प्रकार लक्ष्मणशूलासे महादेवसैणतक साढ़े आठ मील मार्ग चटकर यात्री ठहर जाते हैं। जो अधिक चलना चाहे वे आगे ठहर सकते हैं।

महादेवसैणसे चन्द्रचट्टी (१२॥ मील)

महादेवसैणसे आधा मील नार्गमोहनचट्टी है। यहाँ पाँच साठुमान आर पानीका नल है। रातमें ठहरने और भोजन बनानेका सुपास है। इससे टेढ़ मीठ जागलचट्टी ओर उससे टेढ़ माल आगे बीजनीचट्टी है। यहाँ मथन वृक्षोंका उषा और स्वच्छ जलका नल है। इस स्थानपर भारनाही कुलीलोग विश्राम किया करते हैं। फिर सात मालका चढ़ाई उतराईके पश्चात् कुण्डचट्टी आती है। बीचमें 'याडरालचणी' पड़ती है। गुलरचणीके पश्चात् श्रीगङ्गाजीकी धारा दूर पड़ जाती है। यहाँ पहुँचनेपर पत्तनके उपरसे उसका दर्शन होता है। इससे आगे तान मीलकी उतराईके पश्चात् चन्द्रमेखन आती है। यह निम्बुल गङ्गाजीके तटपर है। यहाँतक साढ़े बारह मीलकी यात्रा पूरी करके यात्री विश्राम करते हैं।

चन्द्रचट्टीसे व्यासघाट (१२॥ मील)

चन्द्रमेखनसे तान मील महादेवचणी है। यहाँ शिव-पार्वतीका छोटा सा मन्दिर आर मोदियाकी दुकानें हैं। यह चणी एक ऊँचे स्थानपर स्थित है।

यहासे ढाई मील आगे ओखलघाट और उससे एक मील आगे सम्भाल चट्टी है। इसके आस-पास आम, अनार, कचनार, केला आदिके वृक्ष और अनेकों जङ्गली लताएँ सुगोभित हैं। यात्रा-के दिनामें यहाँ गुरमुखरामजी अमृतसरपालोकी ओरसे पौसाला लगा दी जाती है।

उससे दो मील आगे पण्डा चट्टी है। ओर फिर एक मील आगे फाण्डी चट्टी आती है। इसकी बस्ती अथ चट्टियोंका अपेक्षा बड़ा है, अधिकांश दूकानें दो मजिला हैं। इनकी सजावट भी अच्छी है। एक गड़े झरनेसे काटकर बस्तीकी दूसरी ओर नलकी धारा लायी गयी है। इसमें बस्तीके दोनों ओर जल मिलनेकी सुविधा हो गयी है। यहा जगहिर नामके किमी नी पुरूपका बनयाया हुआ एक श्रीगोपाळजीका मन्दिर है। इनके सिवा एक बगीचा और अस्पताल भी हैं।

फाण्डी चट्टीसे एक मील आगे भेरोंताल चट्टी है। यहा शुकनेनी और गणेशजीके मन्दिर हैं। इस स्थानपर भेरोंजीने तप किया था। श्वेत गुलाब तथा अथ रंग त्रिरंगे फलोंवाले वृक्ष इस स्थानका शोभा बढ़ा रहे हैं।

भरोग्नाटसे दो मील आगे व्यासघाट चट्टी है। यह श्राभागीरथी और नासगङ्गाके सङ्गमपर स्थित है। चणपर पहुँचनेसे पहले प्यानगङ्गाका झूलता हुआ पुल पार करना होता है। यह पुल भा एननपूला पुठके निर्माता राय मूर्यमलजीका ही बनयाया हुआ है। यहाँ बाबा फाटीकमलीनागेका धर्मशाला है और जेठा भाई मूलचन्द पण्डितनाडेकी ओरसे सत्पार्त लग आ है। धर्मशाळा बहुत

सुंदर और एगाना है। यह श्रान्यामनीका तप स्थान है। एक छोट से मंदिरमें भगवान् व्यासजी श्यामर्ग प्रनिमाके दर्शन होत हैं। यह वन परित्र तार्थ है। इस प्रातमें मूर्य अथवा चंद्रमणि के अमरपर यहाँ स्नान करनेका विशेष महत्त्व समझा जाता है। कहते हैं, वृत्रामुखा शत्रु करनेकी कामनासे देवराज इन्द्रने भी इस स्थानपर तप किया था। यहाँ अरुणाना भी है।

व्यामघाटमें देवप्रयाग (९ मील)

व्यामघाटसे साढ़े तीन मीठ आगजी चट्टी और उसमें दो माठ उमरामू चने हैं। ये दोनों चणियों बहुत ठोटी हैं। फिर दो मीलपर सोड़ चने है। इस चणिका नल रूब जल देनेका है तथा गङ्गाजी भी पाम हा बहती हैं। यहाँ वृक्षोंकी आया है और बिन्दुओंका जोर है।

सोड़ चनेसे टेढ़ मीठ देवप्रयाग है। यह इस प्रान्तका एक अच्छा रमणीय कस्बा है। यहाँ भागीरथा और अलकनन्दाका सङ्गम होता है। यहाँके नानारमें सब आवश्यक वस्तुएँ मिल जाता है। यहाँ अरुणाना, पुत्रिस्तेशन, तारघर और कई धर्मशाखारें हैं। बाबा फात्रीमलीबालाकी धर्मशाखमें मदार्त भी है। देवप्रयाग और इसके आस पासके गाँवोंमें ही श्रान्दरानाके अत्रिकाश ढण्डोंके घर हैं। इन घरोंका सख्या चार सौके लगभग है। अलकनन्दाके पश्चिम ओर टेहरा स्टेट है और पूर्वकी ओर ब्रिटिश राज्य है। अलकनन्दा और भागीरथीका सङ्गम ही यहाँका प्रान्त तापस्थान है। यात्रालोग अलकनन्दाका लोहेका पुल पार करके सङ्गमपर

पहुँचते हैं। सङ्गम स्थानतक पहुँचनेके लिये नीचे मीढ़ियोंमें उतरकर जाना होता है। इस स्थानपर पहुँचकर चित्तमें बड़ा आनन्द होता है। दोनों सरिताओंका जल ऐसे वेगसे मिलता है कि उसमें घुसकर स्नान करनेसे यह जानेकी आशङ्का होती है। जिस उल्लासके साथ अल्कनन्दा अपने कलेवरको अपनी बड़ी बहिन भागीरथीमें लीन कर देती है वह देखने ही बनता है। मङ्गलम स्नान करके यात्रीलोग बेनाल तालापर श्राद्ध करते हैं। इसके ऊपरकी ओर एक राममन्दिर है। उसमें भगवान् राम और जानकीजीकी मनोहर मूर्तियोंके दर्शन होते हैं। कहते हैं, इनकी स्थापना भगवान् शङ्कराचार्यने की थी। परिक्रमामें अन्य देरी देवताओंकी मूर्तियाँ भी हैं। इस मन्दिरमें एक रघुनाथ पाठशाला भी है। मन्दिरका प्रवेश एक कमिटीसे होता है तथा इसका सेना-यूजाके लिये टेहरी-दरवारकी आरसे कुछ गॉंव लगे हुए हैं।

यहाँसे एक रास्ता भागीरथीका पुल पार करके बायी ओरसे गङ्गोत्तरी-यमुनोत्तरीको जाता है। किन्तु जिन लोगोंको केवल बदरी-केदारकी ही यात्रा करनी होती है वे अल्कनन्दाके इस ओरके मार्गसे ही जाते हैं। गङ्गोत्तरीकी सड़ककी अपेक्षा यह मार्ग विशेष सुविधाजनक है। देवप्रयागसे बदरीनाथ १२६ मील, केदारनाथ ०३ मील, गङ्गोत्तरी १३० मील, यमुनात्तरी ११३ मील और हरिद्वार ५७ मील है।

देवप्रयागसे श्रीनगर (१९ मील)

अब यात्रियोंको श्रीभार्गाग्नीका साथ होइकर रुप्रशासन श्रीअलकनदातीके किनारे किनारे यात्रा करनी होती है । तत्रप्रयागसे तीन मीलपर शिवाकोटि और यहामे तान मील आगे साताकोटि च । आनी है । फिर मीनाकाग्निमे तीर मीलपर रानीबाग चो है । पहाय यहाँ किली रानीका ल्यागया हुआ बाग था, परंतु सब फेसल कुठ आम आदिके वृक्ष दिगयी देने हैं । इममे तीन मठ आगे रामपुर चनी है । इम प्रकार गारह मील चलकर यात्री रामपुर चनीम विश्राम कर सकते हैं । यहाँ एक शीतल जलका झरना है ।

रामपुरसे तीन मील आगे दिगोटी चनी है । फिर दो मीलपर त्रिबेदार नामक तीर्थ है । इमके पास अलकनन्दा और खाण्डन नदीका सङ्गम होता है । यहाँ त्रिबेदार महादेवका मन्दिर है तथा परित्रमार्ग अर्जुनके चरणचिह्नके दर्शन होने हैं । जिन समय पाण्डव लोग वारह वर्षके लिये धनमें गये हुए थे उस समय महादेवजीमे दिव्यास्त्र प्राप्त करनेके लिये अर्जुनने इमी स्थानपर तप किया था । भगवान् शङ्कर किरानके रूपमें अर्जुनके नामने प्रकट हुए और एक शृंखरक लिये अर्जुनसे उनका घोर युद्ध हुआ । अंतमें अर्जुनके पराक्रमसे प्रमत्त होकर वे अपने वास्तविक रूपमें प्रकट हुए और उन्हें पाशुपत अस्त्र प्रदान किया ।

इसी स्थानका महाभारतमें खाण्डन वन कहा गया है । यहाँ नक्षत्र और अश्वसेनादि नाग, मायासुर, शार्ङ्गपक्षी तथा आर बहुत से उपद्रवी जीव रहते थे । उसे श्रीकृष्ण और अर्जुनकी सहायतासे

अग्निदेवने भस्म किया था। इस स्थानमें खण्डखण्ड अलकनन्दासे मिलती है तथा दूसरी ओरसे मार्कण्डेयगङ्गा भी आकर मिल जाती है। त्रिन्त्रिकेश्वर-मन्दिरसे इन तीनों नदियोंका दर्शन होता है। भगवान् त्रिन्त्रिकेश्वरके ऊपर चाँदीका छत्र लगा हुआ है, तथा जलके कई घड़ोंमें निरन्तर जलकी धारा गिरती रहती है।

यहाँसे कुछ आगे चलनेपर मङ्गलके ऊपर बायें हाथको एक साइनबोर्ड दिखायी देता है। उससे कुछ फामलेपर कमलेश्वर महादेव और श्रीलक्ष्मीनारायणके मन्दिर हैं। इन मन्दिरोंतक जाने आनेका मार्ग प्रायः आग्रा मीठ है। यह स्थान शङ्करमठ कहलाता है और इसे देवल ऋषिने स्थापित किया था। इस स्थानका माहात्म्य केदार-खण्डमें दिया है। भगवान् कमलेश्वरका मन्दिर प्राचीन शैलीका है। इसकी सेवा-पूजाका अच्छा प्रबंध है। मन्दिरकी स्थायी आय प्रायः पाँच सहस्र रुपये है। इसका प्रबंध एक महत्के हाथमें है।

यहाँसे आगे बढ़नेपर श्रीनगर आता है। यह त्रिन्त्रिकेश्वरसे दो माइकी दूरीपर है। पहले यह टेहरी राज्यकी राजधानी थी। किंतु अब ब्रिटिश गवर्नराल निलेका शासनस्थान है। यहाँकी वस्ता सन् १०५१ की गोहना चोखी बादसे नष्ट हो गया थी। फरत कमलेश्वर महादेवका मन्दिर बच गया था। वर्तमान श्रीनगर नये रूपसे बनाया गया है। यहाँ अच्छा चौपाटीका बाजार है, निममें बड़े बड़े महाजनोकी दुकानें हैं। इस स्थानपर तारघर, डाकघर, पुलिसस्टेशन, अस्पताल एव औपचार्य आदि सब प्रकारकी उपयोग-सथाएँ हैं, तथा दो बहुत अच्छी धर्मशाखाएँ हैं। उनका प्रबंध बाबा कालीरामजीगलेके हाथमें है।

श्रीनगरमें एक हारद्वार भी है। यहाँमें एक मन्दिर टाँकी
 की ओर पीड़ी हाती हुई चारद्वार रेलवे-स्टेशनतक गयी है और
 दूसरी पूरबी ओर स्ट्रप्रयागको गयी है। यहाँ कुली पनेसा भा है
 जो आर्यवक्ता हानपर बुद्धियोंका प्रवन्ध कर देती है।

श्रीनगरका एक प्रसिद्ध म्यान गीरोग मठ है। यहाँ शक्तिपु
 मगनाका मन्दिर है। मन्दिरसे लगा हुई एक धर्मशास्त्र और एक
 पाठशाला भी है तथा नागेश्वर महादेवका मन्दिर है। प्राचीन
 श्रीनगर श्रीकमलेश्वर महादेवके मनाय था, किन्तु अब यह उनमें
 प्राय एक मात्र आगे है। यहाँ अधनीर्य और धनुषभेज नामक दो
 पवित्र तीर्थस्थान हैं। कहते हैं, यहाँ आनवाय यात्रियोंको
 श्रारामेश्वर और श्राद्धारज्यगामी यात्रासे भी विशेष फल होना है।
 इसके समीप ही अरुन्धतीनामें एक जिलामय श्रीयत्र रखा हुआ
 है। उसकी पूजा वैष्णव महाभाजोग करने हैं। रानी सेनाके लिये
 देहरी दरवारमें कई गाँव लिये हैं।

भगवान् रामने राजका कर करके समिष्टनाका जानासे सहस्र
 कमठद्वारा कमलेश्वर महादेवनाका पूजन किया था। रानीमें
 इनका नाम कमलेश्वर हुआ। श्रारामचरितमानसमें जो नारदनाका
 मोहनी बात आता है वह विष्णुमोहिनीका पिता इस श्रीनगरका ही
 राजा था। इसे ही रामायणमें त्रिवानगर कहा गया है। विष्णुमोहिनाके
 रूप-लाभपर रीतिर नारदजीने श्राविष्णुभगवान्में उनका सा रूप
 मोगा। किन्तु भगवान्ने उनका मुँह चारके समान कर दिया
 और स्वयं स्वयंमें जाकर उस राजकाके वरण करनेपर उसे

अपने साथ ले आये। यह सारा रहस्य मुल्नेपर नारदजी बहुत स्पष्ट हुए और भगवान्‌को शाप दिया कि तुम्हें खीप्रियोगका त्रिपम क्लेश महन करना होगा। तथा वानरोंकी सहायतासे ही तुम अपनी प्रियाको प्राप्त करनेमें समर्थ होगे।

श्रीनगरका दूसरा नाम शिख्रप्रयाग भी है। इस पार्वत्यप्रदेशमें यह सनमे बड़ा नगर है। यहाँ सन प्रकारकी आनन्दयक सामग्री मिल जाती है।

श्रीनगरसे रुद्रप्रयाग (१९ मील)

श्रीनगरसे चार मीलपर सुररता चट्टी है। यह श्रीशुकदेवजीका तप स्थान है। यहा वृक्षोंकी उया ओर श्रीगगाजीकी सन्निधि है तथा यात्राक समय बागानीकी ओरसे पोसाग ओर आग्रहालय खोल दिये जाते हैं।

सुररता चट्टीसे साढे तीन मील भट्टीसेरा है। यहाँ यात्रियोंको पनचक्रीसे पिसा हुआ ताजा आटा मिल सकता है। यहामे टेढ़ मीलपर उनीग्वाल चट्टी है। उससे दो मालपर ग्वामरा चट्टी ओर फिर साढे तीन मीलपर पचायतीधार है। पचायतीधारसे ढाई मालपर गुलागराय चट्टी है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेका बहुत सुपास है। शरनेका मधुर जल ओर वृक्षोंकी उया है तथा हरे शाक भी मिल जाते हैं।

गुलागरायसे दो मील रुद्रप्रयाग है। यह उत्तराखण्डके पाँच प्रयागोंमेंसे एक है। यहाँ अलकनदा ओर मदाकिनीका मगम है। मगममें स्नान करनेके लिये अलकनदाको झुलाके प्रलसे पार करना

हाना है। यहाँमें कर्णनाथ जाकरने यात्रियोंसे अत्यन्तकी माय जोड़कर मन्दाकिनीके किनारे जाना होता है, जो धारुदानी तरु माय हा रहती है। सीध बदरीनाथ जानेवाले यात्री इस समय आरमे ही अत्यन्तकी पूर्वर्ती मार्गसे जाते हैं।

अत्यन्तदा और मन्दाकिनीके संगमें खान करनेके लिए यात्रियोंको सीढ़ियाँ उतरकर जाना होता है। यह घाट हजारोंमेंकी दुधवेगोंका घनगाया हुआ है। घाटके ऊपर कद्वेधर महादेवका मन्दिर है, जिसमें ताडकेदार, गोपाकेदार और अन्नपूर्णापाक भी दर्शन हात हैं। रुद्रेश्वरउम श्यामवर्ण हैं। इस स्थानपर नगरान् शकरने नारदजीको गानत्रिधाना उपदेश किया था। उस समय श्रीनारदजीने उनकी शिष्यसहस्रनामसे स्तुति की थी। आज भी यहाँ शिष्यसहस्रनामका नियपाठ किया जाता है। यहाँसे केदारनाथकी ५४ मील और श्रीबदरीनाथकी साढ़ चौतासी माउ हैं। हम थाकेदारनाथजी होकर बदरीनाथजानी यात्राका वर्णन करते हैं।

रुद्रप्रयागमें शुभमशी (२३॥ मील)

रुद्रप्रयागसे साढ़ चार मीलपर उस्ताली चढ़ी है। यहाँ निगम स्थान और जलका सुभाता है। उतागसे डेढ़ मील मठ चनी आर उससे एक मील रामपुर चनी है। ये दोनों गेटी चढ़ियाँ हैं। फिर रामपुरसे साढ़ तीन मील आगे अगस्त्यमुनि चढ़ी है। यहाँ अगस्त्य मुनिका प्राधान मन्दिर है और बस्ती भी पुरानी जान पड़ती है। यहाँ हवाई जहाजका स्टेशन है। केदारनाथ जानेवाले यात्रा इसी जगह उतरते हैं। यहाँ बाजारमें सब प्रकारकी रसय सामग्री मिल

जाती है। ठहरनेके लिये पञ्चायती धर्मशाला, सरकारी धर्मशाला और डाकबैंगला आदि हैं। सदानर्तका मा प्रबन्ध है। इस स्थानपर अगस्त्यमुनिने तपस्या का थी और पितरोके आदेशसे त्रिदर्भराज कुमारी लोपामुद्रामे विवाह कर दृढस्थुनामक पुत्र उत्पन्न किया था।

अगस्त्यमुनिसे आधा मीठ छोटे नारायणका मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान्की मनोहर मूर्तिके दर्शन होते हैं तथा उसके सामने रुद्राक्षके वृक्ष हैं। इससे साढ़े तीन माल आगे च द्रापुरी चनी है। यहाँ मन्दाकिनी और चन्द्रभागाका सगम हाता है तथा च द्रेश्वर महादेवका मन्दिर है। फिर तीन मील आगे भेरी चडी है। यहाँ भीमसेनने तप किया था। इस समय उनका एक मन्दिर विद्यमान है। इसके आगे तीन मीलपर कुण्डचङ्ग है। पहासे पढ़ाई आरम्भ होती है। तीन मील चलनेपर गुप्तकाशी आती है।

गुप्तकाशी एक ऊँचे पर्वतशिखरपर बसी हुई है। यहाँ विघ्नायजीका मन्दिर है, जिसका शिखर सुवर्णपत्रसे मढ़ा हुआ है। सामने गरुडजीका मन्दिर है। उसके आगे पठारकुण्ड है, जिसमें गणेशमुख्य आर गोमुखसे निरंतर दो धाराएँ गिरती रहती हैं, जिन्हें क्रमशः यमुना और गंगाजीकी धारा कहते हैं। कुण्डमें कटिपर्यन्त जल रहता है, इससे अधिक होनेपर एक नालामे निकल जाता है। मन्दिरके बायीं ओर एक ऊँचा सा मन्दिर है, जिसमें सगमरमरके नन्दीपर सगर अर्धनारीनटेश्वरकी मनमोहिनी मूर्ति है। मन्दिरके तीन ओर दो मन्दिषा धर्मशाला हैं, जिसमें पात्री-लोग ठहरते हैं। सायकालमें जब भगवान्की आरती हानी है तो मीठ हो जाती है।

इस स्थानपर पाण्डवोंने तप किया था। यहाँ लोग कस्तूर पात्रमें चारु, गोअ, मिठाई और रखादि रखकर तुलदान करते हैं। गुप्तकाशीके आस-पास श्राणिनपुर आदि गाँवोंमें वेदान्तके पण्डलोग रहते हैं। यह परमनिग्रहके ऊपर उमा हृदय एव सुदुर्घमस्ता है। यहाँ डाकखाना, तारघर और ओपगाल्य आदि भी हैं। नया बना कालोकमलीमालाकी धर्मशाला और सदान्त मा है। यहाँसे पूर्वतिर विशामें एक माण्डपर उपामठकी उम्मी है। शानकाल में जन श्राफेदारनाथजाके पट बट हो जाते हैं तब फारनाथके राजजा उनका चलप्रतिमाकी यही पूजा किया करते हैं।

गुप्तकाशीमें रामपुर (११ मील)

गुप्तकाशीमें एक माण्डपर नाथ चडी है। यहाँ राजा मल्ल भगवतीकी आराधना की था। इससे इसका नाम नाला चडी हुआ। यहाँ भगवतीका मन्दिर है। फारनाथजाके दर्शन करके यात्री यही होकर उपामठ जाते हैं, इसलिये ने यहाँ दुकानदारके यहाँ अपना फाण्ड सामान डोड दते हैं केवल आवश्यक वस्तुएँ अपने साथ रहन देते हैं।

यहाँसे दो माण्डपर मोतादेरी है। यहाँ एक मन्दिर भगवतीका और चार अथ मन्दिर भी हैं। किसी समय यह स्थान बड़ा रमणीक रहा होगा।

मातादवीसे दो मीलपर नारायणमठ है। यहाँ एक मन्दिरमें श्रीनारायणके दर्शन हात हैं। रास्तेमें मठके चर्तन मिलते हैं और इस स्थानपर पन्नचकीके समान जलसे काम करनेवाली एक मशान भी है। यहाँ एक मन्दिर भगवतीका भी है, जिसमें पुजारीयोग घुनका

दीपान और दुर्गामसदातीका पाठ कराते हैं। कहते हैं, इसी स्थानपर भगवतीने महिषासुरका व्रत किया था। यहाँमें एक मील आगे फाटा चनी है और फिर तीन मीलकी उतरार्ध-चढ़ार्धके बाद वादल चट्टी आती है। यहाँ ठहरनेका सुभीता है और हिमाच्छादित पर्वतमालाका बड़ा मनोहर दृश्य है।

वादल चट्टीसे दो मील आगे रामपुर चनी है। यहाँ बना काठीरुमलीपालकी धर्मशाला और सनातन है। जिन यात्री या साधुओंको आवश्यकता हो उन्हें पाच दिनतक ओढ़नेके लिये यहाँ कम्बल भी मिल जाते हैं।

रामपुरमें त्रियुगीनारायण (५ मील)

रामपुरमें त्रियुगीनारायणके पुजारी मित्र जाते हैं। यहाँसे डेढ़ मीलपर पाटागाड नदी ओर चनी है। इस जगहसे दो मार्ग जाते हैं, सामनेकी ओर श्रीनेतारनाथको और बायीं ओर त्रियुगी नारायणको। राया ओरके मार्गसे दो मीलकी कड़ी चढ़ार्धके बाद शाकरुभगदेवीका मन्दिर आता है, यहा तीन दिनतक शाकाहार करनेके व्रत करनेका विशेष माहात्म्य है। इसके पश्चात् एक मीलकी चढ़ाई ओर चढ़नेपर श्रीत्रियुगीनारायणके दर्शन हाते हैं।

त्रियुगीनारायणमें श्रीविष्णुभगवान्का मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान्की पान हाथ ऊँची अष्टधातुकी मूर्ति है। कहते हैं, इस स्थानपर भगवान् रुद्रकी प्रसन्नताके लिये श्रीविष्णुभगवान्ने तप किया था २५ जगमोहनमें घूनी है। इसके नियममें २

पहचान है कि इमा स्थानपर पर्यटनगज हिमालयने श्रीमहादेवके साथ अपनी पुत्री पार्वतीकी विवाह किया था। उन समय बहवन हुआ था उसका अपशेष वर्तमान धूनी है। इस धूनके अग्नि शांत न है। इसके लिये देहरादूरबारन कुछ जागरूक हो दी थी। उमे ब्रिटिश गवर्नमेंटने भा बड़ा ल रखा है।

भगवान त्रियुगीनारायणकी नाभिसे श्रीसरस्वती गंगाकी निकलता है। उसका जल सरस्वतीकुण्डमें जाता है और ति उमसे ब्रह्मकुण्ड, रुद्रकुण्ड तथा त्रिष्युकुण्डमें जाता है। इन कुण्डमें ब्रह्मकुण्डमें आचमन, रुद्रकुण्डमें स्नान और गुप्तदान, त्रिष्युकुण्डमें मार्जन तथा सरस्वतीकुण्डमें तर्पण किया जाता है। इन कुण्डमें पात्रे रगके सपोका एक जोड़ा रहता है। वे सर्प त्रिवेले नहा है। उनका दर्शन शुभ माना जाना है। परन्तु वे सर्पदा दिवाना नहीं देने।

त्रियुगानारायणमें दो तीन धर्मगाढाएँ हैं। उनमें ठहरनेका सब प्रकारका सुभीता है। यहाँमे दार् मीटकी खड़ी उतराई पर करनेपर मोनप्रयाग चही आती है। यहा पाटागाडमें जाडा हुआ श्रीकेदारनाथजीका मार्ग मिल जाना है।

मोनप्रयागसे रामराडा (७॥ मील)

सोनप्रयागम वासुकी गंगा और मन्दाकिनीका सगम हाना है। वासुकी गंगापर पार जानेके लिये लहेका झूलता हुआ पुल है। झूलाका बगसे सगमतक जानेका मार्ग है। यहाँ रात्रिमें ठहरने योग्य स्थान नहीं है।

सोनप्रयागसे एक मील सिरकटा गणेश हैं। यहाँ गणेशजीकी मस्तकहोन मूर्ति है। कहते हैं, एक बार पार्वतीजीने एकान्तमें स्नान करनेके विचारसे गणेशजाको पहरेपर बैठाकर आज्ञा दी कि किसीको भीतर मन आने देना। देवयोगसे इसी समय यहाँ भगवान् शंकर आये। गणेशजाने उन्हें भीतर जानेसे रोका। किन्तु गिरजी उनकी मान न मानकर उनसे युद्ध करने लगे तथा उन्होंने गणेशजीका मस्तक फाट दिया। जब पार्वतीजीको यह बात मालूम हुई तो उन्हें बड़ा खेद हुआ और उन्होंने पुत्रशोकग्रस्त अन्न जल छोड़ दिया। तब उनका शोक शांत करनेके लिये भगवान् शिवने एक हाथीका मस्तक जोड़कर गणेशजीको जीवित कर दिया। तभीसे उनका नाम 'गजानन' हुआ।

यहाँसे दो मील आगे गोरिगुण्ड है। उक्त कथाके अनुसार निस स्थानपर पार्वतीजीने स्नान किया था वह यही है। यही उनका जन्मस्थान भी प्रतीतलाया जाता है। यहाँ दो गुण्ड हैं। एकमें कुछ पौधे रगना शीतल जल है। यह बहुत गारा है और इनमें गंधकभी गन्ध आती है। यह जल एक गोमुपमे गिरता रहता है। इससे पच्चीस-तीस हाथकी दूरीपर एक उष्ण जलका कुण्ड है। इनसे पहले कुण्डमें स्नान और दूसरेमें तर्पण किया जाना है। इन कुण्डोंमें स्नान और तर्पण करनेके पश्चात् यात्रालोग श्रापार्वतानाके दर्शन करते हैं। यहांका बस्ती सुविस्तीर्ण और साफ सुथरा है। यहां सत्र प्रकारकी गन्ध सामग्री मिल जाती है। ठहरनेके लिये बाबा

फाल्गुनमलालोंकी धर्मशाळा है । केदारनाथपुरीमें मुण्डन करानकी विधि नहा है, इसलिये यात्रीलोग यहाँ मुण्डन करा लेते हैं ।

यहाँसे प्रायः एक मात्र आगे चारपटिया भँरें हैं । ये केदारनाथ जाके कातराल हैं । वहाँ जो यात्रा चार नहा चढ़ाना उसका यात्राका बहुत-सा फत्र भरोजी लगे होते हैं ।

यहाँसे आगे मालपर अमार चनी है । यह जगलके बीचमें है । केरल बनियेका एक दूमान है, उसीमें २५-३० यात्रियोंके ठहरनेयोग्य एक फूमकी खोपड़ा बना रगी है । यहाँ ग्याघ सामग्री बहुत महँगा मित्रनी है आर मर्दा अगिक पड़ता है । इस जगहसे आधे मीलपर भामशिला है । यहाँ गदाधारी भीमसेनकी मूर्ति है । फिर ठार माल आगे रामवाडा है ।

यह अच्छा उड़ी उस्ता है । रात्रा फाल्गुनमलालोंका धर्मशाळा आर सदावर्त है । झरनेका शीतल जल है । शात भी बहुत पड़ता है । चारों ओर हिमाच्छन्न पर्यन्तमाला दृष्टिगोचर होती है । कउ जगह उर्फका उड़ी उड़ी चक्रमें मन्त्राक्रियाके जलको आच्छादित कर लेता हैं आर उनके नीचे जल बहना रहता है । यहाँसे केदारनाथपुरी उँद मीठ है । वहाँ बड़ा असह्य शात पड़ता है । इसलिये बहुत से यात्री प्रातः काल केदारनाथजीके दर्शन कर उमी दिन रामवाडा लोट आते हैं । परन्तु ऐसा करना उचित नहा है । उस पुण्यक्षेत्रमें एक रात्रि तो अवश्य निवास करना चाहिये ।

केदारनाथपुरी

रामनाडामे दो मालका कड़ी चढ़ाईके बाद देवदेखनी नामका एक समतल स्थान आता है। यहाँतक जसो चढ़ाई है वसी हम यात्रामें अत्र कहीं नहीं पडती। देवदेखनीमे देवगिरेय श्रीकेदारनाथजीका मन्दिर, जो प्रायः टेढ़ माल दूर है, दिखायी देने लगता है। कहते हैं, केदारनाथजीके आस-पास कई प्रकारके त्रिप हैं। उनसे घात्री घनरा जाते हैं। यहाँतक चढ़ाई भी उड़ा ही निकट है। देवदेखनासे रास्ता साधा है। चारों ओर ऊँची ऊँचा हिमाच्छन्न पर्वतमाला दिखायी देती है। नदी और नालापर भी निरन्तर बर्फ जमा रहता है। उसपर होकर लोग आया जाया करते हैं।

पुरीमें प्रवेश करनेसे पूर्व मन्दाकिनीका पुल पार करना होता है। पुलके उस ओर मन्दाकिनीपर पक्का घाट है। जो लोग डाडियोंमें चढ़े होते हैं वे यहाँ उतर पडते हैं और केदारपुरीतक पैदल यात्रा करते हैं। इस पुरीमें कई धर्मशालाएँ हैं। उनमें रानी जयदेवा, जयरामदास भागवन्द वामणगात्राले, मुलानचन्द नागरमल और अग्निाय शिवकृष्णदासकी धर्मशालाएँ प्रधान हैं। जयरामदास भागवन्द तथा हजारीमठजी दुधवेगलेकी ओरसे सप्तार्थ भी मिलता है। यहाँ एक भवन सिमाहरनरेग महाराज पद्मसिंहजाका बनवाया हुआ भी है, जिसे उन्होंने अपने तीर्थपुरोहित ५० दातागम नारायणप्रसादको धर्मार्थ उपयोग करनेके लिये दान कर दिया है।

लेखनन इमामें निवास किया था । इनके सिवा यहाँ औपनालय और
पुस्तकालय आदि भी हैं ।

केदारनाथपुरा प्रायः ११ मील दूरी पर है । यहाँ शीतका
साम्राज्य है । लोगोंको रात्रिमें रहना कठिन होता है । इसउद्ये
आगमना यात्रा पहले दिन ही रामगढ़ या गौरीकुण्डको छोड़ जाते
हैं । यहा मन्नाकिता सरस्वती, क्षीरगंगा, स्वर्गद्वारी और महोदधि
एक एक नदियोंका संगम होता है । संगममें गोना लगाना प्रायः
असंभव है, इसलिये अधिकांश यात्री किनारेपर बैठकर लोटेसे ही
स्नान करते हैं । स्नानके पश्चात् पिण्डदान और तर्पण क्रिये जाते
हैं । नाथपुजारी पिण्डोंको एक पात्रमें रखकर हस्तकुण्डमें पधरा देते
हैं, हममें पितरोंको अक्षय शांति मिलती है ।

केदारनाथजीका मन्दिर बहुत प्राचीन है । कहते हैं, यह
पाण्डवोंका बनवाया हुआ है । पीछे धाशकराचापजीने इसका
जाणोंद्वार कराया था । मन्दिरके पास ही घृत, चन्दन, चनेकी
टाक, पुष्प, फल, वस्त्र, बिनस्पत्र, मिष्टान्न तथा मेवा आदि पूजाकी
सामग्री मिल जाती है । उसे लेकर यात्री श्रीकेदारेश्वरके दर्शनार्थ
जाते हैं । पहले मन्दिरके सामने मन्थानमें श्रीगणेशजीके दर्शन होते
हैं । उनका पूजन करके मन्दिरमें प्रवेश किया जाता है । मन्दिरके
दरपर दोनो ओर दो द्वारपार्श्वकी मूर्तियाँ हैं तथा बाहर दीवारमें पाचों
पाण्डव, कुन्ती, द्रौपदी, पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती आदिकी प्रतिमाएँ
हैं । गलानमें दाहिनी ओर श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजीके दर्शन
होते हैं तथा बीचमें नदीक्षर और गरुडजी हैं । मन्दिरके भीतरी
भागमें एक ओर पार्वतीजी और दूसरी ओर लक्ष्मीजी हैं तथा मध्यमें

श्रीकेदारनाथजीका अनगढ़ लिङ्ग है। केदारेश्वर द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक हैं। ये एक डेढ़ हाथ चौड़े, चार हाथ लम्बे और दो हाथ ऊँचे पत्थरके टाँके आकारमें है। इस त्रिपयमें ऐसी किरकटता है कि एक बार श्रीमहादेवजी भैसेका रूप धारण कर इस पर्वतपर निचर रहे थे। उस समय भीमसेनने उन्हें कोई जगली भैंसा समझकर उनपर गदाप्रहार किया। उससे उनका अगला धड़ तो पर्वतमें घुस गया और पीछेका भाग पत्थर हो गया। वही श्रीकेदारनाथजी हुए। अगले जट नेपालमें प्रकट हुआ और श्रीवशुपतिनाथके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

श्रीकेदारनाथजीको गगनलसे स्नान कराकर चन्दन, पुष्प एवं त्रिपयत्रादिसे पूजन करते हैं। फिर भोगादि समर्पणकर उनपर धृत मलकर उनका आलिङ्गन किया जाता है। मन्दिरमें अँबेरा रहता है। हमलिये इसमें धृतका अखण्ड दीप जलता रहता है। कार्तिकी पूर्णिमाके पश्चात् शीतकी अधिकताके कारण यहाँ रहना असम्भव हो जाता है। इस समय केदारनाथजीकी चाल प्रतिमाओं उग्रीमठमें ले जाते हैं तथा इस मन्दिरमें पूजनकी सारी सामग्री रखकर धृतसे भर हुए दीपकमें खड़ी धत्ती जलाकर पट बन्द कर देते हैं। ये पट वैशाख मासमें खोले जाते हैं। उस समय सारा मन्दिर रफसे ढका रहता है। पट खोलनेके लिये मजदूरोंको चर्क काटकर मार्ग निकालना पड़ता है। किन्तु वह दीपक जलता हुआ ही मिलता है।

श्रीकेदारनाथकी परिक्रमामें अमृतकुण्ड, ईशानकुण्ड, हस्तकुण्ड, रेतमकुण्ड और उदककुण्ड नामके पाँच कुण्ड हैं। इनमेंसे अमृत

आर इशानकुण्डम आचमन, हसकुण्डमें तर्पण, रेतसकुण्डमें अर्घ्य और घुटनेक वठ गामुख होकर आचमन क्रिया जाता ह । उदक-कुण्डका जठ मधुर ओर शीतल ह । इसमें तर्पण करनेसे मनुष्य मातृमृगणसे उन्नत हो जाता ह ।

श्रावदारपुरीसे तीन माल दूरापर 'भरवथाप' नामका एक शिला ह । पहले बहुत से यात्री मोक्षकी कामनासे उस शिलासे कूद पड़ते थे । इस प्रथाको ब्रिटिश गवर्नमेण्टने सन् १८७९ ई० से बन्द कर दिया ह ।

यद्यपि अत्यधिक शीत होनेके कारण यहाँ यात्रियोंका रात्रिके समय ठहरनेमें कष्ट होता ह तो मा इस पुण्यक्षेत्रमें उन्हें अवश्य रात्रिवास करना चाहिये और भगवान्की सायंकालिक आरतीके दर्शन करने चाहिये । श्रावदारपुरीमें वर्षा और बर्फकी अपिकृता ह तथा मन्दिरके भीतर पर्याप्त स्थान नहीं है । इसलिये यहाँ मन्दिरके आगेकी ओर जो चबूतरा है उसपर पटा हुआ दाढान बन जानेकी विशेष आवश्यकता है । दानवीर महानुभावोंको इस ओर ध्यान देना चाहिय ।

माहात्म्य-स्कन्दपुराणमें लिखा है कि जो यात्री गगोत्तरीका जल लाकर श्रीमेलारनाथजीकी विभिन्न पूजा करते हैं वे मृत्युके पश्चात् कैलाशमें निवास करते हैं तथा जो ठ मास रहकर यहाँ पञ्चाक्षर मन्त्र जपते हैं वे परम धन्य हैं ।

केदारनाथसे बदरीनाथ

नाला चट्टीसे तुगनाथ (४५ मील)

श्रीकेदारनाथसे बदरीनाथजाको जानेके लिये नाला चट्टानरु २६ मील उपर्युक्त मार्गसे ही लोटना पड़ता है । नाग चट्टीसे एक मार्ग श्रीमन्दाकिनाजीको पार करके ऊर्खामठ गया है । नाग चट्टीसे ऊर्खीमठ प्राय तान मील है, कड़ा चट्टाई है । यहाँ केदारनाथजाके राजकी गद्दी है । शीतकालमें, जब श्रीकेदारनाथपुरीमें रहना असम्भव हो जाता है तब श्रीकेदारनाथजीकी चटप्रतिमाको यहाँ ले आते हैं । राजकी गद्दीपर श्रीकेदारनाथजीका सुवर्णमय पञ्चमुखी मुकुट रक्खा हुआ है । मन्दिर सुवर्णमण्डित शिखरसे सुशोभित ओर बहुत बड़ा है । यहाँ महाराज माधवाकी एक काले पत्थरकी प्रतिमा है । महाराज माधवा सूर्यवशमें चक्रवर्ती मन्नाट हुए हैं, उन्होंने कुछ काल यहाँ तपस्या की था ।

सामने श्रीओंकारेश्वर महादेवका मन्दिर है । यह बड़ा मनोहर है । श्रीओंकारेश्वरपर सुवर्णमय पञ्चमुखा मुकुट और चौड़ीका छत्र

है। इनके सामने पीतम्बरके नन्दीसर हैं। पास ही श्यामभ्यमहेश्वरका चल्मूर्तिके भा दर्शन होने हैं। उनकी गणना पञ्च केदारोंमें है। ज्येष्ठ शुभ १२ को इन्हें मध्यमहेश्वर नामक स्थानपर ले जाते हैं जो उग्यामठमें प्राय २९ माउनों दूरीपर है। उनके सिवा इम मन्दिरमें श्रीआम्बिका, श्यामामिनातिशेय, श्रीत्रदाग्नाथ-पात्रेती, श्रातुगनाथ-पात्रता, अर्नारानटेश्वर, काला और भाचतुर्भुजा भगवत्पत्नी मूर्तियाँ भी हैं।

एक पुराण पुरान मन्दिरमें उपादेवाका श्यामल मूर्तिके दर्शन होते हैं। उनके पास ही उनकी सग्या चित्रलेखा, पति अनिरुद्धजा तथा पुती, नारा, मीना और प्रोयदीजा आदिकी भी मूर्तियाँ हैं। उपादेवा असुररान त्रिके पुत्र वीरवर वाणासुरकी कन्या थी। उन्होंने एक दिन म्यमम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके पीन अनिरुद्धजाका दर्शन किये। ये उनका रूप लाक्षणपर मोहित हो गयीं। तब इनकी सग्या चित्रलेखा इनके सनेतानुसार आकाशमार्गसे अनिरुद्धको ले आयी। जब वाणासुरको पता लगा तो उसने अनिरुद्धजीको कैद कर लिया। पीछे श्रीकृष्णचन्द्रके साथ उसका भयकर सप्राम हुआ और उनसे पराजित होनेपर उसने अनिरुद्धजीके साथ उपाका मित्राह कर दिया।

उग्यामठका बस्ता अच्छी बड़ी ओर रमण्यारू है। बाजारमें खासी चहल पहल रहती है। सब प्रकारका आवश्यक सामान मिल जाता है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये कई अच्छी धर्मशालाएँ हैं। यहाँ अस्पताल, डाकघर और पुलिस स्टेशन भी है। तथा एक अग्रजीका मिडिल स्कूल भी है।

यहाँसे तीन मीलकी उतराईके बाद ब्रह्म चट्टी है । इसे गणेश चट्टी भी कहते हैं । इससे चार मील आगे दुर्गा चट्टी है । और फिर छ मीलपर पोषीयासा चट्टा है । यहाँ जलके द्वारा चलाया जानेवाली मशीनोंसे फाठके बर्तन बनते हैं । इस स्थानपर पानीके नल और सदावर्तका प्रग्रन्थ है । कालीकमलीवालोककी धर्मशाग भी बननेवाला है । इधरकी चणियोंपर पहाड़ी मस्खीका जोर है । वह इतनी जहरीली होती है कि उसके काटनेपर खुजानेसे घाम हो जाते हैं और बहुत दिनोंमें अच्छे होते हैं । इसे शांत करनेके लिये काटे हुए स्थानपर कडवे तेलमें कपूर घांटकर मलना चाहिये ।

यहाँसे तीन मीलकी चढाईके बाद अनियाँकुण्ड चट्टा आती है । यहाँ बाबा कालीकमलीवालोककी उड़ी सुन्दर धर्मशाला है । धर्मशागके आगे पथरोंका पट्टा चबूतरा है, उसके सामने चारों ओर हरा-भरा मन्दन है । यहाँ आकर यात्रियोंका उड़ी प्रसन्नता होनी है । यात्राके समय यहाँ सदावर्त भी रण जाता है ।

अनियोंकुण्डसे तीन मीलकी चढाईके बाद चोपता चट्टी आती है । इधर देवदारु आर चीड़के ऊँचे-ऊँचे वृक्षोंकी श्रद्धिकता है । यहा श्रीतुगनाथजीके पण्डे मिल जाते हैं । यदि कोई यात्री तुगनाथजीकी कड़ा चढाई चढ़नेमें असमर्थ हो तो उसे यहा डाँडी किरायपर कर लेनी चाहिये । यहाँसे तुगनाथजी जानेके लिये श्रीब्रह्मनाथनाका सदर सड़क ओड़कर बायं हाथकी ओर जानेवाले मार्गमें जाना होता है । इस सड़कसे तीन मीलकी अत्यन्त कड़ी चढाई पार करनेपर श्रीतुगनाथ-

जोके स्थान हान है। यह चढ़ाई रतनी कड़ा है कि बहुतसे यात्री स्वरु भयने हा श्रातुगनाथजाक दर्शा नहीं करते। अत्र यद्यपि काश्मीरके मुप्रसिद्ध मठ श्रीहजारीमठजी दूधवेरागेन एरु चींङ्ग नदक बनराकर इम अमुप्रिधाने बहुत कम कर दिया है ता भा इसकी विरुद्धताक कारण टोंजीगोंगे भी कुछ दूरके त्रिये अपने यात्राका उतारना पड़ता है।

तुगनाथजीका दृश्य बड़ा ही चित्तकर्षक है। चारों ओर हिमाच्छादित उत्तुग पर्वनमाला दृष्टिगोचर होती है। यदि आकाशमें कुहिरा या बादल नहीं होता तो यहाँसे श्रावदरीनाथ, श्राकेदारनाथ तथा गगोत्तरी और यमुनोत्तरीके पर्वन भी दिखायी देते हैं। पहाड़ोंपर दूरतक बड़ी मोटो घर्र जमी रहती है, जो सूर्यकी किरणोंमें रजतराशिके समान प्रतीत होती है। तुगनाथजीका मन्दिर भी ऊँचा है। उसमें भगवान्का प्राय बंद फुट ऊँचा अनगढ़ तिङ्ग है। इसकी गणना पश्चकेदारोंमें है। इसकी सेवा पूजाने लिये टेहरी दरवारकी ओरसे गाँव लगे हुए हैं। छ मासतक यही पूजा होती है। फिर कार्तिकी पूर्णिमाके पीछे यहाँसे सात मील दूर मकु गाँवमें भगवान्की चलप्रतिमाका पूजन होना ह। उन दिनोंमें इम मन्दिरके पट बंद रहते हैं। यहा शीतकी बहुत अधिकता रहती ह। रात्रिको छहरना कठिन होता है। इसलिये बहुतसे यात्री उसी दिन बनियाँ-चरी लौट आते हैं। यहाँसे गगोत्तरी जानेके लिये सोसाघाट होकर रास्ता है। विन्तु उसमे पहाड़ीगेग ही जा सकते हैं। वह सर्व साधारणके लिये उपयुक्त नहीं है।

अष्टाशतिका त्रिशूल है। यह परशुरामजीका धनजया जाता है। मन्दिरके पीछेकी ओर श्रीपार्वतीजीकी मूर्ति है तथा परिक्रमामें कल्पलता, चित्तामणि और गणेशजीकी भी मूर्तियाँ हैं। इनके सिवा यहाँ स्वयंभू महादेवकी भी गण है। ये पञ्चकेदारोंमें गिने जाते हैं। इनके पास ही श्रीलक्ष्मीजी और सिद्धेश्वर महादेव हैं। इन दोनों मूर्तियोंके ऊपर चौदीक छत्र टँगे हैं। यहाँ राखलजा की गद्दी है। उन्हें गुप्तदान दिया जाता है। गोपेश्वरजीकी सेवा पूजाके लिये टेहरी दरवारकी ओरसे गौन लगे हुए हैं। यहाँका बस्ती भा बड़ा है, परन्तु जलकी कमी है। जलभायके कारण यहाँ यात्री बहुत कम टहरते हैं।

गोपेश्वर चणसे एक पगडण्डी युगियालको जाता है। चौदह माल जागपर मैदान आता है। यहाँ स्वनाथ महादेवका मन्दिर है। उनकी केंद्र छ महीने पूजा होती है। गीतकालमें यह स्थान बर्फसे ढका रहता है। इस जगह अधिकतर केवल सातु महामा हा जाते हैं।

लालसागासे गरुडगंगा (१५॥ मील)

गोपेश्वरसे ढाई माल आगे अलकनन्दा गंगाका लोहेना पुल पार करनपर लालसागा चली आता है। यह चण्डी नदीके बायें किनारेपर है। बदरीनाथ जानेवाली सड़क दायें किनारेसे गयी है। केदारनाथकी जानके लिये यात्रियोंको रुद्रप्रयागमें अलकनन्दाजीका छोड़ना पड़ा था। अब लालसागा या चमोली चण्डीमें पुन उनका दर्शन होता है। रुद्रप्रयागसे मीना बदरीनाथ जानेवाला मार्ग कर्ण-

प्रयाग होना हुआ अलकन-दाजीके किनारे किनारे ही आता है । छालसागा बस्ती काफी बड़ी है । यहाँ दूकानें भा बहुत हैं तथा मभी आवश्यक सामान मोल मित्र जाता है । यहाँ डिप्टीकम्पटरका कचहरा, अस्पताल, डाकखाना, तारघर और पुलिस स्टेशन भी हैं । तथा बाग कालीकमलाशालेकी धर्मशाला आर सदावर्त हैं । यहाँसे बदरीनाथनाम ४७ मील रह जाता है ।

यहासे दो मीलपर मठ चगी है आर फिर क्रमश १-१ मीलके अंतरपर ठिनका एन बागला चग्री है । ये सब चग्नियों बहुत छोटी हैं । बागला चग्नमे कुछ दूरीपर अलकन-दाजीसे बिरही गगाका सगम हुआ है । स० १९५१ में इस निरहो गगाकी बाढ़मे इम प्रातको बड़ी क्षति पहुँची थी आर श्रीनगर ता उस जलप्रलयका प्राय सभेया प्राप्त बन गया था । बागलासे दो मीलकी दूरापर सियार पहा है । यहाँ पीपलके वृक्षकी बड़ा शीतठ टाया है । इससे एक मालपर हाट चगी है । यहाँ श्रीगगाजी और झरनका जल निकट ही है ।

हाट चग्रीसे दो मीलपर पीपलकोटि चग्री है । यह अच्छी बडा बस्ती है । यहाके बाजारमें ऊनी आसन, कम्बल, मृगचर्म, शिलाजीत आर सुरागायके चँनर जादि मिलते हैं तथा खाने-पानेका सब सामान आर शाक भाजी मिल जाते हैं । यहाँ कालीकमलाशालेकी धर्मशाला, सदावर्त, डाकखाना, तारघर तथा कुडी-एजेन्सी भी है । बस्ताके पास केला, नीरू, पापल और कनेर आदिके वृक्ष सुशोभित हैं ।

यहाँसे चार मीलपर गरुडगगाका सगम है । इम नदीके दोनों ओर गरुडगगा बस्ती बनी हुई है । यह बहुत ऊचेसे गिरकर अलकन-दाजीमें मिल जाती है । काठका पुल पार करनेपर गरुडजीका

अष्टभुजा त्रिशूल है। यह परशुगमजीका बनलाया जाता है। मंदिरके पीछेका आर श्रीपार्वतीजीकी मूर्ति है तथा परिक्रमामें कल्पवृक्षा, चित्तामणि और गणेशजीकी भी पुर्तियाँ हैं। इनके सिवा यहाँ रुद्र नर महादेवकी भा गदा है। ये पञ्चवेदारोंमें गिन जाते हैं। इनके पास ही श्रीशमाना और सिद्धेश्वर महादेव हैं। इन दोनों मूर्तियोंके ऊपर चौदहके त्र टेंगे हैं। यहाँ राखला का गद्दी है। उन्हें गुप्तदान दिया जाता है। गोपधरजीकी सेवा पूनाके लिये टेहरी दरवारका ओरसे गोंय लगे हुए हैं। यहाँका घरता भा बड़ा है, परंतु जल्दी काम है। जलाभासके कारण यहाँ यात्रा बहुत कम छडरते हैं।

गोपधर वहीसे एक पगडण्डी युगिपाठका जाता है। चौदह माल जानपर मैदान आता है। यहाँ रुद्रनाथ महादेवका मंदिर है। इनका केवल छ महीने पूजा होती है। शीतकाळमें यह स्थान बर्फसे ढका रहता है। इस जगह अधिकतर केवल साधु-महामा हा जाते हैं।

लालसागासे गरुडगंगा (१५॥ मील)

गोपधरसे दार्ई मील आगे अलकनन्दा गंगाका छोहेना पुल पार करनेपर लालसागा चढ़ा आती है। यह चढ़ी नदीके दायें किनारेपर है। बदरानाथ जानेवाली सड़क दायें किनारेसे गयी है। कदारनाथनी जानेके लिये यात्रियोंको रुद्रप्रयागमें अलकनन्दानीको छोड़ना पडा था। अब लालसागा या चमोली चढ़ीमे पुन उनका दर्शन होता है। रुद्रप्रयागसे सीमा बदरानाथ जानेवाला मार्ग कार्य

प्रयाग होना हुआ अलकनन्दाजीके किनारे किनारे ही आता है। लालसागा बस्ती काफी बड़ी है। यहाँ दूकाने भी बहुत हैं तथा सभी आवश्यक सामान मोल मिल जाता है। यहाँ डिप्टीकलेक्टरकी कचहरी, अस्पताल, डाकखाना, तारघर और पुलिस स्टेशन भी हैं। तथा बाबा कालीकमलीमार्गकी धर्मशाला और सदावर्त हैं। यहाँसे बदरानाथधाम ४७ मील रह जाता है।

यहाँसे दो मीलपर मठ चडा है और फिर क्रमशः १-१ मीलके अंतरपर उनका एक बागला चडा है। ये मठ चडियाँ बहुत छोटी हैं। मठ चडासे कुछ दूरीपर अलकनन्दाजीसे बिरही गंगाका मगम हुआ है। स० १९५१ में इस बिरही गंगाकी बाढसे इस प्रांतको बड़ी क्षति पहुँची थी और श्रानगर तो उस जलप्रलयका प्रायः सर्वथा प्राप्त बन गया था। बागलासे दो मीलकी दूरीपर सियार पड़ी है। यहाँ पीपलके वृक्षकी बड़ी गीतल ठाया है। इसमें एक माल्पर हाट चडा है। यहाँ श्रावगाजी थोर झरनेका जल निकट ही है।

हाट चड्यामे दो मीलपर पीपलकोट चडा है। यह अच्छी बड़ी बस्ती है। यहाँके बाजारमें ऊनी आसन, कम्बल, मृगचर्म, गिराजीत और सुरागायके चँवर आदि मिलते हैं तथा खाने-पीनेका सब सामान और शाक भाजा मिल जाते हैं। यहाँ कालीकमलीमार्गकी धर्मशाला, सदावर्त, डाकखाना, तारघर तथा कुली-एजेन्सी भी है। बस्ताके पास केरा, नांबू, पीपल और कोर आदिके वृक्ष सुशामिन हैं।

यहाँसे चार मीलपर गरुडगंगाका मगम है। इस नदीके दोनों ओर गरुडगंगा बस्ती बसी हुई है। यह बहुत ऊँचेसे गिरकर अलकनन्दाजीमें मिल जाती है। काठमा पुल पार करनेपर गरुडजीका

मंदिर आता है तथा सान आठ साड़ियों उतरकर नदामें स्नान होता है। यहा यात्रांग अपने पण्डा और कुत्रियोंको भी पेड़ा देते हैं। भगवार गरुडजाता पूजाम भी दूज पेड़ाता भोग लगाया जाता है। बहुत मे यात्रो पत्थरका टुकड़ा गरुडजीके चरणोंको सरस करार ले जाते हैं। कहते हैं, जिस घरमें ऐसा पत्थरका टुकड़ा रहता है उसमें मयका भय नहीं रहता, और यदि मर्प काट ले तो इस पत्थरको पानीमें मिसकर लगानेसे उसका मिय उतर जाता है। यहाँ बाबा कालीकमलीनाथजी धर्मशाग अंत सनातन हैं।

गरुडगगासे जोपीमठ (१३ मील)

गरुडगगासे दो मीठ आगे टगणी चड़ी है। यहाँ स्वामी नर्मदानदका धर्मशाग है। पासमें गणशमुण्ड है और देवदारके वृक्षोंका अमिकता है। फिर दो मील आगे पातागगा चड़ी है। यहाँ पाताल गगा नामकी नदी है। उसका पुल पार करनेपर चड़ी आती है। यहा गणेशजीका मंदिर है। इसके दो मील आगे गुलागकोटि है। यह बस्ती देहराराजमशज गुगमसिहजीकी बसायी हुई है। यहाँ शालकमीनारायणजाका मंदिर है। उससे कई गांव लगे हुए हैं। दूकाने भी यहाँ कुछ अधिक हैं। इससे दो मील आगे धुमार चड़ी है, इसे हिंग चणी भा कहते हैं। यहा सब प्रकारकी आवश्यक वस्तुएँ मिल जाती हैं। बाबाकाकी धर्मशाला ओर सदान्त हैं तथा डाकखाना भा है। यहाँसे एक मार्ग श्रीरूपेश्वरनाथजीको जाता है।

इसमें एक मीठ आगे खनोठी चड़ी है और फिर एक मीलपर झडकुला चड़ी है। झडकुलासे दो मीलपर सधवार है और फिर एक मीठ आगे जोपीमठ है। नगदुम श्रोगकराचार्यजाने सनातनधर्मकी

रक्षाके लिये भारतभरमें चार दिशाओंमें चार मठ स्थापित किये थे, उनमेंसे उत्तर दिशामें उहोने इमी मठकी स्थापना की थी। इसका शुद्ध नाम ज्योतिर्मठ है। यहां श्रीनर-नारायणका सुवर्णशिखरसुशोभित मंदिर है। शीतलकालके उ महीनोंमें इस मठमें श्रावदरीनाथजीकी चल्प्रतिमाका पूजन होता है। यहीं बदरीनाथके राखलजीका निवासस्थान है। इसका मिया यहां एक मन्दिर श्रीनृसिंहभगवान्का भी है। उसीमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीजी तथा कुबेर, गरुड और चण्डिकाकी मूर्तियाँ भी हैं तथा उसका प्रदक्षिणामें लक्ष्मीजीसहित श्रीशेषशायी भगवान् निराजमान हैं। यहां एक कुण्डमें हस्तिशुण्डोंसे जलकी दो धाराएँ गिरता है, जो नृमिहधारा और दण्डधाराके नामसे विख्यात है।

यहाँसे बदरीनाथपुरी प्राय १८ मील है। वहातक गगाजीके दोनों किनारोंपर जो पर्वतमालाएँ गयी हैं वे नर और नारायणपर्वतके नामसे विख्यात हैं। इनके विषयमें ऐसी किंवदन्ती है कि कान्युगका चतुर्थ चरण आनेपर ये दोनों पर्वत आपसमें मिल जायेंगे और फिर श्रीबदरीनाथजीके दर्शन ज्योतिर्मठमें ही हो सकेंगे।

जोषीमठ अच्छी बड़ी बस्ती है। यहां गुलाबके फूलोंकी अधिकता है। बाजार भी बड़ा है। अस्पताल, डारुखाना, तारघर, पुलिसस्टेशन तथा बाबा कालीकमलीगलोंकी धर्मशाला और सदावर्त है। यहाँसे एक सड़क आठ मीलपर तपोवनको गयी है। वहाँ भविष्यबदरीकी प्रतिमा है। दूसरा रास्ता निम्बतको जाता है। वह बहुत दुर्गम है। इस मार्गसे घोड़ा, रथ आदि कोई भी सवारी नहीं जा
 १० १० मेड़ और बकरोपर सामान लादकर लाया-ले

जाया जाना है। यहांके बाजारमें सब प्रकारकी आवश्यक वस्तुएँ मिल जाती हैं।

जोपीमठसे हनुमान चट्टी (१५ मील)

जापामठसे दो मील आगे त्रिष्णुप्रयाग है। यहां अलखनन्दामें त्रिष्णुगंगाका मगम हाता है। झुला पार करके साक्षियोद्वारा सगम स्थानतक जाते हैं। सगममें घुसकर स्नान करना बहुत कठिन है, क्योंकि दोनों नदियोंका प्रवाह बहुत तेज है। इसलिये अभिनाश यात्री किनारेपर बंठकर लोटोंसे ही स्नान करते हैं। मगमके ऊपर श्रीत्रिष्णुभगवान्का उंचा मन्दिर है, यह उत्तराखण्डके पाँच प्रयागोंमेंसे एक है, इस स्थानपर देवर्षि नारदजीने तपस्या की थी। यहाँ अष्टाक्षर मंत्रके जपका विशेष माहात्म्य है। भक्त यात्रीगण श्रीत्रिष्णुभगवान्के सामने गडें होकर कम-से कम एक माला जपने हैं।

त्रिष्णुप्रयागसे एक माउ आगे बलदोदा चट्टी है। यहां यात्रियाने छरनेकी विशेष सुविधा नहीं है। इससे चार मील आगे घाट चट्टी है। इसका मार्ग बहुत ऊँचा-नीचा और घुमाव फिरावट है। यहाँ कई दुफाने और छरोंके स्थान हैं। इसमें दो मील आगे पाण्डुकेसर है। यहां यागव्रत और वामुदेवभगवान्के दो ऊँचे मन्दिर हैं। दोनों मन्दिरोंपर सुवर्णमय कलश मुशामित हैं। स्नानी दीवारपर एक ताम्रपत्रपर लिखा उग्र है। परन्तु अक्षर स्पष्ट होनेपर भा उन लिपिका गाढ़ न होनेके कारण वे पढ़ नहीं जाते। कहते हैं, यह ताम्रपत्र पाण्डुदेव लिखा गया हुआ है। यहाँ अलखनन्दाका दूसरी ओर सनभृगपर्वत है। उसपर महागज पाण्डुने महारानी मुन्ना और माद्राक उछित रहकर कुठ फाउ बनाकर किया था।

एक बार उहोंने मृग आरमृगके रूपमें विहार करते हुए ऋषिदम्पतिको बाणसे वेध दिया । तत्र उहोंने शाप दिया कि तुमने सम्भोग करते समय हमारा ग्ध किया हे, इसलिये यदि तुम स्त्रीप्रसंग करोगे तो तत्काल तुम्हारी मृत्यु हो जायगी । इस शापके अनुसार एक बार माद्रके साथ सहगमन करते ही उनकी मृत्यु हुई ।

पाण्डुकेधरसे एक मील आगे शेषगंग हे । फिर दो मील आगे लामगगड चट्टी हे । यह छोटी सी चट्टी हे । पास ही अटकनन्दाजीका धारा हे । ठहरनेका सुभीता ह । बाजा कालीकमलीगालाकी धर्मशाला और सदावर्त हैं । यहाँ कम्बुठ, चँगर, मृगचर्म ओर शिलाजीत विकती हैं । इसके थोड़ी दूर आगे एक अग्निकुण्ड है । यहा राजा श्मश्रुने सौ वर्षतक यज्ञ किया था । उस यज्ञमें निरंतर घृतपान करनेसे अग्निदेवको अरुचि हो गया थी । उसकी निवृत्तिके लिये उहोंने श्राकृष्ण और अर्जुनका सहायतामे ग्वाण्डर जनका दाह किया था । महाभारतके आन्तिपर्यमें इस प्रसंगका मरिस्तर वर्णन हे । यात्रीरोग इस अग्निकुण्डमें हवन करते हैं । इस स्थानका चार निशाओमें जो चार पर्यत हैं वे चार बदकि नामसे पुकारे जाते हैं ।

यहाँसे तीन मील आगे हनुमान चट्टी हे । महाभारतमें यह प्रसंग आता हे कि जनगसके समय पाण्डुवल्गेग गधमादापर्यतपर जा रहे थे । मार्गमें उहोंने एक दार्धकाय वृद्ध वानरको पदा देता । ये श्रीहनुमान्जी थे । इह देगजर भीमसेनने कहा—‘अरे वानर ! तू एक ओर हटकर हमे मार्ग दे दे ।’ तत्र हनुमान्जी बोले—‘मैं वृद्धानस्थाके कारण बहुत ही दुर्बल हो गया हूँ, मुझमे उद्यम नहीं

जाना, तुम मुझे एक ओर हटाकर निकल जाओ।' तब भामसेनन उह दूर हटानेके लिये उनका पूँछ पकड़ी। परन्तु वे उसे भा उठानेमें समर्थ न हुए। जब सारा भेद खुला तो उन्होंने हनुमान्जी की प्रार्थना की। इसमें वे प्रसन्न होकर अतर्कित हो गये। यह घटना इमा स्थानकी है। यहाँ श्रीहनुमान्जीका मन्दिर है। वस्त्रा उड़ी है। कई धर्मगालाएँ आर सदावर्त हैं। इस जगह शुद्ध शिला जात मित्ता है। इसके मिया तरह तरहकी जड़ी-बूटा, कस्तूरी, चैवर आर मृगचर्म आदिका भी दूकानें हैं।

यहाँसे तदरीनाथपुरी केवल ५ मील है। रास्ता बहुत चढाई का ओर घुमावदार है। एक मील जानेपर घोरसिल नामका पुल पार करना होता है। उसके एक मील आगे रङ्गपुत्र है। यह लोहेके तारोंपर झुला बनाकर तैयार किया गया है। इसके बाद कड़ी चढाई है। आगे जानेपर सुबरशिला आर गणेशजीका मन्दिर आते हैं। यहाँसे श्रावदरीनाथजीके मन्दिरके दर्शन हो जाते हैं, जो इस स्थानमें प्रायः सग माल है।

इस यात्राके आरम्भमें गण्ड चढ़ा जाता है आर अन्तमें हनुमान चढ़ा। गण्डजी और हनुमान्जी दोनों ही भगवान्के प्रधान पार्षद हैं। इन दोनोंकी क्रमाने ही यात्रियोंकी यह विरूढ यात्रा पूर्ण होनी है। यात्रियोंको इनका बड़ा अवलम्बन रहना है। वे मार्गमें प्रतिदिन इनका प्रसाद बाटकर और स्वयं भी उसमेंसे पाकर पीछे भोजन करते हैं। इस प्रकार भगवत्दर्शनोंकी उकमठासे प्रेरित होकर वे उन्हींका गुणगान करते हुए श्रीवदरीनाथधाममें पहुँच जाते हैं।

श्रीबदरीनाथपुरी

ससारचक्रे भ्रमता नराणा शिवप्रद शान्तिममाधिनिष्ठम् ।

देवर्षिणा षृजितपादपद्म बदरीनिशाल सतत नमामि ॥

कुवेरशिरण पहुँचनेपर देवाधिदेव श्रीबदरीनाथजीके मन्दिरके सुवर्णरत्नशके दर्शन होने लगते हैं । तब यात्रीलोग भगवान्को प्रणाम करके श्रीबदरीनिशालकी जय बोलते हैं, तथा जो लोग डौंडीमें यात्रा करते होते हैं वे भी पैदल चरने लगते हैं । यहाँसे बदरीनाथपुरीतक रास्ता सीधा है । विशेष उतराई चढ़ाई नहीं है । बीचमें श्रीभगवानदास बागलका धर्मपत्नीका जनमाया हुआ अलकनन्दाजीका एक सुदृढ पुल है, जिसे रामना निज कहते हैं । यहाँसे पुरीतक राजा महाराजाओंक बहुत से भजन ह । इनकी सग्या दिनोंदिन बढ़ती ही जाती है । यहाँसे श्रीबदरानाथपुरीकी शोभा बड़ी ही दर्शनीय है ।

पुराके पास पहुँचनेपर पहले ऋषिगंगा आती है । उसका पुल पार करके बदरीनाथपुरीमें प्रवेश करते हैं । ऋषिगंगाके किनारे बहुत सी पनचक्रियाँ चलता दिग्बायी देती हैं । पुरीमें प्रवेश करनेपर यात्रियोंको बड़ा आनन्द होता है, उनका शरीर पुलकित हो जाता है तथा मार्गका सारा श्रम शांत हो जाता है । उस समय मानाएँ प्रेमपूर्वक गान गाने लगती हैं ।

बदरीनाथपुरीमें छोटी-बड़ी बहुत सी धर्मशालाएँ हैं । बहुत से दानवीर यात्रियोंने भी घर बनानेपर अपने तीर्थगुरुओंको दान कर दिये हैं । वे भी यात्रियोंके छहरानेके लिये काममें लाये जाते हैं । बदरानाथपुरी प्राय ३०० घरोंकी बस्ती है । यहाँ अग्निशक घर दोमजिले हैं । उनकी दीवारें पत्थरकी ईंटोंकी हैं तथा वे पत्थर,

गन अग्रा कसमे त्रये गय है । यहाँका बाजार भी कपा बड़ा है । उमों अग्रा चारउ, दाउ, आइ, एकड़ी, दडी, दूध, मिठाई, पन्धान, पान, तम्बाकू, नागियन, मसाअ, रिमानगानेकी चाँसे, आसन, कम्बउ, कस्वरी, चँपर, भोनपत्र और शिल्पजीत आदि बहुत रा जासत्यक वस्तुएँ मिठ जानी हैं । किन्तु वे हँ बहुत महँगी । (हा-दूध तो ॥॥) या १) येरतक रिमना है । यहाँकी अशिकाश धमशाखाएँ और सशयत बाग कर्गीरमगपालेकेतरयानगनाहँ हैं । मनकी मन्या तिन दिन बढ़ती जाना ह ।

श्रीनदरीनारायणका मन्दिर यस्ताके उत्तरीय भागमें स्थित ह । इसक सामने नीचाईपर श्रीअलकनदाजी कर्कू निनाद धरती बह रही हैं । मन्दिरकी ऊँचाई प्राय ४५ फाट ह । उपरका कडश और ढाढ-तीन हागतक गुम्बज सुवर्णपत्रमें विभूषित है । मन्दिरके मभामण्डपमें तीन द्वार हैं । प्रगान द्वार पूर्वमें ह तथा एक उत्तरमें और दूसरा दक्षिणमें । पूर्वके द्वारसे ५०-६० यारियोंकी टोत्री जाती है । फिर फाटक बाद फर दिया जाता ह । जब बह दर्शन करके दक्षिण द्वारसे निकठ जानी है तत्र दूसरी टोली भीतर जा सक्ती हे । उत्तरका द्वार प्राय बाद रहता हे । इन द्वारोंका प्रगान राखडजीके सिपाहीजोग करते हैं ।

सभामण्डपके पश्चिमी भागमें अ-तर्पदा है । उसमें भगवान् नदरी-विठालकी प्यानास्थित श्यामवर्ण विनाल मूर्ति है । इसकी ऊँचाई प्राय एक हाथ हे और इसक लत्राटपर हीरेकी चमचमाहट सुशो-भित है, तथा ऊपर सुवर्णका उत्र लगा हुआ हे । भगवान् की दाहिनी ओर कुबेर, उद्धव, गणेश और गरुडजी तथा बायीं ओर लक्ष्मीजी, नर-नारायण और देवर्षि नारद विराजमान हैं ।

यात्रालोग पहले तमसुण्डमें स्नान करते हैं। इसका जल बहुत गर्म है। यह अग्निदेवका उत्पत्तिस्थान बतलाया जाता है। यहाँसे भगवान्‌के मन्दिरतक पकी सड़क बना हुई है। उसके दोनों ओर दूकान हैं, जिनपर श्रीबदरीनारायणजीकी पोशाकके लिये धोती, दुपट्टा और मुकुट आदि तथा बर्तन, चित्रपट, पुस्तकें और अन्यान्य सामान विक्रता हैं। प्रातःकालमें निर्माण-दर्शन होता है। उस समय रात्रलजा भगवान्‌को स्नान कराते हैं। जिस समय रात्रलजा ऊँची चोगा पहने हुए मन्दिरमें पधारते हैं उस समय समस्त पण्डित, पुजारी और यात्रालोग अगङ्गा-बगङ्गा पक्तिबद्ध होकर खड़े हो जाते हैं और बीचमें उनके लिये मार्ग ओढ़ दिया जाता है। मन्दिरमें पधारनेपर रात्रलजा भगवान्‌के उख उतारकर उन्हें पहल्ले पश्चामृतसे और फिर गगाजलसे स्नान कराते हैं। उस समय मित्रान् पण्डितगण उच्चस्वरसे वेदपाठ करते रहते हैं। इस समय भगवान्‌के मर्यादित दर्शन करके यात्री आनन्दविभोर हो जाते हैं।

स्नानके पश्चात् भगवान्‌को रत्नाभूषण पहनाये जाते हैं। फिर धूपदीपसे आरता की जाती है। जबतक आरता हाती है वेदगान होता रहता है। दिनमें दस बनेके लगभग भगवान्‌को भोग लगाया जाता है। भगवान्‌की रमोई बडा परित्रनासे बनायी जाती है। फिर मंत्र पदार्थ एक चौड़ीके धागम परीसकर मन्दिरमें लाये जाते हैं। रात्रलजी त्रिपुरीके भगवान्‌का उनका भोग लगाते हैं। इसके पश्चात् पाकशालामें घने हुए कढ़ी, भात पत्र दाल आदि समस्त व्यञ्जन पीतके पात्रोंमें परीसकर मन्दिरकी दाहिनी ओर गगाजल छिड़कर लगा दिये जाते हैं। उनमें रात्रलजी गगाजल और

तुलसीदल जोड़ देते हैं। वम, यह भगवान्का महाप्रसाद हो जाता है। इसे कोई भी कहीं भी उठाकर ले जा सकता है। इसमें छूट नहीं मानी जाती। इसे पण्डेजोग अपने-अपने यजमानोंको खिलाते हैं।

रहते हैं, श्रीवदरीनाथजीकी वर्तमान मूर्ति श्रीशकराचार्यजी का नारदकुण्डमें मिला था। मन्दिरके चारों ओर दीवारका घेरा है। इस घेरेके भातर चोडा मंजान है। व्सीमें होकर यात्रालग भगवान्के मन्दिरकी परिक्रमा करते हैं। यह परिक्रमा प्राय ७१ सौ गजनी है। इसका बडा माहात्म्य माना जाता है। वस मंजानमें तार्या आर एक चतुतरेपर गरुडजीकी मूर्ति है, उनके पाठे हनुमानजाका निशाउ मूर्ति है, दक्षिणमें पारुशाला है आर उसरु पश्चिममें लक्ष्मीजीका मन्दिर है। भगवान्के मन्दिरके पीछे धर्मशिला आर चरणोदकका कुण्ड है तथा बायां ओर घण्टाकर्ण क्षेत्रपाण आर अष्टधातुका बडा घण्टा है। फाटकके बाहर नीचे आनेपर बायां ओर रात्रलजीकी गद्दी आर उनका दफतर है। यहाँ भगवान्के भोगके लिये भेंट दी जाती है आर बदलेमें महाप्रसाद मिलता है।

श्रीवदरीनाथधाममें तप्तकुण्डक स्नानका बडा माहात्म्य है। जो पुरुष यहा आकर इसमें स्नान आर तर्पण नहीं करता उसरु यात्रा निष्फल मानी जाता है। कुण्डमें गर्म जलकी दो वाराएँ गिरती हैं तथा एक पतली सी धारा शीतल जलकी भी गिरती है। यह प द्रह मोट्टह हाय लम्बा-चाडा आर नाभिपर्यत गहरा है। इसके चारों ओर सव्यातर्पणादि करनेके स्थान बने हैं। इसमें तर्पण करनेसे पितरोंको बड़ी तुष्टि होनी है। कुण्डके समीप ही नारद शिला है आर उसके नीचे नारदकुण्ड है। इसके मिया ब्रह्मकुण्ड,

गोरीकुण्ड और सूर्यकुण्ड भी हैं । शिलाएँ भी पाँच ही हैं । नारदशिलाके अनिरिक्त गरडशिला, नृसिंहशिला, वाराहशिला तथा मार्कण्डेयशिला और हैं ।

अन्य दर्शनीय स्थान

ब्रह्मरूपालशिला—पुरीसे प्राय तीन माल पगडण्डीके रास्ते जानेपर ब्रह्मरूपालशिला आती है । यहा भगवान्‌का प्रसादी भात मोल लेकर उसासे पिण्डदान क्रिया जाता है । इससे पितरोंको ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है और फिर उनके लिये कहीं भी श्राद्ध करनेकी आवश्यकता नहीं रहती । इसके पास ही नरपर्णतपर महात्माओंके लिये बहुत भी कुटिया उनी हुई है, जिनम कितने ही तपोनिष्ठ महामा निवास करते हैं ।

रामालुजकोट—यह स्थान रण्णरोंका है । यहाँ श्रीरामानुजा चार्यने तपस्या की थी । इम स्थानके खर्चेका प्रबंध महाराज रीनोंकी ओरसे है । यहांका आचार-विचार सराहनीय है । माँ डार्य भगवान्‌की मूर्तिकी झाकी होती है ।

वसुधारा—ब्रह्मरूपालशिलाके पाम इन्द्रास जीर श्रृंगार है । यहा अष्ट वसुओंने तपस्या की था । यह पुरी भाग्य श्रृंगार नहीं आता, बीचमें पर्वतके पार्लसे टकरानेके कारण मूर्तिका छितरायी हुई ढूँँद्रोंमें परिणत हो जाती है । इसका श्रृंगार श्रृंगार है तथा इसमें स्नान करनेका भी बड़ा माहात्म्य है ।

सूर्यप्रयाग—वसुधारासे तीन माग्ग १०' १' १" १" १" प्रयाग है । यहा एक कुण्ड है, जिसम कुछ श्रृंगार श्रृंगार करनेसे बुभुधेम मा वृष्ट जाता है । इसमें श्रृंगार श्रृंगार

है। यह स्थान उड़ा नुर्गम है और सब ओरसे हिमाच्छादित पर्वतमालामे घिरा हुआ है। यहींसे महाराज युधिष्ठिरने सदेह स्वर्गारोहण किया था। उसके आगे कोई मार्ग नहीं है।

गणेशगुफा और व्यासाश्रम—ब्रह्मकपालीमे दो मीलपर माणा गाँव है। इसका पूर्वनाम मणिमद्रपुरी है। यहाँ गणेशगुफा और व्यासाश्रम है। इसी स्थानपर श्रीव्यासजीने गणेशजाद्वारा महाभारत लिख्यायी थी तथा यहीं अठारहों पुराण लिखे गये थे। यह स्थान सरस्वती नदीके तीरपर है। वससे थोड़ी दूरपर मुचुमुन्द गुफा है। वहासे त्रिपुन, मानसरोवर और कलाशको मार्ग जाता है, परंतु इसकी अपेक्षा जोशीमठवाला मार्ग अधिक सुभीतेका है।

श्रीचंद्रिकाश्रमकी कथा

सत्ययुगमें नर और नारायण नामके दो शक्ति हुए हैं। साक्षात् श्रीहरिने ही निवृत्तिमार्गका उपदेश करनेके लिये उनके रूपमें अवतार लिया था। उन्होंने यहाँ रहकर घोर तपस्या की थी। तभासे यहाँ श्रीविष्णुभगवान्की प्रतिमा निबमान है। आरम्भमें नर और नारायणने उसकी उपासना की, फिर नारदजी और उद्धरजी आदि भक्तगण उसका सेवा पूजा करते रहे, उनके पीछे भगवान् व्यासने यहा रहकर तपस्या और भगवद्भारतना की। पाँडे वीरका प्राप्त्य हुआ तो उन्होंने १८ मूर्ति अलकनन्दाजामें प्रवाहित कर दा। उनके बाद जब श्रीशंकराचार्यजी दिग्विजय करते हुए महा पधारं तो उन्होंने उस प्रतिमासे नारकुण्डमे निकारकर पुन प्रतिष्ठित किया। उस समय मूर्ति गरुडगुफामें स्थापित का गया था और आचार्यके पाँडे उसकी सेवा पूजाका भी कोई सुप्रबंध नहीं

था । कालांतरमें जब यहाँ श्रीरामानुजाचार्य पधारं तो उन्होंने तत्कालीन (टेहरीनरेशको आज्ञा देकर भगवान्का मंदिर बनवाया और उनकी सेवाका सुप्रबन्ध किया ।

भगवान् शकल्यचार्य नम्बूरी ब्राह्मण थे और उन्होंने भगवान्की पूजाका अधिकार भी एक निष्ठावान् नम्बूरी ब्राह्मणको ही दिया था । सबसे यहाँके राजल नम्बूरी ब्राह्मण हा होते आये हैं । पहले नायब राजकी नियुक्ति होती है, वही पीछे राजल्का पद ग्रहण करता है । यदि नायबका पद रिक्त होनेपर राजल्का ओरसे नायबका नियुक्ति नहीं होती तो स्वयं टेहरी महाराज नायबकी नियुक्ति करते हैं । यहाँकी आय-व्ययका सारा ब्योरा भी टेहरी महाराज देखते हैं और उन्हाकी सम्मतिसे राजल्को मंदिर ओर मंदिरकी जायदादका प्रबंध करना होना है । उचित कारण होनेपर महाराजको राजल और नायब राजल्को पदच्युत करनेका भी अधिकार है । मंदिरकी वार्षिक आय प्राय एक लाख रुपया है ।

इस प्रकार श्रावदरानायधामके दर्शन कर यात्री अपनेको कृतकृत्य मानकर भगवान्से त्रिदा होते हैं और अपने अपराणोंके लिये क्षमायाचना करते है । उस समय मंदिरके पुजारी भगवान्का प्रसादी, माला और मोग देते हैं । तथा यात्रीलोग अपने-अपने तीर्थ-गुरुओके चरणोंकी पूजा कर उन्हें यथाशक्ति दक्षिणा देकर यात्रा सफल कराते हैं । श्रीवदरीनाथपुरीसे चलकर यात्री लाडसागातक उपर्युक्त मार्गसे ही लौटते हैं । फिर नीचे आनेके लिये रामनगर-भण्टी-

वदरीनाथसे रामनगर-मण्डी

लालसागासे नन्दप्रयाग (७॥ मील)

लालसागा या चमालीसे दो मील आगे कुहेड चनी है और वससे दो मील आगे मठियानी चनी है । ये दोनों चर्चियाँ बहुत छोटी हैं । इनसे तान मील आगे नन्दप्रयाग है । यहाँ अलगनग आर नन्दगंगाका संगम है । किसी समय यहाँ श्रीनन्दजाने तप किया था । इसीसे यह स्थान 'नन्दप्रयाग' नामसे प्रसिद्ध हुआ है । यहाँ श्रीनन्दजी आर गोपालनीका मन्दिर है । यह उत्तराखण्डके पाच प्रयागोंमेंसे एक है । अच्छी उड़ा बन्ती है । नृकान भी बहुत हैं । गारा कालाकमलीशालोंकी बर्मशाला और सदावर्त हैं तथा डाकघाना और तारघर भी हैं ।

नन्दप्रयागके पास ही कपशश्रम है । यहां कपट मुनिने श्रीविष्णुभगवान्का तप किया था और उनसे यहां स्थिर रहनेका वर प्राप्त किया था । नन्दप्रयागसे एक पगटण्डा गया है । उसपर साल माण्डी दूरीपर नैरासकुण्ड है । यहो एक प्राचीन शिवमन्दिर है ।

नन्दप्रयाग ।

साथीत लोक वाङ्मयशा स्टेनर अथवा शौर्युधि धाम
गान्धार चक्र स्तर समर हो जाते हैं। पहले मार्गश उर
रगत हा वृत्त है। इमन्त्रि आग दूगरे मार्गका वर्णन किया जाय
है। एतरे जगमे भी अविश्वय वार्त, रामनगारा रान्धम हो
जाय। एतन्त्रि उताका वर्णन किया जायगा।

उर्णप्रवागमे मेलनारी (२६॥ मील)

वागप्रवागमे ३॥ मीलर लेख, चही है। यहाँ रिग्डर नये
है तथा शायेर भी जउ है। ट्हरके त्रिये स्थान पर्यम है।
यहाँते ट्द मीलर भट्टोने चही है और उमरु जाग माइ चार
मालर आदिबदरी है। यहाँ श्रीआन्त्रिगारा प्राचीन मन्दिर है।
उमरु आग-गाम अन्धाय एथी श्यताआफ इश मन्दिर और।।
य मारी प्राचीन है। च्वा बड़ी है। दुकरन भी यानी है।

आदिबदरासे साढ़े चार मीलकी चढ़ाने पर जीवगाना
चही आती है। उमके दो भाग आगे दिशागमल च्वा है। यहाँ
एक कुल और पीमाला है तथा पञ्चायता सम्यानी धर्मगाउ और
मदान्त है। इममे एक मील आगे कागीगा चही है। यहाँ यद्यपि
एक हा दुकरन है तो भा ठहरनेके त्रिये पर्यम स्थान है। यहाँसे
तीन मील आगे गाविद चही है। निर टेद मीलपर धुनाग्घाट है।
यहा रामगगा है। यात्रियोंके ठहरनेके त्रिय धर्मशाग है तथा
डाकलाना और पुन्सिस्टेशन है। इस ओर रास्ता बहुत चढ़ाई-
उतराका है तथा बीचमें बड़ा सघन वन पड़ता है।

धुनारघाटसे पाँच मीलपर मेलचोरी चट्टी है। यह बहुत बड़ी चट्टी है, परन्तु यहाँ यात्रियोंके लिये विशेष सुविधा नहीं है। केन्द्र एक धर्मशाला है। दुकानें बहुत-सी हैं, परन्तु डाकखाना नहीं है। बस्तीके बीचमें होकर नदी बहती है। उसके ऊपर झूटेका पुल है। यहाँ कुली-एजेंसी भा है। आरक्ष्यकता होनेपर कुली, डोंडो, शम्पान, एचर और घोड़ा आदि मिल सकते हैं। ऋषिकेशसे जो कुला आदि किये जाते हैं वे यात्रियोंको यहाँ छोड़ देते हैं। इस चट्टीसे एक मील आगे चलनेपर गढ़वालकी सीमा समाप्त होकर जिला अलमोड़ा आरम्भ हो जाता है।

मेलचौरीसे चौखुँटिया (७॥ मील)

मेलचौरीसे टेढ़ मीलपर अनुआम्बाल नामकी ठोटी-सा चट्टी है। उससे टेढ़ मील आगे सेमलखेत है और सेमलखेतसे माढ़े चार मीलपर चौखुँटिया है। यहाँतकका मार्ग रामगगाकी घाटमें होकर ही आता है। यहाँ टाकखाना, पुलिसस्टेशन, टाकखाना और अस्पताल आदि हैं तथा एक धर्मशाला भी है। आगे दो मार्ग जाते हैं। एक रामनगरको, दूसरा रानीखेतको। रानीखेतवाले मार्गकी प्रधान चट्टियाँ चिरेन्द्र, द्वाराहाट, चण्डेन्द्र, गगास आर रानीखेत हैं। यहांसे रानीखेत प्राय ४० मील हैं। आगे जानेके लिये काठगोदामतक मोटरसे जा सकते हैं। रामनगरके मार्गका विवरण आगे लिया जाना है।

चौखुँटियासे भिखियामैण (२१॥ मील)

चौखुँटियामें दो मोटरपर भटकाँड चट्टी है। यहाँ शरनेका जल है और मोदीनी दुकानें हैं। यहांसे एक मीलपर निपारा चट्टी है, जिसे गणेश चट्टी भी कहते हैं। यहाँपर

धर्मशास्त्र नद्वारन, धारदी और चगीचा आदि हैं। इमने आधा माल आगे नमद्वार मनुदेका मन्दि है फिर उ मीलपर मामी चगा है। यहा टाफराना है तथा पास हा श्रीरामगगात्री है।

मासासे चार मीटर वृद्धकाल चहो है। वृद्धकेदारनीस मादर रामगगात्र दूसरे तटपर है। उनका दर्शनके लिये नदीका नैरकर पार करना होता है। यहांमे पांच माल दूर नीला चगी है। यहा एक धर्मशास्त्र और चारदी है। इमसे दो मील आगे भिखिया ण है। यह अच्छी चहो चगी है। यहाँ धर्मशास्त्र, सदाने, आपराज्य, डारुवाना और पुत्रिस्तेशन हैं। इस स्थानपर राम गगासे रगेधरी और नमद्वारो दा नदियोंका सगम होना है। यहासे रामनगरतक नैलगाइमे भी यात्रा की जा सकती है, किन्तु गूजरघाटानक बलगाइका मार्ग २२ मील है और पंदलगा ८० माल। इससे आगे चौड़ा नइक मिलनी है। नीचे गूजरघाटातक पंदलगे मार्गका विवरण लिया जाता है।

भिखियासणमे गूजरघाटी (१० मील)

भिखियासणसे दा माटर शेरकोठ है। यहाँतक चढ़ा पड़ती है। जट्टे लिये एक पहाडा नाला है। शेरकोठसे दो मालपर बॉमकोठ है और उससे तीन मालपर ग्वेलगान है। यहाँ एक छोटी सा धर्मशाला है। इनसे तीन मील आगे गूजरघाटी है। यहातक चढ़ा पड़ना है और बलगी भा कमी है। इस चगापर रामनगरके लिये घाड़े और बल भी जिरायेपर मित्र मरते हैं।

गूजरघाटीसे रामनगरमण्डी (३० मील)

गूजरघाटीसे दा मील कपूरनोडा है। यहातक मार्ग अच्छा नहा है। काल एक दुकान है, और जग भी दूर है। कपूरनाली

से दार्ड मील देरगाना है आर उससे दो मील गोदी चरी है । यहाँ सरकारी धर्मशाला है तथा जलका नल लगा हुआ है । इस स्थानसे दो माल टूटाआम है । यहाँ एक डाकऑफिस भी है । टूटाआमसे दो माल सौराठ चरी है । यह अच्छा बड़ा पडाव है आर जल भी समाप्त है । सौराठ चरीसे चार मील कुमरिया चरी है । यहाँ जलकी कमी है । आग माल दूर कासी नदीसे लाना होता है । इसमें तीन मील माहन चरी है । यह कोसी नदीके समाप्त है । यहांसे चार मीलपर गर्जिया चरी है । यहां डिस्ट्रिक्टबोर्डकी ओरसे एक स्कूल है । जल भी पास है । गर्जियासे दो मीलपर दिङली चरी है । यहाँ धर्मशाला, सदान्त आर बगचा लगा हुआ है ।

दिङली चरीसे चार मीलपर रामनगर है । यहाँ मगवान् रामचन्द्रका मन्दिर है । यात्रीलाग धर्मशाला आर मन्दिरमें टहरते हैं । बहुत लोग वृक्षाका टायामें भा त्रिशाम करते हैं, पीनेके लिये कामीका जल है । नवाकानुमें यह जल अच्छा नहीं रहता । इसलिये उन दिनोंमें बहुत से दूजानदार अपना दूयानें उठा लेते हैं । यहाँ पहुँचनेपर पर्वतीय यात्रा समाप्त हो जाती है । इसलिये बहुत से यात्री यहां आश्रम भोजन कराकर रेलवेद्वारा अपने गतय स्थानको चले जाते हैं । यहां डाकखाना, तारघर, पुलिसस्टेशन आर आषालय आदि हैं । यह रहेलखण्ड कमाऊ रेलवे (R. K. K.) का स्टेशन है । यहाँमें राशापुर छोकर मुरादागान आने है आर फिर जहाँ इच्छा हो वहाँ जा सकते हैं ।

उपसहार

यहातरु भिन्न भिन्न तीर्थोक्त वर्णन किया गया । ममामें सभी सम्प्रदायोके अपने-अपने उपासनास्थान नियत हैं । सभी सम्प्रदाय अपनी अपनी भावनाके अनुसार भगवान्की उपासना करते हैं । समारमें उस एक ही अनादिनाक्तिकी भिन्न भिन्न प्रकारसे आराधना की जाती है । इन सम्प्रदायोंकी सग्या प्राय सोऋ सहस्र बनलायी जाती है । भगवान्क विषयमें इन सबकी एक ही धारणा होनी सर्वाथा असम्भव है । इससे यह नहीं मानना चाहिये कि यदि अथ मत्प्राप्त्यर्थीकी धारणा हमारे मतके अनुसार नहा है तो उन्हें भगवान्के दरबारमें स्थान ही नहीं मिल सकता । रास्तरमें तो प्रत्येक प्राणा अपने अपने विश्वासके अनुसार भगवान्का चित्तन करते हुए ही परमगति प्राप्त कर सकता है । भगवान्की प्राप्तिके लिये तो हमें भगवान्का अनन्य भक्त होनेका आवश्यकता है । तीर्थदर्शनसे तो केवल सामयिक शांति मिलती है । जिस प्रकार किसी देवालयमें जानेपर वहाँकी स्वाभाविक परिव्रतासे चित्तको एक प्रकारकी प्रसन्नताका अनुभव होता है उसा प्रकार तीर्थदर्शनसे भी तात्कालिक शांति अवश्य मिलता है । हाँ, यदि हम भगवद्गुरुधनाम लग जायें तो वह अवश्य स्थायी हो सकती है ।

प्रत्येक तीर्थसे किन्हीं-न-किन्हीं महापुरुष एव अवतार आदिका सम्बन्ध रहता है। उनके कारण ही उसे तीर्थत्व प्राप्त होता है। इसलिए तार्थयात्रा करनेपर हमें ऐसे महापुरुषोंका स्मरण करके उनके चरित्रसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और उनके चरण-चिह्नोंका अनुसरण कर अपने जीवनको सफ़र करना चाहिये। यदि तार्थदर्शन करके हमारे जीवनमें किसी प्रकारका सुधार न हुआ तो वह यात्रा चल्तीमें दूध दुहनेके समान निष्फल ही है।

यदि परमपद-प्राप्तिकी इच्छा है तो यह ता अपने हृदयरूपी सिंहासनपर भगवान्को विराजमान करानेसे ही होगी। वस्तुतः निगुद्ध मन ही परमतीर्थ है और मनकी शुद्धिके लिये ही तीर्थ-दर्शनादि सारे बाह्य साधन हैं।

ज्ञान तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्य तीर्थमुदाहृतम् ।

तीर्थानामपि तत्तीर्थं विगुद्धिर्मनस परा ॥५

इसलिये सब प्रकारके मत-भेदांतर-सम्बन्धी झगड़ोंको छोड़कर मनुष्यको अपनी धारणाके अनुसार सच्ची लक्ष्मणके साथ भगवद्भजनमें लग जाना चाहिये। भगवान्की लीलाका रहस्य किसीकी समझमें नहीं आ सकता। इसलिये ससारमें दिग्वायी देनेवाली विचित्रनामे उलझनमें न पड़कर भगवद्भजनमें लग जाना ही सच्ची बुद्धिमानी है। यदि किसी गीचेकी सुन्दरताको देखकर कोई यह निर्णय

तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है तथा पुण्य भी तीर्थ कहा गया है;
उत्कृष्ट बुद्धि है वह तीर्थोंका भी तीर्थ है।

धरनेमें गग जाय कि इसे किसने उगाया, इसमें कितने वृक्ष हैं, उनकी जड़े कहाँ तक गयी हैं और फल कबसे लगने हैं ? इत्यादि—
 ता उस विद्यासुरा जीवन तो इन उद्देश्योंके मुद्धानामें ही समाप्त
 हो जायगा । उसकी अपेक्षा तो यही पुरुष विशेष बुद्धिमान् है जो
 स्व प्रशस्तरका माथापस्त्रीमें न पड़कर चुपचाप उससे मधुर फल
 गन लगता है । इसी प्रकार जो व्यर्थ तरुं नितक्योंको उँइफर
 भगवद्भक्तिरूप अमृतमय मकरा पान करनेमें मग्न है वही महा
 बुद्धिमान् है, क्योंकि वाल्मरम ममस्त सम्प्रदायोंके चरम लक्ष्य तो
 एकमात्र श्राभगवान् ही हैं । हमने देखा था कि प्रयागके कुम्भपरंपर
 भिन्न भिन्न सम्प्रदायोंके साधु गृहस्थ लाखोंकी सदयामें एकत्रित हुए
 थे, किन्तु कुम्भपरंपरके समय उन मकरा एकमात्र लक्ष्य त्रिनेणाज्ञान
 ही था । उसी प्रकार विभिन्न सम्प्रदायोंमें ऊपरसे कितना ही भेद
 क्यों न रहे उनका आंतरिक लक्ष्य तो एकमात्र भगवत्प्राप्ति ही है ।

इसलिये कन्याणकामी महापुरुषोंको चाहिये कि निरंतर
 शुभ कर्ममें लगे रहकर अपनी जीवन नौकाका पतवार भगवान्के
 हाथमें सौंप दें । उनके नाविक हो जानेपर आजतक किमीको भी
 नसारमागमें डूबते नहीं देखा गया ।

इस प्रकार जैसा कुछ बना है यह भगवान्के धामोंका वर्णन
 भगवद्भक्त पाठकोंकी सेवामें समर्पण किया जाता है । मेरेमें लेखक
 होनेकी कितना प्रकारकी पात्रता नहा है । इसलिये इममें बहुत-सा
 श्रुटियाँ रह जानी स्वाभाविक हैं । आता है, उदार पाठक उनके ग्णिय
 मुझे क्षमा करगे ।



परिशिष्ट खण्ड

लेखक महोदय ने इस प्रथम केंद्र उही तीर्थोंका निरण दिया हे जो उनकी यात्रामें आये हैं। इनसे अतिरिक्त जो अन्य तीर्थ रह गये हैं उनमेंसे कुछ-कुछ स्थानोंका संक्षिप्त निरण यहाँ दिया जाता हे। इमें अधिकतर कल्याणके शिवाङ्क और शक्ति-अकके परिशिष्टाङ्कोंसे सहायता ली गयी हे।

द्वादश ज्योतिर्लिंगोंके अनिरिक्त भगवान् शंकरकी आठ मूर्तियों और भी बहुत प्रतिष्ठित हैं। वे पञ्चमहाभूत, मूर्य, चद्र और यजमानमूर्तियों कहलाती हैं। सूर्यप्रह भी भगवान् शंकरकी ही मूर्ति हे। काठियावाड़के सोमनाथ और बगालके चन्द्रनाथ भगवान्की चन्द्रमूर्तियों हैं। नेपालके पशुपतिनाथ यजमानमूर्ति हैं। गिरगाडीके एकाधेश्वर क्षिणिलिङ्ग हैं। मद्रास प्रान्तके जम्बुकेश्वर जम्भूर्ति हैं। तिरुण्णमन्लेके अरुणाचलम् तेजोलिङ्ग हैं। आर्कट जिलेके कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग हैं और चिदम्बरम्के नटराज आकाशलिङ्ग हैं। इनमेंसे सोमनाथ, एकाधेश्वर, जम्बुनेश्वर और नटराजका निरण पहले दिया जा चुका है। शेष पशुपतिनाथ, कालहस्तीश्वर और अरुणाचलम्का निरण इस प्रकरणमें यथास्य उ दिया जायगा। पहले श्रीपशुपतिनाथकी वर्णन किया जाता है।

पशुपतिनाथ

श्रीपशुपतिनाथ नेपालकी राणाानी काठमाण्डूमे बागमती नदीके तटपर विराजमान हैं। यह पञ्चमुनी महादेवजीकी सुवर्णमयी मूर्ति है और केन्द्र कटिप्रदेशसे उपरका ही भाग है। मूर्तिके आसपस चोंदीका जैंगला है, जिसमें पुजारीके सिवा और किसीके भी प्रवेश करनेकी आज्ञा नहा है। यहाँतक कि स्वयं नेपालसम्राट् भी उसके भीतर नहीं जा सकते। श्रीपशुपतिनाथ ही नेपालके वास्तविक सम्राट् है। नेपालनरेश उनके प्रधान मन्त्री कहे जाने हैं। नेपाल रापमें बिना पासपोर्टके गहरका धोर मनुष्य नहीं जा सकता, केवल महाशिवरात्रिके अवसरपर एक सप्ताहके लिये यह नियम नहीं रहता। उसी समय देश देशान्तरकी जनता काठमाण्डू जाकर श्रीपशुपतिनाथके दर्शनोंसे अपने नेत्राको धुनार करती है। यहाँ जानेके लिये यात्रियोंको रक्माल स्टेशनपर उतरना चाहिये। रक्मालसे तीन दिनका पैदलका मार्ग है।

गुह्येश्वरी

श्रीपशुपतिनाथसे दो फलांगकी दूरीपर नेपालराज्यकी अग्निप्राची श्रीगुह्येश्वरीदेवी हैं। ये भी बागमती नदीके तीरपर ही विराजती हैं। नेपालराज्य इनका अनन्य भक्त है और नगरात्रके दिनमें स्वयं महाराज मपरिवार तिल्यप्रति रागमतीमें स्नान करके इनके दर्शन करते हैं। यह भारतके प्रधान शक्तिपीठोंमेंसे एक है।

हरिहरक्षेत्र

बिहार प्रांतके मारन जिलेमें श्रीगङ्गा आर गण्डकीके सङ्गमपर सोनपुरनामक एक स्थान हे । इमीको हरिहरक्षेत्र कहते हैं । यहाँ प्रत्येक कार्तिकी पूर्णिमापर दस दिनतक बहुत बड़ा मेला होता है । इतना बड़ा मेला उत्तर भारतमें सम्भवत अन्यत्र नहीं होता । इस समय यहा हाथी, घोड़े, ऊँट, गाय, भैंस आदि जीवजंतु तथा कपड़े, बरतन एव अन्व्याय सब प्रकारकी चीजोंका खरसाव होता है ।

कहते हैं, इसी स्थानपर श्रीविष्णुभगवान्ने ब्राह्मके मुग्धसे गजेन्द्रका उद्धार किया था तथा जिस समय भगवान् राम सीतार्थके स्वयंवरमें जनकपुर पधारे थे उस समय इसी स्थानपर उन्होंने मुनिवशिष्टामित्रजीने श्रीगङ्गानीकी उत्पत्तिकी कथा सुनी था । उसी समय उन्होंने यहाँ एक विष्णुमंदिरकी स्थापना की थी । यह स्थान बी० एन० टरन्वु० आर० का स्टेशन है ।

नवद्वीप

मुद्रापमान रहता है। गाड़ीय सम्प्रदायके वैष्णव इमे श्रीवृन्दानन धामके समाप्त परिवार मानते हैं।

यह नगर बहुत दिनोंसे विद्याका केन्द्र रहा है। श्रीचैतन्य दत्तक समय यहा मंरुदों टोल थे, जिनमें विभिन्न देशोंके मटसों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। उसा समय श्रीरघुनाथशिरोमणिते मिथिलाके पक्षरामिश्रको शास्त्रार्थमें पराम्ण कर यहाँ न्यायका प्राशान्य स्थापन किया था। तन्ने आजतक यह नगर न्यायका प्रधान पाठ रहा है। यहा भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें बहुत से विद्वान् न्यायकी उच्चशैलीकी शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। भारतमें न्यायका प्रधान केन्द्र नगरीय ही है।

नगरीपका वर्तमान नाम नदिया है। किसी समय यह गेनरदाय राजाजोषी राजधानी थी। इस समय इसकी यह पूर्वशी तो नहीं है, ना भी भावुक भक्त आर विचारशील नैयायिकोंके हृदयमें आज भी इसके लिये वैसा ही आदर है। इसकी जनसंख्या प्रायः एक हजार है। यहाँ प्रायः १४१७ टोल हैं, जिनमें मंडा विद्यार्थी नियोजन करते हैं।

गोहाटी

यह आसाम प्रांतका एक प्रसिद्ध नगर है। यहाँसे दो मील पश्चिमकी ओर नीलगिरि अथवा नीलकण्ठनामक पर्वतपर एक प्रान्त

मिद्वपीठ है, जो भगवती कामार्या या कामाक्षाके नामसे प्रसिद्ध है। कालिकापुराणके अनुसार यहा देशी मनीकी योनि गिरी थी। यह भारतके प्रगनतम शक्तिपीठोंमें है। यहाँके ममान शक्तिमध्यत्री अतुष्टानोंकी सिद्धि अन्यत्र कहीं नहीं होती। प्रगन तीर्थ एक अँवेरी गुफाके भीतर है। इस स्थानपर एक कुण्ड-मा ह जो पुष्पोसे आच्छादित रहता है। इस योनिपीठके पाम ही एक मंदिरम देवीकी मूर्ति भी है। यात्रियोंको यहाँ पण्डोके घरोंमें ही ठहरना होता है।

तिरुवण्णमल्ले

यह स्थान चिदम्बरम्के उत्तर पश्चिममें तिल्लपुरमसे आगे कटपडी जानेवाली लाइनपर ह। यहाँ श्रीमहादेवजीकी सुप्रसिद्ध अष्टमूर्तियोंमेंसे अरुणाचलम् नामका तेजोलिङ्ग विद्यमान है। यहाँ श्रीपार्वतीजीने तपस्या की थी। उन समय अरुणाचल परतमें अग्नि-शिखाके रूपमें एक शिखलिङ्ग प्रकट हुआ। उही वर्तमान तेजोलिङ्ग ह। यह स्थान भारतके प्रगन तीर्थोंमेंसे एक ह। इसे दक्षिणका कैलाश कहते हैं।

तञ्जौर

यह दक्षिण भारतका बहुत प्राचीन नगर है। यहाँका बृह-दीश्वर महादेवका मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। मंदिरके बाहर नदीश्वर की बहुत विशाल मूर्ति ह, जो सोल्ह फीट लंबी, सात फीट चौड़ी १६ फीट ऊँची है। यह मंदिर प्राय एक महम

१३ फुगना है। इसकी ऊँचाई दो सौ फीटके लगभग है। मन्दिरके चारों ओर किन्तनी-भी गार्ड है। प्रधान द्वारके गोपुरकी ऊँचाई प्रायः नव फीट है। इस मन्दिरके पास ही सुव्रतपथ म्यामी अर्थात् श्रीव्यामिसान्निभेयनीय मन्दिर है। उसकी शोभा भी अजुलनीय है।

तन्दारके सचनहल और पुस्तकालय भी दर्शनीय हैं। इस पुस्तकालयमें सरस्वती प्रायः १८ हजार हस्तलिखित पुस्तकें हैं, जिनमेंसे ८ हजारके लगभग ताड़पत्रपर लिखी हुई हैं।

कालहस्तीश्वर

तिरुपति बालाजीसे कुछ ही दूर उत्तर आरकट जिलेमें सुवर्णमुखी नदीके तटपर कालहस्तीश्वरका मन्दिर स्थित है। मन्दिर बहुत ऊँचा और सुन्दर है तथा रेलवे स्टेशनसे प्रायः एक मीलकी दूरीपर है। मन्दिरके गर्भगृहमें वायु और प्रकाशका अभाव रहता है। दर्शन भी तीव्रकर प्रकाशमें होते हैं। लोगोंका विश्वास है कि यहाँ भगवान् शंकर एक वायुके विशेष झोरेके रूपमें सर्वदा विराजते रहते हैं। यह शिवलिङ्ग गोल नहीं है, चौकोर है। शिवलिङ्गके सामने ही कण्ठभोजनी मूर्ति है। यह एक अनन्य शिवमूर्ति हो गया है, हमने अपने दोनों नेत्र निकालकर शिवजीको अर्पण कर दिये थे। इससे प्रसन्न होकर जब भगवान् ने वर माँगनेको कहा तो हमने यही वर माँगा कि मैं आपकी सेवाके लिये सर्वदा आपके समीप ही रहूँ।

सुवर्णमुखी नदीका सम्बन्ध शालग्राममूर्तिसे माना जाता है। अनजिन यात्रियोंके पास शालग्रामकी मूर्ति रहती है वह यहाँ

एक रात्रि अग्र्य निवास करते हैं। दाभिणात्यलोग इस तार्थको काशीके समान ही मोक्षदायक मानते हैं। यहाँ एक मणिकुण्डेश्वर नामका मन्दिर है। इसमें लोग मरणासन्न व्यक्तिको सुला देते हैं। उनका विश्वास है कि काशीके समान यहाँ भी श्रामहोदेवजी मरणासन्न पुरुषको तारक मन्त्रका उपदेश करके मुक्त कर देते हैं। यहाँ शिवरात्रिके अक्षरपर सात दिनतक उड़ा मेरा लगना है। पाम हा एक पहाड़ीपर भगवती दुर्गाका भी मन्दिर है।

मल्लिकार्जुन

मन्दास प्रान्तके कृष्णा जिलेमें कृष्णानदाके तटपर श्राशोल नामका एक पर्यत है। उसके ऊपर मल्लिकार्जुन नामका ज्योतिर्लिंग निराजमान है। कहते हैं, किसी समय इस पर्यतके समीप चित्रगुप्त नामका एक राजाकी रानधाना थी। उसकी कया एक विशेष निपत्तिसे उचनेके लिये राजमहलसे भागकर श्रीगोलपर चगी आया। उसके पास एक श्यामा गौ थी। कोई अज्ञान व्यक्ति रोज चुपचाप उस गायका दूध दुह डेता था। एक दिन मयोगेश राजकन्याने उस चोरको दूध दुहते देखा लिया। वह उसे मारनेको दोड़ी। परंतु यहाँ एक सुन्दर शिवलिंगके अनिरिक्त और कुछ लिखाया न दिया। उस राजकन्याने वहाँ एक सुन्दर मन्दिर बना दिया। वहाँ शिवलिंग मल्लिकार्जुनके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

दक्षिणमें वम स्थानका बहुत मान है। श्राशोलको वैशिशके समान पवित्र समझा जाता है तथा भगवान् मल्लिकार्जुनके दर्शनार्थ से राजा महाराजा भी आते रहते हैं। यह मन्दिर प्राय

ग हत्तार यत्र पुराना । इसकी कागीगाता बहुत दर्शनीय है । अगले चार मील की दूरी पर यहाँ विनयनगरक राजा कृष्णराय आये थे । उन्होंने यहाँ एक सुवर्णशिवमूर्तिदत्त मण्डप बनवाया था । उनके पास महागन शिवजी भी यहाँ की यात्रा करके एक धमशाला बनवायी थी । यहाँ शिवरात्रिक अगस्त्य पर बड़ा भारी मेला लगता है । मन्दिरक समीप पार्वतीकी एक अग्न्याश्रम भी है । उन्हें यहाँ भ्रमरगन्ध्या कहते हैं ।

यहाँ जानेके लिये रा० एन० आर०के बान्देय स्टेशनसे मन्दास आर शिवग मगठा रेलवेद्वारा बसवाटा जाना चाहिये । यहाँसे गुण्डर जानवाला लाइनसे चलकर नन्दा स्टेशनपर उतरें । नन्दासे मोरद्वारा आभाकर आग जायें । वहाँसे राठ मा० दूर पैलगाडीद्वारा नागादुटी जायें तथा महादेव आर वीरभद्र स्वामीक मन्दिर पर ऊँचे शरनोके दर्शन करें । इस स्थानसे मन्दिराजुन शक्तिसे भी दूर है । दुगम पहाड़ी मार्ग है परन्तु यह रमणीय । बीच-बीचमें विश्रामस्थान भी मिलने हैं । रास्तेमें लटकता भय और जलशय्य रहता है मन्दिरे आभाकरसे अपने साथ माटा चल भी ले लेता चाहिये । स्टेशनसे बचानेके लिये निनामरायण आरसे पुलिसका प्रबंध रहता है । मन्दिराजुनसे पाँच मीलकी दूरी पर उत्तमपर कृष्णानदीमें स्नान कर सकते हैं । यहाँ कृष्णामें स्नान करनेका शास्त्रोंन बड़ा माहात्म्य बताया है । इस जगह कृष्णाकी पानागंगा कहते हैं । हैदराबाद आरसे निनाम स्टेट-रेलवेद्वारा बुरहू स्टेशनसे भी आभाकर जा सकते हैं ।

घुश्मेश्वर

घुश्मेश्वरको घृणेश्वर तथा घुसृणेश्वर भी कहते हैं। इनकी गणना भी द्वात्रिंश ज्योतिर्लिंगोंके अन्तर्गत है। निजामराज्यमें निजाम-स्टेट रेलवेके मनमाड स्टेशनसे ६६ मीलकी दूरीपर दौलताबाद स्टेशन है। वहाँसे १२ मीलकी दूरीपर वेरुलगायके पाम भगवान् घुश्मेश्वरका सुप्रसिद्ध मन्दिर है। स्टेशनसे रग्गाडीद्वारा वहाँ जा सकते हैं। यदि मोटरसे जाना हो तो दौलताबाद न उतरकर औरङ्गाबाद उतरना चाहिये। औरङ्गाबादसे घुश्मेश्वर जाते समय मार्गमें दौलताबाद या देवगिरिका सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक किंग मिलता है। यह किंग एक पहाड़ीकी चोटीपर है। यहाँ वारेश्वर शिवलिंग और श्रीएकनाथ महाराजके गुरुदेव श्रीजनार्दन महाराजकी ममांगिके दर्शन करने चाहिये। यहाँसे आगे इलोरामें गुफाएँ आती हैं। इलोरा जानेके लिये इलोरारोड स्टेशनपर उतरना चाहिये। इलोरा इतना सुन्दर स्थान है कि ब्राह्म, जन और मुसलमानाने भी इसकी रमणायतासे आकर्षित होकर यहाँ अपने अपने स्थान बनाये हैं। कुछ लोग तो यहाँके केगममन्दिरको ही घुश्मेश्वरका असला स्थान मानते हैं। वर्तमान घुश्मेश्वर और देवगिरिके बीचमें महसूल्लिंग, पातालेश्वर, सूर्येश्वर, मूर्खकुण्ड और निवकुण्ड आदि कई प्राचीन स्थान हैं।

घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंगके प्राकृतिक विषयमें ऐसी कथा प्रसिद्ध है कि पूर्वजालमें देवगिरिपर्वतके पाम सुवर्मा नामका एक ब्राह्मण उसका सुदेहा और घुश्मा नामकी दो पत्नियाँ थीं। ये रहिनें थीं और अपने कांड सतान न होनेका प्रमाण

हा आपनपूराक अर्धो पनिअ सुग्गोके साथ पाणिमटण कगया धा ।
 एन नान मे आरम्भन ती वडा म्नेह ग्हा, परा पीछे सुदेहाके
 हृदय इन्धान सुग्गने लगा । धुस्मा भगवान् शङ्करकी उरनिअ
 भी आर प्रतिनि १०१ पाथिअ ग्नि बनान्क उनन्क पूजन कर्तौ
 धी । काण्तरमे उमके पुत्र उपन्न हुआ आर जब न कयस्त हो
 गया तो उमका निराह होनेपर धर्म पुत्ररू भो आ गयी । यह
 सब गहरकर सुदेहाकी इन्धो निनोडिअ करने लगी और उसन एक
 दिन रात्रिमें मोय हुए उम काङ्करी हत्या करके उमे उम्मी तागममें
 डाल दिया निममे धुस्मा शिरच्छिद्वोका निमर्जन करती था ।
 प्रात काल होनेपर जब उमकी गधुने देना कि उसका पति शम्पापर
 नहीं ह तथा उसका निडीना रूजते उपपन्न हो रहा है ना यह
 चीज मारकर देने लगा । वम, बोधी ही देरों धर्म जुडराम मग
 गया । परतु धुस्माक चित्तपर उसका छुट भी प्रभाउ न हुआ, वह
 मगरी नानि ही भगवान्के ध्यान-पूजनादिमें लगी रहा । जब
 पूजनके पश्चात् वह शिरच्छिद्वोका निमर्जन करनेके त्रिये तागमपर
 आया तो वह लइना जीवित होकर बाहर निरुत्त आया आर उसने
 अपनी माताकी इसा प्रकार बदना की जैसे वह सर्वथा विदेशमे
 आकर क्रिया करता था । इससे भी उसे कोई विशेष हर्ष न हुआ,
 किन्तु इमे भगवान् शङ्करकी त्याग समझकर वह आनन्दमग हो
 गयी । उमकी तमयता देखकर भगवान् प्रकट हो गये आर अपने
 त्रिशूळद्वारा सुदेहाका शिर छेदन करनेका उद्यत हुए । किन्तु
 धर्मपरायणा धुस्माने उनसे हाथ जोडकर प्रार्थना की कि प्रभो !
 आप मेरी बहिनको क्षमा करें । अवश्य ही उससे यह भयङ्कर पाप

वा गया है, परन्तु आपका दर्शन होनेपर तो बड़े-से-बड़ा पाप भी नहीं ठहर सकता। इसलिये आप ऐसी वृथा कीनिये कि मैं किसी प्रकार उसके अमङ्गलका कारण न बनूँ।' धुश्मानी एमी उगारना देगकर भगवान् बहुत प्रसन्न हुए और उममे न मोंगनेको कहा। तब धुश्माने प्रार्थना की कि 'प्रभो! आप सर्वदा यहीं निरातर अपने दर्शनोंसे ममारका कन्याण करें—यही मेरी इच्छा है।' उस, भगवान् शङ्कर 'एवमस्तु' कहकर यहा ज्योतिर्लिंगके रूपमे निराजने लगे और धुश्मेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुए। भगवान् धुश्मेश्वरकी बड़ी महिमा है। शिवपुराणमें कहा है—

ईदृश शैवल्लिङ्गं च दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते ।

सुखं मयर्षते पुसा शुङ्गपक्षे यथा शशी ॥

अर्थात् ऐसे शैवल्लिङ्गका दर्शन करके पुरुष सब पापोंसे मुक्त हो जाता है और शुङ्गपक्षमें चन्द्रमाके समान उमके सुखकी वृद्धि होता है।

इलोराकी गुफाएँ

इलोराकी गुफाएँ दालतावा स्टेशनसे प्रायः सात मीलकी दूरीपर स्थित हैं। यहा जानेके लिये इलोरोड स्टेशनपर भी उतर सकते हैं। गुफाओंतक पक्का सड़क बनी हुई है। ये गुफामन्दिर पहाड़ी काटकर बनाये गये हैं। इनका निर्माणमे किस्ता प्रकारके चूने आदि मसालेका प्रयोग नहा किया गया है। इनकी मर्यादा २५-३० के लगभग है। इनमें कैलास नामका मन्दिर सबसे बड़ा और सुन्दर है। कुछ लोगोंके मतमें यह मन्दिरका आठवां आधर्य है। यह प्रायः हजार-चारह सौ वर्षका पुराना है। हममें भगवान्

17 का नाम ललाट। ललाट है तथा इसकी आकृति मत्तलान्त रूप में है। यहाँ की मूर्तियाँ मूर्तियों में मूर्तियों हैं। ललाट पदों में इसकी मूर्तियों में ललाट करने के लिये एक द्विधा है जो भी इसी 17 का नाम ललाट है। आर्वाँ ललाट कर दनी है। इसका प्रतीक ललाट के लिये बनाया जाता है। कला है इसे मन्त्र पतिदत्त के लिये बनाया गया था। यह बौद्ध धर्म के लिये भी बनाया है।

एलिफेण्टाकी गुफाएँ

एलिफेण्टाकी गुफाएँ के सम्बन्ध में प्रायः 5 मीटर की लंबाई का टापू है। यहाँ धार्मिक नौकर या स्तम्भों का नाम है। यहाँ दो पद पत्तों के ऊपर 4 मीटर की लंबाई पर मूर्तियाँ बनाई गई हैं। इनका विभाग का लंबाई 2 मीटर की लंबाई पर पत्तों है। इन मूर्तियों में मन्त्र, ललाट, श्री परी, अधाराला, तथा मन्त्र विष्णु, महाशक्ति मूर्तियों विशेष दर्शनीय हैं। प्रायः तीन सौ वर्ष पूर्व यहाँ मन्त्रों का नाम-धामका प्रायः पूर्णतया के अभाव था मन्त्रों के लिये यह एक मन्त्र और मूर्तियों के लिये करने के लिये एक द्विधा है, जो भी एलिफेण्टाकी विशेषता समारम्भ अपना एक विशेष स्थान रखा है। चित्र तथा लिखितग्रन्थों से बड़े आकारकी दृष्टिसे दृश्य हैं। गुफाओं के लिये एक मन्त्र ललाट बनाया गया है तथा समुद्रसे गुफाओं तक जानेके लिये साहियाँ बनी हुई हैं। सम्बन्धित मन्त्रों के धामपुत्र कहते हैं।

श्रीभीमशकर

भीमशङ्कर ज्योतिर्लिंग कम्बईसे पूर्वका ओर करीब ७० मील की दूरापर पुनामे प्राय ४३ मी० उत्तरकी ओर भीमानदीके उद्गम-स्थानपर स्थित है। यहाँ जानेके लिये कम्बईसे पुना जानेवाली जी० आर० पा० रेलके नेरालनामक स्टेशनपर उतरना चाहिये। यहाँसे भीमशङ्कर प्राय १६ मी० पूर्वकी ओर है। दश मीलतक बंग्गादीना रास्ता है, फिर पैदल चलना पड़ना है। पहाड़ी मार्गकी गठिनतामे बचनेके लिये कुछ लोग नेरालसे ४४ मील आगे तलेगाँव स्टेशनपर उतरते हैं। यहाँसे भीमशङ्कर २४ मील है और सीधा बेलगाडाना रास्ता है।

यहाँ शङ्करजा मठपर विराजमान है। यहींसे भीमानदी निकलती है। स्वयं ज्योतिर्लिंगसे भी रोडा थोड़ा जल बरता रहता है। मन्दिरके पास प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ नाना फडणवीसके बनघाये हुए दो कुण्ड हैं। निकट ही एक अंटी सी कम्पी है। कहते हैं, पूर्ण भीमक नामका एक सूर्यवंशी राजा तप करना था। जब मागधु शङ्करने त्रिपुरासुरको मारकर इस पर्यन्तपर विश्राम किया तो उसकी तरस्यासे प्रमत्त होकर उसे दर्शन लिया तथा राजा भीमकके रर मार्गतेपर वे यहा ज्योतिर्लिंगके रूपमें निवास करने लगे।

शिवपुराणकी एक कथाके अनुसार यह ज्योतिर्लिंग आमास प्रातःके कामरूप जिलेमें गोहाटीके पास ब्रह्मपुर पहाड़ीपर स्थित बताया जाता है। तथा कुछ लोग ननीनाल निलेके उज्ज्वलनामक स्थानमें जा विश्राम करते हैं उसे श्रीभीमशङ्करका स्थान बताते हैं।

पूना

यह महाराष्ट्र प्रान्तका प्रान नगर है। यह मूठानदाके दक्षिण किनारेपर समुद्रके वरातलसे प्राय साढ़े अठारह सौ फाटकी ऊँचाईपर स्थित है, इसकी जनसंख्या डेढ़ लाखके लगभग है। यहाँका जलवायु बहुत स्वास्थ्यप्रद समझा जाता है। यह समुद्रतलसे प्राय ३१ सौ फीटकी दूरीपर है। जुलाईसे नवम्बर मामनक गर्मियों गणनमेण्टका दफ्तर यहाँ रहता है। यह दक्षिण भारतमें अग्रणी सेनाका भी प्रान स्थान है। सारा नगर सफेद पत्थरके परकोरसे घिरा हुआ है।

पूना महाराष्ट्रके प्रान शासनस्थान रहा है। २१ वीर पेशवाओंके बहुत से स्मृतिचिह्न विद्यमान हैं। यहाँका पार्वती मन्दिर समस्त महाराष्ट्र प्रांतमें मान्य है। यह पार्वतीहृत्क तीरपर पार्वतीशिखरके ऊपर सुशोभित है। इसका मिनार और भी बहुत से मन्दिर और राजप्रासाद नगरका शोभा बढ़ाते हैं, जिनमें टुंजेवर, भेरन, पाद्मालक्षरका गुहामन्दिर, ओङ्कारेश्वर, हरिहरेश्वर, नागेश्वर, मोमेश्वर, सङ्गमेश्वर, गायत्री, मुगलेश्वर, गामपुरके त्रिपु, तुम्सीनागक राम, बेलगागेके त्रिपु और लक्ष्मीपुलके त्रिठोता तथा भवानी, योगेश्वरी और गणपतिक मन्दिर विशेष उल्लेखनीय हैं। मन्दिरोंके सिवा यहाँ कृषि और इञ्जिनियरिङ्गका एक विश्वविद्यालय, मित्रिया उन्नी, गांगारूपाणा, गोरवागान, होल्करसेतु तथा पुस्तकालय जाति और भी बहुत से दर्शनीय स्थान हैं।

इसका संस्कृत नाम 'पुण्यपुर' है। प्राचीन कालमें यहाँ प्रानतनया ब्राह्मणलोग निवास करते थे। वर्तमान समयमें भी

निकर, गोखले आदि महाराष्ट्रीय नेताओंका कार्यक्षेत्र होनेका सोभाग्य रती नगरको प्राप्त हुआ है। इस नगरके आसपासका पर्यतीय प्रान्त बड़ा ही मनोरम है।

इमी जिलेके प्रनापगढ़ नामक स्थानमें महाराज शिवाजीजी इष्टया भगवती भवानीका मन्दिर है। कहते हैं, महाराज शिवाजीसे प्रमत्त होकर भगवतीने उन्हें एक अमोघ खड्ग दिया था। उसीसे वे यन्त्रापर विजय प्राप्त करनेमें समर्थ हुए थे। अभीतक महाराज शिवाजीका वज्रपर कोल्हापुरनरेशोंकी कुलदेवी भवानी ही है तथा उनका राश्ट्रका निशान खड्ग है। उसके नीचे 'जय भवानी' लिखा रहता है। कोल्हापुरमें श्रीमहालक्ष्मीजीका मन्दिर है। यह इस प्रान्तका सबसे बड़ा शक्तिपीठ समझा जाता है।

महावलेश्वर

महानलेश्वर उम्बई प्रान्तका पहाड़ी स्थान है। ग्रीष्म ऋतुमें प्रान्तीय गवर्नमेण्टका आफिस और गवर्नर यहा रहते हैं। यह उम्बईमें प्राय दो सौ मील दक्षिण पश्चिमीघाट पर्वतमालाके ऊपर बना हुआ है। रास्ता पूना होकर जाता है। पहल रेलमें और फिर मोटरद्वारा जाना होता है। यहाँका दृश्य बड़ा ही मनोहर है। इसी जगह कृष्णानदीका उद्गमस्थान है। जहाँसे कृष्णा निकलती है यहाँपर महादेवजीका एक प्राचीन मन्दिर बना हुआ है। यहाँसे प्रनापगढ़ और सिंहगढ़के किले भी पास ही हैं। अफजल गोंको मारनेके पश्चात् महाराज शिवाजी इस स्थानपर आय थे। उस समय उस विजयकी उपरक्षमें उन्होंने उस मन्दिरका शिपर सुवर्णमें मटवा दिया था। यह स्थान जलवायुकी दृष्टिसे बहुत अच्छा है।

पण्डरपुर

श्राक्षत्र पण्डरपुर रम्वसे २६७ माल दक्षिण है। यहा पूना होकर जाना जाना है। मार्गम बदे हा मन्ारम पहाडी पड़ते हैं। कई स्थानपर रेलगाड़ा सुरगके भातर होकर जाता है। कुडूवाडी पहुचकर गाड़ा बदलनी पड़ती है। दो-तीन माल धरसे हा चन्द्रभागाके तटपर बसे हुए इस पुण्य क्षेत्रकी जोभा यात्रियाँकि चित्तोंको अपना ओर आकृषित कर लेती है। स्टेशनसे क्षेत्र मी-डेड़ मील दूर है।

महाराष्ट्र देशमें इस क्षेत्रकी बड़ी महिमा है। यह शरकरा सम्प्रदायका प्रान्त तार्थ है। भायुक भक्तगण इसे भूजकुण्ड या दक्षिणकी द्वारानी कहते हैं। यहा प्रतिवर्ष लगनों यागी विभिन्न प्रातासे जाकर श्रीविठ्ठ भगवान्के दर्शनोंसे अपने नेत्रोंको सफा करते हैं। बहुत से शरकरी साधक दण्डरत्न करने हुए इस पुण्य क्षेत्रका यात्रा करते हैं।

शरकरा सम्प्रदायके आदिप्रवर्तक पुण्डरीक ऋषि माने जाते हैं। उनका पितृसेवा लोकविख्यात है। एक बार उनके माता पिता उनकी गोदमें शिर रखकर मोये हुए थे। उसी समय भगवान् उनका पास पधारे। परंतु यह सोचकर कि इस समय उठनेसे माना पिताकी नाद टूट जायगा, उहाँने उसी प्रकार बेठे-बैठे ही भगवान्का प्रणाम किया और एक पासमें पडी हुई ईंट उठाकर उसपर बैठनेक लिये भगवान्से प्रार्थना की। भगवान् उनका एमी पितृभक्ति दायर बहुत प्रसन्न हुए और उनका आंतरिक प्रेमरस श्रीविठ्ठल्यमूर्तिके रूपमें

आजतक एक ईंटर ही रखे हुए हैं। भगवान् विद्वान् हा गारकरी सम्प्रदायके प्रधान उपास्यदेव हैं। पुण्डरीक रूपिक पीछे श्रीजानेश्वर, नामदेव, एरुनाथ, तुकाराम एव रामदास आदि महामाओंन एम धर्मका बड़ा प्रचार किया है।

इस सम्प्रदायके अनुयायियोंका नियम है कि आपाड़ी आर कार्निनी एकादशियोंपर अगस्त्य पण्डरपुरकी यात्रा करें। इन यात्राओंको 'गारा' कहते हैं। इससे इस सम्प्रदायका नाम 'गारकरी' पड़ गया है। पण्डरपुर पहुँचनेपर यात्रीका सबसे पहला कर्त्तव्य यह है कि तीर्थ पुरोहितके यहाँ अपना सामान रखकर नगे पैर जाकर श्रावणगान्के दरवारमें हाजिरी दे। बहुत लोग तो मारा यात्रामर जूता नहीं पहनते।

श्रीनिठलभगवान्का मन्दिर बहुत प्राचीन है। इसका जाणोंद्वार स० १३३० में हुआ था। अत अपने वर्तमान रूपमें भी यह प्राय साढ़े छ सौ वर्ष पुराना है। यह अत्यन्त सुदृढ़ और कल्याणपूर्ण है। इसमें आठों दिशाओंमें आठ द्वार बने हुए हैं। मुख्य द्वार पूर्वकी ओर है। चन्द्रभागासे मुख्य द्वारतक पश्ची सदक बनी हुई है, जिसके दोनों ओर पुण्यमाला, मिथ्री, पेड़े एव नारियल आदि पूजन सामग्रीकी दूकानें हैं। भगवान्के सिंहासनगामी कोठरीमें कोई झोग्या नहीं है। इसलिये उममें प्रजागके लिये तिन रात गान दाएक जलते रहते हैं। मूर्ति श्यामवर्ण है आर प्राय दाई तीन हाथ भगवान् कटिप्रदेशपर हाथ रखे एक ईंटर गढ़े हुए हैं।

दक्षिणा पगड़ा है, अगपर धोती एव

२२६ तथा मन्तरपर चक्रनका गौर लगा है । भगवान्के गिरर
एक मूर्ति पर धाराधामकी विगजमान हैं ।

विगत मन्तर धारा मूर्तिमें प्रवेश करने हैं वे 'पुच्छक' मन्तर
एक मन्तर के धाममें उसे गुञ्जायमान कर देते हैं । उस मन्तर
मन्तराधिकारके चिन्तम पर प्रसारके आनन्दमय ललासका लहरती
लटन लगता है । भगवान्का उमि देने हा बनता है । इस उद्विग
सुख ललास महागष्टके अनेको भावुक मन्तर प्रमुखो अपना सर्वस्व
ममरण कर चुके हैं । इगहरा, दिवाग, मन्तरमन्तराति जीर
रगपञ्चनाका आरका विशेष शृंगार होता है । इस समय आपको जो
आभूषण पहनाये जान है उनका मुख्य दश पञ्च ललाके लगमा
नयाया जाता है ।

भगवान्का सेना पूजाका बड़ा सुन्दर प्रबंध है । विशेष आता
मन्तर पर धारा स्वय भी पूजा कर सकता है । इसके अग्ये दो आनका
टिक्कट लगाकर भरकारी मामन्तरदार (तहमीन्दार) में आना लेनी
पड़ती है । यह पूजा ओडशोपचारमें बंद मन्त्रोंद्वारा हाती है ।
इसमें प्राय पचाम साठ रुपये गगने हैं । द्विजानियोंका तो स्वय पूजा
करनेका अधिकार मिल जाता है, परन्तु शूद्रोंको ब्राह्मणोंद्वारा
कगनी पडती है ।

भगवान्के मंदिरने पीठ उसा अहातेके भीतर रविमणी,
समभामा, रात्रिका तथा महालक्ष्मीके मंदिर हैं । रविमणीको यहाँ
'रगुमा' कहने हैं । यह मूर्ति बड़ी ही भाग्यपादक है । भगवान्के
गाहिनी आर श्रीवत्सामजीका मंदिर है । रविमणीजीने मंदिरके

जगमोहनमें ही तुलजाभगानीकी मूर्ति है। मंदिरके बाहर जो प्रथम सादा हं उसे 'नामदेव पाहिरी' कहते हैं। नामदेवजी निरन्तर भगवान्के सामने मंदिरके द्वारपर हा रहते थे। यहीं उनकी समाधि भी बनी है। यहीं भक्तगर चोग्यामेलाकी भी समाधि है। मंदिरमें भानर प्रवेश करते ही एक वृक्षके नीचे काहो पात्राका समाधि है।

पण्डरपुर भीमानदाके तटपर बसा हुआ है। उसे यहाँ चन्द्रभागा कहते हैं। यहाँकी जनसंख्या पचास हजारके लगभग है। शहरमें निनलीकी रोगनी और जन्मल आदिकी सुव्यवस्था है। यहाँका न्मारतोंमें अधिकतर पत्थर लगे हुए हैं। यहाँ पण्डोंकी सग्या दांतान सहस्रके लगभग है। ये लोग बहुत शान्त है, अन्य स्थानोंके समान यहाँ पण्डोंसे यात्रियोंको कोई कष्ट नहीं पहुँचता। नगरमें श्राद्धानेश्वर, पञ्जान भानुदास आदि महात्माओंकी समाग्रियोंकी प्रतिनिधिरूपा समाग्रियाँ बनी हुई हैं। उनपर प्रतिर्ष असली समाधिस्थानोंसे इन महात्माओंकी पालकियाँ आती हैं। उनके साथ आनेवाली बहुत भी कार्जन मण्डलियों अपनी सुमधुर त्रिसे नामामृतकी र्पा करके श्रोताओंका कृतार्थ कर दती हैं। नरदीपके समान इस पुण्यधाममें भी हर समय हरिनामसकीर्तनकी ध्वनि होती रहती है।

नागेश्वर

नागेश्वरज्योतिर्लिंग गोमतीद्वारनामे बेटद्वारना जाने समय बारह नेरह मील पूर्वतरेकी आर मागमें पड़ता है। इसके आग्निर्भायके ग्रन्थमें शिवपुराणमें ऐसी कथा आती है कि एक सुप्रिय नामका

। और शिवभक्त वैश्य था। वह एक नार नाममें कहीं-

को यात्रा कर रहा था कि इसा समय अरुम्मात् दास्क नामका एक राक्षस उसे उमके अथ साथियोंके सहित उठाकर अपनी पुरीमें ले आया और जारागारम उद कर दिया । सुप्रिय यहाँ भी भगवान् शकरका आराधना करता रहा और अपने साथियोंम भा शिवभक्तिके स्तम्भार डालने लगा । धीरे-धीरे यह समाचार दास्कके कानोंतक पहुँचा । उसने आकर देना तो सुप्रियका यानामथित पाया । तब उमने उमे धमकाकर कहा, 'रे मूढ ! यह आँग मूँकर न क्या पड़्यन्त्र रच रहा है ?'

किन्तु इसपर भी सुप्रियका समाधि भङ्ग न हुई । तब उमने अपने तेजस्वर उमका उध करनेकी आज्ञा दी । भगवान् शकर यह अयाचार न देख सके, उन्होंने ज्योतिर्लिङ्गरूपमें प्रकट होकर सुप्रियको अपना पाशुपतास्त्र प्रदान किया । यह उमसे समस्त राक्षसोंका सहार कर शिवलोकको चला गया । भगवान्क आदेशानुसार उस ज्योतिर्लिङ्गका नाम 'नागेश्वर' पड़ा । इसका दर्शनाका बड़ा माहात्म्य है । कुछ लोगोके मतमे यह ज्योतिर्लिङ्ग निजाम-राज्यातर्गत औद्दामाममें है, जो चोंडी स्टेशनसे १२ मीलक लगभग है, तथा कोर् अन्मोडामे १७ मील उत्तरपूर्वमें स्थित यागेश या जागेररगिर्लिङ्गको नागेश्वरज्योतिर्लिङ्ग मानते हैं ।

आबू

आबू पर्यट या माउण्ट आबू राजपूताने और गुजरातका प्रधान पर्यतीय स्थान है । यहा राजपूतानकी रियासतकी ब्रिटिश प्रतिनिधि (A G G) का दफ्तर है । अपने प्राकृतिक मांर्ष्य-

की दृष्टिसे इस प्रातमें यह स्थान अनुपम है। ऊँचे-ऊँचे पर्वतोंकी गोदमें सुविशाल नदी तालकी शोभा बड़ी ही मनोमोहक है। यह ताल यहाँका प्रधान तीर्थ है। कहते हैं उसे गानमश्रुपिने नगोंसे रोदा या, वृसीसे वृसका नाम नदी या नखा ताल हुआ है। इस तालका घेरा एक मीलके लगभग है। इसके आस पासकी पर्वतमालापर बड़ी दूरतक राजपूतानेकी विभिन्न रियासतोंके राजकीय बैंगलोंकी शोभा देखते ही मनती है। निम्न प्रकार यह स्थान राजनैतिक आर प्राकृत दृष्टिमें महत्त्वपूर्ण है उसी प्रकार धार्मिक दृष्टिसे भी इसका महत्त्व कम नहीं है। बहुत प्राचीन कालसे यह महानाओंकी तपोभूमि आर एक पवित्र तीर्थके रूपमें सम्मानित रहा है।

माउण्ट आबू जानेक लिये यात्रियोंको अहमदाबादसे दिल्लीकी ओर जानेवाली बी० वा० एण्ट मी० आई० रेलवेके आवूराड स्टेशनपर उतरना चाहिये। यहाँसे यह स्थान प्राय १८ मीलकी दूरीपर है। यात्राक लिये नियमित मोटरमर्चिसकी व्यवस्था है। मोटर-द्वारा माउण्ट आबू पहुँचनेपर यात्रियोंको होटल या कुछ निर्दिष्ट स्थानोंपर ठहरना होता है। यहाँ कोई धर्मशाला नहीं है। किंतु ऐसे कुछ मन्दिर हैं जिनमें यात्रियोंके ठहरनेका सुव्यवस्था है। इनमें श्रीरघुनाथजीका मन्दिर और दूलेश्वर महादेवका मन्दिर प्रधान हैं।

श्रीरघुनाथजीका मन्दिर—यह मन्दिर नदी तालके तटपर सुशोभित है। इसमें प्राय २०० यात्री बड़ी सुविधापूर्वक ठहर सकते हैं। मन्दिरके अग्रकारी यात्रियोंकी सब प्रकारकी सुविधाओं-

का मान सकते हैं। श्राद्धनामजाकी मूर्ति बड़ी ही मनमोहिनी है। इन मन्दिरक आगे कुछ गुफाएँ भी हैं, जिनमें एकान्तप्रेमी महाभाग या भजनानदी पुरुष ठहर सकते हैं। यह रामानन्दी धष्णराज स्थान है।

श्रीदूलेन्द्र महादेवका मन्दिर—यह स्थान भी श्रद्धाप मन्दिरक समीप ही है। यह दशनामा सन्यामियोंका अखाड़ा है। इसमें ७० ८० यात्रियोंके ठहरनका स्थान है। कुछ गुफाएँ इस मन्दिरक भा अधीन हैं।

इनका मित्रा राजपूताना-होटल तथा कई छोटे-छोटे विश्राम-भवन भी हैं, जिनमें यात्री सुभीनेमें ठहर सकते हैं। यहाँके प्रधान माथाका विवरण इस प्रकार है—

अर्जुदादेवी—आरूना असगी नाम अर्जुदगिरि है। अर्जुदगिरिक प्रधान शिखरपर श्रीअर्जुदादेवका स्थान है। यह देवीके ५५ प्रदान पीठोंमेंसे है। मन्दिरक पहुँचनेके लिये पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। भगवतीकी मूर्ति एक अँधरा गुफाके भीतर है, जिसमें मनुष्य बैठकर ही घुस सकता है। गुफामें हर समय दीपक जलता रहता है, यहाँमें वस्त्राका दृश्य बड़ा सुहाना जान पड़ता है।

वसिष्ठाश्रम और गोमुख—यह स्थान वस्तीसे प्रायः चार मीलका दूरीपर है। यहाँ पहुँचनेके लिये प्रायः आठे मोड़ नीचे उतरना पड़ता है। इसके लिये पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। यहाँ श्रीवसिष्ठजीका मन्दिर है और एक कुण्डमें गोमुखमेंसे जलकी धारा गिरती है।

अचलेश्वर-यह शिवमंदिर प्रायः एक इंच के पुराने समया जाता है। इसके आम-पान और मर्हें २०००।

दिलवाडा-दिलवाडाका जैनमंदिर जैन समाज के समस्त भारतमें प्रसिद्ध है। यह मन्दिर प्रायः ३-४ इंच दुरापर है। यहां ३-४ जैनमंदि हैं। इनमें ३ मंदिर सुन्दर हैं। इनकी सगमरमका गगन, लकड़ के-उदें मूकट शिल्पज्ञ भी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। इनके लक्षण गत अठारह करोड़ इन्ध्यावन लाख और मूर्तों के लक्षण गत लाख लिखी हुई है।

गुरुशिखर-यहाँ भगवान् गुरुदेव के मूर्तों के होने हैं। यह स्थान आबूसे ४ इंच दुरापर बना हुआ है। इसके लक्षण गत ३००० भा है।

इनके सिवा सनसेट (३-४ इंच) और पोंण्ट आदि और भा मन्त्र (३-४ इंच) के हैं। यहाँ जमनी, स्वतः, कर्ण, मूर्तों के लक्षण सस्यापें है।

हान्तर गया है। मयाराके लिये बलगाड़ी आर ताँगे आण्टिके सिवा नियमित माटरसर्विसका भी प्रबन्ध है। बारह मीटरकी दूरापर एक घस्ता आती है, जिसे आम्बिकाजीका नगर कहते हैं। इसमें प्रवेश करते ही आइनुमान्जी और भैरवजीके मन्दिर मिलते हैं।

आरासुर पर्यन्त मन्द पथगता है। इसलिये श्रीअम्बिकाजी को गंगगढ़नाली कहते हैं। भगवतीका मन्दिर सगभरभरका है आर बहुत प्राचान है। मन्दिरके आस-पास ५०-६० धर्मशालाएँ हैं जिनमें पलग, त्रिठाना और बरतन आदिका भा प्रबन्ध है। अम्बिकाजीका गुजरान प्रातकी आराय देवी हैं। सारे प्रान्तरक बालकों का मुण्डनसंस्कार प्राय यहीं होता है। कहते हैं, भगवान् कृष्णका मुण्डन भी यहीं कराया गया था। गुजरातमें शायद ही ऐसा कोई ग्राम हो जहाँ अम्बिकाजीका उपासक न हों। इनके उपासकोंमें हिन्दू ही नहीं, अपि तु पारसा, जैन और मुसलमान आदि भी हैं। इनकी कृपासे इनके भक्तोंकी मृत प्रकृतिका कामनाएँ पूर्ण होता रहती हैं।

मानाजिकि दर्शन सपेरे ८ बनेसे दोपहरको धागह बनेतक होते हैं। भोजनका वार सपेरेके बाद दरभजा बन्द कर दिया जाता है। फिर सूर्यास्तके समय बड़े ठाटके साथ आरती हानी है। मन्दिरमें अगणित उग्र ओर घण्टे लटके हुए हैं। आरतके समय यात्रीलोग उन घण्टाकी ध्वनिमें ध्यानमग्न हो जाते हैं। मानाजीको सानों समय तीन प्रकारकी पोशाकें पहनायी जाती हैं, जिससे वे प्रात काल बाल, मयाहमें युवती और सायाहमें धृद्धा जान पड़ती

हैं। वानरमें माताजीका कोई आश्रित नहीं है। काल एक बीसा यन्त्र है, जो शृंगारकी विभिन्नताके कारण बंसा दिग्गामी देता है।

यहाँ आनेपर यात्री ग्वाने, जलाने आर शरीरमें लगानेमें तेर-का व्यवहार नहीं करते। सब काम घृतमे ही होते हैं। सपत्नीक होनेपर भी उन्हें ब्रह्मचर्यमे रहना होता है। मन्दिरके पास एक विशाल चौक है, इसे चाचर कहते हैं। यहाँ एक बड़ा तत्रा घीसे भरकर जलाया जाता है। रजस्वला स्त्री, सूतक लगे हुए लोग तथा अयमर्माग्लम्बी चाचरमें नहीं जा सकते। यदि कोई ऐसा करता है तो तत्रेमें जलते हुए घीमें धड़का होने लगता है।

साधारणतः प्रत्येक पूर्णिमाको श्रीअम्बिकाजीके यहाँ मेला लगता है, परन्तु भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक आर चैत्रकी पूर्णिमाको विशेष भीड़ होती है।

मन्दिरके प्रथमभागकी ओर छोड़ी दूरीपर मानसरोवर नामका एक स्रच्छ जलका ताल है। उसके दक्षिण पार्श्वमें अजाईमाताका स्थान है। यहाँसे एक कोशकी दूरीपर पहाडारु ऊपर गब्बर (गड्ढर) नामका स्थान है। गब्बरके शिखरपर तीन स्थान और भा हैं। एक माताजीके खेलनेकी जगह, दूसरा पारसपीपला कहलाता है और तीसरा श्रीकृष्ण भगवान्का नगरा है। यहीं श्रीयशोदाजीने भगवान्का मुण्डन कराया था। कहते हैं, इसी स्थानपर भगवान् कृष्णने रुक्मिणीजीका हरण किया था।

श्रीअम्बाजीसे प्रायः तीन मीलकी दूरीपर उदुम्बरवन है। यहाँ भगवान् कोटीन्दर शकरका मन्दिर है। यहींसे सरस्वती नदी निकल

है, ता मिदपुर-वाटण होत हूँ कच्छके - शान विर्जन हो जा
 ८ । होत सन तात थामपुरानस मन्त्र और एक श्रमती नी
 ८ ता एक दुग्डा गिरा ४ । इते केंद्रोदस कुण्ड सन्ने है ।
 यहा नडा चर्चित आगम भा ८ । इस स्थानपर राम पुत्र एव
 हयत सनस बड़ा माणस्य है । आभ्याजमे रानीगमक
 मानरससि है । रामोने निम १००० बनसोए हूए जैमदिह है,
 जिहें कुंभारिणा फरते ४ । कुंभारिणा और गिरादके
 मन्त्रोके निगामें जा प्रपुर अनराशे व्यय हूए है वन निगाराका
 श्रीधम्बानाथी श्रामे गहरक निकटतों भंडारा परतशिगमसे निग
 थी । इसरा रघुनिमे इन मन्त्रोमें आभ्याजास मूर्तियाँ भा पश्यानी
 गया है ।

आभ्याजानीस स्थान रौना गयक अतर्गत है । विशव अर-
 सरोपर गज्यती आससे बड़ा सुन्दर प्रया हाना है । यहा नीडोस
 प्रमानता है, परंतु गज्यक सुप्रबन्के कारण किमीकी फोंड हानि
 नहीं होनी ।

श्रीएकलिंगजी

राजस्थानके इतिहासमें मेराड प्रान्तका नाम रहे आदरमे
 दिया जाता है । उसका वर्तमान राजधाना उदयपुरसे प्राय माडे
 तेह माउ उत्तरकी ओर श्रीएकलिंगजीका सुप्रसिद्ध स्थान विगजमान
 है । उस प्रसोमी कौटसपुरी भा कहते हैं । यह वस्तो बहुत प्राचीन
 और रमणीय है । भगवा एकलिंगजीकी स्थापना मेराउके महाराणाओं-
 के पूर्वज श्रीगया राजने विक्रमी म० ८०० के लगभग की थी ।

श्रीसेठिया यशोवन्धु ।

उस समय वे नागदामें राय करते थे। नागदामें पाम एक बामाके
 हुएमें यह स्वयम्भू मूर्ति खिपी हुई थी। उस जगत्में हारीतराशि-
 नामक एक तपस्वी ऋषि रहते थे। मन्से पहूँचे उहे ही इस
 मूर्तिका दर्शन हुआ ओर वे इसकी पूजा करने लगे। उन्हामें
 कृपासे जापाको इसका दर्शन हुआ ओर उहोंने उस स्थानपर एक
 मन्दिर बना दिया। फिर हारीतराशिके द्वारा श्रीएकलिंगजीका पर
 पाकर उहोंने चित्तौड़पर चढाड कर दी ओर यहाँके मौर्यराजा राजा
 मानको मारकर अपना आधिपत्य स्थापित किया। तन्से उन्हाक
 राज मेराडपर राज्य करते आ रहे हैं। ये लोग श्रीएकलिंगजीको
 अपना इष्टदेव ओर मेराडका नास्तिक अधिपति मानते हैं तथा
 अपनेको उनका दीवान समझत हैं। श्रीएकलिंगजीका महिमा
 द्वादशशतकेलिङ्गोके समान है, मुसलमानी शासनकालमें जैसे यमनोंका
 बहुत से हिन्दू-मन्दिरोंपर आक्रमण होना रहा हे उसे हा इसपर भी
 हुआ है, किन्तु तत्कालीन मेराडराजपति इसका जीर्णोद्धार कराने
 रहे हैं।

श्रीएकलिंगजीकी मूर्ति श्याम पाषाणकी एव चतुर्भुज है।
 इसके चार मुख क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्यके हैं। ज-
 हरीके सहित इसकी ऊँचाई प्रायः टाई फुट है। मन्दिरकी ऊँचाई
 प्रायः ५० फीट और व्यास प्रायः ६० फीट है। इसका दो
 प्रधान द्वार हैं। पश्चिमी द्वार सर्वसाधारणके लिये है तथा पश्चिमी
 द्वारसे अगरेज, मुसलमान आदि अन्य धर्मात्माओंके दर्शन कर सकते
 हैं। पूजायें द्वारके पाशोमें श्रीराजी और पार्वतानाकी मूर्तियाँ हैं,
 तदव्यक्तियोंमें गणेशजी एवं स्वामिनीदेवता विराजमान हैं तथा

पारकमाम पूर्वका आर श्रीगगानीकी मूर्ति है। मटिके पश्चिमी
आर नभामण्डपम चौंदाके नक्षत्र है।

श्राकृतिगर्जीके मटिके आम पाम और भी बहुत से द्वाय्य
आर नरानर आदि हैं, जिनमें माराचार्यका मंदिर, अम्बिनामाता,
कान्तिनामाता मामनाथ तथा चारमुजा एर गणेशजाके मंदिर प्रधान हैं।
मन्दिरके पाम ही इन्द्रसागर नामका एक विशाल ताल है। उसके
तटपर भी कई शिगराज मंदिर हैं। इतान कणमें देलवाडकी
सड़पर हारातराशिकी गुफा, प्रिच्यसासिनीदेवी और भैरवके प्राचीन
मन्दिर हैं। यहा यात्रियोंके लिये राय्यका ओरसे बनवायी हुई एक
सराय है। उससे थोड़ी दूर एक झरना है। जहाँ धारेधर महादेवका
मंदिर आर तक्षककुण्ड है। कहते हैं, तक्षकनागने राजा जनमेजयके
यज्ञमें भागकर यहा अपन प्राण बचाय थे। इस कुण्डका
एक अङ्गुलि जल पानेमें मर्पना त्रिप उत्तर जाता है। इसके पाम ही
बागल ताल है। फिर थोड़ी दूर चलनेपर प्राचीन तागदा बस्ती
आरम्भ हा जाती है। यहा वाणा रावल्की समाधि तथा कई प्राचीन
मंदिर हैं, जो शिल्पकर्मकी दृष्टिसे बहुत सुंदर हैं। इस जगह
जनतीर्थङ्कर श्रीअद्भुतजीकी भी एक विशाल मूर्ति है।

भगवान् एकतिगनीकी पूजा वैदिक और तान्त्रिक विधिसे
दिनमें तीन बार होती है। आपकी मेया एर राग भागके त्रिप राज्य
की ओरसे प्राय एक लाख रुपया वार्षिकका बजट बना हुआ है।
इमके अतिरिक्त प्रत्येक सोमवार ओर प्रदापनी भगवान्की विशेष
रूपमें पूजा होती है। तथा श्रावण शु० १४, दीपमात्रिका, अन्न

[कूट, मकरसक्रान्ति, असतपञ्चमी एव महाशिवरात्रिको विशेष उत्सव
होते हैं। चैत्र वृ० १३ को भगवान् फाग खेलते हैं। वैशाख
वृ० १ को आपकी स्थापना हुई थी। उमलिये उस दिन भी विशेष
उत्सव होना है। इनमेंसे अप्रिकाश उत्सवोंपर महाराणा स्वयं पधारते
हैं। भगवान्के लिये लाम्बों स्पर्धोंकी लागतक रत्नजटित आभूषण
हैं, जो उन्हें विशेष असरोंपर प्रारण कराये जाते हैं। इस स्थानपर
दो मठार्च भी हैं, जिनमें साधु महात्मा ओर अभ्यागनोंको सीधे
लिये जाते हैं।

यहाँका दृश्य भी बड़ा ही मनोहर है। आस पासकी पर्यटन-
मागने इसे साक्षात् कैलासपुरीहीकी शोभा प्रदान कर दी है।
जटायुकी दृष्टिसे भी यह स्थान बहुत अच्छा है। उदयपुरसे
एकठिगजाके स्थानतक पक्की सड़क बनी हुई है, जो नाथद्वारेतक
चली गयी है। श्रीनाथद्वारा जानेवालोंको इस स्थानके दर्शन भी
असंभव करने चाहिये। उदयपुरसे पश्चिमकी ओर पाँच मीलपर एक
नक्षत्र महादेवका स्थान है। उसके पास ही एक कुण्ड है।
उसका जल सर्वदा एकरस रहता है तथा यहाँ एक बड़े आश्चर्यकी
गति है कि इस कुण्डमें एक महादेवजीका लिंग स्वयं ही चारों ओर
घूमता रहता है।

काँगडा

काँगडाका सुरम्य प्रदेश पंजाब प्रांतके पर्यटनीय भागमें
गिनना और जम्मूके मध्यमें स्थित है। महाभारतमें इस भूभागको
त्रिगर्त और कद्रत कहा है। कद्रतका अपभ्रंश ही कद्र है। यह

प्रातः जलतायुज। शक्तिसे बहुत ही आश्चर्यप्रद है। यहाँ प्रातः प्रातः नदियोंके उद्गमस्थान है तथा मेरु, नासिकी और अनार भाग में प्रयत्नरत भी बहुतसा पानी ही है। यहाँके बहुतान गार्गे स्थानपर याम नदीके प्रवाहको एक शक्तिसे गार्गे गे-नाम गार्गे लटकाए एक ऊँचे स्थानमें गिराया है। यहाँके पजारके स्थिति निजग पंग का जायगी। इस याममें प्रायः चौदह नगर अपना व्यय ही चुका है। इस स्थानके आश्रयक गार्गे ल गार्गे उद्ये पठनशालाके यामी द्वागर्गे एक मी आठ मात लम्बा रेल निजाग गया है। इसी गार्गेपर आश्रमगार्गे और कागडा नामके स्टेशन हैं, जासे यामी इस प्रदेशके प्रथम तीयाग जाते हैं। इस प्रातः आश्रमजी, भगव्योद, चित्तपूर्ण और वैद्यनाथ—ये चार प्रमुख तीर्थ हैं। आगे यहाँके मूर्ति पश्चिम दिया जाता है—

ज्वालानी—यह स्थान आश्रमगार्गे स्टेशनसे पन्द्रह मीलों दूरापर है। मोठ गरी जागे योग्य मुख्य पर्यटन सड़क बनी हुई है। यहाँमें प्रायः १) प्रति शक्ति भाड़ा गार्गे है। आश्रमगार्गे मंदिर एक १५ १६ माल गार्गे पर्यटन तरामें बना हुआ है, जिसे कागधर पर्यटन कहते हैं। आश्रमगार्गे जो पुराना मार्ग जागधर हाकर गया है, उससे इस पर्यटन दृश्य उडा ही चित्तार्थक जान पड़ता है। यह दूरमें एक विशाल दर्गकी दीवार-सा दिनाया देता है।

यह स्थान भारतके सुप्रसिद्ध शक्तिपीठमेंमें है। यहाँ सना देवीकी जीम गिरी थी। पर्यटन दालपर प्रायः ४० ५० मीदी चत्नेपर एक विशाल मंदिर बना हुआ है, जिसका मुख्य शिखर

श्रीकाशीविद्यनाथ-मन्दिरके समान सुवर्णसे मन्ना हुआ है। इसके पाम ही एक तास चालीस फीट लम्बा सुवर्णमण्डित त्रिशूल है। मन्दिरका प्रायः हजार-चारह मा तर्प पूर्ण कागडेके राजा ससार-चन्द्रन बननाया था तथा इसपर सुवर्णपत्र महाराज रणजीतसिंहका लगाया हुआ है। मन्दिरके आगनमें गर्भगृहके सामने एक चबूतरेपर त्रिशूल सुवर्णमण्डित सिंह भी रखे हुए हैं।

मन्दिरमें प्रवेश करते ही एक ओर झरनोके शान्त जलसे भरा हुआ एक तालाब-मा है। यमें हाथ पैर धोकर गर्भगृहमें जाना होता है। गर्भगृहके रजतमण्डित द्वार बड़े ही सुन्दर हैं। यमें बाचमे एक छोटा-सा कुण्ड मा बना हुआ है। यका सामने दारमें पत्थरकी दरारमें होकर एक प्रचण्ड अग्निशिला निकलती है, जो प्रायः एक हाथ मोटी और इतना ही ऊँची है। यह नाचेसे ता रूपाँके समान श्वेत वर्ण है किन्तु उपरकी ओर उत्तरोत्तर नील-रण होनी गया है। ये ही श्रीज्वालानी हैं। इन्हें दूध, पेड़ा और हलुआ-मा भोग लगाया जाता है। हलुआ या पेड़ा ज्योतिसे लगा लिया जाता है, इससे उसका कुण्ड अग्न झुलस जाता है। दूधका छोटा भी ज्योतिसे लगाकर हा भोग लगाया जाता है। इससे बड़े ज्योति लोटेमें आ जाती है और अलग हटानेपर भी कुण्ड देर उसीमें जूमता रहती है। यसे दूध कुण्ड कम हो जाता है। ज्योतिके ममाप हल्का-सी गर्मी जान पडती है किन्तु इसका स्पर्श करनेसे हाथ नहीं जलता। इस मन्दिरमें ४-५ जगह और भा ज्योनिया निकल रही है तथा एक कुण्डमें दूधके ममान श्वेतवर्ण जल भरा हुआ है।

रहते हैं एक बार उस पीठकी परीक्षाके लिये नम्राट् अकरन इस न्यातिके ऊपर लोहेके तबे लगाया, किन्तु उनमें ज्वाला दबो नहीं। फिर एक मोत्से नहर लाकर जागपर जउ छुड़नाया भू भा यह म्मी प्रकार जल्नी रहा। ऐसा करनेमें अकरनक नेत्रोंक शोनि नष्ट हो गयी। तब उमन नगे पैरों भगवतीकी यात्रा करक एक नव समर्पण किया। यह उव चौदीका ह और अभीतरक म्दिरमें रखा हुआ ह।

भगवता जात्राजाकी शयन आरता बड़ा दर्शनीय होता है। ऐसा भागमय दृश्य अयत्र बहुत कम देखनेका मिलेगा। इस तापकी स्थिति बड़ा ही रमणीय है। यहाँ ठहरनेके लिये स्थानकी भी कला म्हा ह। रेलवेका मार्ग एक मनोहर घाटीमें होकर गया ह। यहाका यात्रा करनेवाओंको पहले मार्गमें अमृतसर भा पड़ता ह। जहाँका सुवर्णमदिर ममारभरमें प्रसिद्ध है। उसके दर्शन अत्यन्त बन् चाहिये। ज्वालानीका धूप बहुत प्रसिद्ध ह।

त्रियेश्वरी—ज्वालामुखीसे अठारस मालका दूरपर भगवता त्रियेश्वराका सुप्रसिद्ध मदिर ह। इहें नगरकोट या कोट कांगड़का देना भी कहते हैं। यहाँ जानेके लिये कागड़ा स्टेशनपर उतरना चाहिये। देवीजीका पुराना मदिर सन् १९०५ क भूमयमें गिर गया था। अब दूसरा मदिर तैयार हो गया ह। यहा सतीजाका मुण्ड गिरा था तथा मूर्ति भी मुण्टकी हा हे। उसके ऊपर सुवर्ण मय छत्र सुशोभित ह। भगवताके सामन एक चादीसे मड हुए स्थानमें त्रायन्त्र रखा हुआ ह। यह भारतवर्षक सुप्रसिद्ध सिद्ध-पीठोंमेंसे ह। प्रतिवर्ष लग्ना यात्री यहाँ माताजाक दर्शनार्थ आते

है। पनाब और युक्तप्रान्तमें व्सी देवीपीठकी प्रतिष्ठा सबसे अधिक है। मंदिरके अहातेमें एक कुण्ड भा है, जिसमें बहुत-से प्राचान यूपमन्त्र रखे हुए हैं।

चिन्तपूर्णा—जालंधरमे पुराने रास्तेद्वारा जालजीको जान पर होणियागपुरमे ३० मास्की दूरीपर चिन्तपूर्णाजीका प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर मुख्य मडकसे प्राय डेढ़ मीलकी दूरीपर है। यहाँसे जालजा प्राय २८ मील हैं। हमक आस-पास बडा सघन पार्वय प्रदेश है। श्रीगजाजी त्रिघेन्धरी और चिन्तपूर्णाजी ये तानों पीठ काँगदेकी घाटाके सुप्रसिद्ध शक्तित्रिजोणके तीन मिरोंपर विराजमान हैं। इन तानोंहाके दर्शनार्थ प्रनिर्य लाखों यात्री आते हैं।

चैद्यनाथ—श्रीवंधान महादेवका मन्दिर पठानकाट-योगीन्द्रनगर छानपर कीरग्राम नामक गाँवमें है। यह प्राय हजार टक्क हजार वर्ष पुराना है। विन्पकलाकी दृष्टिसे यह मंदिर बहुत ही सुन्दर है। इसे पजाब प्रांतके शिवमन्दिरोंमें सर्वोत्तम कहा जा सकता है। इसमें भगवान् शकरका लिङ्गविग्रह विराजमान है। जालजाका यात्रा करनेवाले प्राय सभी यात्री इनक दर्शनार्थ भी भात हैं। इनक पाम श्रीमिदनाथ महादेवका एक और भी मंदिर है, जो इस मंदिरका अपेक्षा भा अधिक प्राचीन माना जाता है। इसमें श्रीमहादेवजीका अनगढ़ लिङ्ग विराजमान है।

अमरनाथ

कामौरक पूर्वय भागमे समुद्रतसे प्राय पन्द्रह हजार फीट ऊँचे पर्वतपर भगवान् अमरनाथका गुहामन्दिर विद्यमान

उत्तम गग इहाँका अमरेश्वरनामक ज्योतिर्लिंग मानते हैं। इन नियम गाम बात यह है कि यहाँका शिवलिंग और मन्दिर दोनों ही मनुष्यपुत्र न होकर प्रकृतिका कृति हैं। इस स्थानका यात्रा करने का एक दिन धारण शु० १५ का डानी है।

यह स्थान काशीरका गांधाना श्रीनगरमे ८५ माली द्वारा है। इनका तो तिलाइ माग माटरद्वारा आरामसे घट जाता है शय शला दुगम है और उमे पैदल हा पार करना होता है। इसमे काम चन्दनवाडा, शयनाग और पञ्चतरणा तीन पडाव पड़ते हैं। श्रावण शु० १४ को शामतक यात्रियोंका दल पञ्चतरणा पड़ने जाता है। यह स्थान अमरनाथपर्वतकी तट्टामें उमक शरक समान है। पूर्णिमाका सरे ही यहाँसे पर्वतपर चढ़कर गुफामें भगवान्के दर्शन कर सब यात्रा उमा दिन पञ्चतरणा लौट आते हैं। इस चढ़ावमें प्राय एक मास वर्षके उपर चढ़ना पड़ता है। गुफामें प्राय एक मोठ इस ओर यह बर्फीला गला समान हो जाता है। जहाँ एक पानाका नाग है। इसमें स्नान करनेका एक विशेष नियम है। यात्रियोंका चाहिये कि अपने सब वस्त्र उतारकर कान्त लगा पहनकर इसमें स्नान कर और फिर भागे हुए शरीरसे हा भगवान्के दर्शन करके फिर इसा स्थानपर लौटकर बल धारण करें। बहुत से श्रद्धालु पुरुष ऐसा करते भा हैं। इससे वहाँ सर्प नहा गती। इस जन्म को एमा पदार्थ है जिससे शरीर सूग्ने पर एमा माइम होता है माना देहम भस्म ग्या हुड है। गुफाके भीतर तान हिमलिङ्ग दिग्गयो देते हैं, जो श्रामहादेव, पार्वती और गणेशनाक प्रतीक म्नाये जाते हैं। ये सब ही बनने

हैं। गुफाकी उतसे बूँद-बूँद जल टपकता है, उससे शुरुपक्षकी प्रतिपदासे चन्द्रमाकी कल्यओंके माथ क्रमशः ये लिङ्ग भी बढ़ते रहते हैं तथा पूर्णिमाके पीछे इनका आकार घटने लगता है। यहाँ-तक कि अमास्याको ये त्रिलुल गल जाते हैं। यही क्रम प्रतिमास चलता रहता है।

यात्राके अग्रमण्डपर गुफामें एक ब्राह्मण वर्णके पुजारीरूपसे पूजाका सामान ग्रहण करते हैं। ये यात्रियोंके साथ श्रीनगरसे ही उनके अप्रणी होकर जाते हैं और उनके साथ ही श्रीनगर छोड़ आते हैं। इनके हाथमें एक चाँदीकी छड़ी रहती है, जो श्रीनगर छौटनेपर वहाँके मन्दिरमें रख दी जाती है।

यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी

उत्तरखण्डके तीर्थोंका दर्शन करते समय मूल्य धर्मकेवल नदरी, केदार आर उनके रास्तेमें आनेवाले तीर्थोंका ही दर्शन किया है। परन्तु यमुनोत्तरी और गङ्गोत्तरीकी महिमा भी कुछ कम नहीं है, इनके बिना तो वह दर्शन अपूरा ही है। अत्रिमाश यात्री तो इन मत्र स्थानोंकी यात्रा एक साथ ही करते हैं, कोई अलग-अलग भी करते हैं। अस्तु, अब हम सन्ध्यामें इन दोनों महातीर्थोंका इनके मागवर्ती तीर्थोंसहित दर्शन करते हैं।

यमुनोत्तरी गङ्गोत्तरी जानेके लिये आरम्भमें तीन प्रधान मार्ग हैं—(१) ऋषिकेशसे देवप्रयाग टेहरी-भन्डियाना होकर, (२)

अभिकेशमे नरेन्द्रनगर टहरी भण्डियाना होकर और (३) देहरादूनमे मन्गी-भण्डियाना होकर । इनमें उत्तरोत्तर परस्पर मार्ग टोटा है । पहले दो मार्ग टहरीमें मिल जाते हैं । इनमें प्रथम मार्गमे अभिकेशमे देहरी ८० मील हैं और द्वितीय मार्गसे प्राय ४० मील हैं । इन दोनों मार्गोंसे भण्डियाना क्रमश ०१३ और ५१३ मील हैं तथा तीसरे मार्गमे देहरादूनमे भण्डियाना ४६ मील हैं । फिर भण्डियानामे यमुनोत्तरी ५९३ मील तथा गङ्गोत्तरी ८८३ मील हैं । अब इन मार्गोंका क्रमश वर्णन किया जाता है—

अभिकेशसे देवप्रयागतक मोटरका मार्ग तैयार हो गया है इसका वर्णन मूत्रप्रथमें किया जा चुका है । देवप्रयागसे देहरा ३५ मीलके फामलेपर है । बाचम ७-८ चयियों पड़ती हैं देवप्रयागसे २ मीलकी कड़ी चढ़ाई कर रसोवेगोंन चढ़ आती है । उससे १ मीलपर धौलारघाटका झरना और वहाँसे २ मीलपर निङ्कोट नामका चरी है । इन तीनों पड़ावोंमें ठहरने और भोजन बनानेका सुभीता नहीं है । जलभी भी बहुत दिक्कत है । निङ्कोटसे ८ मीलकी दूरापर रसमाड़चढ़ी है । यहाँ यात्रियोंके ठहरने और रसोई बनानेकी सुविधा है । इससे १ मीलपर नागौ, फिर ४ मीलपर कैन्योली और उसमे ५ मीलके अंतरपर खालीचढ़ी है । यहाँ भी ठहरने और भोजन बनानेका सुवास है । यहाँसे १० मील आगे देहरी है ।

दूसरे रास्तेसे अभिकेशसे नरेन्द्रनगर प्राय ५ मील है । रास्ता पगण्डीका और कड़ी चढ़ाई है । नरेन्द्रनगरतक मोटरका

गस्ता भी है उसमें यह १० मां पड़ता है । नरेइनगर टंरा नरेइका ब्रमाया हुआ नयान नगर है । यहा रात्रकाय भात थार छोटा-सा बाजार भी है । यहासे १० मी०पर फकोटचट्टी है । बीचमें ६ मी०पर एक दुकान आर भी पड़ती है परतु वहा ठहरनेका निशेष सुभोता नहीं है । फराटमे ५ मां०पर एक आर चण है । और उससे ५ मी०पर चमुऑचट्टी है । यह चमी र्म मार्गमें सरमे ऊंचे स्थानपर स्थित है । यहासे १३ मीलका उतराईके मां देहरी राजधानी है

देहरी—देहरीके दोनों मार्ग बहुत चड़ा उतराईके हैं, इनमें पहला गगाजाका घाटोमें होकर जाता है कि तु दूसरा किमी नदाका घाटीका अनुसरण नहीं करता । देहरी नगर श्रीभागारपी आर मिलनगगाके संगमपर बसा हुआ है । गगाभातका गगनप्रयाग कहते हैं । यहाँ राजमां, कचहरिया आर गरि आदि अनन प्रकारकी इमारतें हैं । बाजार भी काफी बड़ा है तथा ठहरनेका निय कई धर्मशाळाएँ हैं । गगाकी समुत्पत्ती टंरी रात्रक ही अलगन है । क्षेत्रकाकी स्थिति यह सिवायत युक्त प्रा नमे समस पडा है । परतु इसकी वार्षिक आय बहुत बढाव पाव है । यहाँसे २ मी०पर पीपलचट्टी है और इससे गा० १३ मी० आगे मन्टिमाना है । यहाँ ११ मीलकी मडक, गंगाकीकी मडकमे मिं वाना है । अत यहाँवर्त, दे० मडककी मडक, पशुवाका भी निष्पान कराते हैं ।

इसमें ७ मीन्की दुगगर मुजागोली, निर एर मीन्पर
 झाग्गी और उगसे गे माट आग फौटलीचट्टी है । झाग्गसे
 एक पगडण्णाग मागे धगमूनर गथा है । उगसे प्राय १० गाग्ग
 पर रच गता है । परन्तु रास्ता अपशारुन फडा है । झाग्गी
 और फोट्टीमें मोलाषा दुग्गने और टह्णवे स्थान मा है ।
 फोट्टीमें छ माग्गी दूरीपर धनाट्टी है । यहाँ एक माग्गीरु
 दूग्गने और चाग्ग फाग्गीरुगोरी धर्मगाग तथा मराधन है ।
 जलका भा सुमाना है । देखरी स्ट्रेग्गी आरम्भ एक डाकगग्ग भी
 है । यहाँका चाइक यनका दूग्ग रडा ही मनाहर है । धनोटीस
 चार मीन् आगे रुहग्गार नामका एक पडाव है । इस लाइनम यह
 मरसे उँचा स्थान है । इससे चार मीन् आगे फानाताल है । यहाँ
 भी पचापना उर्मशाग और सदावर्त है । भोजन बनानेका भी
 सुभोना है । यहाँमें भन्डियातातरु प्राय दस मीन्की उतराई है ।
 बीचमें धौलद्वार और उडवासगौन नामकी दो चट्टी आती हैं ।

भंडियानाम बाबा कालीकमलीनालीकी धर्मशाला ओर सप्तार्ध
 । धर्मशाळासे प्राय ५० गज नीचे गगाजाका धारा बहती ह ।
 शौ दोनों सड़कोंका संगम होनेके कारण गग प्राय ठहरत है ।
 यहांसे ५ मीटरके अंतरपर छामगॉन ह । यहाँ नेपाल स्टेटकी एक
 धर्मशाला है । उसमें ठहरनका सुपास ह । उससे ५ मील आगे
 नगुणचट्टी हे । यहाँ गगाजी पाम ही आ जाती हैं । इस टापुमें
 परले-पहा गगास्नानका सुभीता यहीं मिलता ह । इससे ४ मील
 आगे धरामू हे । यहाँ ठहरने ओर भोजन नानाका विशेष सुभीता ह ।
 बाबा कालीकमलीनालीकी धर्मशाला ओर सप्तार्ध है तथा पाम ही
 भागारधाका धारा प्रवाहित होती है । धरामूसे ना मील आगे
 डुण्डाचट्टी हे । यहां भी धरामूके समान ही सम प्रकारका सुपास
 हे परंतु गगानी दूर हैं । एक झरनेके जलसे निर्वाह करना
 पड़ता हे । इसमें ३ मील आगे लक्कडघाट चट्टी ह । यह तिलकुल
 गगाजीके किनारे हे ओर इससे ३ मील आगे उत्तरकाशी ह ।

धरामूसे प्राये हाथको यमुनोत्तरीका सड़क गयी हे । जो यात्रा
 यमुनोत्तरी गंगोत्तरी दोनों तीर्थोंकी यात्रा करनेवाटे होते हैं वे धरामूसे
 मीचे उत्तरकाशी न आकर यमुनोत्तरी होकर एक दूसरे रास्तेसे
 उत्तरकाशा आते हैं । नाचे उस मागका विवरण दिया जाना ह ।

धरामूमें बाय हाथकी ओर एक पहाड़ा नाट्येके किनारे
 ऊपरकी ओर सड़क चढ़ती है । यह धरामूर ऊँची हा चढ़ती
 गयी ह । इस सड़कपर धरामूसे तान मालपर कल्याणी उसमें
 पाँच मील आगे कुमण्डा थार फिर तीन मालपर सिलकपाराचट्टी

ह । यहाँ पाम हा एक झरना है और एक सौपझीम मोट्रीकी दुकान तथा दूसरामें यात्रियोंने ठहरनेका स्थान है । इधर रात्रिके समय शान अधिक रहता है । इससे आगे चार मीलकी कड़ी उतराई चढ़ाकर बाद रानीसा होंडा आता है । यहाँसे एक मइक उड़ोडको गया है और एक उत्तरमाजीका । इस ओर लकड़ी चारनका व्यापार अधिक ग्गया जाता है । फिर आठ मीलके उतार-चढ़ाकर पश्चात् गङ्गणानीचट्टी आती है । यहाँ शान कुछ कम है । यात्रियोंके ठहरनेके लिये बाग कालकमगीकी धर्मशाखा है । मालियाका दूकानें तथा सज्जन मा हैं । यहाँका दृश्य बहुत सुंदर है । इससे ८ मील आगे समुना या कुपनोरचट्टी है । उससे चार मापर ओजरीचट्टी, फिर तीन मीलके ग्राहद रास्तेके पश्चात् राणागाँव आर उससे तीन मील आगे हनुमानचट्टी आती है । यहाँसे चार मील आगे खरमालीचट्टी है । यह अर्धग बड़ा और सुन्दर कस्बा है । यहाँ यात्रियोंके ठहरने आदिक भी बहुत सुभीता है । पाम हा नागगाँव आर समुनाका मगम तथा शनश्चरकी मीठ है । यहाँसे आगे चार मीलका उदगा उतार चढ़ाकर पार करनेपर श्रायमुनोत्तराकाक दगन होते हैं ।

यमुनोत्तरी---यमुनात्तरा श्रायमुनाचीका उद्गमस्थान है । यह उदरपुच्छपवनका एक चाटी है । यहाँसे केलामका तनिणी भाग प्राय १४ मील दूर है, परंतु बर्फकी अधिकताके कारण यहाँ कोई ना नहीं सकता । यमुनाचीका प्रवाह जल्दी बर्फ धाराएँ मिलकर मन्ता है । इनसे कोई बड़ी ना इतनी गर्म है कि उनमें कुछ देगनक आइ या चायलेकी पोटकी टालनसे वे उब

जाते हैं। यहाँ शीतली बहुत अधिकता है। यमुनाजीका ठोटा-सा
 स्त्रि है तथा दो तीन धर्मशाखाएँ हैं। इनके सिवा अग्रिकुण्ड,
 गरीकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि चार-पाँच कुण्ड और एक गुफा भी है।
 भावनरा साधारण सामग्री यहाँ मिल जाती है।

यमुनोत्तरीसे उत्तरकाशी जानेके लिये राणागौत्र गेटघर आना
 पना है। यहाँसे ७ मील कुयनोर, फिर १० मील उपरिगीट
 और उससे ६-७ मीलकी दूरापर उत्तरकाशी है। यह रास्ता बहुत
 उत्तरका है।

उत्तरकाशी—यह इस प्रांतका एक प्रधान तीर्थ और कस्बा
 है। यहाँ गंगाजीपर पक्काघाट बना हुआ है जिसे मणिकर्णिका
 कहते हैं। उसके पास ही गंगा कालाक्रमशीतलोंकी विशाल
 धर्मशाखा और सदावर्त है। इसके सिवा यहाँ पनाभेत्र, जयपुरकी
 सानमाताका सदावर्त तथा दण्डीक्षेत्र—ये तीन सत्र और भा है।
 कस्बाका बाचमें एक खुले मैदानमें श्रीविष्णुनाथजीका प्राचीन मंदिर है।
 उसमें सामनेकी ओर अष्टधातुका बहुत प्राचीन विशूल लगा हुआ
 है। इसके सिवा श्रीमटेदर, लक्ष्मंदर, अन्नपूर्णाकी अन्नराचार्यजी
 और सरस्वती आदिक कई छोटे-बड़े मंदिर और भी हैं। गंगाका
 जयपुरका एकादश शिवलिङ्गका मन्दिर बहुत सुन्दर है। यहाँ
 सिवा यहाँ माधु-महात्माओंके आश्रम और कुटियाँ भी बहुत
 अधिक हैं। श्रीपञ्चतुम तो यहाँ महात्माओंका मण्डपाने देह में
 लगभग हो जाती है। भजननिष्ठ, एतानमें ही और कर्मों के
 लिये यह स्थान बहुत अच्छा है।

उत्तरकाशी का उस्ता गंगक जूतरी चित्तौरी स्थान है। यहाँ
 गंगा जल एक एक सिंटी एक मिनिस्ट्रेंटर लाना है। उत्तरकाशी
 धाम उत्तरकाशी नहीं है। गंगातल्लरकी ठाक मन्नेमे शीली जल
 है। यह गंगा तालपरी ओरने एक चित्तौरीकृत, जमानत ओ
 पुर्णमस्तक भा है। यहाँकी कला बड़ी है। प्राय १५ २०
 दुकानें। गिनार अरिस्त आरुपत्र मन्नेमी मित्र लाना है।

उत्तरकाशीके नी मीठ आगे मुनेगीचट्टी है। यहाँ भी
 बाबा कागलमलीपालकी मेशाला और सदाशन है। इससे आगे
 आठ मीठपर भटवारीचट्टी है। यहाँ भास्वरेश्वर मन्नेरु
 प्राचीन मन्दिर है। कहते हैं इस स्थानपर सूर्यमगलान्ने तर किया
 था। यहाँ भी पचायती धर्मशास्त्र और सदाशन है तथा मन्नेमीकी
 दुकानें हैं। इस स्थानमे गन्नि हाथकी गगना पार काफ एक
 ६० माल गन्नी सदक नियुगीनारायणको गया है। गगनीनारी
 यात्राके बाद कलारनाथ-करीनाथके दर्शनके लिये जानना यात्रा
 इमी मागसे जाते हैं। भटवारीमे १० मीठ आगे गगणानीचट्टी
 है। यहाँके गला बहुत उतार-चढ़ावका है। यहाँ एक ४०-५०
 फीट ऊँचा जलप्रपात है तथा सदकमे कुछ ऊँचाईपर एक उष्ण
 जलका कुण्ड तथा परान्मुनिका मन्दिर है। इस पहाड़ीपर भा
 ठहरने और भाजा बनानेका ग्ल सुभीता है।

गगणानासे पाँच माल आगे शँडाचट्टी है और उससे चार
 मीठकी दूरीपर कड़ा चढ़ाईके पश्चात् सूजीचट्टी मिलता है।
 यहाँसे गगाजी बहुत दूर रह जाती है। परन्तु इस चरीकी धमशाला

बहुत सुन्दर है तथा यह भी बहुत सुन्दर है। बाबा का
 कर्मकांडों का रूपासे यहाँ भी मय प्रकारका सुगता है। यहाँ
 पंच मोड आगे हरमिलचट्टी है। इस स्थानमें नन्दियार एक
 सुन्दर दृश्य और कहीं नहीं मिलता। घोड़ी-घोड़ी दूरीपर हा
 गंगा, हरिगंगा और नीलगंगा आदि ३४ नदियाँ उगती कु
 षकर श्रामागीरधीनीसे अभिन्न हो जाती हैं। इस स्थानको हरि-
 प्रयाग कहते हैं। यहाँ निम्ननी व्यापारियोंका पड़ाव है। श्रामाग
 रयाक तटपर सुन्दर मर्मशाला और मन्दिर सुशोभित हैं। टहरनेका
 शय्या सुमीता है।

हरमिलसे दो माल आगे धरालीचट्टी है। रास्ता निम्न
 ममान है, चढ़ाई-उतरा नहा है। आम पासकी पर्यतमान
 देवदारके उनसे आच्छादित है। यहाँका दृश्य बड़ा सुन्दर है।
 धरालीमें श्रामागाजाकी तान धाराएँ हो गया है। गटा-सा पक्का गट है,
 उसपर आमने-मामने शिवजी आर पार्वतीजीके मन्दिर हैं। इनके
 नामने हमरे तटपर मानुष्य ऋषिक आश्रम है। गौतमी नाम
 सुम्बावा या मूनागौँव है। इसे मूपीमठ भी कहत हैं। यहाँ गगोत्तरा
 जाके पण्डोंके घर है। शीतनाम्ने श्रामागाजाकी चलमूर्तिको यहाँ
 ले आते हैं, फिर अश्वयतुतीयाको गगोत्तरीनीके पूट सुलनन
 उसे वहाँ ले जाते हैं। धरालीसे ढाई मील आगे जौंगलचट्टी है
 यह जङ्गलकी तप स्थली है। इससे चार माल आगे बहुत
 चढ़ाईके बाद भैरोंघाटीचट्टी आता है। यहाँ शीत बहुत
 पड़ता है। गगाजी बहुत नीचे रह जाता है। जल ब

नन्दारा गया गया है। बाबा कागजमठावालोंकी धर्मशाळा और नन्दवन भी हैं तथा एक छोटा सा मरौजीका मन्दिर है। यहाँसे ठा माणकी चढ़ाड उतराएक गाँव गगात्तराजीक दर्शन होते हैं।

गङ्गाोत्तरी—यह राजा भगीरथका तप स्थान है। गङ्गातीर तटपर भगाम्थजिअके दर्शन होने हैं। श्रीगङ्गाजीका बड़ा मुक्त छोटा सा मन्दिर है, जिसमें श्रीगङ्गाजीकी मूर्ति और उसी धाम-शाम यमुनाना, मरुम्यतीनी, भगारथ और श्रीशङ्कराचार्यजीकी मूर्तियाँ हैं। यात्रीगण गर्भगृहमें प्रवेश नहा कर सकते, पण्डितों उनकी पूजा ग्रहण करते हैं। यहाँ बाबा कागजमठावालोंकी ओरसे धर्मशाळा और मद्रावर्त है। उमरु सिता और भी कई धर्मशाळाए हैं। नस्तीके पास ही गङ्गाजामें कटारगङ्गा नामकी एक नदी मिलती है। गङ्गाजीको पार करनेके लिये यहाँ एक छोटा-सा पुल भी है। उनके दूसरा जोर कुछ साधुओंकी कुटियाएँ हैं। श्वरक मरानोंकी उम जोर दीवार प्राय देवदारुका ढकड़ीकी होता है। यहाँकि बाजारम भोजनकी सभा आनन्दक सामग्री मिल जाती है। परन्तु उत्तरकाशामें श्वर मय चीजे उत्तरोत्तर महँगी हानी जाती हैं, क्योंकि यहाँतक सामान लानके लिय बड़ी कठिनाई पडती है।

गङ्गाोत्तरीमें श्रीगङ्गाजीका उद्गमस्थान प्राय अठारह माठ आगे है। उसे गाम्मुख कहते हैं। यहाँतक जानेके लिये पगडण्डाका गमना है जो केवल वंशाम्भ मासके लगभग खुला रहता है। उससे पहले बर्फकी अतिक्रान्ते कारण जोर पीछे गङ्गाजीम जल बढ जानके कारण उम माससे जाना सर्वा असम्भव है।

मानसरोवर—कैलास

मानसरोवर आर कैलास—ये दोनों नाम भारतीय जनतामें अच्छा तरह परिचित हैं। जो लोग विशेष पढ़ लिखे नहीं हैं वे भी कुछ-कुछ दंतकथा इनके विषयमें सुना लेंगे। भारतवर्षमें इतने प्रसिद्ध होनेपर भी ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्होंने इन महातीर्थोंके दर्शन किये हों, अप्रियाश भारतीयोंको तो इनकी स्थितिका भी पता नहीं है। ये दोनों तीर्थ भारतका सीमासे ग़ाहिर हिमालयपर्वतके उत्तर तिब्बत दशमें विद्यमान हैं। जहाँ तक जाननेके लिये प्रायः तीन सौ मील लम्बा दुर्गम पर्वताय मार्ग पंदल पार करना होता है। फिर इतनी ही दूर छोटकर आना जाना है। इस यात्रामें कम-से-कम दो मासका समय लग जाता है। मार्गमें भी कुछ कम कष्ट नहीं है। ऐसे बहुत कम स्थान हैं जहाँ छहरनेका सुभीता है। यात्रियोंका अच्य आन्यक सामग्रीके सिवा एक ठंढा-सा टरा, मित्रका तेज और स्टोन लज्जाना भी परम आन्यक है, क्योंकि तिब्बतका सीमामें प्रवेश करनेपर जयनेके लिये लकड़ी या कोयला मित्रना बहुत ही कठिन है।

मानसरोवर आर कैलासके लिये चार मार्ग गये हैं। (१) सनखज-काँ घाटीमें होकर (२) गङ्गातरासे प्रायः दार् मील नीचेसे एक रास्ता ऊपरकी ओर जाता है, (३) बदरीनारायणकी ओर होकर आर (४) अन्मोडा धारचूरा हाँकर। इनमें पहला मार्ग सत्रमे लम्बा आर नमका अपेक्षा कठिन है तथा अन्निम सत्रसे सुगम है। अप्रियाश यात्री ये मार्गमें जाते हैं।

अम्बोड़ा जानेक ठिये यात्रियेका आर० के० आर० लम्ब
 काठगाणाम स्टेशनपर उतरना चाहिये । यहासे अम्बोड़ा ८१ मै
 है । यहाँकर जाँव ठिये नियमित पोस्टमार्गमहा प्रान्त
 पहाड़की टेढ़ा मेढ़ा आर उतार-चढ़ावकी मददपर माट्टमे पर
 करते हुए तरह-तरहक थिरिप दृश्य आते हैं, जिनमे इन्ना एक
 मार्ग फटनेमें कुठ विराम रूप नहा होना । किन्तु निही रिहोई
 हा धुमार विरायमें चक्र भा जान लगना है और वान हा ग
 है । ऐसे जेगेंका यथामम्मर मोचा कम करना चाहिये ।
 काठगाणामसे अमाइलक मयारी आर रानीरेत—य हा प्रगिइ
 पर्वताय स्थान मार्गमें आत है । जो टाग नैनाताल दखना चाई
 उहें काठगाणामसे नैनातालक थिय बठना चाहिये और वहाँसे
 अम्बोड़ाक थिये । नैनाताल मयुक्त प्रांतका मरौट्टुष्ट पर्वतीय
 नगर है । यहाँका दृश्य बढ़ा हा सुन्दर है । यहा प्रीम्बकामें
 प्रांताय गभर्नरका दफ्तर ग्ता है । एम स्थानपर नैनालीरीरा मंदिर
 है । यह भारतके प्रधान शक्तिपीठम गिना जाना है । यह एक
 विशाल ताक तटपर स्थित है । इस ताकका कारण हा इम नगर
 का नाम 'नैनाता' हुआ है ।

अम्बोड़ामे मानसरोवरतकका माग तीन विभागमे विभक्त
 किमा जा मरता है । इनमेंसे प्रत्येक विभागके आरम्भम नय कुल
 करने पड़ते हैं । पहले अम्बोड़ासे धारचूलातकके ठिय तुलियाका
 प्रान्त करना चाहिये । अम्बोड़ाम थारामट्टुष्ण विवेकानन्द मिशनसे एम
 यात्राक थियमें बहुत सी उपयोगी बात माट्टम हो सकती हैं तथा

गर्वियाका जम्ना भागतरप और तिन्वनकी सीमापर ह । यद्मे आगे घेड या झञ्ज नामका एक पहाड़ पशुपर चढ़कर यात्रा का ना मकना ह । वज्रका आकार भमके समान होता ह तथा उसके तारपर बहुत श्वेत्-लम्बे त्राठ होते है । इसे चैत्रगाय भी कहत ह । राजा भा रहाना पाठपर लादकर ढोया जाना है । गविभमे आगे तिन्वन नेश ह इमन्थे यहाँ भारतीय भाषा समझनेवालाका भी अभाव मा है । अत यहासे यात्रियोंको एक शुभापिया भा सामने लेना पडता ह । अब आग मार्ग यवपि चडाई-उतराईका नहा ह सर्वथा समतल भूमि ह, परन्तु उममें वृक्षोंका प्राय अभाव हा ह तथा रायु भी बहुत शान आर ता-ल्प चलता है । इमके मिय छुटेरोंका भा भय ह । अय नेश होनेके कारण उममें प्रवशाका आज्ञा लेनी पडनी ह तथा सिक्का भी बदलना होता ह । य दानों कार्य ताफलाफट मण्डा पहुँचनेपर क्रिये जा सकते हैं । तामलाफ-से मानसरोवरक पहुँचनेमें चार दिन लगते हैं ।

मानसरोवर हइके पश्चिममें रायणताल हे । इन दोनोंके राचमें जो भूखण्ड है उसका चौड़ाई प्राय १ मीलसे २ मीलतक हागा । इमके उत्तरी मिरेश एक नाअ है, जो इन दोनों महाहदाना मिय देता है । यह विशय गहरा नहा ह । इन दोनों सरोवरोंकी परिधि ६० मीलके लगभग है । इनका प्रगान्त गम्भीर नाल वक्ष स्थल हृदयमें अद्भुत भायोंको जायत् कर दता है । इतनी लम्बा आर विस्तृत यात्राके पश्चात् इन शांत सरोवरोंके दशन कररु चित्त अ यन्त विश्रांत हो जाता ह । ये सरोवर चार महानदियोंके उद्गमस्थान हैं ।

इनमेंसे पूर्वकी ओर ब्रह्मपुत्र, दक्षिणमें कर्णावी, पश्चिममें सनकज और उत्तरमें सिन्धुनदा प्रवाहित होनी हैं। इन सरोवरोंकी स्थिति समुद्र तलसे प्रायः पाँच सहस्र फीट ऊँची है।

मानसरोवर और रावणतालके उत्तरी भागसे प्रायः १० मील की दूरीपर वैलासपर्जत है। यह भगवान् शङ्करका निवासस्थान है। इनका आकार-प्रकार देखनेसे यह स्वयं भी एक विशाल विस्तीर्णता जान पड़ता है। इनकी ऊँचाई समुद्रतलसे प्रायः पाँच हजार फीट बतायी जानी है। इसका निगर सन्त हिमाच्छादित रहता है। यानीलोग इनकी परिभ्रमा और पूजनादि करण है। परिभ्रममें ४५ दिन लग जाते हैं। यहाँ शीतका माघाद्य है, कहीं-कहीं वर्षके ऊपर होकर भा चलना पड़ता है। पश्चिमपुच्छ गुफाएँ और कुण्ड मिलते हैं। इनमें गोरीकुण्ड मयमे शीतक प्रसिद्ध है। यह समुद्रतलसे प्रायः अठारह सहस्र फीटकी ऊँचाई पर है। इसकी परिधि आध मीलके लगभग है तथा इसके उत्तरी भाग सर्पित वर्षकी तरह जमा रहता है। कंगम पर्वतके निचले भाग धुण्डतक अर्धगोलाकार हिमाच्छादित दार्णिक निगम है। इसे वैलासर्ज पिनारु (वनुप) कहते हैं। भगवान् शङ्करका प्रसिद्ध शख पिनारु प्रसिद्ध ही है, जिसका नाम 'विनाशयानि' कहे जाते हैं। यह मानो उसीका प्रतीक है।

इस प्रकार श्रीमैलामर दुर्गम दर्शन के यात्रियोंका निरुपयुक्त मार्गसे ही लाटकर आना होता है। इनके स्थिति इनका दुर्गम स्थान और कोई नहीं है। स्थिति दर्शक जानें

गर्बियाकी वस्ती भारतवर्ष और तिब्बतकी सीमापर है। वहाँ आगे घोंड या शन्वू नामका एक पहाड़ी पट्टपर चढ़कर यात्रा क जा सकती है। शन्वूका आकार भैंसके समान होता है तथा वस्ती शरारपर बहुत गम्भीर जाल होने है। इसे चैत्रगाय माँ कहते हैं। मोझा भी यहाँ पीठपर लदकर डोया जाता है। गर्बिये आगे तिब्बत दश है वस्तिये जहाँ भारतीय भाषा समझनेवालों भी अभाव-सा है। अतः यहाँमे यात्रियोंको एक टूभायिया भाँसाँ लेना पड़ता है। अब आगे मार्ग यद्यपि चढ़ाई-उतराईका नहीं है मर्या समतल भूमि है, परन्तु उसमें वृक्षोंका प्रायः अभाव है तथा वायु भी बहुत शीत और तीक्ष्ण चलता है। इसके भिन्न छटेरोंका भी भय है। अथ देखा होनेका कारण उसमें प्रवेशकी आज्ञा लेनी पड़ती है तथा सिक्का भी बदलना होता है। ये दोनों कार्य ताकगकोट मण्डा पहुँचनेपर किये जा सकते हैं। ताकगकोट से मानसरोवरतक पहुँचनेमें चार दिन लगते हैं।

मानसरोवर हल्के पश्चिमम रागताल है। इन दोनोंके बीचमे जो भूखण्ड है उसकी चौड़ाई प्रायः १ मीलसे २ मीलतक होगी। इसके उत्तरी सिरेपर एक नाग है, जो इन दोनों महाइन्द्रको भिन्न देता है। यह विशेष गहग नहीं है। इन दोनों मरोरोंकी परिधि ६० मीलके लगभग है। इनका प्रशांत गम्भीर नील रंग अल्प हृदयमें अद्भुत भावोंको जाग्रत कर देता है। इतनी लम्बाई और निकट यात्राक पश्चात् इन ज्ञात मरोरोंके दर्शन करके चित्त अत्यन्त विश्रान्त हो जाता है। ये मरोर चार महानदियोंके उद्गमस्थान हैं।

इनमेंसे पूर्वकी ओर ब्रह्मपुत्र, दक्षिणमें ऊर्णाला पश्चिममें मनलज आर उत्तरमें सिंधनदा प्रवाहित होती हैं। इन मरुतरोंकी स्थिति समुद्र-तलसे प्रायः पन्द्रह सहस्र फीट ऊंची है।

मानसरोवर और रावणनालके उत्तरा भागसे प्रायः १० मालकी दूरीपर कैलासपर्वत है। यह भगवान् शङ्करका निवासस्थान है। इसका आकार-प्रकार देखनेमें यह स्वयं भी एक त्रिगाल त्रिभुज-सा जान पड़ता है। इसकी ऊँचाई समुद्रतलसे प्रायः बाईस हजार फीट बतायी जाती है। इसका गिरर सर्वदा हिमाच्छादित रहता है। यारीलोग इसकी परिक्रमा आर पूजनादि करते हैं। परिक्रमामें ४५ दिन लग जाते हैं। यहाँ शीतका साम्राज्य है, कहा कहीं रफिके ऊपर होकर भा चलना पड़ता है। परिक्रमामें कुछ गुफाएँ और कुण्ड मिलते हैं। इनमें गौरीकुण्ड सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह समुद्रतलसे प्रायः अठारह सहस्र फीटकी ऊँचाईपर है। इसकी परिधि आधे मीलके लगभग है तथा उसके जलका ऊपरी भाग सर्वदा बर्फकी तरह जमा रहता है। कैलास पर्वतके शिखरसे इस कुण्डतक अर्धगालाकार हिमाच्छादित ढाल दिग्वायी देता है। इसे कैलासका पिनाक (मनुष्य) कहते हैं। भगवान् शङ्करका प्रसिद्ध जल पिनाक प्रसिद्ध ही है, जिसका कारण वे पिनाकपालि' कहे जाते हैं। यह माना उमीका प्रतीक है।

इस प्रकार श्रीकैलासमन् दुर्लभ दर्शन करके यात्रियोंको पि उपर्युक्त मार्गमें ही लोटकर आना होता है। हिन्दुओंके नीचे इतना दुर्गम स्थान है, जहाँ जानेवाले

इन विनियोग ही होते हैं। विशाल धृष्ट दूर्जन या सुकुमार पुरुषोंसे
 वे उल्टी यात्रा सफल हो रही जगना चाहिये। यहाँ पहुँचारा
 किटा मौर या महाभाजति दर्शन भी नहीं होते। कुछ बौद्ध
 गंगा अरुण्य मिलते हैं। परन्तु उनमें भा साधुता की अपेक्षा धूर्तता
 और दया चाली है। यह सब बातें दृष्ट भा हम जानते, पत्रि
 संग स्थान की यात्रा निष्फल है। एसी जान नहा है। अष्ट
 गन्धर्व अनिगत एमे शासन और प्राचिन साहित्यपूर्ण स्थानोंके दर्शनमे
 सदाय है। कुछ कम गान्धि गहा मित्रता। जन चित्तमें गामर्ध्य है
 ८९ एक बार पृथिवी देवीके रूपमें इन मानमगेवरकी अवस्थ
 क्षम करनी चाहिये।



